

Postal Regn. No. C.G./RYP DN/65/2022-24

रायपुर से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका  
प्रकाशन तिथि, 1 जुलाई 2023

आर.एन.आई.पंजीयन क्र.  
CHHHIN/2017/72506

# किलोल

वर्ष 7 अंक 7, जुलाई 2023



<http://www.kilol.co.in>



म. नं. 580/1, गली न. 17 बी,  
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर  
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य  
खुदरा 80/-  
वार्षिक 720/-  
आजीवन 10000/-

संपादक- डॉ. रचना अजमेरा

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा, धारा यादव, डॉ. शिप्रा बेग, रीता मंडल, पुर्णेश डडसेना, वाणी मसीह, राज्यश्री साहू

ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ

कुन्दन लाल साहू

अपनी बात

प्यारे बच्चों एवं शिक्षक साथियों,

आप सभी की गर्मी की छुट्टी समाप्त हो गई है. आपने छुट्टियों में अपनी रुचि अनुसार गायन, वादन, पेंटिंग खेल गतिविधि व स्थानीय कामगारों के हुनर को सीखा, समझा व जाना है. आप अपने द्वारा सीखे हुए उक्त गतिविधियों का निरन्तर अभ्यास जारी रखें. जुलाई माह में मानसून की सक्रियता से प्रदेश में खूब बारिश होने से हमारे आस पास के नदी नालों में बाढ़ की स्थिति निर्मित हो जाती है. इस समय बरसाती जहरीले जीव जंतु भी हमारे आस पास दिखाई देते हैं हमें इनसे दूर रहना चाहिए. अब हमारे स्कूल खुल चुके हैं.

इस माह हमारे छत्तीसगढ़ के स्थानीय त्यौहार हरियाली है जो हमें प्रकृति के संरक्षण के साथ स्थानीय खेलों के साथ जुड़ कर तन व मन को मजबूत करने के लिए प्रेरित करता है.

अब आपके स्कूल खुल चुके हैं. शुरू से ही आप योजना बनाकर अपनी पढ़ाई प्रारंभ करें निश्चित ही पूर्व वर्ष से अच्छे परिणाम आपको प्राप्त होगा.

और हाँ आप किलोल में रचना भेजना व किलोल पढ़ना न भूलें.

आपकी अपनी  
डॉ. रचना अजमेरा

संस्थापक- डॉ. आलोक शुक्ला

मुद्रक कीरत पाल सलूजा तथा प्रकाशक श्यामा तिवारी द्वारा

- विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी म. न. 580/1 गली न. 17बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर, छ. ग. के पक्ष में.  
सलूजा ग्राफिक्स 108-109, दुबे कॉलोनी, विधान सभा रोड़, मोवा जिला रायपुर, छत्तीसगढ़ से मुद्रित  
तथा विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, म.न.580/1 गली. न. 17 बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर से प्रकाशित,  
संपादक डॉ. रचना अजमेरा.

# अनुक्रमाणिका

मन के भोले .....	8
पापा भोले भाले .....	9
हवा .....	11
पंचतंत्र की कहानी .....	13
स्कूल खुलने वाली है .....	15
पर्यावरण संरक्षण .....	17
अधूरी कहानी पूरी करो .....	19
आलसी गधे की कहानी .....	19
अनन्या तंबोली, जांजगीर द्वारा पूरी की गई कहानी .....	19
करिश्मा साहु सोमनापुर नया, विख पंडरिया जिला कबीरधाम कक्षा दसवीं द्वारा पूरी की गई कहानी .....	20
सुधारानी शर्मा, मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी .....	20
संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी .....	21
अगले अंक के लिए अधूरी कहानी .....	22
लंगड़ा कुत्ता .....	22
गुरु .....	23
उम्मीद .....	24
माँ .....	25
चित्र देख कर कहानी लिखो .....	27
संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी .....	27
मनोज कुमार पाटनवार, बिलासपुर द्वारा भेजी गई कहानी .....	29
लालची कुत्ता मोती (चित्र कहानी) .....	29
अगले अंक की कहानी हेतु चित्र .....	29
मेरी नानी .....	30
केला .....	32
अँगूर .....	33
पढ़ाई .....	34
श्यामा गाय .....	36
योगदिवस .....	38
धरती वंदना .....	39
संकट में पतवार बन खड़े होते हैं पिता .....	41
एक नया भारत बनाना है .....	43
मूक पशुओं की देखभाल .....	45



साहित्य का खजाना भारत में अनमोल है .....	47
ज्ञान की बातें .....	49
पिता .....	50
संपर्क और कनेक्शन .....	52
होगे नवा बिहान .....	54
पिता .....	56
सुन्ना मोर गाँव .....	58
नया संसद भवन लोकतंत्र का मंदिर .....	60
अधूरा कर्तव्य .....	62
उलझन .....	64
विश्व तंबाकू निषेध दिवस .....	65
भारत को आत्मनिर्भर बनाना है .....	67
गर्मी: आया मौसम हिट स्ट्रोक का .....	68
आवव खाबो गुपचुप .....	71
पिलर की ऊँचाई .....	72
उड़ी पतंग .....	74
पर्यावरण और जीवन .....	75
पर्यावरण .....	76
परी .....	78
दास्तान-ए-तवायफ .....	79
साथ .....	81
रानी की माला .....	82
महीष .....	84
जीना है तो छोड़ दो नशा .....	86
अच्छा विद्यार्थी .....	88
मूर्ख सेवक .....	89
बलिदान .....	90
परोपकार .....	91
अच्छी आदतें .....	92
धरती कहे पुकार के .....	93
मच्छर भाई .....	95
पर्यावरणीय बाल पहेलियाँ .....	96
बाल पहेलियाँ .....	98
पर्यावरण बचाएँ .....	100

बच्चों के साथ व्यवहार .....	102
पानी हे अनमोल .....	103
बादर के रूप .....	105
चीला बनाये हव .....	107
पर्यावरण पच्चीसी - मौलिक दोहे .....	108
आओ मिलकर पेड़ लगाएं .....	111
दो हजार के नोट की बिदाई .....	113
जनऊला .....	115
खुल गए स्कूल सारे .....	117
बादल देखो आए .....	119
मुश्किल को दूर भगाएँ .....	121
प्यारी गुड़िया रानी .....	123
कमाल के मेरे बाबा .....	125
मुस्काता बंदर .....	127
विश्व अंतरराष्ट्रीय न्याय दिवस .....	129
पढ़ाई .....	130
पिता .....	132
बंदर नटखट .....	133
नन्हीं परी की खुशी .....	134
किताब .....	135
वास्तविक उद्देश्य .....	136
वर्षा ऋतु .....	137
लत .....	139
सत्य बोलो .....	140
पेड़ लगाओ जीवन पाओ .....	141
गर्मी के दिन .....	143
पहेलियाँ .....	144
मेरे नाना जी .....	146
इसी पर्यावरण का अंश हैं हम .....	148
गर्मी की छुट्टियाँ .....	150
योग अपनाएँ .....	152
बेहतर हो कल .....	154
प्रश्नचिह्न .....	156
हरा भरा यह रूप धरा का .....	158

सुख दुख दोनों रहते जिसमें जीवन है वो गांव .....	160
पेड़ लगाओ पेड़ लगाओ .....	162
छाता प्यारा .....	163
बन्दर बेचारा .....	164
अलबेला भालू .....	165
कालू का ठेला .....	166
घर का बंदर .....	168
भारतीय संस्कारों को जीवन में अपनाते रहें .....	171
उत्सव .....	173
मेरा स्कूल मेरा भविष्य .....	174
मेरा यार .....	176
जिंदगी .....	178
शहीद बिरसा मुंडा जी .....	179
वृक्ष हूँ मैं फल दूँगा .....	181
बरस रे बादर .....	183
साक्षरता गीत .....	185
बाल पहेलियाँ .....	186
नींबू का पानी .....	188
आम .....	190
सेब .....	191
तरबूज .....	192
बच्चे और हॉबी क्लासेस .....	193
जल्दी आ जाओ, बरखा रानी .....	196
रोज स्कूल जायेंगे .....	198
हमारी वसुंधरा .....	200
गरी .....	201
चिरई .....	203
उन्नत भारत अभियान में नवाचार भाता है .....	204
सबक .....	206
रक्तदान महादान .....	207
हाथी चला खरीदने जूता .....	209
हाथी दादा .....	211
पंख .....	212
जूठी पत्तलें .....	213

सूरज दादा सूरज दादा.....	214
आओ पेड़ लगाएं .....	215
बादल .....	216
मैडम .....	217
आकार .....	218
छोटा सा हाथी .....	220
19 जून पितृ दिवस विशेष .....	221
मेरी प्यारी बहन.....	223
देखो सब क्या कहते हैं.....	225
नर्स .....	226
गिनती गीत.....	227
अंग्रेजी वर्णमाला .....	229
गर्मी और स्कूल के पौधे.....	230
नदी का किनारा .....	231
हमर जिला धमतरी .....	232
ई-मेल .....	234
आओ राष्ट्र प्रेम जनजागरण कराएं .....	236
रॉयल सर्कस .....	238
सूरज मामा .....	241
पतंग .....	242
अन्दाता .....	243
घड़ी .....	244
माँ-बाप.....	245
चलो स्कूल जाबो जी.....	246
छोटी सी चिड़िया.....	248
मानसून की पहली बारिश .....	249
कुकुर अउ कउंवा .....	250
चलो हो जाओ तैयार, अब स्कूल जाना है .....	251



# मन के भोले

रचनाकार- डॉ. सतीश चन्द्र भगत, बिहार



बच्चे मन के भोले- भाले,  
नींबू- चीनी शरबत वाले.

होते हैं वे मन के सच्चे,  
सबको भाते अच्छे- बच्चे.

अपनी माँ के राजदुलारे,  
लगते सबको प्यारे- प्यारे.

कुछ भी बातें नहीं छिपाते,  
सच्ची- सच्ची सब बतलाते.

ओठों पर मुस्कान निराली,  
बच्चों की है शान निराली.

\*\*\*\*\*



# पापा भोले भाले

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा



घर पर पापा भोले-भाले,  
लेकिन भारी हिम्मत वाले.

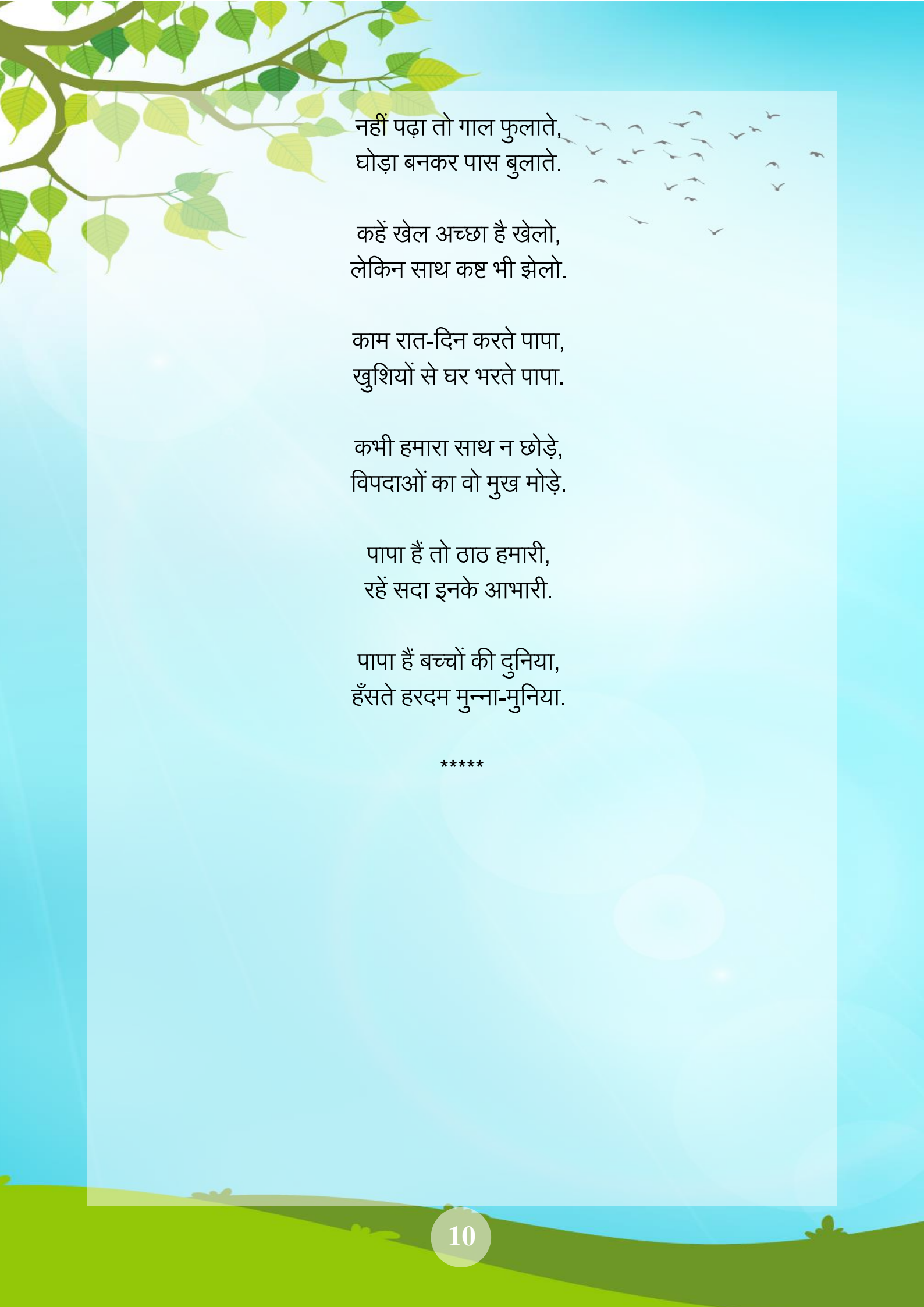
नहीं किसी को कभी सताते,  
उलझ पड़े तो चपत लगाते.

हम बच्चों के सबल सहारे,  
लगते पापा प्यारे-प्यारे.

घर भर के वे हैं रखवाले,  
जिम्मेदारी बड़ी सँभाले.

पापा गुस्से में जब आते,  
मन ही मन देखा मुस्काते.

गलती हो तो डाँटा करते,  
पर बच्चों पर सच में मरते.



नहीं पढ़ा तो गाल फुलाते,  
घोड़ा बनकर पास बुलाते.

कहें खेल अच्छा है खेलो,  
लेकिन साथ कष्ट भी झेलो.

काम रात-दिन करते पापा,  
खुशियों से घर भरते पापा.

कभी हमारा साथ न छोड़े,  
विपदाओं का वो मुख मोड़े.

पापा हैं तो ठाठ हमारी,  
रहें सदा इनके आभारी.

पापा हैं बच्चों की दुनिया,  
हँसते हरदम मुन्ना-मुनिया.

\*\*\*\*\*

# हवा

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ



हवा सभी के लिए जरूरी.

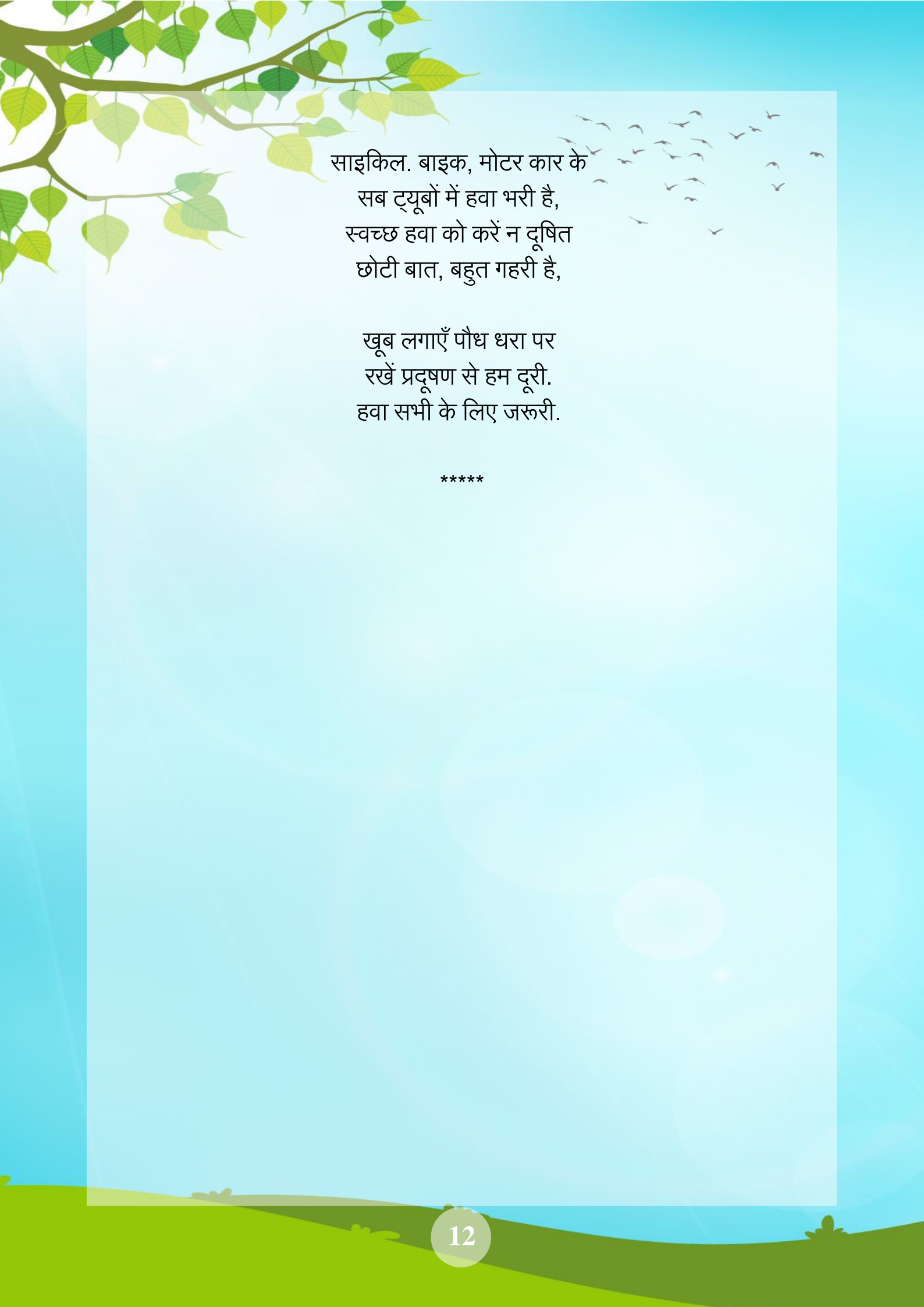
प्राणी साँस हवा में लेते  
बिना हवा के बचे न प्राण,  
झूम रहे तरु हैं मस्ती में  
दुख से हवा दिलाती त्राण,

पशु - पक्षी, मछली, वन, भौरे  
जीव न हों तो प्रकृति अधूरी.

जाड़े में है शीत बढ़ाती  
गर्मी में शीतल सुखकारी,  
वर्षा लाने में उपयोगी  
लगे बादलों को भी प्यारी,

पुरवा - पछुआ मुख्य नाम से  
मौसम की आशा हो पूरी.





साइकिल. बाइक, मोटर कार के  
सब ट्यूबों में हवा भरी है,  
स्वच्छ हवा को करें न दूषित  
छोटी बात, बहुत गहरी है,

खूब लगाएँ पौध धरा पर  
रखें प्रदूषण से हम दूरी.  
हवा सभी के लिए जरूरी.

\*\*\*\*\*

# पंचतंत्र की कहानी

जादुई पतीला



सालों पहले पीतल नगर में किशन नाम का एक किसान रहता था. वह गाँव के एक ज़मींदार के खेत पर काम करके किसी तरह अपना घर चला रहा था.

पहले किशन के भी खेत थे, लेकिन उसके पिता के बीमार होने के कारण उसे अपने सारे खेत बेचने पड़े. मज़दूरी में मिलने वाले पैसों से पिता का इलाज कराना और घर का खर्च चलाना मुश्किल हो रहा था.

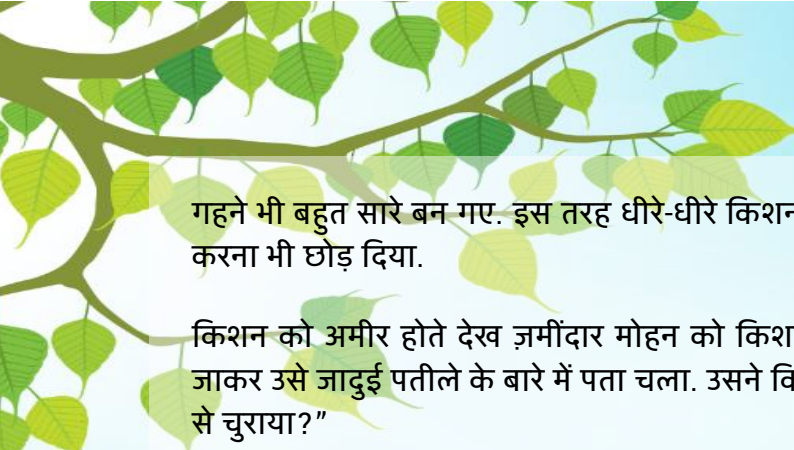
वो हर दिन सोचता कि कैसे घर की स्थिति को बेहतर किया जाए. आज भी इसी सोच के साथ किशन सुबह-सुबह ज़मींदार के खेत पर काम करने के लिए निकला.

खुदाई करते समय उसकी कुदाल किसी धातु से टकराई और तेज़ आवाज़ हुई. किशन के मन में हुआ कि आखिर ऐसा क्या है यहाँ? उसने तुरंत उस हिस्से को खोदा तो वहाँ से एक बड़ा-सा पतीला निकला. पतीला देखकर किशन दुखी हो गया.

किशन के मन में हुआ कि ये ज़ेवरात होते तो मेरे घर की हालत थोड़ी सुधर जाती. फिर किशन ने सोचा कि चलो, अब खाना ही खा लेता हूँ. किशन ने खाना खाने के लिए अपने हाथ की कुदाल उस पतीले में फेंक दी और हाथ-मुँह धोकर खाना खाने लगा. खाना खत्म करने के बाद किशन अपनी कुदाल उठाने के लिए उस पतीले के पास पहुँचा.

वहाँ पहुँचते ही किशन हैरान हो गया. उस पतीले के अंदर एक नहीं, बल्कि बहुत सारे कुदाल थे. उसे कुछ समझ नहीं आया. तभी उसने अपने पास रखी एक टोकरी को भी उस पतीले में फेंक दिया. वो एक टोकरी भी पतीले के अंदर जाते ही बहुत सारी हो गई. ये सब देखकर किशन खुश हो गया और उस जादुई पतीले को अपने साथ घर लेकर चला आया.

वो हर दिन उस बर्तन में अपने कुछ औज़ार डालता और जब वो ज़्यादा हो जाते, तब उन्हें बाज़ार जाकर बेच आता. ऐसा करते-करते किशन के घर की हालत सुधरने लगी. उसने इस तरह से बहुत पैसा कमाया और अपने पिता का इलाज भी करवा लिया. एक दिन किशन ने कुछ गहने खरीदे और उन्हें भी पतीले में डाल दिया. वो



गहने भी बहुत सारे बन गए. इस तरह धीरे-धीरे किशन अमीर होने लगा और उसने ज़मींदार के यहाँ मज़दूरी करना भी छोड़ दिया.

किशन को अमीर होते देख ज़मींदार मोहन को किशन पर शक हुआ. वो सीधे किशन के घर पहुँचा. वहाँ जाकर उसे जादुई पतीले के बारे में पता चला. उसने किशन से पूछा, “तुमने यह पतीला कब और किसके घर से चुराया?”

डरी हुई आवाज़ में किशन बोला, “साहब! ये पतीला मुझे खेत में खुदाई के समय मिला था. मैंने किसी के घर चोरी नहीं की है.”

खेत में खुदाई की बात सुनते ही ज़मींदार ने कहा, “यह पतीला जब मेरे खेत से मिला, तो यह मेरा हुआ.” किशन ने जादुई पतीला ना लेकर जाने की बहुत मन्नते कीं, लेकिन ज़मींदार मोहन ने उसकी एक नहीं सुनी. वो ज़बरदस्ती अपने साथ वो जादुई पतीला लेकर चला गया.

ज़मींदार ने भी किशन की ही तरह उसमें सामान डालकर उन्हें बढ़ाना शुरू किया. एक दिन ज़मींदार ने अपने घर में मौजूद सारे गहने एक-एक करके उस पतीले में डाल दिए और रातोंरात बहुत अमीर हो गया.

एकदम से ज़मींदार के अमीर होने की खबर पीतल नगर के राजा तक पहुँच गई. पता लगाने पर राजा को भी जादुई पतीले की जानकारी मिली. फिर क्या था, राजा ने तुरंत अपने लोगों को भेजकर ज़मींदार के यहाँ से वो पतीला राजमहल मंगवा लिया.

राजमहल में उस जादुई पतीले के पहुँचते ही राजा ने अपने आसपास मौजूद सामान को उसमें डालना शुरू दिया. सामान को बढ़ता देखकर राजा दंग रह गया. होते-होते आखिर में राजा खुद उस पतीले के अंदर चला गया. देखते-ही-देखते उस पतीले से बहुत सारे राजा निकल आए.

पतीले से निकला हर राजा बोलता, “मैं पीतल नगर का असली राजा हूँ, तुम्हें तो इस जादुई पतीले ने बनाया है.” ऐसा होते-होते सारे राजा आपस में लड़ने लगे और लड़कर मर गए. लड़ाई के दौरान वो जादुई पतीला भी टूट गया.

जादुई पतीले के कारण राजमहल में हुई इस भयानक लड़ाई के बारे में नगर में सबको पता चल गया. इस बात की जानकारी मिलते ही मज़दूर किशन और ज़मींदार मोहन ने सोचा, अच्छा हुआ कि हमने उस जादुई पतीले का इस्तेमाल सही से किया. उस राजा ने अपनी मूर्खता के कारण अपनी जान ही खो दी.

कहानी से सीख: जादुई पतीले की कहानी से दो सीख मिलती हैं. पहली कि मूर्खता का अंत बुरा ही होता है. दूसरी यह कि हर सामान का इस्तेमाल संभलकर करना चाहिए. अति हानिकारक हो सकती है.

\*\*\*\*\*



# स्कूल खुलने वाली है

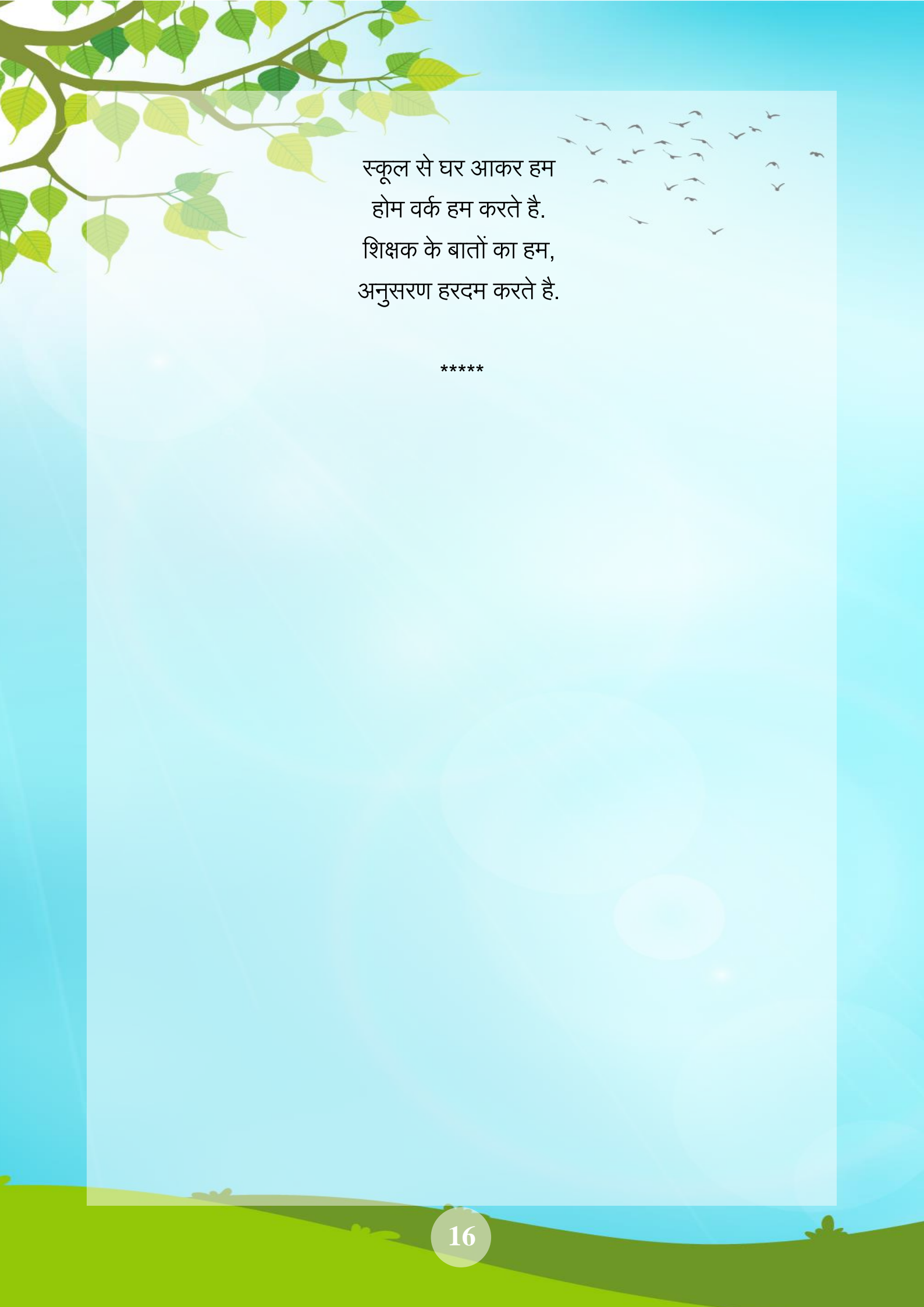
रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू, धमतरी



बीत गई गर्मी की छुट्टी,  
स्कूल खुलने वाली है.  
स्कूल जाते हँसते गाते,  
दिन वों आने वाली है.

पहुंचे जब स्कूल बन-ठन,  
बज रही थी घंटी टन-टन.  
सुन आवाज घंटी की हम,  
प्रार्थना में खड़े हो गए हम.

जन-गण-मन गायन कर,  
सुविचार का वाचन कर.  
पीछे हाथ बांध कर हम,  
कक्षप्रवेश, कर गए हम.



स्कूल से घर आकर हम  
होम वर्क हम करते है.  
शिक्षक के बातों का हम,  
अनुसरण हरदम करते है.

\*\*\*\*\*


# पर्यावरण संरक्षण

रचनाकार- हिमकल्याणी सिन्हा



1. पर्यावरण को बचाना जरूरी है,  
पेड़ बिना जीवन अधूरी है.
2. जीवन को खुशहाल बनाना है,  
धरती में पेड़ लगाना है.
3. धरती को स्वर्ग बनाना है,  
पेड़ों को काटने से बचाना है.
4. वृक्ष है इस पर्यावरण के आभूषण,  
इससे होता दूर प्रदूषण.
5. जो करे पर्यावरण का सम्मान,  
वही है सच्चा इंसान.
6. जीव जंतुओं का इसमें जान,  
पर्यावरण का बढ़ाओ मान.
7. छोटे-छोटे गड्ढे बनाओ,  
सुंदर- सुंदर पेड़ लगाओ





8. जीवन को अनमोल बनाओ,  
पेड़ पौधे से शुद्ध हवा पाओ.

9. निरोगी काया का एक आधार,  
स्वच्छ पर्यावरण से खुशियाँ आपार.

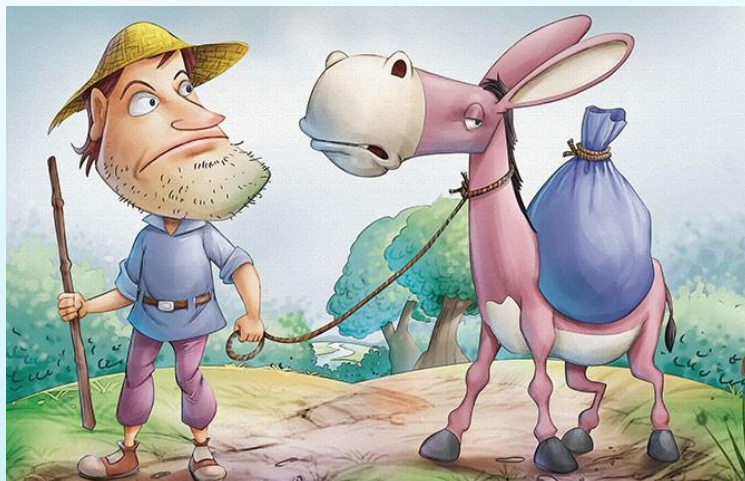
10. समृद्ध वातावरण बनाना है,  
पर्यावरण संरक्षण की अलख जगाना है.

\*\*\*\*\*

# अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी-

## आलसी गधे की कहानी



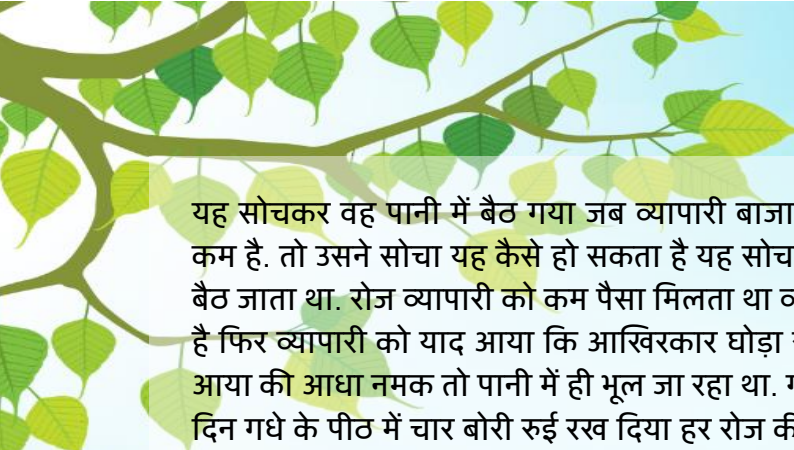
किसी गांव में एक गरीब व्यापारी अपने गधे के साथ रहा करता था. व्यापारी का घर बाजार से कुछ दूरी पर ही था. वह रोज गधे की पीठ पर सामान की बोरियां रखकर बाजार जाया करता था. व्यापारी बहुत अच्छा और दयालु इंसान था और अपने गधे का अच्छी तरह ध्यान रखता था. गधा भी अपने मालिक से बहुत प्यार करता था, लेकिन गधे की एक समस्या थी कि वह बहुत आलसी था. उसे काम करना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था. उसे सिर्फ खाना और आराम करना पसंद था.

एक दिन व्यापारी को पता चला कि बाजार में नमक की बहुत मांग है. उस दिन उसने सोचा कि अब वो बाजार में नमक बेचा करेंगे. जैसे ही हाट लगने का दिन आया, व्यापारी ने नमक की चार बोरियां गधे की पीठ पर लादी और उसे बाजार चलने के लिए तैयार किया.

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

## अनन्या तंबोली, जांजगीर द्वारा पूरी की गई कहानी

नमक की मांग होने की बात सुनकर व्यापारी अपने गधे के साथ नमक लेकर बाजार चले गए. वहां व्यापारी ने नमक बेचकर बहुत पैसा कमाया. उसने उस पैसे से गधे को स्वादिष्ट पकवान खिलाए. गधा बहुत खुश हुआ अगले दिन फिर वे बाजार जाने के लिए निकले. बाजार जाने के वक्त एक नदी रास्ते में पड़ता था गधा बहुत आलसी था लेकिन होशियार भी था. जब गधा और व्यापारी नदी पार कर रहे थे तब नदी में ज्यादा पानी नहीं था इस कारण वे नदी को पार कर लिए लेकिन गधे को चार-चार नमक की बोरी बहुत भारी लग रही थी. वह चाहता था कि उसे कम वजन उठाना पड़े और खाना भी स्वादिष्ट मिल जाए काश ऐसा हो जाता वह सोचते-सोचते जा रहा था. फिर वह बाजार पहुंच गया. और नमक को बेच दिया व्यापारी को बहुत पैसा मिले अगले दिन फिर गधा और व्यापारी जा रहे थे तब गधा उपाय सोचा क्यों ना नदी में बैठकर अपनी वजन कम कर ली जाए. गधे ने सोचा नदी में बैठ जाऊंगा तो उससे नमक पानी में घुल जाएगा और मुझे कम वजन उठाना पड़ेगा



यह सोचकर वह पानी में बैठ गया जब व्यापारी बाजार पहुंच कर नमक बेचने लगा तो उसे लगा कि नमक कम है. तो उसने सोचा यह कैसे हो सकता है यह सोचते-सोचते वह घरे चले गया. ऐसे ही गधा रोज पानी में बैठ जाता था. रोज व्यापारी को कम पैसा मिलता था व्यापारी पता लगाना चाहता था कि नमक कहां जा रहा है फिर व्यापारी को याद आया कि आखिरकार घोड़ा रोज नदी में क्यों बैठ जाता है फिर व्यापारी को समझ आया की आधा नमक तो पानी में ही भूल जा रहा था. गधे की आलसीपन व्यापारी को पता चल गया. अगले दिन गधे के पीठ में चार बोरी रुई रख दिया हर रोज की तरह गधा फिर से पानी में बैठ गया पानी में बैठने के कारण रुई में पानी भर गया और रुई भरी हो गया इस वजह से गधे को और भारी वजन उठाना पड़ा. गधे को इतना भारी बोरी बाजार तक ले जाना पड़ा. गधे को सबक मिल गई कि उसे. आलस नहीं करना चाहिए.

## **करिश्मा साहु सोमनापुर नया, वि ख पंडरिया जिला कबीरधाम कक्षा दसवीं** **द्वारा पूरी की गई कहानी**

राजा ने अपनी इस आलसी प्रवृत्ति के कारण वैद्य द्वारा दिए गए जादुई डम्बल को नहीं उठाता था. वह एकदम से आलसपन में डूब चुका था. उसे किसी भी प्रकार की कार्य करने की कोई इच्छा नहीं होती थी. थोड़े दिन बाद राजा की तबियत और गंभीर होती चली गई. राजा की इस स्थिति को देखकर उनके मंत्रियों ने वैद्य को पुनः आमंत्रित किया. वैद्य ने राजा की स्वास्थ्य का जाँच कर बताया कि यह महाराज के द्वारा जादुई डम्बल को कुछ भी नहीं किया है. जिसके कारण इसके शारीरिक क्रिया में कोई प्रभाव नहीं पड़ा है. वैद्य ने राजा को पूर्व में ही उपचार बता दिया था परन्तु राजा को वह उपचार पसंद न आया था और उसने नहीं किया था. वैद्य द्वारा राजा को डम्बल उठाने का जोर दिया गया. तब राजा धीरे- धीरे प्रतिदिन डम्बल उठाता था. राजा के स्वास्थ्य में दिन-प्रतिदिन सुधार आ रही थी. राजा को यह उपचार पसंद आया और वह प्रतिदिन डम्बल उठाता था. कुछ दिनों बाद राजा का स्वास्थ्य बिल्कुल पूर्व की भांति हो गया. राजा बहुत स्वस्थ और प्रसन्न थे.

## **सुधारानी शर्मा, मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी**

व्यापारी अपने गधे के ऊपर नमक की बोरियां लादकर बाजार की ओर चल पड़ा. नमक की गठरी भारी थी, गधे का मन बिल्कुल भी नहीं हो रहा था बाजार जाने के लिए, वह आलस कर रहा था. व्यापारी ने दो चाबुक गधे को लगाया और कहा जल्दी-जल्दी चलो नहीं तो बाजार बंद हो जाएगा. गधा बेमन से धीरे-धीरे चल रहा था. आसमान में काले काले बादल छाने लगे, व्यापारी बादल देखकर डर गया और उसने गधे को कहा कि चलो जल्दी, गधा धीरे-धीरे ही चल रहा था, व्यापारी को गधे के आलसीपन पर बहुत गुस्सा आ रहा था, उसने फिर गधे को चाबुक लगाई, गधे के ऊपर कोई असर नहीं हुआ, फिर जोर की बारिश शुरू हो गई. व्यापारी जल्दी से दौड़कर एक पेड़ के नीचे जाकर खड़ा हो गया. उसने वहीं से गधे को आवाज लगाई जल्दी आओ जल्दी आओ. लेकिन गधा धीरे-धीरे ही चल रहा था. पानी का वेग बहुत बढ़ गया मूसलाधार बारिश होने लगी और गधे के ऊपर रखी नमक की गठरी पूरी तरह से गीली हो गई. नमक के ऊपर पानी पड़ने से नमक बहने लगा. और धीरे-धीरे गठरी खाली होने लगी. गठरी हल्की होने लगी. गठरी का वजन कम हो गया. अब गधा थोड़ा जल्दी चलने लगा. परंतु. बोरी में रखा हुआ नमक पूरी तरह से भीग कर बहने लगा. गधा जब तक व्यापारी के पास पहुंचा पेड़ के नीचे तब तक उसकी गठरी लगभग आधे से भी ज्यादा खाली हो चुकी थी. व्यापारी ने जब देखा कि नमक की गठरी खाली हो गई है तो उसे गधे पर बहुत गुस्सा आया और उसने वहीं पर गधे को. मारना शुरू कर दिया. तब तक बारिश भी बंद हो चुकी थी. गधे के आलसीपन के कारण व्यापारी को बहुत नुकसान उठाना पड़ा.

इस कहानी से शिक्षा मिलती है कि हमें आलस नहीं करना चाहिए.



## संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी

बाजार में जाने के लिए उसे छोटी-छोटी नदियाँ पार करनी पड़ती थीं। सभी दिन की तरह आज भी व्यापारी और गधा बाजार की ओर चल पड़ा। जब व्यापारी और गधा दोनों नदी पार करने लगे, तभी गधा मन ही मन सोचने लगा- "कि यह व्यापारी रोज मुझे इसी तरह समान की बोरियाँ रखकर बाजार ले जाता है। आज तो उन्होंने नमक के चार-चार बोरियाँ मेरे पीठ पर लाद दिए हैं। इसका भार अधिक होने के कारण मेरे पीठ में दर्द हो रहा है। मुझे अपनी पीठ का भार कम करने एवं व्यापारी को सबक सिखाने के लिए मुझे कुछ तरीका ढूँढना पड़ेगा।" यह सोच कर कुछ दूर चलने के पश्चात वह बीच नदी में जाकर बैठ गया।

जैसे ही गधा पानी में बैठा, नमक पानी में घुलने लगा। नमक के पानी में घुलने से बोरी बहुत हल्की हो गई और वजन कम होने से गधा खुश हुआ।

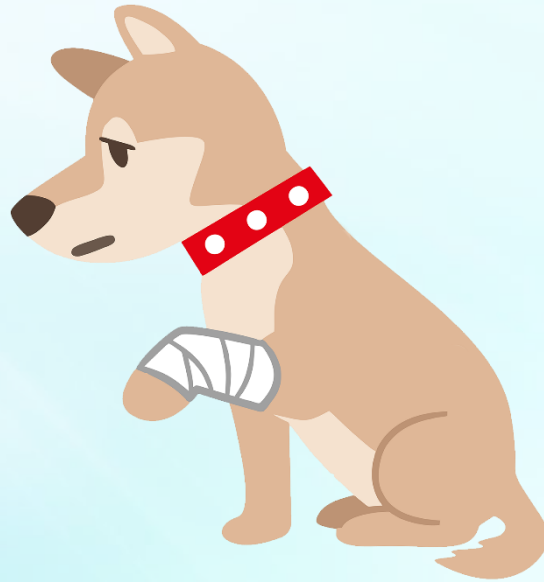
फिर क्या था गधा हर दिन यही चाल चलना शुरू कर दिया। व्यापारी को गधे की चाल समझ में आ गई और उसने उसके किए हुए लापरवाही पूर्वक कार्यों को देखकर बहुत दुःख हुआ। उन्होंने उसे सुधारने का फैसला किया।

अगले दिन उसने गधे की पीठ पर मोटे-मोटे सूती के चादर की चार बोरियाँ लाद दीं। फिर क्या था गधे ने खुशी से नदी के बीच में जैसे ही पहुँचा, हर दिन की तरह अपनी पीठ का भार कम करने के लिए नदी में बैठ गया। थोड़ी देर के बाद वह जैसे ही खड़ा हुआ तो उसके पीठ में अधिक दर्द हुआ क्योंकि इस बार नमक की जगह व्यापारी ने सूती के चादर की चार-चार बोरियाँ पीठ पर डाला था। गधे के पानी में बैठने पर चादर ने सारा पानी सोख लिया और वजन पहले की अपेक्षा कई गुना बढ़ गया। पानी से बाहर आने में गधे को खूब मेहनत करनी पड़ी व्यापारी द्वारा उसका पिटाई भी किया गया। उस दिन के बाद से गधे ने अपने मालिक से क्षमा माँगा और पानी में बैठने की आदत छोड़ दिया। उसे अपनी गलती का एहसास हुआ। फिर वह अपने मालिक के साथ आलसीपन को छोड़कर मेहनत से काम करने लगा।

बच्चों इस कहानी के माध्यम से हमें जानकारी हुआ कि हमें हमेशा ईमानदारी से मेहनत के साथ कार्य करना चाहिए, कभी भी किसी को धोखा नहीं देना चाहिए। और गधे के समान हमें कभी भी आलस्य नहीं करना चाहिए। क्योंकि आलस्य करने का हमेशा नतीजा बुरा ही होता है।

## अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

### लंगड़ा कुत्ता



एक व्यक्ति ने एक शक्तिशाली और वफादार कुत्ता पाल रखा था. वह अपने मालिक के घर की सावधानीपूर्वक रखवाली करता था. उसका मालिक उससे बहुत प्यार करता था और उसकी अच्छी तरह से देखभाल करता था.

एक दिन कुत्ता दुर्घटनाग्रस्त हो गया. दुर्भाग्यवश दुर्घटना में उसका पीछे का एक पैर बुरी तरह घायल हो गया. उसका घाव ठीक नहीं हुआ. अब बेचारा कुत्ता एक पैर से लंगड़ा कर चलता.

उसका मालिक भी अब उससे प्यार नहीं करता था, क्योंकि उसे लगता था कि एक लंगड़ा कुत्ता कभी भी अच्छा चौकीदार नहीं हो सकता. एक दिन...

इसके आगे क्या हुआ होगा? इस कहानी को पूरा कीजिए और इस माह की पंद्रह तारीख तक हमें [kilolmagazine@gmail.com](mailto:kilolmagazine@gmail.com) पर भेज दीजिए.

चुनी गई कहानी हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

# गुरु

रचनाकार- धनीराम डडसेना, छुईखदान



सच्चे मन से करें पुकार,  
गुरु को पाएंगे अपने द्वार.

सुख में भी करें सुमिरन,  
तन मन होगा प्रसन्न.

दुःख में भी करें सुमिरन,  
कष्ट का भी होगा निवारण.

गुरु का स्तर सदैव है गुरु,  
लघु बनकर सदैव मिलें रूबरू.

जीवन के हर क्षण में जो दें ज्ञान,  
गुरु को करें प्रणाम और ध्यान.

मेरे सभी इष्ट देव को प्रणाम,  
सदैव गुरु का नमन करें हम.

\*\*\*\*\*



# उम्मीद

रचनाकार- धनीराम डडसेना, छुईखदान



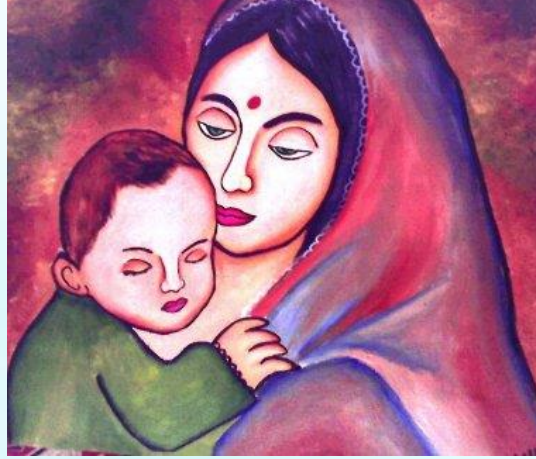
उम्मीद है ,  
घिरे हुए हैं बादल.  
आज नहीं तो कल,  
संघर्षों का मिलेगा फल.  
अत्याचार को सदैव,  
पड़ता है डंडा.

देर सवेरे गर्म लोहा,  
भी होगा ठंडा.  
उम्मीद है,  
घिरे हुए हैं बादल.  
कलम की पुकार,  
की जय होगी कल.  
धैर्य की है,  
अग्नि परीक्षा.  
सफलता मिलेगी,  
हो उम्मीद की कक्षा.

\*\*\*\*\*

# माँ

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ



मेरी प्यारी - प्यारी माँ.  
तुम पर मैं बलिहारी माँ.

तुमसे पाया है जीवन  
झूम उठा भोला बचपन


सुख - सुमनों की क्यारी माँ.

धैर्य - शक्ति की हो प्रतिमा  
स्नेहसिक्त गौरव - गरिमा

हृदय से हूँ आभारी माँ.

पूर्ण करूँ सुंदर सपना  
ध्येय पुनीत सदा अपना

आदर की अधिकारी माँ.



तुम अमृत हो, मैं जल कण  
कौन चुका पाएगा ऋण

घरभर की उजियारी माँ.  
मेरी प्यारी - प्यारी माँ.

\*\*\*\*\*



# चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी-



हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

## संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

नर्मदा के तट पर एक साधु रहते थे. जिसका नित्य का नियम था कि वह भगवान को भोग लगाते और साथ में एक कोई भी अतिथि को खिलाकर स्वयं भोजन(प्रसाद)पाते थे. प्रतिदिन वे भगवान को भोग लगाते और इंतजार करते कि कोई अतिथि आए. कोई ना कोई अतिथि मिल ही जाता था. अगर कोई भी अतिथि नहीं आते तो, नर्मदा नदी में जाकर मछली, कछुओं को खिलाते थे.

एक दिन कोई अतिथि नहीं आया और ना ही नदी में कछुआ,मछली या कोई भी जीव जंतु दिखाई दे रहे थे. संत जी सोचने लगे कि आज का अन्न ऐसे ही चला जाएगा. बहुत समय हो गया कोई दिखाई नहीं दे रहा था. तभी अचानक संत के पास एक कुत्ता आया.भोजन को देखकर कुत्ता पूछ हिलाने लगा.उसे देखकर संत जी ने कहा-"तुम इस प्रसाद को तभी ग्रहण कर सकते हो,जब मेरे इन तीन प्रश्नों का उत्तर दोगे."तभी कुत्ता ने कहा-"महात्मा जी!मैं छोटा सा जीव,आप जैसे महात्माओं के प्रश्नों का उत्तर कैसे दे सकता हूँ. फिर भी आप प्रश्न करना चाहते हैं तो,जैसे भी बनेगा,मैं अपने छोटे बुद्धि के अनुसार प्रश्नों का उत्तर दूंगा."

तब महात्मा जी ने कहा कि-तू है तो बहुत वफादार,परंतु तेरे में तीन कमियाँ है-

1. तु पेशाब हमेशा दीवार में ही करता है.
2. तुम भिखारी को देखकर बिना बात के ही भोक्ता है. और
3. तुम रात को भौंक-भौंक के लोगों को नींद खराब करता है.

इस पर कुत्ते ने साधु को प्रणाम कर जवाब दिया.

कुत्ता बोला-हे प्रभु! सुनिए--

1. मैंने जमीन पर पेशाब इसलिए नहीं करता कि कहीं किसी ने वहाँ पर पूजा की हो.
2. भिखारी पर इसलिए भौंकता हूँ कि वे भगवान को छोड़कर, लोगों से क्यों माँगता है. जो कि खुद भिखारी है, वह भगवान से क्यों नहीं माँगता?
3. रात को मैं इसलिए भौंकता हूँ कि- हे पापी मनुष्य! तू सब कुछ मेरा है, इस भ्रम से नींद में क्यों सोया हुआ है. उठ अपने उस प्रभु को यादकर, जिसने तुझे इतना सब कुछ दिया है.

कुत्ते की जवाब को सुनकर साधु गदगद हो गया और उसे अतिथि स्वीकार कर, प्रसाद खिलाया. साधु और कुत्ता दोनों प्रेम पूर्वक साथ में ही रहने लगे. साधु को अब कोई दूसरा अतिथि खोजने का जरूरत नहीं पड़ा. साधु कहीं भी जाता, कुत्ता उसके कुटिया की रखवाली करता था. आसपास के लोगों के द्वारा साधु को जो भी प्राप्त होता था. उसे दोनों खाते थे. साधु की संगति से कुत्ता में परिवर्तन आ गया. वह शाकाहारी भोजन करने लगा. वह दूसरों की सहायता, ज्ञान की बातें एवं अपने मालिक के प्रति वफादार हो गया.

एक दिन नदी में बाढ़ आया था. रोज की तरह महात्मा जी स्नान करने नदी में गए थे. लेकिन बहुत देर होने के पश्चात भी वह वापस नहीं आया. कुत्ते को चिंता सताने लगी कि अभी तक महात्मा जी क्यों नहीं आए हैं? कुछ अनहोनी तो नहीं हो गया? मन ही मन सोचते हुए कुत्ता कुटिया को छोड़कर अपने मालिक महात्मा जी को खोजने के लिए निकल पड़ा.

नदी के पास में ही एक छोटी सी पुलिया थी. वहाँ पहुँचा तो देखा, उनके साथी कुत्ता मुँह में हड्डी को दबाए, अपने ही प्रतिबिंब को देखकर, दूसरे हड्डी पाने की लालच में पड़कर नदी में छलांग मारने की तैयारी कर ही रहा है. तभी उसने कहा रुकिए ये क्या कर रहा है. वह कोई दूसरा कुत्ता नहीं, तुम्हारे ही परछाई है. ऐसा कहकर छोटी सी मिट्टी को पानी में गिराया. जैसे ही पानी में मिट्टी गिरा, उस कुत्ते का पानी में बना हुआ प्रतिबिंब चला गया. उसके साथी कुत्ते को भी उनकी बातें समझ में आ गया कि मेरे साथी ठीक ही कह रहा है. वह अपना जान बचाने पर धन्यवाद दिया और वह वापस अपने घर चला गया.

अपने मालिक की खोज में निकला हुआ साधु वाला कुत्ता इधर-उधर नदी के किनारे देखने लगा. तभी अचानक नदी में कोई बहता हुआ व्यक्ति आ रहा था. वह उसे ध्यान से देखा और उसे पहचान लिया. मालूम हो गया कि कोई और नहीं मेरे ही मालिक महात्मा जी है. वह कुत्ता अपनी जान की परवाह किए बिना साधु को बचाने के लिए तुरंत नदी में छलांग मार दिया. दोनों नदी में बहते हुए धीरे-धीरे नदी के किनारे की ओर पहुँचते हैं. और दोनों बच जाते हैं. साधु, कुत्ता को धन्यवाद देते हैं और वापस दोनों कुटिया में आते हैं. साधु, कुत्ता को कहता है कि वास्तव में तुम बहुत ही बहादुर और वफादार हो. एक पशु होते हुए भी अपनी जान की परवाह किए बिना, मेरी जान बचाने के लिए नदी में कूदा. मैं तुम्हारा परीक्षा ही ले रहा था कि तुम विपत्ति आने पर क्या कर सकते हो? तुमने यह साबित कर दिया कि अपनी जान से भी ज्यादा मालिक प्यारा है. इस कारण आज से तुम मेरे अच्छे मित्र रहोगे. उन दोनों की मित्रता को देखकर कुटिया में आने वाले लोग खुश होते हैं. साधु और कुत्ता शांति पूर्वक दोनों खुशी से अपना जीवन व्यतीत करते हैं.

बच्चों इस कहानी के माध्यम से हमने समझा कि-अपने दोस्त, मुसीबत में हो तो उसका जरूर मदद करना चाहिए. साथ ही जो हमारा पालन-पोषण करता है. उसका सहायता के साथ-साथ आदर और सम्मान देना चाहिए.



## मनोज कुमार पाटनवार, बिलासपुर द्वारा भेजी गई कहानी

लालची कुत्ता मोती (चित्र कहानी)

किसी गाँव में मोती नाम का एक लालची कुत्ता रहता था. वह हमेशा दूसरों की चीजें छिनकर खाता था. एक दिन मोती घूमने निकला था. रास्ते में उसे एक हड्डी का टुकड़ा मिला. हड्डी का टुकड़ा पाकर मोती बहुत खुश हुआ. हड्डी को लेकर जैसे ही वह नदी के रास्ते से अपने घर आ रहा था. तभी नदी में उसने अपनी परछाई देखी. उसे लगा की नीचे कोई दूसरा कुत्ता भी है. वह भी अपनी मुंह में एक हड्डी का टुकड़ा लिए हुए खड़ा है. उसे देखकर मोती को लालच आ गया और वह दूसरी हड्डी को पाने के लालच में कुत्ते को भौकने लगा. जैसे ही वह भौकने के लिए अपना मुंह खोला उसकी मुंह की हड्डी पानी में गिर गई. मोती पानी में अपना मुंह देखता रह गया. लालच में उसने अपनी पायी हुई एक हड्डी भी खो दी.

शिक्षा:- इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें कभी भी लालच नहीं करनी चाहिए.

### अगले अंक की कहानी हेतु चित्र



अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल [kilolmagazine@gmail.com](mailto:kilolmagazine@gmail.com) पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे



# मेरी नानी

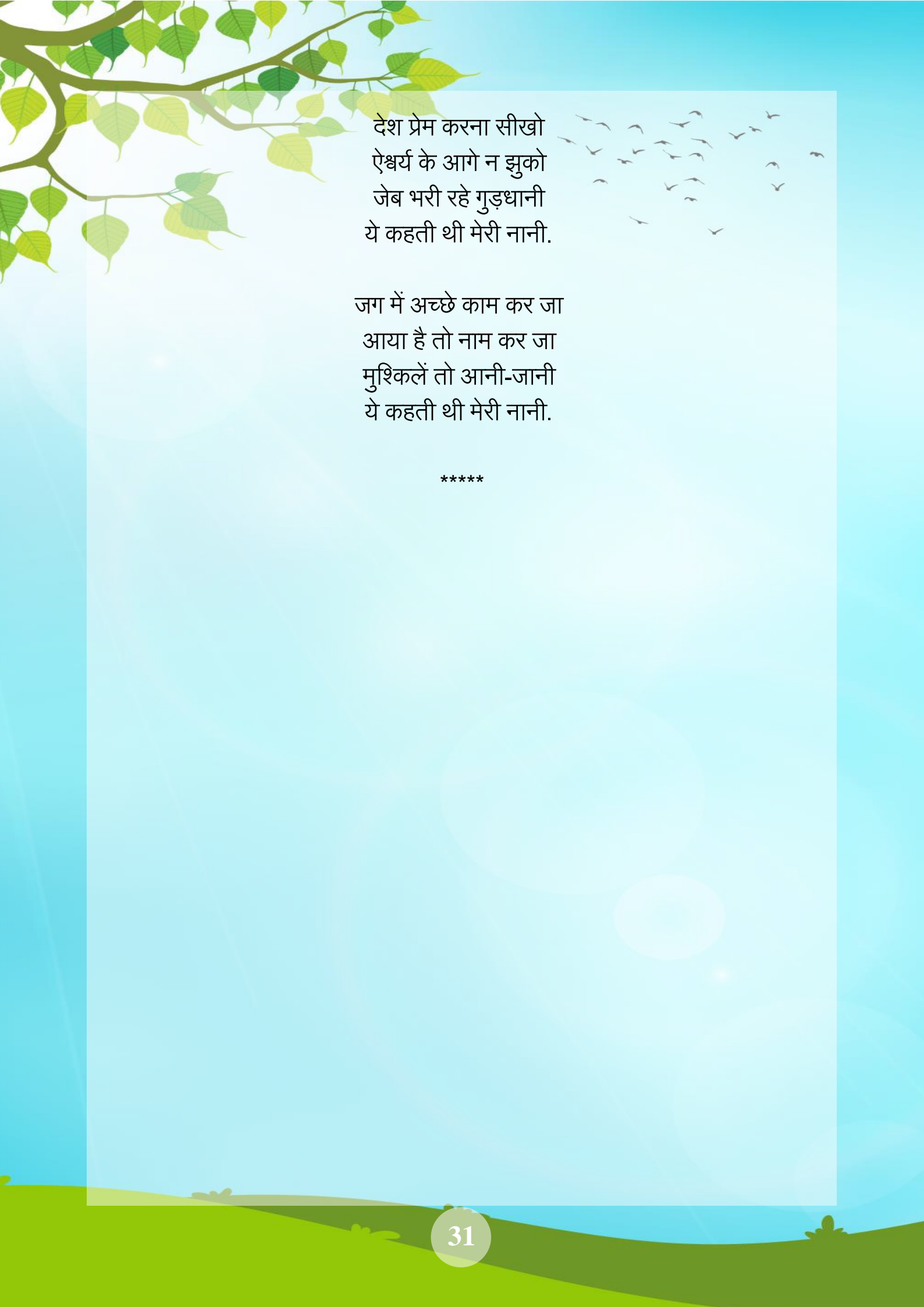
रचनाकार- नलिन खोईवाल, इंदौर



अनार, आम है लिखना पढ़ना  
पढ़ लिख नेक इंसान बनना  
संवर जाएगी जिंदगानी  
ये कहती थी मेरी नानी.

वादा करो उसको निभाना  
नेकी पे सदा चलते जाना  
हरपल बोलो मीठी वाणी  
ये कहती थी मेरी नानी.

प्रकृति से सदा प्रेम करो  
आफतों से कभी न डरो  
रख पंछी को दाना पानी  
ये कहती थी मेरी नानी.



देश प्रेम करना सीखो  
ऐश्वर्य के आगे न झुको  
जेब भरी रहे गुड़धानी  
ये कहती थी मेरी नानी.

जग में अच्छे काम कर जा  
आया है तो नाम कर जा  
मुश्किलें तो आनी-जानी  
ये कहती थी मेरी नानी.

\*\*\*\*\*

# केला

रचनाकार- गुलज़ार बरेठ, जांजगीर चाम्पा



हरा पीला होता हूँ  
अकेला कभी न रहता हूँ  
दर्जन में मैं बिकता हूँ  
स्वाद में मीठा लगता हूँ  
दूकानों में मैं सजता हूँ  
रस्सियों में लटकता हूँ  
सैर कर लेता ठेले में  
मौज कर लेता मेले में  
ठंडी गर्मी या बरसात  
कभी न छूटे मेरा साथ

\*\*\*\*\*



# अँगूर

रचनाकार- गुलज़ार बरेठ, जांजगीर चाम्पा

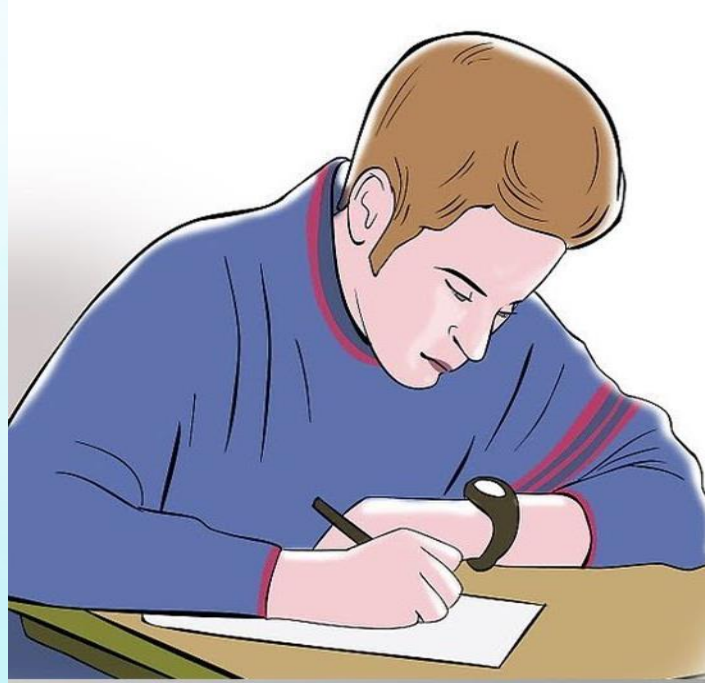


गुच्छेदार, मैं अँगूर.  
रस से भरा, मैं अँगूर.  
गोल-गोल, मैं अँगूर.  
छोटा-छोटा, मैं अँगूर.  
गुदेदार, मैं अँगूर.  
काला-हरा, मैं अँगूर.  
किलो में बिकता, मैं अँगूर.  
किशमिश बनता, मैं अँगूर.  
ताकत देता, मैं अँगूर.  
सबको भाता, मैं अँगूर..

\*\*\*\*\*

# पढ़ाई

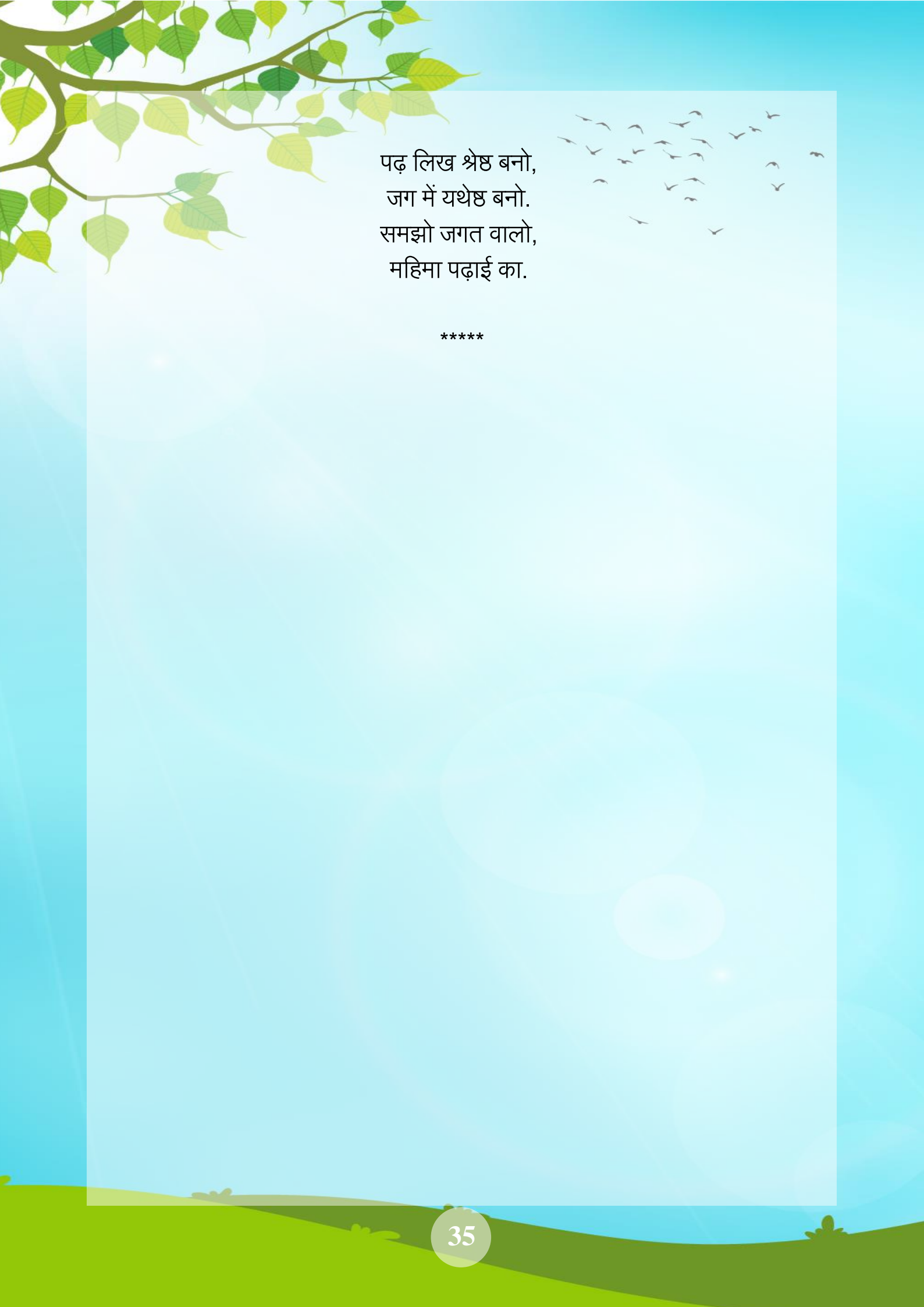
रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"



हृदय जो पढ़ सके,  
इतिहास गढ़ सके.  
क्षण में बता देता है,  
मर्म परछाई का.

जीवन में ज्ञान मिले,  
सुख का विधान मिले.  
मिलता पढ़ाई से ही,  
मान गुरुताई का.

नहीं कभी आँच मिले,  
झूठ में भी साँच मिले.  
तुंग से भी बड़ा करे,  
जो महत्व राई का.



पढ़ लिख श्रेष्ठ बनो,  
जग में यथेष्ठ बनो.  
समझो जगत वालो,  
महिमा पढ़ाई का.

\*\*\*\*\*



# श्यामा गाय

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ



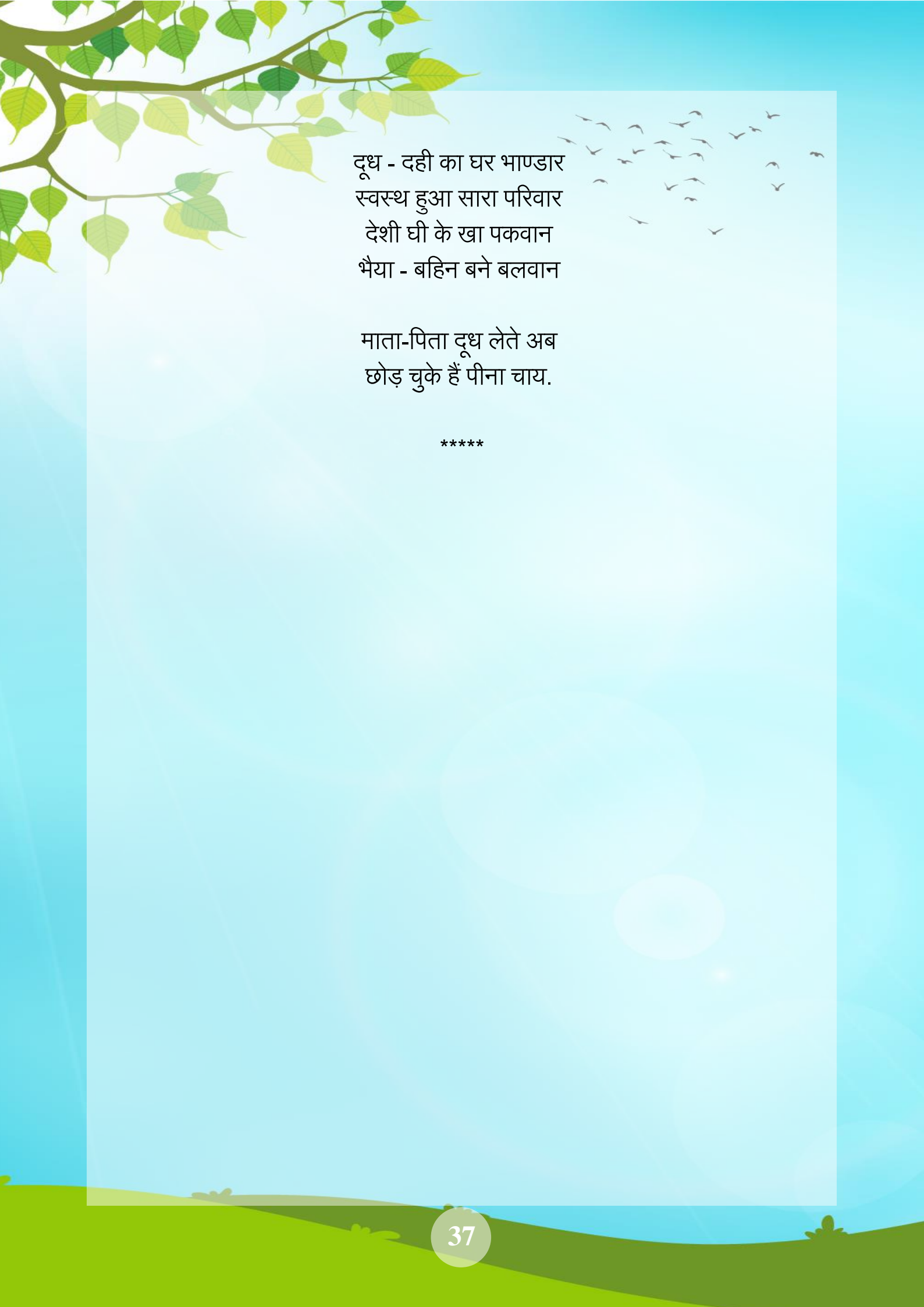
बाबा जी ने पाली गाय.

'श्यामा' उसे बुलाते हैं  
नित्य सुबह नहलाते हैं  
नीम तले बाँधी जाती  
चारा खाती, पगुराती

दादी भी करती सेवा  
पहले जो दिखती असहाय.

उसका छोटा बछड़ा है  
काफी मोटा - तगड़ा है  
बाँ - बाँ, बाँ - बाँ करता है  
खूब कुलांचे भरता है

उसको पास बुलाने का  
हरी घास ही, एक उपाय.



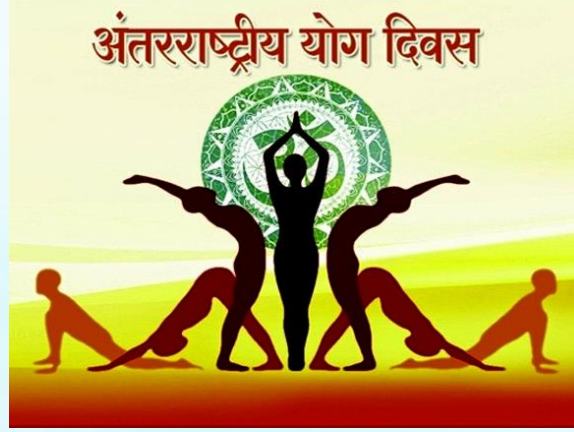
दूध - दही का घर भाण्डार  
स्वस्थ हुआ सारा परिवार  
देशी घी के खा पकवान  
भैया - बहिन बने बलवान

माता-पिता दूध लेते अब  
छोड़ चुके हैं पीना चाय.

\*\*\*\*\*

# योगदिवस

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



योग व्यायाम सहित स्वास्थ्य विज्ञान है  
अंतरराष्ट्रीय योगदिवस 2023 उल्टीगिनती शुरू है  
वैश्विक स्तरपर भारतीय प्रतिष्ठा बढ़ाई है  
योग हमारे शरीर की दवाई है

पौराणिक निरोग काया का मंत्र है  
योग प्रथम भारतीय स्वास्थ्य उपहार है  
खुशी के लिए उत्तम स्वास्थ्य उपहार है  
योग अच्छे स्वास्थ्य की बहुमूल्य कुंजी है

मस्तिष्क को ऊर्जा उपलब्ध कराया है  
जीवन शैली में बदलाव भी लाया है  
योग ने विश्व को योग महत्व समझा पर  
भरपूर प्रतिष्ठा पाया है

\*\*\*\*\*



# धरती वंदना

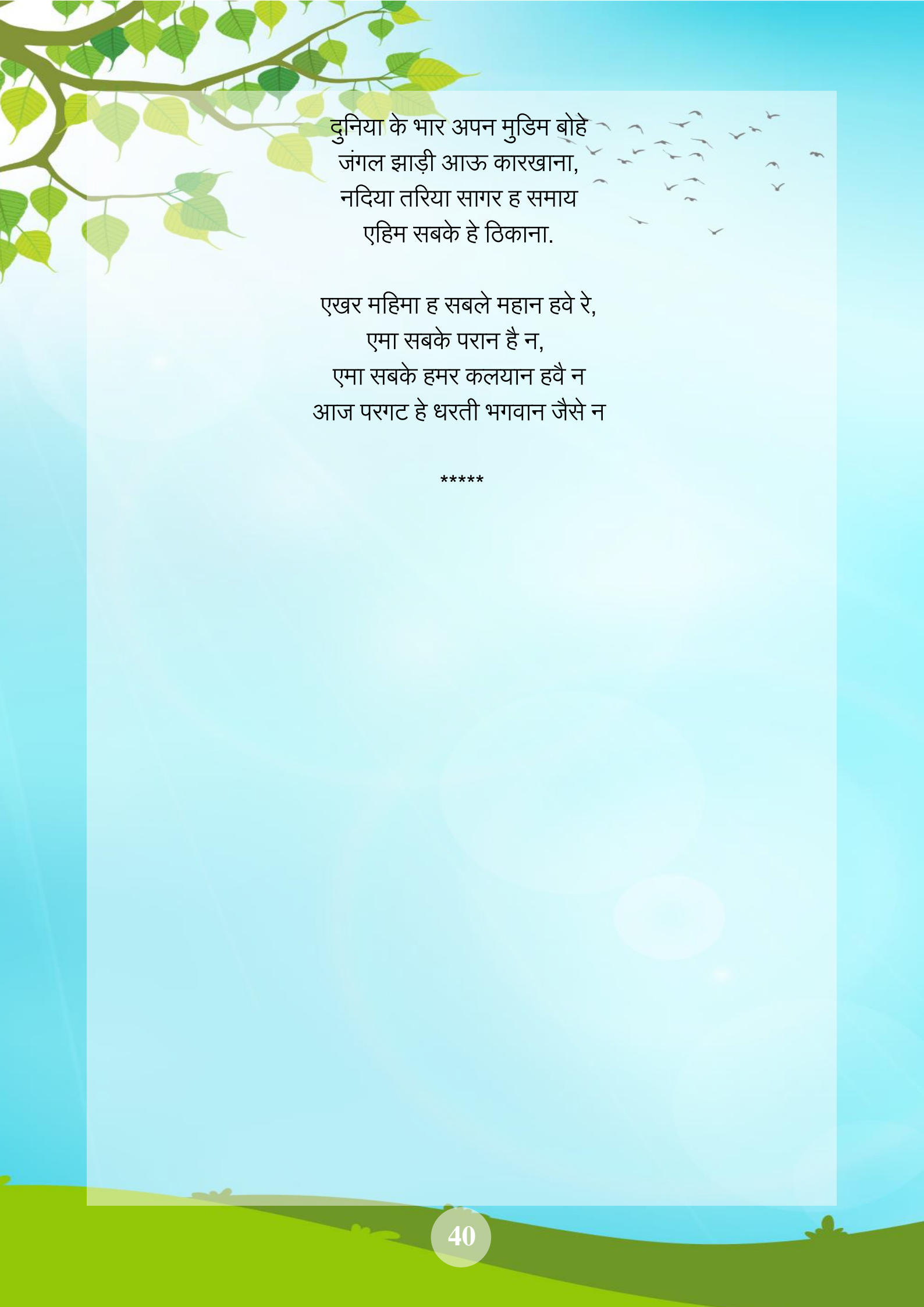
रचनाकार- संतोष कुमार साहू, कबीरधाम



मैं पहली बंदव धरती मईया  
तोर महिमा हावय अपार  
तहि ह सबके पार लगइया  
तोला बंदव मय बारंबार.

जनम मरन के संगवारी ये,  
एला सौ सौ करौ प्रनाम,  
एही म सबके गुजर बसर हे  
एही म हे चारों धाम.

कोनो नई बाचिन एखर कर्जा ले  
राजा होय चाहे रानी,  
मानुष जनम लेके मरथे  
धरती के हे अमर कहानी,



दुनिया के भार अपन मुडिम बोहे  
जंगल झाड़ी आऊ कारखाना,  
नदिया तरिया सागर ह समाय  
एहिम सबके हे ठिकाना.

एखर महिमा ह सबले महान हवे रे,  
एमा सबके परान है न,  
एमा सबके हमर कलयान हवै न  
आज परगट हे धरती भगवान जैसे न

\*\*\*\*\*

# संकट में पतवार बन खड़े होते हैं पिता

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



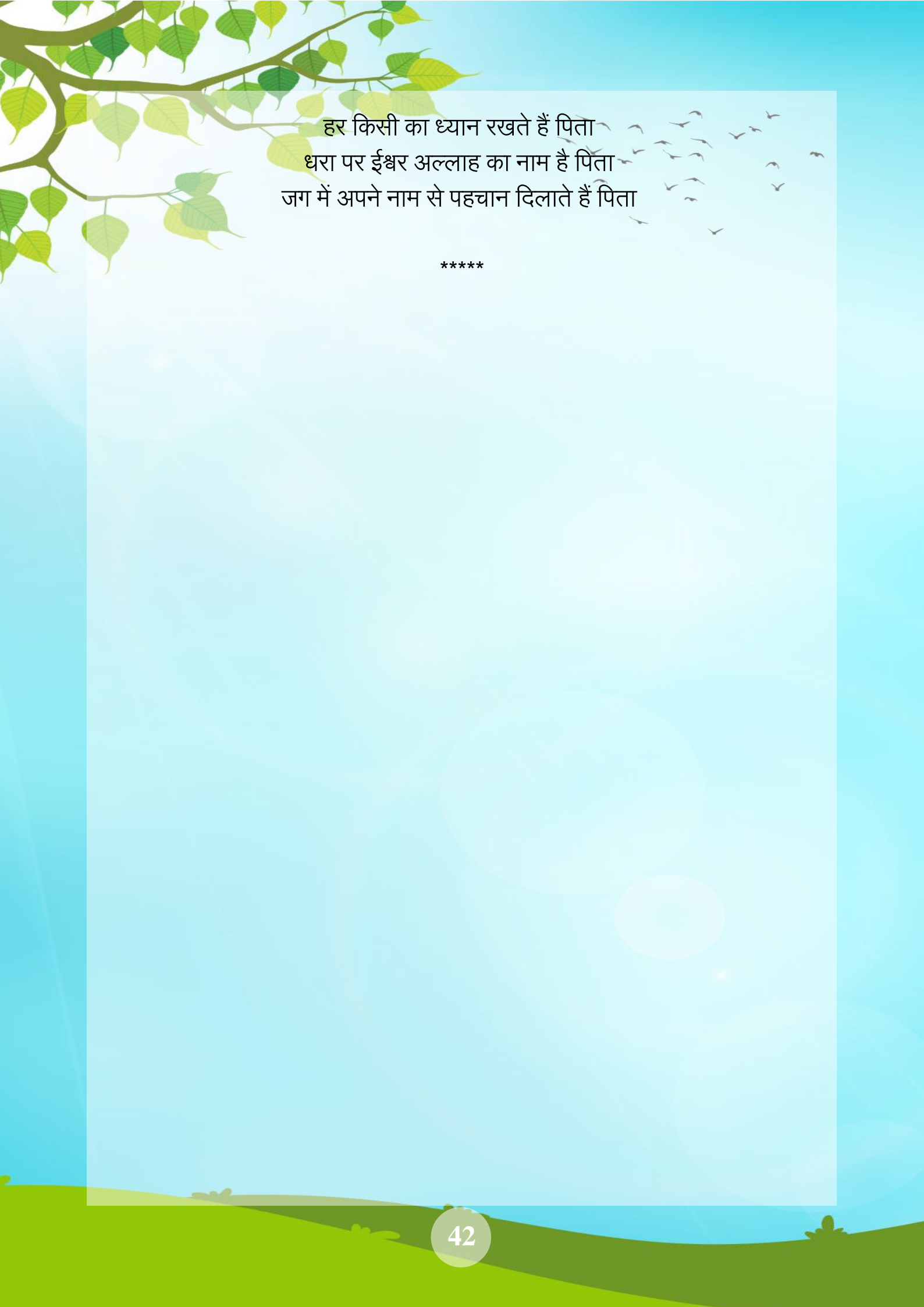
संकट में पतवार बन खड़े होते हैं पिता  
परिवार की हिम्मत विश्वास है पिता  
उम्मीद की आस पहचान है पिता  
जग में अपने नाम से पहचान दिलाते हैं पिता

खुद गरीब पर बच्चों को अमीर बनाते हैं पिता  
कभी कंधे पर बिठाकर मेला दिखाते हैं पिता  
कभी घोड़ा बनकर घुमाते हैं पिता  
ऐसे सभी लोकों के महान देवता है पिता

कभी अभिमान तो कभी स्वाभिमान हैं पिता  
मां अगर पैरों पर चलना सिखाती है  
तो पैरों पर खड़ा होना सिखाते हैं पिता  
कभी धरती तो कभी आसमान है पिता

परिवार की इच्छाओं को पूरा करते हैं पिता





हर किसी का ध्यान रखते हैं पिता  
धरा पर ईश्वर अल्लाह का नाम है पिता  
जग में अपने नाम से पहचान दिलाते हैं पिता

\*\*\*\*\*

# एक नया भारत बनाना है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र

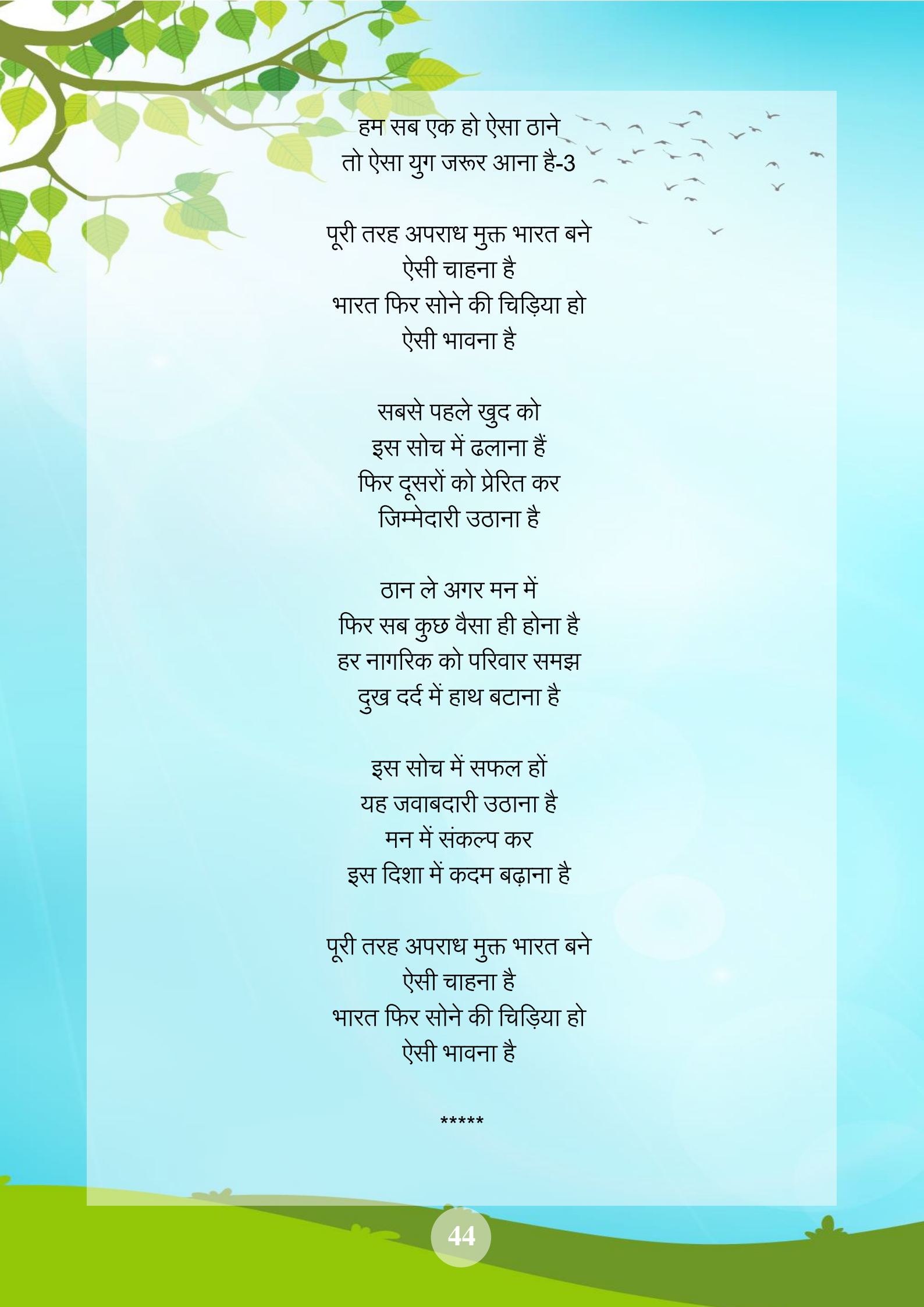


इसानियत को जाहिर कर  
स्वार्थ को मिटाना है  
बस यह बातें दिल में धर  
एक नया भारत बनाना है

एकता अखंडता भाईचारा दिखाना है  
यह जरूर होगा पर  
इसकी पहली सीढ़ी  
अपराध को हृदय से निकालना है

सरकार कानून सब साथ देंगे  
बस हमें कदम बढ़ाना है  
हम जनता सबके मालिक हैं  
यह करके दिखाना है

कलयुग से अब सतयुग हो  
ऐसी चाहना है



हम सब एक हो ऐसा ठाने  
तो ऐसा युग जरूर आना है-3

पूरी तरह अपराध मुक्त भारत बने  
ऐसी चाहना है  
भारत फिर सोने की चिड़िया हो  
ऐसी भावना है

सबसे पहले खुद को  
इस सोच में ढलाना हैं  
फिर दूसरों को प्रेरित कर  
जिम्मेदारी उठाना है

ठान ले अगर मन में  
फिर सब कुछ वैसा ही होना है  
हर नागरिक को परिवार समझ  
दुख दर्द में हाथ बटाना है

इस सोच में सफल हों  
यह जवाबदारी उठाना है  
मन में संकल्प कर  
इस दिशा में कदम बढ़ाना है

पूरी तरह अपराध मुक्त भारत बने  
ऐसी चाहना है  
भारत फिर सोने की चिड़िया हो  
ऐसी भावना है

\*\*\*\*\*



# मूक पशुओं की देखभाल

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र

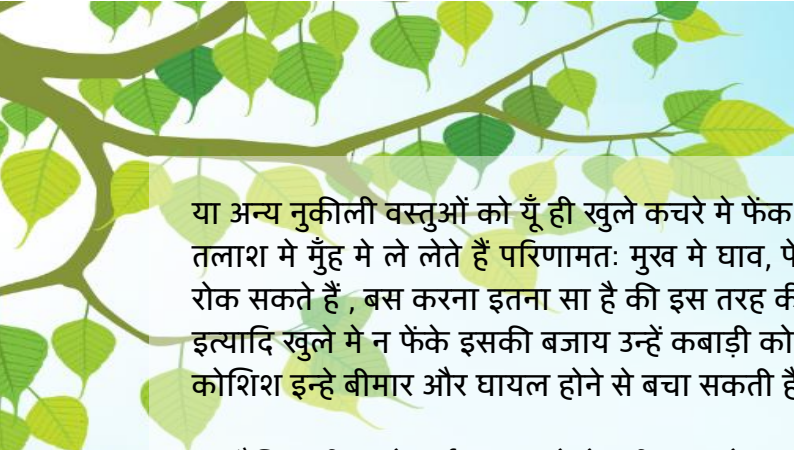


सृष्टि ने 84 लाख योनियों की रचना कर मानव को सबसे अनमोल बुद्धि का उपहार इस विश्वास के साथ सौंपा कि वह जैव विविधता की रक्षा करने में अपनी भूमिका निभाएगा. परंतु इस काम में हम मानवीय जीव खरे नहीं उतरे. हमने अपने स्वार्थ के कारण बाकी योनियों का पृथ्वी पर जीना मुश्किल कर दिया है. किसी का शिकार, वध, पालतू बनाने इत्यादि तरीकों से उनपर अत्याचार किए और अनेक योनियों को विलुप्त कर दिया है. हमारे बड़े बुजुर्गों की कहावत है सुबह का भूला शाम को घर लौटे तो उसे भूला नहीं कहते इसीलिए आज भी हम जागृत हो जाएँ और जीव-जंतुओं पशुओं के दर्द और पीड़ा को संवेदनशीलता से पहचान कर उनके हित में कल्याणकारी कार्य कर अपने मानवीय धर्म निभाने का परिचय दे. हम पिछले दिनों गुजरात में शेरों और एमपी में चीतों के रिहैबिलिटेशन के माध्यम से पशुओं जानवरों की सुरक्षा चिंता, समर्थन की अपनी मंशा जाहिर कर चुके हैं.

विश्व पशु दिवस पशुओं को समर्पित एक दिन को संदर्भित करता है. हम सभी जानते हैं कि जानवर हमारे पारिस्थितिकी तंत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, वे न केवल हमारे जीवन को बेहतर बनाते हैं बल्कि वे मानव को दोस्ती का सही अर्थ भी सिखाते हैं. इसलिए, यह दिन हमें उनके अस्तित्व का उत्सव मनाने की अनुमति देता है.

अगर हम पशुओं के प्रति संवेदनशील और जागरूक हो जाएँ तो और क्या चाहिए. कुछ बातों को अपना कर हम इनकी मदद कर सकते हैं, जो इस दिन पर संगोष्ठी या वेबीनार आयोजित करने से ज्यादा महत्वपूर्ण है. हम देखते हैं कि अक्सर लावारिस गायें कचरे के ढेर से भोजन ढूँढ़ कर खाती हैं, जिनमें रोटी, सब्जी के छिलके, और अन्य चीजें शामिल होती हैं, हम अक्सर ये गलती करते हैं की छिलकों तथा अन्य बची सामग्री को पॉलिथिन में बाँधकर फेंक देते हैं. अब गाय थैली तो खोल नहीं सकती अतः वो उस सामग्री को थैली सहित ही खा जाती है, अनुमानतः हर साल भारत में हज़ारों गायों की मृत्यु पॉलीथिन खाने से होती है, विचार कीजिये की हमारी छोटी सी चूक बेजुबान को काल का घास बना देती है. ये हमारे द्वारा अनजाने में की जाने वाली क्रूरता ही है तो हम यहाँ से निराकरण शुरू कर सकते हैं, और किसी भी बची हुई खाद्य सामग्री को किसी स्वच्छ एवं पक्के फर्श पर रख दें और पॉलिथिन का इस्तेमाल न करें.

साथियों एक और चूक जो हमसे होती रही है वो ये कि हम कई बार घर की सफाई के दौरान या अन्य किसी मररम्मत के दौरान निकलने वाली धातु की वस्तुओं जैसे कील, काँच, फ्यूज बल्ब, डिस्पोजल सुई, नट बोल्ट



या अन्य नुकीली वस्तुओं को यँ ही खुले कचरे में फेंक देते हैं और उसे भूख प्यास से बेहाल जानवर खाने की तलाश में मुँह में ले लेते हैं परिणामतः मुख में घाव, पेट और आंतों में घाव और अंततः दुःखद मौत, हम इसे रोक सकते हैं, बस करना इतना सा है की इस तरह की नुकीली धातु, बल्ब, एक्सपायरी डेट्स की दवाइयाँ इत्यादि खुले में न फेंके इसकी बजाय उन्हें कबाड़ी को दें और दवाइयों को फ्लश में बहा दें. हमारी छोटी सी कोशिश इन्हे बीमार और घायल होने से बचा सकती है.

हम दैनिक जीवन में कई बार चमड़े से बनी वस्तुओं का प्रयोग करते हैं जैसे, पर्स, बेल्ट, जूते जैकेट इत्यादि, क्या हम जानते हैं चमड़ा उद्योग में कितने ही जानवरों को उनकी खाल के लिए खरीदा और मारा जाता है. विचार करें और तय करें की चमड़े की चीज़ों का अन्य विकल्प इस्तेमाल करें और चमड़े का बहिष्कार करें.

हम भारत में पशुओं की रक्षा में संविधान कानून कायदों नियमों को देखें तो, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के पास जानवरों पर अनावश्यक दर्द या पीड़ा रोकने के लिए और पशुओं के प्रति क्रूरता की रोकथाम के लिए पशु क्रूरता निवारण(पीसीए) अधिनियम, 1960 लागू करने का अधिकार है. भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51(ए) के मुताबिक हर जीवित प्राणी के प्रति सहानुभूति रखना भारत के हर नागरिक का मूल कर्तव्य है. भारतीय दंड संहिता की धारा 428 और 429 के मुताबिक कोई भी व्यक्ति किसी जानवर को पीटेगा, ठोकर मारेगा, उस पर अत्यधिक सवारी और बोझ लादेगा, उसे यातना देगा कोई ऐसा काम करेगा जिससे उसे अनावश्यक दर्द हो दंडनीय अपराध है. पशु क्रूरता निवारण अधिनियम और खाद्य सुरक्षा अधिनियम में इस बात का उल्लेख है कि कोई भी पशु (मुर्गी समेत) सिर्फ बूचड़खाने में ही काटा जाएगा. बीमार और गर्भधारण कर चुके पशु को मारा नहीं जाएगा. अगर कोई व्यक्ति किसी पशु को आवारा छोड़ कर जाता है तो उसको तीन महीने की सजा हो सकती है. बस ज़रूरी है, शासन प्रशासन को इन नियमों अधिनियम कानूनों को सख्ती से पालन करने की.

हम विश्व पशु दिवस पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की करें तो, शिक्षा और जागरूकता अभियान चलाने के लिए कार्यक्रम, विभिन्न जानवरों से संबंधित मुद्दों के बारे में बात करने और जागरूकता फैलाने के लिए कार्यशाला और सत्राजानवरों के लिए धन जुटाने के लिए संगीत कार्यक्रम और शो, बच्चों के लिए जानवरों को समझने के लिए स्कूलों में कार्यक्रम आयोजित करना, विभिन्न पशु घर खोलना, एक घटना जो जानवरों को अपनाने पर केंद्रित है, विभिन्न समाजों या लोगों, पालतू जानवरों, मालिकों और कई अन्य को लक्षित करने के लिए कार्यक्रम. रेबीज और अन्य बीमारियों के लिए टीकाकरण, निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच के लिए पशु चिकित्सालयों में कार्यक्रम, बड़ी संख्या में दर्शकों तक पहुँचने के लिए इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का उपयोग पशु कल्याण के लिए सभा और चर्चा, जागरूकता पैदा करने और पशु अधिकारों के लिए लड़ने के लिए विरोध और रैलियाँ.

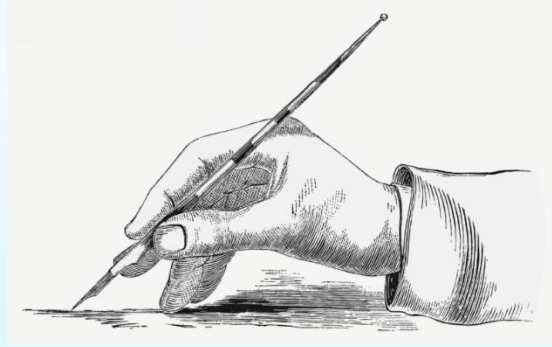
अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि मूक पशुओं की देखभाल करना मानवीय धर्म है. कुदरत की अद्भुत रचना पशुओं की देखभाल और उन्हें प्यार करें, पशुओं के दर्द और पीड़ा को संवेदनशीलता से पहचान कर उनके हित में कल्याणकारी कार्य करना उचित मानवीय धर्म है.

\*\*\*\*\*



# साहित्य का खजाना भारत में अनमोल है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी. महाराष्ट्र



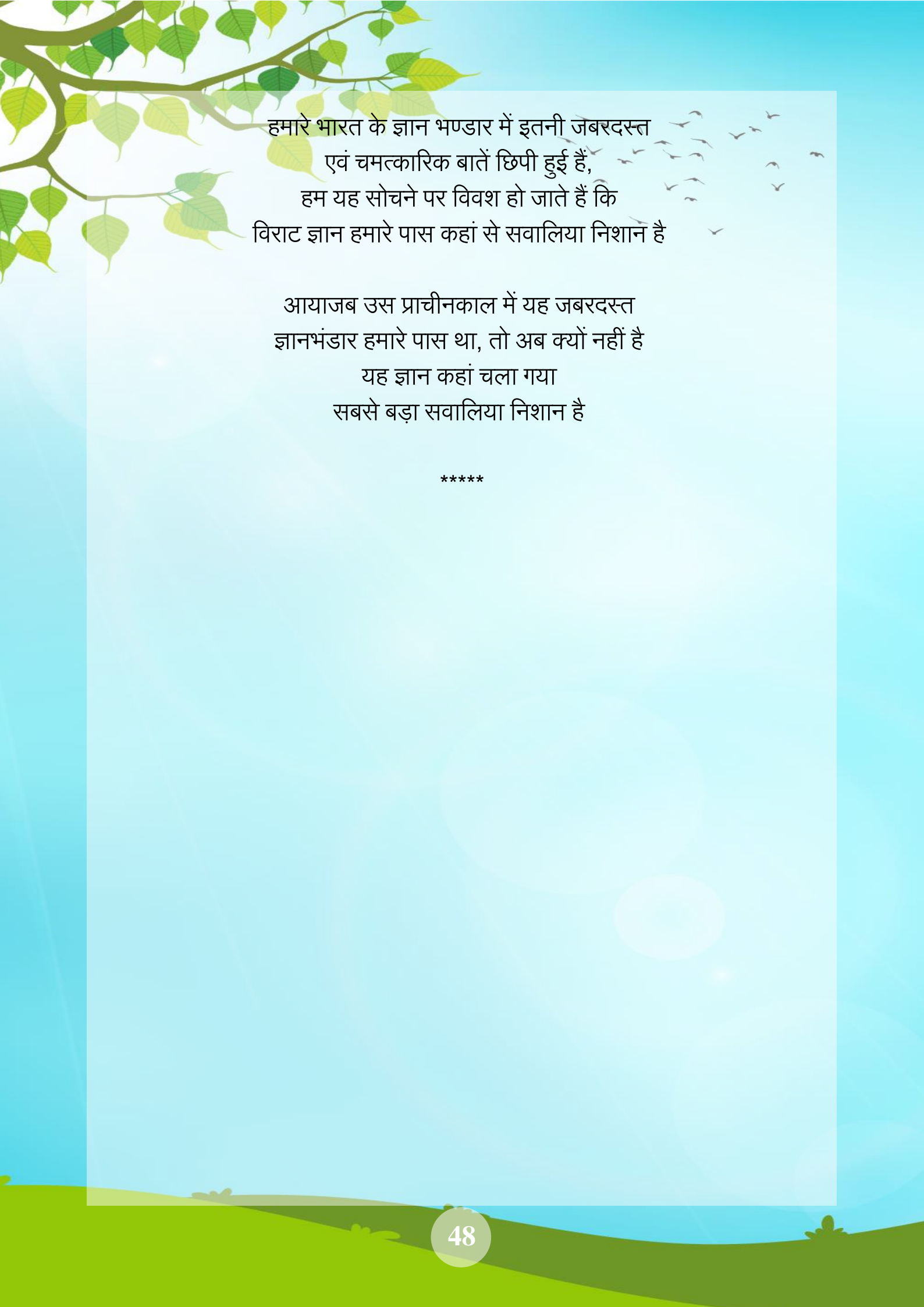
साहित्य का खजाना भारत में अनमोल है  
साहित्य को जीवंतमय बनाने में  
प्रिंट इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का महत्वपूर्ण रोल है  
कायम रखने में हमारे पूर्वजों का विशेष रोल है

सच्चाई को लेखनी से सलाम करते हैं  
उनकी लेखनी अस्त्र महत्वपूर्ण कलम है  
बुराई का धागा तीव्र कलम अस्त्र से काटते हैं  
लेखक कवि बुद्धिजीवी पत्रकार को सलाम है

साहित्य राष्ट्र की महानता  
और वैभव का दर्पण होता है  
साहित्य को आकार देने में संस्कृति  
और परंपराओं का महत्वपूर्ण रोल होता है

जो साहित्य और कविताएं सामाजिक कल्याण  
पर केंद्रित है वह कालजर्ई होती है  
यही कारण है रामायण और महाभारत  
जैसे महाकाव्य आज भी हमें प्रेरणा देते हैं





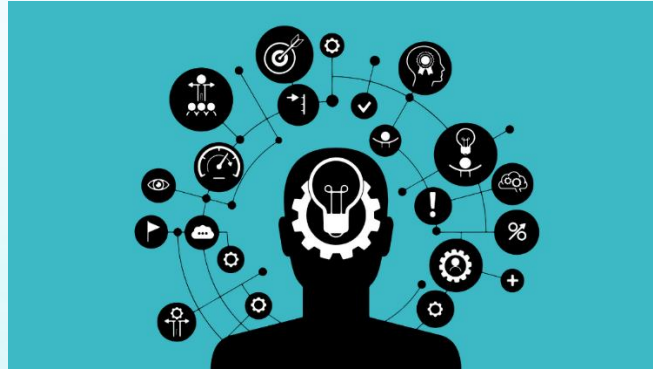
हमारे भारत के ज्ञान भण्डार में इतनी जबरदस्त  
एवं चमत्कारिक बातें छिपी हुई हैं,  
हम यह सोचने पर विवश हो जाते हैं कि  
विराट ज्ञान हमारे पास कहां से सवालिया निशान है

आयाजब उस प्राचीनकाल में यह जबरदस्त  
ज्ञानभंडार हमारे पास था, तो अब क्यों नहीं है  
यह ज्ञान कहां चला गया  
सबसे बड़ा सवालिया निशान है

\*\*\*\*\*

# ज्ञान की बातें

रचनाकार-श्रीमती सरोजनी साहू, सारंगढ़



जीवन एक उपहार है.  
उसे स्वीकार करो.  
जीवन दुखों से परिपूर्ण है,  
सहनशक्ति पैदा करो.  
जीवन एक अवसर है  
उचित लाभ उठाओ.  
जीवन एक यात्रा है  
सफलतापूर्वक पूरा करो.  
जीवन एक प्रतिज्ञा है.  
उसका पालन करो.  
जीवन एक अनुभूति है,  
ज्ञान पूर्वक अनुभव प्राप्त करो.

\*\*\*\*\*

# पिता

रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली



तपती गर्मी में पिता का खून, पसीना बन टपकता है.  
हथेली और पैरों के छाले, दुःख की गाथा कहता है.

अपनों के भविष्य बनाते, मिट गयी हाथों की रेखाएँ.  
रात में दर्द से चीख उठती है, मन की सारी आशाएँ.

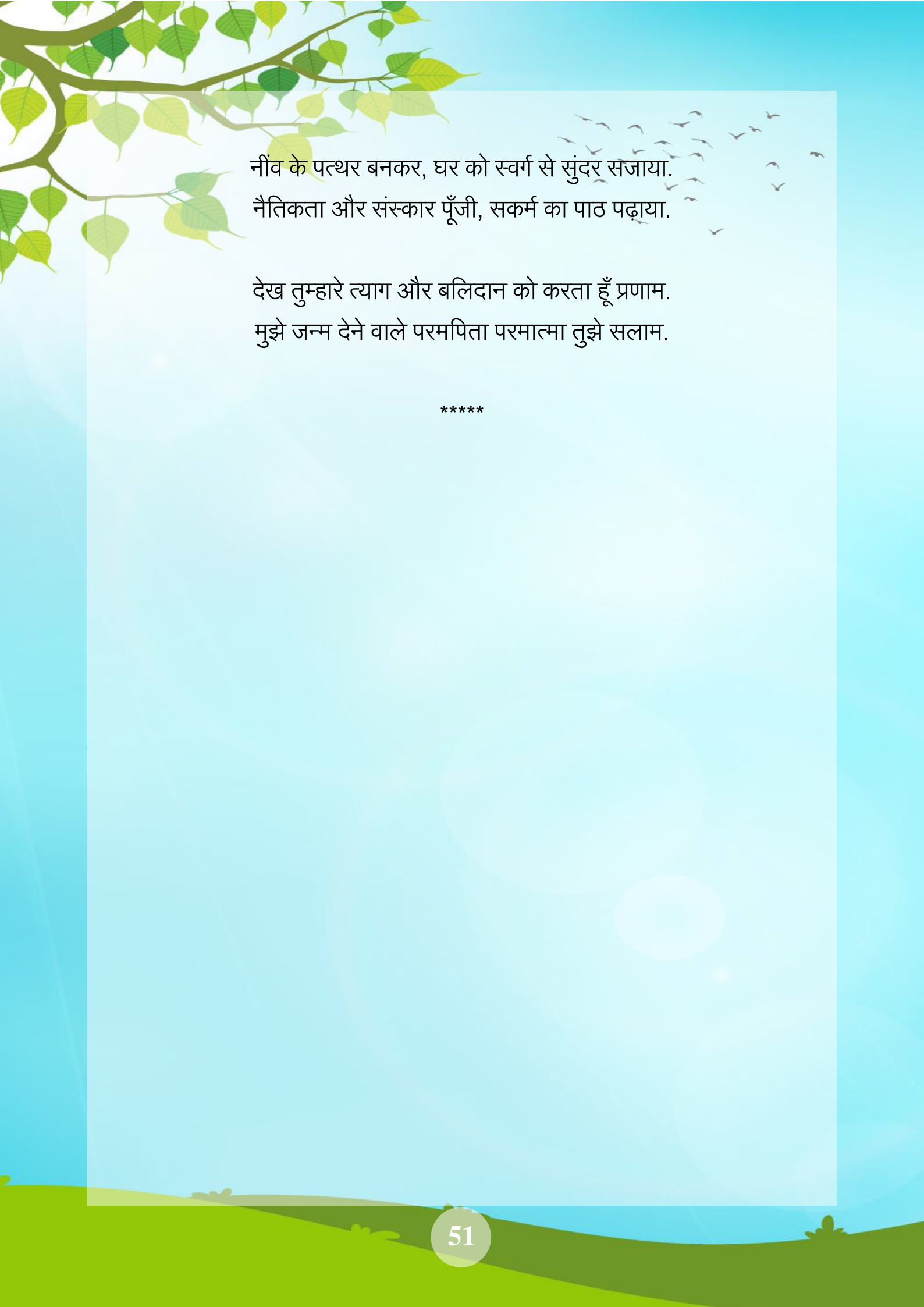
जवानी में बुढ़ापा आया, सफेद हो गये शरीर के बाल.  
पेट की आग बुझाने में, खुद का नहीं है कुछ ख्याल.

बह रही है आँखों से आँसू, वजन से फुल रही है साँसें.  
चेहरे पर मेहनत की झुर्रियाँ, पीड़ा की करती है बातें.

जिम्मेदारी का भारी बोझ से, झुक गयी कमर की हड्डी.  
जीवन भर काम करके, कुटुंब समर्पित नोटों की गड्डी.

इच्छाओं को दफन कर, अपनी खुशी बच्चों को दिया.  
प्यार भरी मीठी बातें करके, सबके मन को मोह लिया.





नींव के पत्थर बनकर, घर को स्वर्ग से सुंदर सजाया.  
नैतिकता और संस्कार पूँजी, सकर्म का पाठ पढ़ाया.

देख तुम्हारे त्याग और बलिदान को करता हूँ प्रणाम.  
मुझे जन्म देने वाले परमपिता परमात्मा तुझे सलाम.

\*\*\*\*\*

# संपर्क और कनेक्शन

रचनाकार- वीरेंद्र बहादुर सिंह, नोएडा



एक दिन ऑफिस में मनोवैज्ञानिक पारिवारिक बातें कर रहा था, तभी एक साफ्टवेयर इंजीनियर युवक ने उससे पूछा, "सर, यह संपर्क और कनेक्शन क्या होता है?"

मनोवैज्ञानिक ने उस युवक से पूछा, "आप के घर में कौन-कौन है?" युवक ने कहा, "पिता का देहांत हो चुका है, माँ हैं. तीन भाई और एक बहन है. सभी की शादियाँ हो चुकी हैं."

मनोवैज्ञानिक ने अगला सवाल किया, "क्या आप अपनी माँ से बातें करते हैं? आपने अपनी माँ से आखिरी बार कब बात की थी?"

एक महीने पहले. सकुचाते हुए युवक ने कहा.

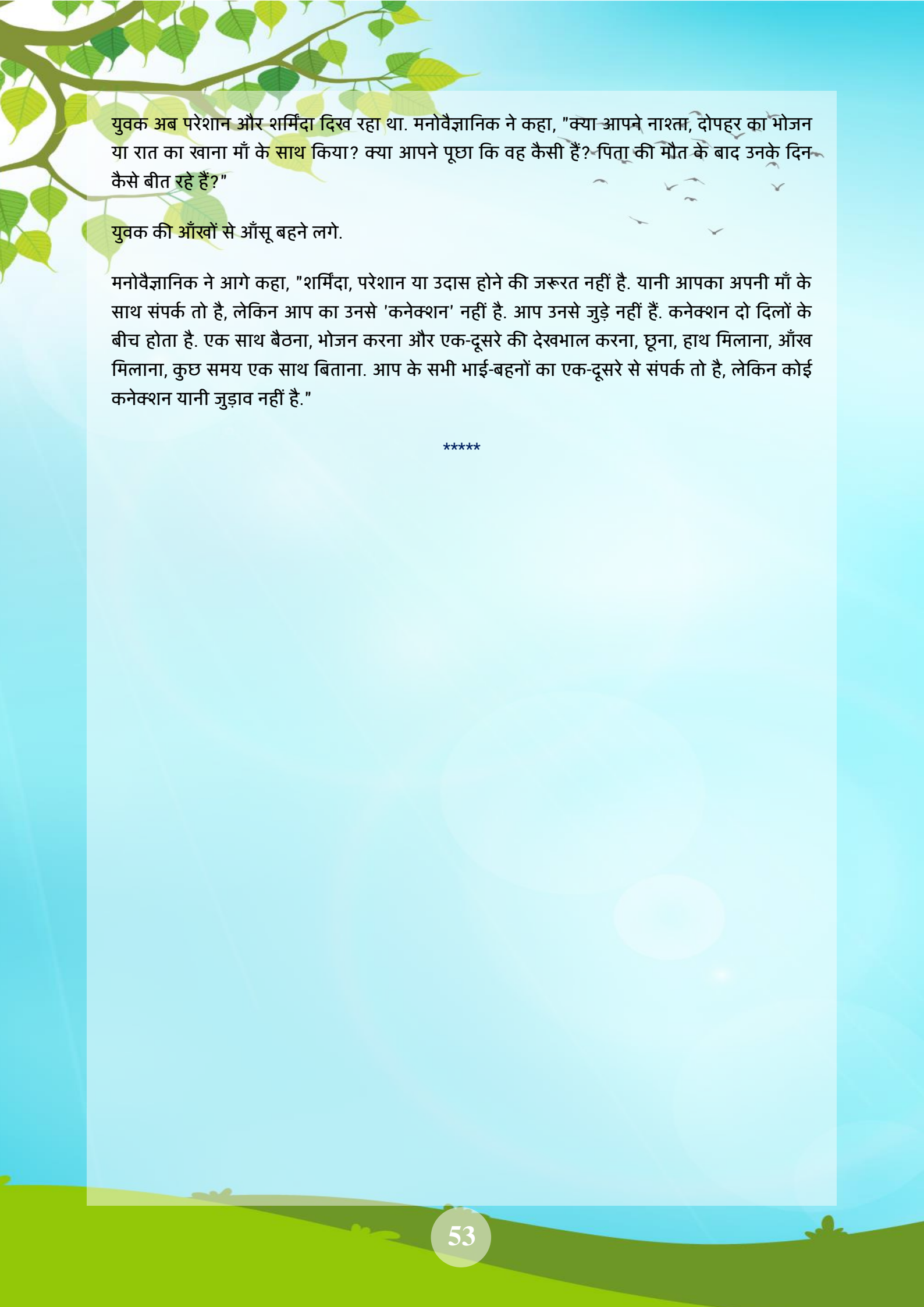
आप ने आखिरी बार परिवार के साथ बैठ कर कब बातचीत की थी या सब के साथ बैठ कर कब खाना खाया था?

युवक ने कहा: "मैंने आखिरी बार दो साल पहले त्योहार पर बैठ कर सब के साथ खाना खाया था और बातचीत की थी."

तुम सब कितने दिन साथ रहे?

माथे पर पसीना पोंछते हुए युवक कहा, "तीन दिन ..."

आपने अपनी माँ के पास बैठ कर कितना समय बिताया?



युवक अब परेशान और शर्मिंदा दिख रहा था. मनोवैज्ञानिक ने कहा, "क्या आपने नाश्ता, दोपहर का भोजन या रात का खाना माँ के साथ किया? क्या आपने पूछा कि वह कैसी हैं? पिता की मौत के बाद उनके दिन कैसे बीत रहे हैं?"

युवक की आँखों से आँसू बहने लगे.

मनोवैज्ञानिक ने आगे कहा, "शर्मिंदा, परेशान या उदास होने की जरूरत नहीं है. यानी आपका अपनी माँ के साथ संपर्क तो है, लेकिन आप का उनसे 'कनेक्शन' नहीं है. आप उनसे जुड़े नहीं हैं. कनेक्शन दो दिलों के बीच होता है. एक साथ बैठना, भोजन करना और एक-दूसरे की देखभाल करना, छूना, हाथ मिलाना, आँख मिलाना, कुछ समय एक साथ बिताना. आप के सभी भाई-बहनों का एक-दूसरे से संपर्क तो है, लेकिन कोई कनेक्शन यानी जुड़ाव नहीं है."

\*\*\*\*\*



# होगे नवा बिहान

रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली

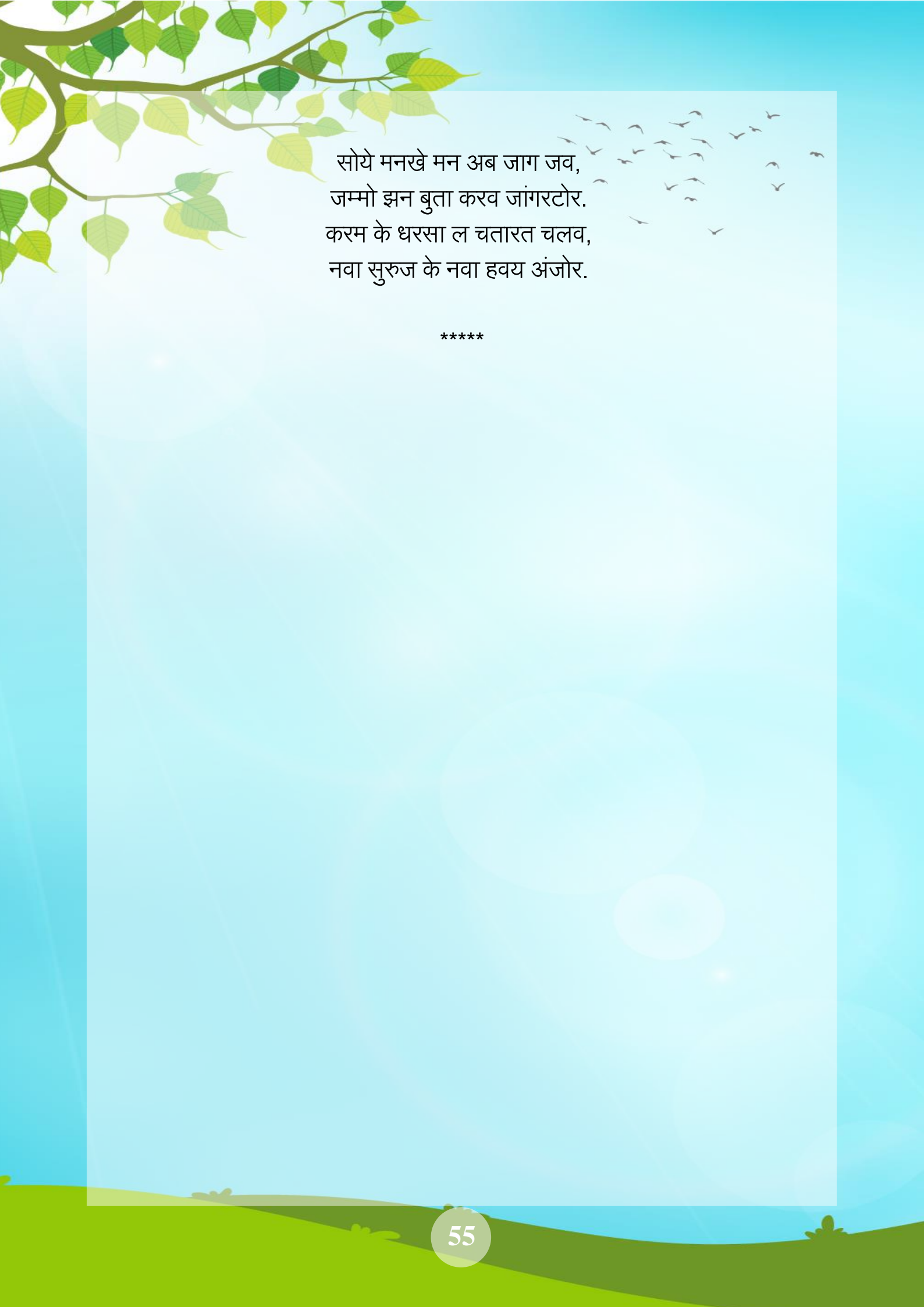


कुकरा बासय छानही चघके,  
गरुआ मन जावत हैं दर्ईहान.  
चिरई मन रुख म गीत गावयं,  
संगवारी अब होगे नवा बिहान.

नांगर धरके किसान निकलय,  
खेत म सोनहा धान बोयें बर.  
पुछी डोलावय कमिहा बईला,  
बुता करके कांदी, पैरा खाये बर.

खंती कोड़े जावय खनकोड़वा,  
कुदरा म चानय करिया पार ल.  
गारय पछिना संझा-बिहनिया,  
दतवन टेंवय बमभरी डार ल.

पेज धरके आवय पेजहारिन,  
धरसा म कनिहा ल मटकावत.  
मैना कस भाखा गुरतुर हवय,  
ददरिया मया-पिरीत के गावत.



सोये मनखे मन अब जाग जव,  
जम्मो झन बुता करव जांगरटोर.  
करम के धरसा ल चतारत चलव,  
नवा सुरुज के नवा हवय अंजोर.

\*\*\*\*\*

# पिता

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र

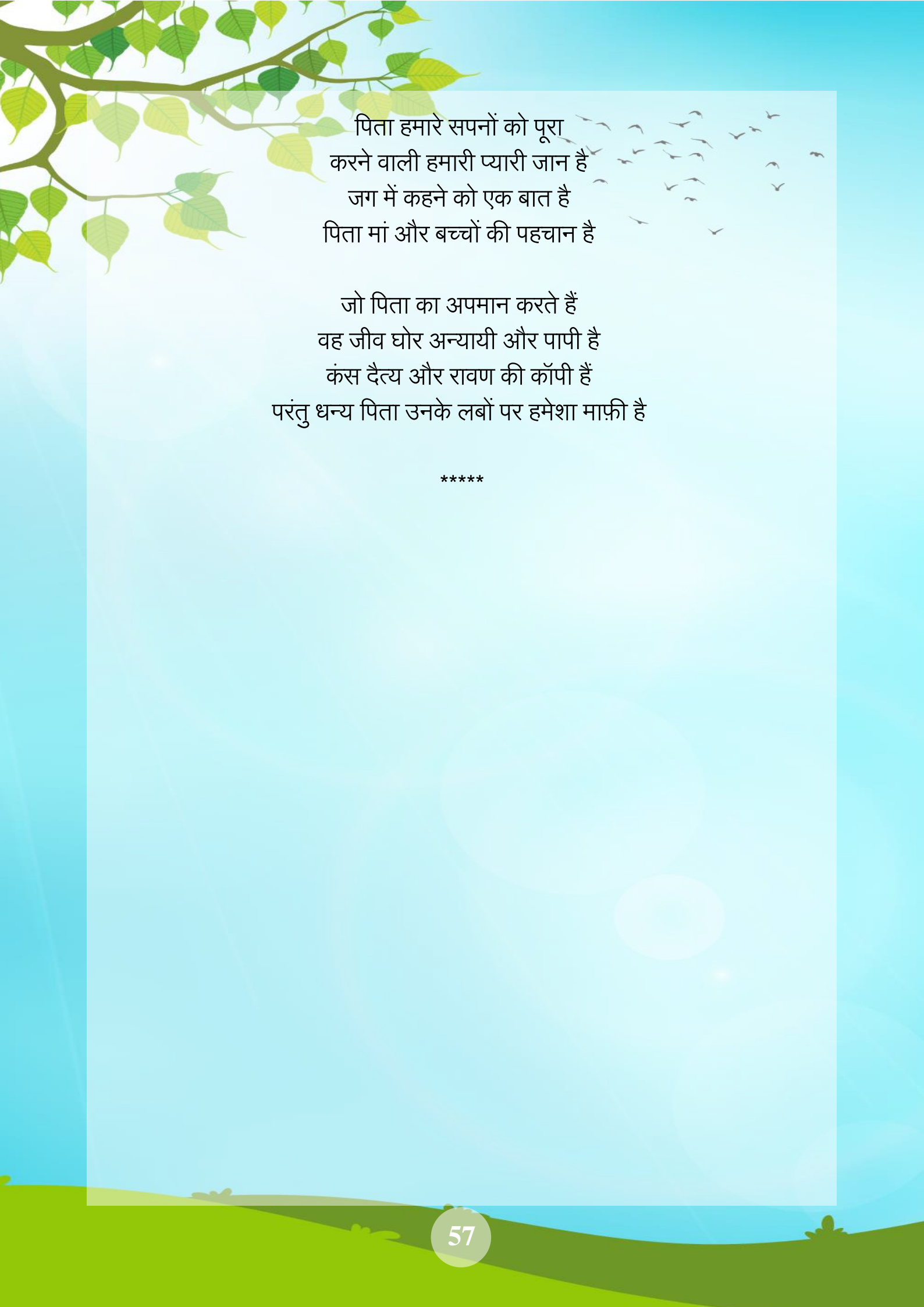


पिता ज़मीर पिता जागीर है  
पिता ईश्वर अल्लाह का ही एक रूप है  
जिसके पास पिता है  
उसकी तकदीर बुलंद है

पिता परिवार की अग्रणी आस है  
जिंदगी में पिता का ओहदा खास है  
परिवार का खास प्यारा बॉस है  
पिता एक उम्मीद एक आस है

पिता जिम्मेदारियों की गाड़ी से  
लदा हुआ खास सारथी है  
नींद लगे तो पेट पर सुलाने वाला  
हमदर्द साया और बिछौना है





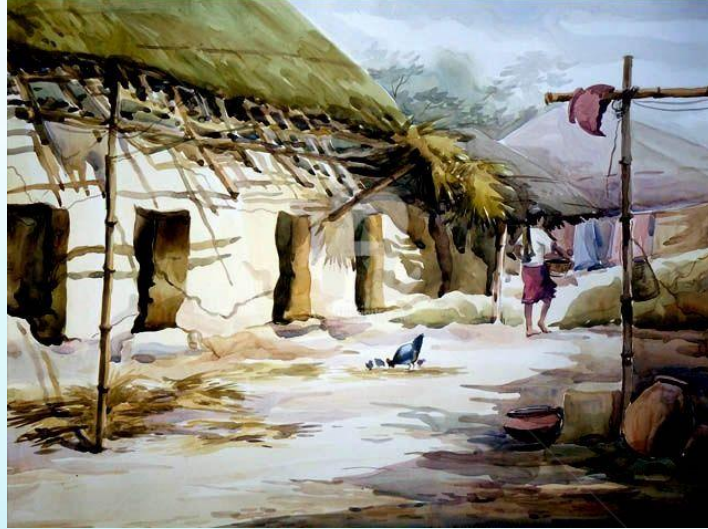
पिता हमारे सपनों को पूरा  
करने वाली हमारी प्यारी जान है  
जग में कहने को एक बात है  
पिता मां और बच्चों की पहचान है

जो पिता का अपमान करते हैं  
वह जीव घोर अन्यायी और पापी है  
कंस दैत्य और रावण की कौपी हैं  
परंतु धन्य पिता उनके लबों पर हमेशा माफ़ी है

\*\*\*\*\*

# सुन्ना मोर गाँव

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद



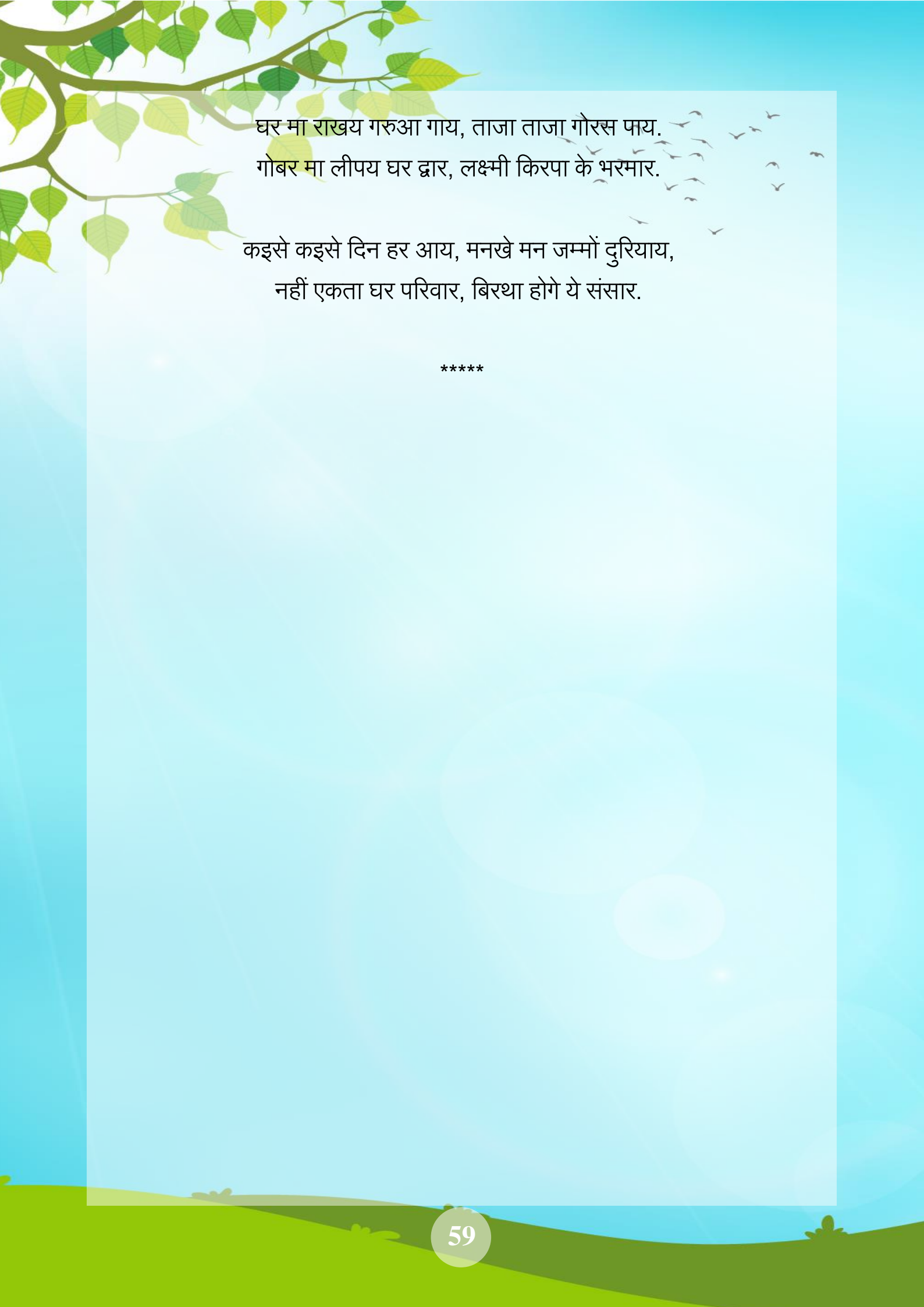
सुनलव संगी सुनव मितान, देव थोरिक येती ध्यान.  
कलजुग के कर लौ पहिचान, मनखे हावय बड़ परशान.

गिल्ली डंडा फुगड़ी रेल, नइ होवय अब कखरो मेल.  
कहाँ लुकागे जम्मों खेल, घर मा खुसरे लगथे जेल.

अब्बड़ सुन्ना लागे खोर, करे नहीं कोनो हर शोर.  
राँय राँय के दिन हर आय, गरमी मा मनखे उसनाय.

कहाँ गँवागे सुग्घर गाँव, नंदावत हे ईखरो नाँव.  
बबा कका मन रहे सियान, बइठे चौरा बाँटय ज्ञान.

आमा अमली लावय टोर, चार चिरौंजी गुठलू फोर.  
तेंदू महुआ कुरू जाम, बेचय लइका पावय दाम.



घर मा राखय गरुआ गाय, ताजा ताजा गोरस पाय.  
गोबर मा लीपय घर द्वार, लक्ष्मी किरपा के भरमार.

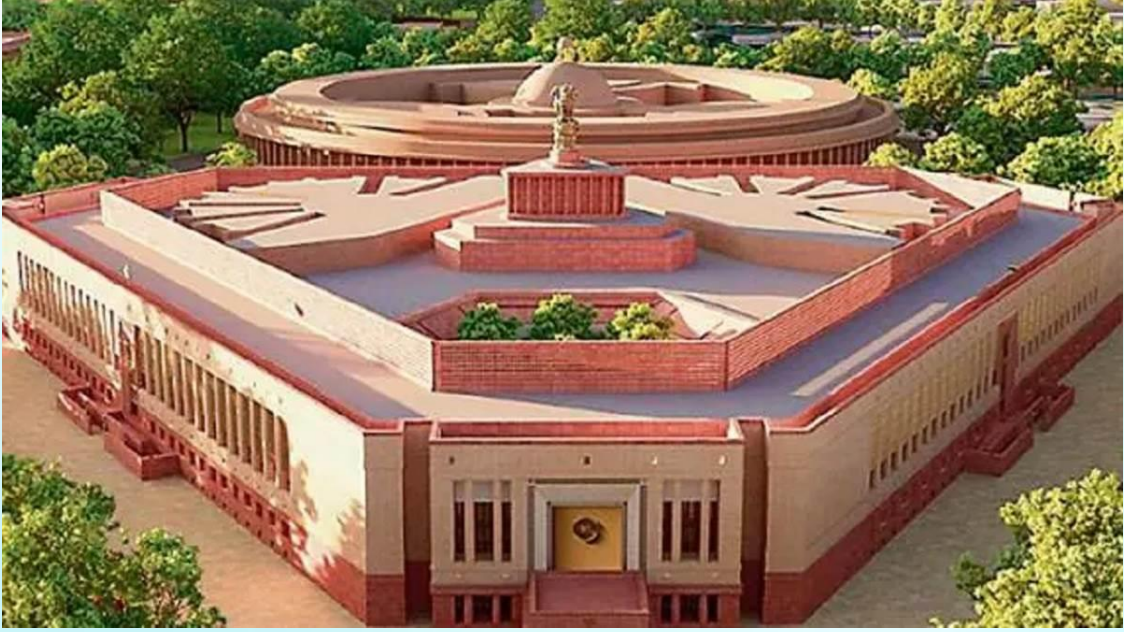
कइसे कइसे दिन हर आय, मनखे मन जम्मों दुरियाय,  
नहीं एकता घर परिवार, बिरथा होंगे ये संसार.

\*\*\*\*\*



# नया संसद भवन लोकतंत्र का मंदिर

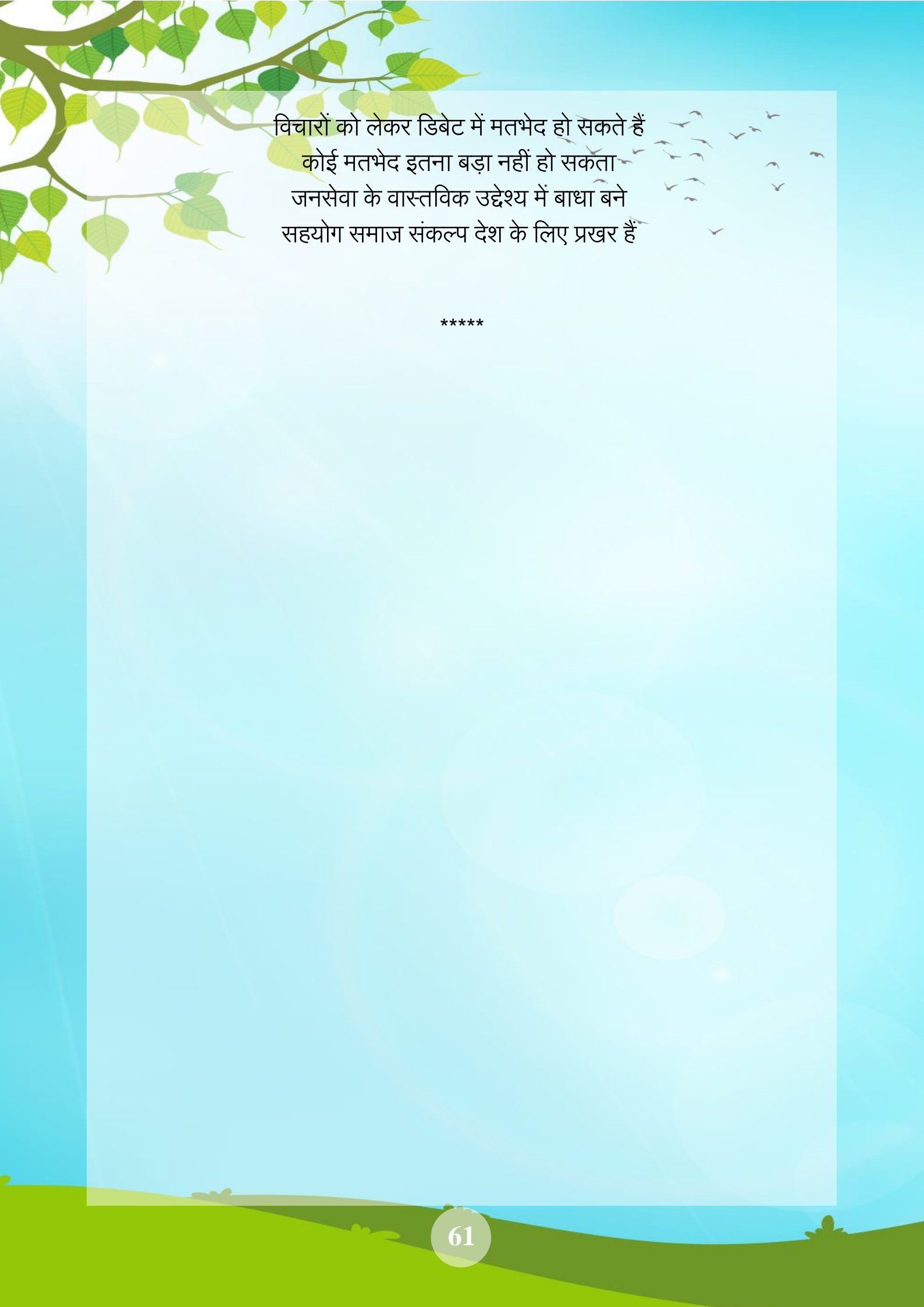
रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



ग्रामसभा विधानसभा सांसद  
लोकतंत्र के मंदिर हैं इस मंदिर में  
श्रद्धा की ऊंची भावना से आचरण करें  
जैसे ईश्वर अल्लाह के शरण हैं

संसद भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था  
का सर्वोच्च शिखर है  
जनहित के मुद्दों पर चर्चा करने  
कानून बनाने में आवाज मुखर है

ग्रामसभा विधानसभा संसद में निर्वाचित  
प्रतिनिधि की एक ही प्राथमिकता प्रखर है  
लोगों के कल्याण और राष्ट्रहित काम करना है  
यही संकल्प लेकर आना प्रखर है



विचारों को लेकर डिबेट में मतभेद हो सकते हैं  
कोई मतभेद इतना बड़ा नहीं हो सकता  
जनसेवा के वास्तविक उद्देश्य में बाधा बने  
सहयोग समाज संकल्प देश के लिए प्रखर हैं

\*\*\*\*\*

# अधूरा कर्तव्य

रचनाकार- पिकी सिंघल, दिल्ली



आज रूपल की शादी है. पूरा घर दुल्हन की तरह सज सँवर कर मुस्कुरा रहा है. शहनाइयाँ बज रही हैं.

रूपल की सहेलियाँ उसे तैयार कर रही हैं. गौरवर्णी रूपल आज स्वर्ग से उतरी अप्सरा के समान सुंदर लग रही है. सहेलियों के हँसी के फव्वारे भी चल रहे हैं.

रूपल शांता की इकलौती बेटी है. रूपल के पिता आर्मी में थे. दो वर्ष पहले बार्डर पर चीनी सैनिकों से मुकाबला करते समय वीर गति को प्राप्त हो गये. आज शांता नौकर चाकरो को आदेशित करती हुई इधर-उधर दौड़ भाग कर रही हैं. बारात आने की सूचना मिलते ही वह बिटिया के कक्ष की ओर भागी. रूपल को देखते ही उसकी आँखें भर आयीं. मन में सोचने लगी आज मेरी बच्ची परायी हो जायेगी. काश आज तेरे पापा होते . . . .

रूपल - "मम्मी, आप अभी तक तैयार नहीं हुई हो. बारात आने वाली है."

शांता - "मुझे तैयार होने का समय ही नहीं मिला बेटा. मैं ये गुलाबी लहंगा पहन लेती हूँ.


शांता भी अप्रतिम सौंदर्य की धनी है. गुलाबी लहंगा उनके सौन्दर्य में चार चाँद लगाने लगा.

रूपल - "मम्मी, आप बहुत ही प्यारी लग रही हो. बस ये गुलाबी लिपिस्टिक लगा लीजिये." रूपल चहक कर बोली

शांता - "नहीं बेटा, मैं लिपिस्टिक नहीं लगाऊँगी."

रूपल - "मम्मी ये मोती की माला का सेट पहनो और ये गुलाबी लिपिस्टिक लगाओ. प्लीज मम्मी, लगा लीजिये न."





शांता गुलाबी लिपिस्टिक लगाने के बाद बहुत ही सुंदर लग रही थीं.

शांता अपने पतिदेव की तस्वीर को निहारने लगीं. मेजर विक्रम सिंह आखिरी बार लद्दाख से यही गुलाबी लहंगा और गुलाबी लिपिस्टिक लेकर आये थे.

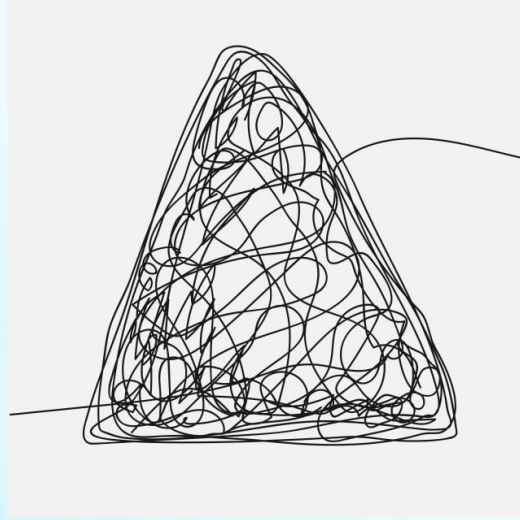
शांता की आँखों से आँसुओं की धार बहने लगी. मन ही मन वे बोलीं देखिये ,आपकी बेटी आज कितनी सुंदर लग रही है.आपका अधूरा कर्तव्य आज मुझे पूरा करना है. रूपल को हमेशा सौभाग्यवती रहने का आशीर्वाद दे दीजिये.

रूपल मम्मी को भावुक होते देख कर उनके आँसुओं को पोंछने लगी.शांता ने अपनी बेटी को आलिंगन में भर लिया.

\*\*\*\*\*

# उलझन

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद



सोच रही हूँ बैठे बैठे, आज किधर मैं जाऊँ.  
है थोड़ी सी उलझन साथी, कैसे मैं सुलझाऊँ.  
रहते मानव इस दुनिया में, पर लगते बेगाने.  
व्यस्त जिंदगी में डूबे हैं, नहीं यहाँ पहचाने.

कदम कदम पर वादा करते, हम राह बनायेंगे.  
उड़ें गगन में पंख पसारे, हिम्मत बन जायेंगे.  
बड़े बड़े सब बातें करते, यहाँ नहीं है अपना.  
रात गई अरु बात गई जी, सभी दिखाते सपना.

कभी अकेला मन है रोता, कभी हृदय घबराता.  
घटित हुई घटनाएँ कितने, समझ नहीं कुछ आता.  
करूँ अलग कुछ इस दुनिया में, अपना नाम कमाऊँ.  
जितनी भी उलझन है साथी, खुद से हल कर जाऊँ.

\*\*\*\*\*

# विश्व तंबाकू निषेध दिवस

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



वैश्विक स्तरपर हर देश की जड़ें हिला देने और पीढ़ियों तक इनकी त्रासदी याद रखी जाने वाली भयंकर महामारी कोविड-19 पर करीब-करीब नियंत्रण कर लिया गया है जिसका अंदेशा इससे लगाया जा सकता है कि डब्ल्यूएचओ द्वारा कुछ दिनों पूर्व इस माहमारी को वैश्विक महामारी के टैग से हटा दिया गया है. परंतु फिर भी हम देखते हैं कि मानवीय जीवनशैली बदल चुकी है, जिसमें हर व्यक्ति सतर्क हो चुका है जिससे हमें विश्वास हो गया है कि हम चाहे तो अपने स्वास्थ्य से समझौता नहीं कर अपनी आदतें अपनी जीवनशैली को बदल सकते हैं. अब चूंकि आज 31 मई 2023 को हम विश्व तंबाकू विरोधी दिवस मना रहे हैं, इसीलिए हमें तंबाकू छोड़ने या उसके मिश्रित चीजों का सेवन नहीं करने का संकल्प भी अपनी इस नई जीवनशैली में जोड़ना होगा क्योंकि अनेक रिपोर्ट व मीडिया में आई डिबेट मैं यह माना जाता है कि इससे मुख का कैंसर रूपी भयंकर बीमारी होती है जिसमें जीवन हानि होने की पूरी संभावना होती है, यही कारण है कि अनेक राज्यों द्वारा तंबाकू और उसके से बनी अन्य वस्तुओं की बिक्री संग्रहण सेवन पर रोक लगाई गई है. अभी हाल ही में 25 अप्रैल 2023 को माननीय सुप्रीम कोर्ट ने मद्रास हाईकोर्ट के आदेश के ऑपरेटिव हिस्से पर रोक लगा दी, जिसमें तमिलनाडु राज्य के खाद्य सुरक्षा आयुक्त द्वारा गुटका, पान मसाला, स्वादिष्ट या सुगंधित खाद्य उत्पादों या चबाने योग्य खाद्य उत्पादों, जिसमें तम्बाकू या निकोटिन हो, की बिक्री पर प्रतिबंध लगाने वाली अधिसूचना को रद्द कर दिया गया था. इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध है जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, आओ तंबाकू का सेवन छोड़ने की प्रतिबद्धता का संकल्प करें और प्रतिदिन तंबाकू निषेध दिवस के रूप में मनाए.

साथियों बात अगर हम, हर साल, विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा 31 मई को विश्व तंबाकू निषेध दिवस मनाने की करें तो, उनका लक्ष्य तंबाकू के उपयोग के जोखिमों के बारे में जागरूकता फैलाना है और हम दुनिया को तंबाकू मुक्त कैसे बना सकते हैं. तंबाकू से होने वाली बीमारियों से हर साल करीब 60 लाख लोगों की मौत होती है. और यह संख्या 2030 तक बढ़कर 8 मिलियन से अधिक होने का अनुमान है. लेकिन यह कोई गारंटी नहीं है. सतत विकास एजेंडा का उद्देश्य गैर-संक्रामक रोगों से होने वाली मौतों को एक तिहाई तक कम करना है. तम्बाकू से जुड़ी बीमारियाँ सूची में हैं, इसलिए यदि हम लक्ष्य तक पहुँचते हैं, तो 2030 जश्न मनाने का वर्ष होगा जो, न केवल हमारे स्वास्थ्य के लिए, बल्कि हमारे बटुए के आकार के लिए भी. हमारा औसत धूम्रपान



करने वाला सालाना सिगरेट पर करीब 4, हजार डॉलर खर्च करता है. उन सभी शानदार छुट्टियों की कल्पना करें जिनका हम उस पैसे से आनंद ले सकते हैं.

हम वर्ष 2023 की थीम को देखें तो, इस वर्ष, 2023, विश्व तंबाकू निषेध दिवस की थीम हमें भोजन की आवश्यकता है, तंबाकू की नहीं है, जिसका उद्देश्य तंबाकू उत्पादकों को विपणन विकल्पों और उत्पादन विकल्पों के बारे में जागरूकता प्रदान करके टिकाऊ और पौष्टिक फसलों को अपनाना है. इसके अलावा, विषय तम्बाकू उद्योग की तोड़फोड़ की पहल के प्रयासों को उजागर करने पर केंद्रित है, जो तम्बाकू को स्थायी फसलों से बदलने के लिए है, जिससे वैश्विक खाद्य संकट पैदा होता है. इस दिन, सरकारी प्राधिकरण और नीति-निर्माता खाद्य संकट को रोकने के लिए खाद्य फसलों को उगाने के लिए तम्बाकू किसानों के लिए उपयुक्त नीतियों, रणनीतियों को तैयार करते हैं और बाजार की स्थितियों को सक्षम करते हैं. इसके अलावा, तम्बाकू फसलों को उगाने से रोकने के प्रयासों को बढ़ावा देने के लिए हरित कार्यकर्ता और सार्वजनिक सामाजिक कल्याण संघ हाथ मिलाते हैं. साथियों बात अगर हम विश्व तंबाकू दिवस के महत्व की करें तो, दुनिया भर में सालाना करीब 35 लाख हेक्टेयर जमीन तंबाकू की खेती के लिए इस्तेमाल की जाती है. तंबाकू की खेती के कारण वार्षिक वनों की कटाई का अनुमान 2 लाख हेक्टेयर है. तम्बाकू उत्पादन का पारिस्थितिक तंत्र पर काफी अधिकविनाशकारी प्रभाव पड़ता है क्योंकि अन्य कृषि गतिविधियों जैसे मक्का उगाने और पशुधन चराई की तुलना में तम्बाकू के खेतों में मरुस्थलीकरण (जैविक उत्पादकता में कमी) की संभावना अधिक होती है. इसके अलावा, तम्बाकू उगाने के लिए रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के भारी उपयोग की आवश्यकता होती है, जिसके परिणामस्वरूप मिट्टी की उर्वरता कम हो सकती है, अन्य खाद्य फसलों का उत्पादन कम हो सकता है. यदि तम्बाकू को व्यावसायिक फसल के रूप में उगाया जाता है तो गरीब और मध्यम आय वाले देशों में सतत खाद्य उत्पादन खतरे में पड़ सकता है. सबसे बड़े तम्बाकू उगाने वाले क्षेत्रों में अधिकांश (90 फीसदी) निम्न और मध्यम आय वाले देश हैं, जहाँ चार देश कम आय वाले खाद्य-घाटे वाले देशों की श्रेणी में हैं. उपरोक्त परिदृश्यों के आलोक में, तम्बाकू की खेती को रोकने और अन्य खाद्य फसलों की खेती के लिए किसानों की सहायता करने के लिए विधायी कार्रवाई की तत्काल आवश्यकता है. विश्व तम्बाकू निषेध दिवस वार्षिक विषयों के साथ अभियानों का संचालन करके उपर्युक्त सिद्धांतों को सफलतापूर्वक प्राप्त करता है. हम तंबाकू से पर्यावरण को नुकसान को देखें तो, वैश्विक स्तर पर हर साल लगभग 35 लाख हेक्टेयर भूमि तम्बाकू उगाने के लिए नष्ट कर दी जाती है. वैश्विक स्तर पर हर साल लगभग 4.5 लाख करोड़ सिगरेट बट्स का सही तरीके से निपटान नहीं किया जाता है. हर साल 80 करोड़ किलो जहरीला कचरा पैदा करता है और हजारों रसायनों को हवा, पानी और मिट्टी में छोड़ता है. तम्बाकू की खेती के लिए बड़ी मात्रा में पानी का उपयोग, ग्रह से पानी की कमी होती है.

हम मद्रास हाईकोर्ट के तंबाकू संबंधी छूट पर सुप्रीम कोर्ट की रोक को देखें तो, दो जजों की खंडपीठ ने संकेत दिया कि प्रतिवादी जनता के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक वस्तुओं को बेच रहे हैं. उत्तरदाताओं के वकील द्वारा हाईकोर्ट के आदेश पर रोक लगाने के खिलाफ तर्क दिए जाने के बाद यह टिप्पणी की गई. मद्रास हाईकोर्ट ने जनवरी में खाद्य सुरक्षा के राज्य आयुक्त द्वारा गुटका, पान मसाला, सुगंधित या सुगंधित खाद्य उत्पादों या तंबाकू या निकोटीन युक्त चबाने योग्य खाद्य उत्पादों की बिक्री पर प्रतिबंध लगाने वाली अधिसूचना को रद्द कर दिया. यह नोट किया गया कि खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम और सिगरेट और अन्य तंबाकू उत्पाद (व्यापार और वाणिज्य, उत्पादन, आपूर्ति और वितरण के विज्ञापन और विनियमन का निषेध) अधिनियम, 2003 [कोटपा] दोनों में तंबाकू उत्पादों पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने का प्रावधान नहीं है. राज्य सरकार ने 2013 में खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम, 2006 के तहत अस्थायी प्रावधान का उपयोग करते हुए तंबाकू और गुटखा उत्पादों पर प्रतिबंध लगाया. बाद में विभिन्न अधिसूचनाओं के माध्यम से प्रतिबंध को हर साल बढ़ाया गया.

\*\*\*\*\*

# भारत को आत्मनिर्भर बनाना है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



भारत की संस्कृति व मिट्टी में ही है  
सत्यनिष्ठा का भाव तभी तो  
सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता अभियान में  
साथ देकर भारतीयता का फ़र्ज़ निभा रहे हैं

भारत को आत्मनिर्भर बनाना है  
प्रोत्साहन देकर संकल्प ले रहे हैं  
वेबिनार डिबेट प्रतियोगिताएं शुरू है  
संकल्पों का दौर तेज़ी से शुरू है

भारत @ 75 के उपलक्ष में  
कार्यक्रमों के आयोजन हो रहे हैं  
सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता के  
जागरूकता कार्यक्रम हो रहे हैं

वोकल फॉर लोकल की अपील  
पीएम हर संबोधन में कर रहे हैं  
जनता सत्यनिष्ठा से साथ देकर  
भारत निर्मित सामान अपना रहे हैं

\*\*\*\*\*

# गर्मी: आया मौसम हिट स्ट्रोक का

रचनाकार- स्नेहा सिंह, नोएडा



गर्मी के मौसम में शरीर का तापमान बढ़ने की संभावना बढ़ जाती है. तेज धूप के कारण या किसी बाहरी वजह से अगर मनुष्य के शरीर का तापमान 104 डिग्री फारेनहाइट अथवा 40 डिग्री सेल्सियस से अधिक हो जाता है तो इसे हीट स्ट्रोक अथवा लू लगना कहा जाता है.

0 कारण : हीट स्ट्रोक के कारणों में वातावरण में गर्मी बढ़ जाना महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है पर इसके अलावा एक कारण क्षमता से अधिक श्रम या व्यायाम करता भी है.

0 लक्षण : जब किसी को हीट स्ट्रोक होता है तो इसमें मुख्य रूप से

- \* सिर में दर्द
- \* चक्कर आना
- \* आँखों के आगे अँधेरा छाना
- \* होश खो देना
- \* दौरा आना
- \* बेहोश हो जाने जैसे लक्षण देखने को मिलते हैं

इसके अलावा भी कुछ लक्षण देखने को मिलते हैं जैसे

- \* स्नायुओं में दर्द
- \* थकान का अनुभव
- \* शरीर में कमजोरी का अनुभव
- \* पेशाब कम होना
- \* मुँह सूखना
- \* दस्त-उलटी होने जैसे लक्षण सामान्य रूप से देखने को मिलते हैं.



## 0 काॅम्पलीकेशन

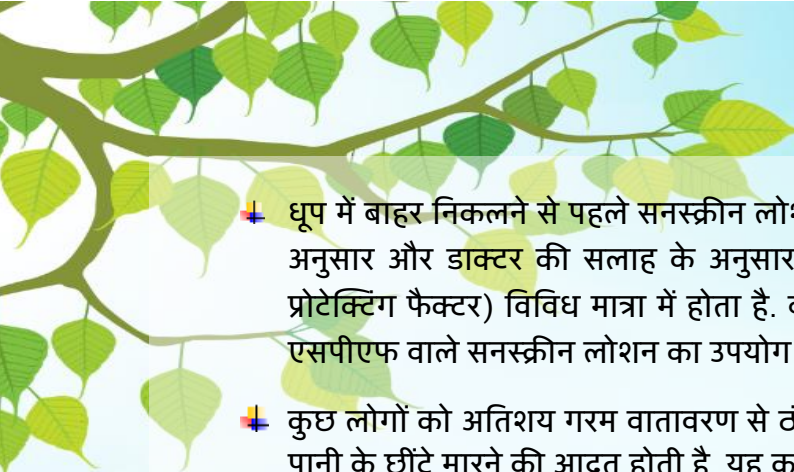
हीट स्ट्रोक में दिखाई देने वाले काॅम्पलीकेशंस में अक्सर रोगी को दौरा आना, बेहोश हो जाना और कौमा में चले जाने जैसे लक्षणों से ले कर ब्लडप्रेसर घट जाना, किडनी डैमेज हो जाना या फेल हो जाना तथा मल्टीऑर्गन फेल्यर की भी संभावना रहती है।

## 0 निदान

हीट स्ट्रोक का निदान सामान्य रूप से रोगी के लक्षणों और रोगी की हिस्ट्री पर क्लिनिकल एग्जामिनेशन के दौरान किया जाता है। इसके अलावा रोगी के शरीर में डिहाइड्रेशन वाले लक्षण और रोगी का ब्लडप्रेसर घट जाना। रोगी के होंठ, जीभ, गला आदि सूख जाना जैसे लक्षणों पर भी फिजीशियन डाक्टर सही निदान करते हैं। जरूरत पड़ने पर डाक्टर लेबोरेटरी टेस्ट भी कराते हैं जैसे कि लीवर, किडनी की रिपोर्ट तथा क्षार की रिपोर्ट द्वारा भी हीट स्ट्रोक का निदान किया जाता है।

## 0 इलाज

- ✚ हीट स्ट्रोक होने का कारण अधिक देर तक धूप या गर्मी के संपर्क में आना होता है। इसलिए इस रोग का निदान शुरू में उस व्यक्ति को धूप वाली जगह से तत्काल छाया वाली जगह में चले जाना चाहिए।
- ✚ अगर रोगी ने अधिक फिटिंग वाले कपड़े पहने हैं तो उन्हें निकाल कर ढीले और सूती कपड़े पहना देना चाहिए।
- ✚ रोगी के शरीर पर ठंडे पानी के छींटे मारना चाहिए।
- ✚ जरूरत के अनुसार आइस बैग या ठंडे पानी में भीगे कपड़े से स्पंजिंग करना चाहिए।
- ✚ अगर व्यक्ति होश में है तो उसे मुँह से अधिक से अधिक मात्रा में तरल देना चाहिए। जिसमें खाली पानी देने के बजाय क्षार वाला पानी देना चाहिए। जैसे कि ओआरएस, इलेक्ट्राल पाउडर वाला पानी या विविध प्रकार के खट्टे फलों का जूस देना अधिक फायदेमंद है।
- ✚ अगर रोगी होश में नहीं है तो उसे तत्काल अस्पताल ले जाना चाहिए।
- ✚ रोगी क्यों बेहोश है, इसके सभी कारणों की जाँच जरूरी है। लेबोरेटरी टेस्ट के अलावा जरूरत हो तो सीटी स्कैन या एमआरआई करवा लेना चाहिए।
- ✚ हीट स्ट्रोक के कारण रोगी मल्टीऑर्गन फेल्योर न हो जाए इसके लिए जरूरत के अनुसार इंटेंसिव केयर यूनिट (आईसीयू) में रख कर रोगी का उचित इलाज करना चाहिए।
- ✚ अगर रोगी पर हीट स्ट्रोक का अधिक असर है और इसकी वजह से रोगी के शरीर में अति तीव्र डिहाइड्रेशन (पानी की कमी) हो गई है तो इस परिस्थिति में रोगी का ब्लडप्रेसर काफी कम हो जाता है। जिसका असर तुरंत रोगी की किडनी पर होता है। किडनी जिसका काम शरीर का कचरा पेशाब द्वारा बाहर निकालना है, यह काम वह कर नहीं सकती, जिसके कारण शरीर में टॉक्सिक प्रोडक्ट (जहरीले तत्व) की मात्रा बढ़ जाती है। इसकी वजह से किडनी फेल हो सकती है। ऐसी परिस्थिति में जरूरत पड़ने पर डायलिसिस कर के रोगी की किडनी को बचाने की कोशिश की जाती है।
- ✚ 0 इस तरह बचें हीट स्ट्रोक से
- ✚ कुछ व्यवसाय ऐसे होते हैं, जिनमें बाहर निकलना जरूरी होता है। ऐसे व्यक्ति को बाहर निकलते समय जितना संभव हो ढीला और सूती कपड़ा पहनना चाहिए।
- ✚ पानी की बोतल हमेशा साथ रखनी चाहिए। थोड़ी-थोड़ी देर में पानी पीते रहना चाहिए।
- ✚ दिन के दौरान यूरिन की फ्रीक्वेंसी पर नजर रखनी चाहिए। अगर दिन में यूरिन (पेशाब) कम मात्रा में हो रहा है तो तरल लेना बढ़ा दें।
- ✚ गर्मी में ज्यादा व्यायाम न करें।

- 
- ✚ धूप में बाहर निकलने से पहले सनस्क्रीन लोशन का उपयोग फायदेमंद है. पर सनस्क्रीन जरूरत के अनुसार और डाक्टर की सलाह के अनुसार ही लगाएँ. अलग-अलग सनस्क्रीन लोशन में (सन प्रोटेक्टिंग फैक्टर) विविध मात्रा में होता है. व्यक्ति की त्वचा के अनुरूप अलग-अलग प्रतिशत का एसपीएफ वाले सनस्क्रीन लोशन का उपयोग फायदेमंद है.
  - ✚ कुछ लोगों को अतिशय गरम वातावरण से ठंडे वातावरण में आ कर आँखों या मुँह पर एकदम ठंडे पानी के छींटे मारने की आदत होती है. यह करने के पहले सामान्य पानी से मुँह धोना चाहिए. उसके बाद ठंडे पानी से मुँह धोना या नहाना चाहिए. इसके बाद ठंडा पानी या जूस पीना चाहिए.
  - ✚ कभी अगर एकदम गरम से एकदम ठंड का अनुभव हो तो यह ओवर रिएक्ट करता है तो ऐसे में लू लग सकती है या एलर्जी हो सकती है.

\*\*\*\*\*

# आवव खाबो गुपचुप

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा



अल्लू-बल्लू, अमलू-रमलू, आवव खाबो गुपचुप.  
सरदी-खाँसी के डर नइ हे, बइठव झन तुम चुपचुप.

देख सँझौती बेरा सुग्घर, घर ले बाहिर निकलव.  
अमसुर-गुरतुर सेवाद भरे, थोर-थोर सब चिखलव.  
अमली पानी मिला-मिला के, मुँह मा डारव गुपगुप.  
अल्लू-बल्लू, अमलू-रमलू, आवव खाबो गुपचुप.

कोनो खावव चाट बना के, मटर, मसाला डारे.  
तुरतेताही तात-तात बड़, झन पुछ येखर बारे.  
मन होथे बस खाते जावँव, सरपट सँझ्या टुपटुप.  
अल्लू-बल्लू, अमलू-रमलू, आवव खाबो गुपचुप.

भेल, पापड़ी, आलू टिकिया, गजब मिठाथे नड्डा.  
आनी-बानी खाये खातिर, चलव चलिन चौगड्डा.  
हाथ लमा के जम्मों खाथें, कहन न कोनो छुप छुप.  
अल्लू-बल्लू, अमलू-रमलू, आवव खाबो गुपचुप.

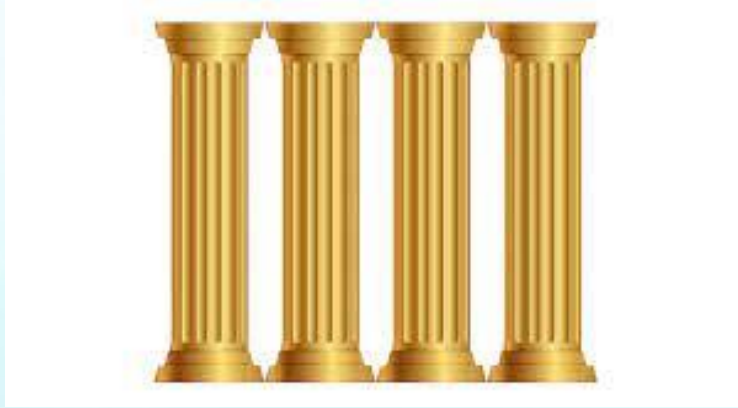
सरदी-खाँसी के डर नइ हे, बइठव झन तुम चुपचुप.  
अल्लू-बल्लू, अमलू-रमलू, आवव खाबो गुपचुप.

\*\*\*\*\*



# पिलर की ऊँचाई

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला", बालोद



कुँजकन्हार की मीडिल स्कूल की बिल्डिंग जर्जर हो चुकी थी. होनी ही थी, क्योंकि गाँव के बुजुर्गों का कहना था कि स्कूल बिल्डिंग आजादी के पहले की है. गाँव वाले आपसी जनसहयोग से बार-बार मरम्मत करवा कर काम सरकाते रहे. पर अब स्कूल की दीवारों को खड़ा रख पाना मुश्किल हो रहा था. इसलिए उस दिन प्रधानपाठक विजय नेताम जी ने शाला प्रबंधन समिति की बैठक रखी. सामूहिक निर्णय लेकर बिल्डिंग गिरवा दी गयी.

मलबा हटाने का काम चल रहा था. एक-एक करके पिलरों (खम्भों) को गिराये जा रहे थे. तीन पिलर आसानी से गिर गये. चौथा पिलर को गिराने के लिए मजदूर बड़ी मशक्कत कर रहे थे. तभी प्रधानपाठक नेताम जी आये. पिलर की ऊँचाई व मजबूती को परखते हुए उनकी नजर आँगन में खेल रहे महेश पर गयी. नेताम जी ने महेश को बुलाया.

महेश कक्षा आठवीं का छात्र था. पढ़ाई-लिखाई में बहुत होशियार था. खेलकूद में भी ठीक-ठाक था. हर साल वह न केवल अपनी कक्षा में, बल्कि पूरे स्कूल में प्रथम आता था. वैसे तो हर परीक्षा में उसे सभी विषयों में अच्छा अंक मिलता था; पर गणित के अंकों की बात ही अलग होती थी. गणित महेश का प्रिय विषय था. उसकी बुद्धि बड़ी तीव्र थी. गणित के मौखिक प्रश्नों का त्वरित उत्तर देता था. लिखित प्रश्नों को अन्य बच्चों की अपेक्षा वह बहुत जल्दी हल कर लेता था. इसलिए उसके गणित के अध्यापक ने उसका नाम रामानुजन रखा था. अन्य अध्यापक महेश को कभी बीरबल तो कभी तेलानीराम कहते थे.

बालक महेश प्रधानाध्यापक नेताम जी के पास आया. बोला- "क्या है सर जी.... आपने मुझे बुलाया... ?"

मुस्कुराते हुए मजाकिया लहजे में नेताम जी ने पूछा- "महेश ! तुम्हें मेरे एक प्रश्न का उत्तर देना होगा ?"

"कौन सा, और कैसा प्रश्न सर जी ?" महेश नेताम जी के और करीब आते हुए बोला.

"यह जो पिलर है न, जिसे मजदूर लोग गिरा रहे हैं; देख रहे हो न ?" नेताम जी बोले.

"जी सर." महेश ने पिलर को एक नजर देखा.

"इस पिलर को बिना स्पर्श किये तुम्हें इसकी ऊँचाई बतानी होगी. इसके लिए तुम अपनी इच्छानुसार किसी भी वस्तु का उपयोग कर सकते हो. लेकिन पिलर को छूना नहीं है; और कम से कम पिलर से तीन मीटर दूर रहना है." नेताम जी ने अपना प्रश्न रख दिया.

अपने प्रधानाध्यापक का प्रश्न सुन कर महेश पिलर के नजदीक गया. पिलर को नीचे से ऊपर तक देखा. अपने दाहिने हाथ से अपनी ठोड़ी पर उंगलियाँ चलाते हुए सोचने लगा. तभी अन्य अध्यापक व बच्चे भी आ गये. सबको प्रश्न की जानकारी हो गयी. सभी अपना-अपना दिमाग दौड़ाने लग गये. सबकी नजर महेश पर थी, क्योंकि उत्तर तो महेश को ही देना था.

सभी के दिमाग में एक ही बात चल रही थी कि आखिर यह लड़का पिलर को बिना छुए, और पिलर से तीन मीटर दूर रहकर इसकी ऊँचाई भला कैसे पता करेगा. कैसे नाप लेगा पिलर को. दो-चार लोग तो यह भी फुसफुसा रहे थे कि यह काम महेश तो क्या किसी से भी नहीं हो सकता.

पंद्रह मिनट निकल गया. महेश बार-बार इधर-उधर देखता, फिर पिलर को नीचे से ऊपर तक निहारता. उसने तो अभी तक यह भी नहीं कहा था कि पिलर नापने का काम उससे नहीं हो सकता. अब भी महेश के चेहरे पर चंचलता थी. कोशिश का भाव था. वह अपना दिमाग दौड़ा ही रहा था. तभी उसके दिमाग में एक आइडिया आया. फिर वहीं पर पड़े एक रस्सी के बंडल को उठाया. रस्सी बहुत लम्बी थी. पिलर के पास उपस्थित सभी महेश को देख रहे थे.

फिर महेश ने रस्सी के आखिरी सिरे पर एक छोटा सा पत्थर बाँधा. दूसरे सिरे को स्वयं पकड़ा. दूर से ही वह पत्थर बँधी रस्सी को पिलर के ऊपर फेंका. रस्सी पिलर के ऊपर नहीं फँसी. नीचे गिर गयी. लोग समझ ही नहीं पा रहे थे कि आखिर महेश कर क्या रहा है. पत्थर बँधी रस्सी को पिलर पर फेंकता, फिर वह नीचे गिर जाती. इस तरह हर बार रस्सी नीचे गिर जाती. महेश ने भी हार नहीं मानी. अपना प्रयास जारी रखा. अंततः उसकी मेहनत रंग लायी. पत्थर वाली रस्सी पिलर के ऊपरी सिरे (भाग या छोर) के बीच से होते हुए जमीन पर आ टिकी. फिर महेश ने तुरंत अपने हाथ से पकड़ी रस्सी को एक पत्थर से दबा दिया. पिलर पर रस्सी स्थिर हो गयी. एक समकोण त्रिभुज की आकृति बन गयी. जितने भी लोग वहाँ पर थे, सबके-सब चुप. सभी महेश को अपलक देख रहे थे.

महेश प्रधानाध्यापक नेताम जी के पास आया. मुस्कुराते हुए कहा- "सर जी, मोहन दादाजी को बुलाइए; और रस्सी की उस जगह, जहाँ पर पिलर के ऊपरी हिस्से को छू रही है, पर चाक से एक चिह्न लगवा दीजिए और रस्सी उतरवा दीजिए."

नेताम जी के कहने पर प्यून मोहन ने महेश के कहे अनुसार रस्सी नीचे उतारी. फिर नेताम जी ने महेश पूछा- "अब क्या करना है महेश ?"

महेश बोला- "सर जी, रस्सी के पत्थर बँधे सिरे से चिह्नित भाग तक की लम्बाई को टेप से मोहन दादाजी को नापने बोलिए."

रस्सी नापी गयी. रस्सी की लम्बाई थी- नौ फीट सात इंच. महेश के बुद्धि-कौशल पर सबको बड़ी प्रसन्नता हुई. सभी अवगत हो गये कि पिलर से लटकती हुई पत्थर बँधी रस्सी की लम्बाई ही उस पिलर की ऊँचाई हुई.

\*\*\*\*\*

# उड़ी पतंग

रचनाकार- डॉ. सतीश चन्द्र भगत



लंबी डोर से जुड़ी पतंग.  
आसमान में उड़ी पतंग.

बातें करती हवा के संग.  
सर-सर करती उड़ी पतंग.

देखो - देखो लड़ी पतंग.  
चलो लूटने कटी पतंग.

\*\*\*\*\*



# पर्यावरण और जीवन

रचनाकार- श्रीमती सरोजनी साहू, सारंगढ



पेड़ लगाओ कहकर, फोटो खूब खिंचाया,  
आकाल आया तो, फिर पेड़ कहीं ना पाया.  
आज भी समय है, आओ जरा संभल जाए  
खुद को बदले ऐसा की, सब कुछ बदल जाए.

लगाकर पेड़ वातावरण स्वच्छ बनाएं  
सिर्फ नारा ना लगे, आओ कर दिखाएं.  
सिर्फ नारा ना लगे, आओ कर दिखाएं.

\*\*\*\*\*

# पर्यावरण

रचनाकार- श्रीमती सरोजनी साहू, सारंगढ

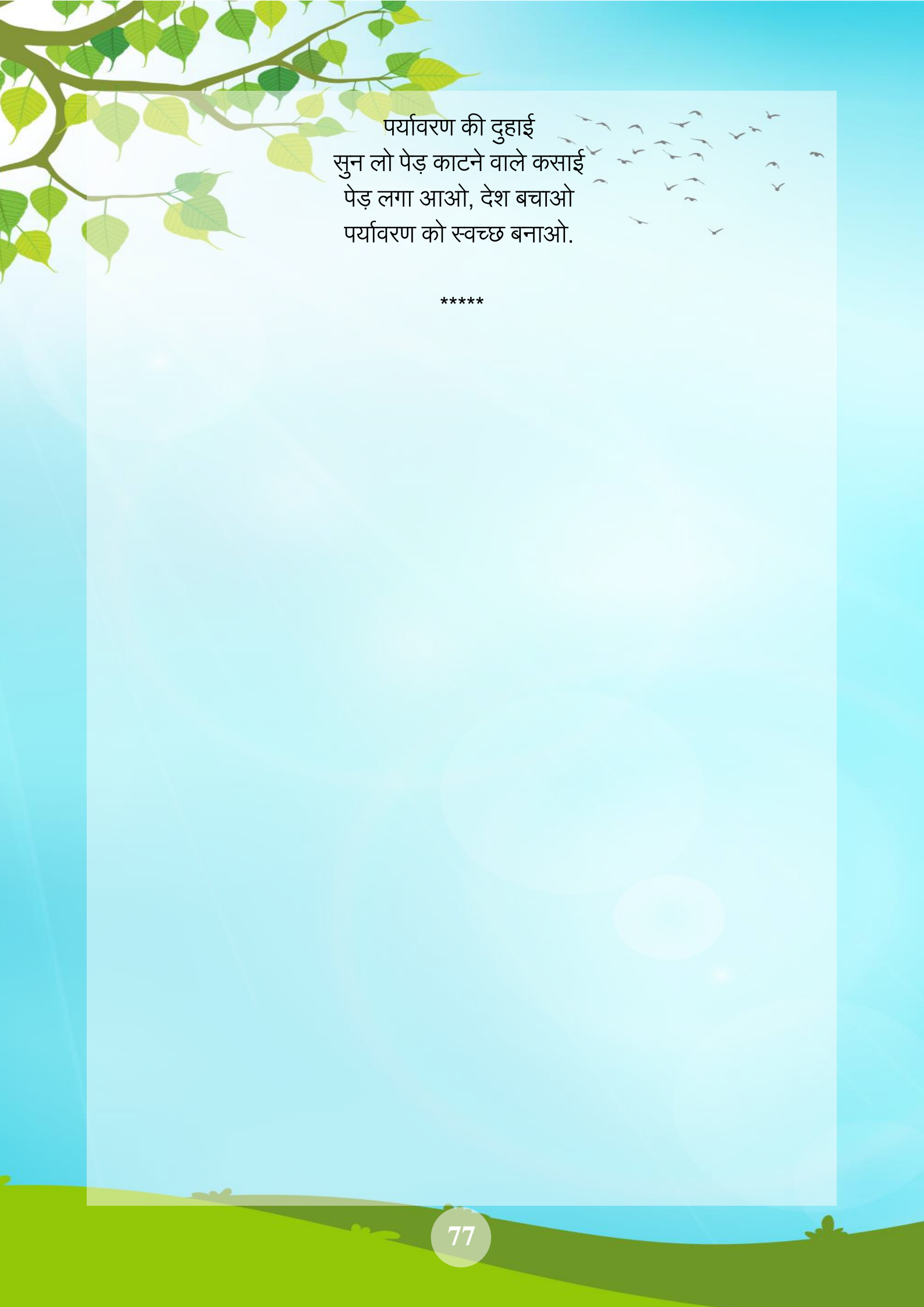


इंसान की सारी माया  
पर्यावरण पर संकट लाया  
देश को विकसित बनाया  
पर्यावरण को खूब सताया

पेड़ पौधे नष्ट हो गए  
पेड़ काट इंसान मस्त हो गए  
अपने स्वार्थ को दिया बढ़ावा  
पर्यावरण को खूब सताया.

पंछी सारे लुप्त हो गए  
इंसान सारे सुस्त हो गए  
इमारतें तो बहुत बनाया  
पर्यावरण को खूब सताया.

पर्यावरण प्रदूषण की चपेट में आया  
इंसानों को फिर भी समझ ना आया  
पर्यावरण को खूब सताया



पर्यावरण की दुहाई  
सुन लो पेड़ काटने वाले कसाई  
पेड़ लगा आओ, देश बचाओ  
पर्यावरण को स्वच्छ बनाओ.

\*\*\*\*\*



# परी

रचनाकार- अनिता मंदिलवार सपना, अंबिकापुर



एक परी सी  
दिखने वाली  
पहनकर परिधान  
लाल कालीन  
लगे वह उड़ेगी  
अब तो बस  
कदम धरती पर  
रहे न जब  
अपने सपनों को  
पूरा करने  
हाथों में किताबें  
दर्शाती हैं भविष्य  
चली है वह  
पाने अपना लक्ष्य

\*\*\*\*\*

# दास्तान-ए-तवायफ

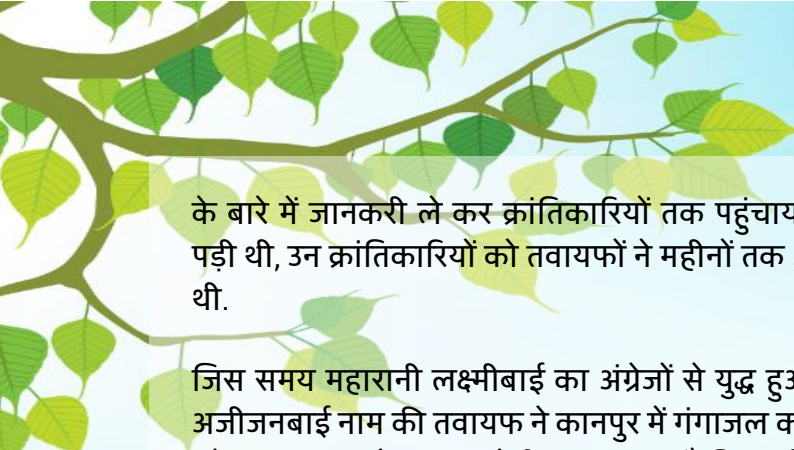
रचनाकार- वीरेंद्र बहादुर सिंह, नोएडा



हम अक्सर जाने-अंजाने स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को तो याद करते रहते हैं, पर हमारे देशी की तवायफों ने आजादी की लड़ाई में जो योगदान दिया है, उसकी चर्चा हम कम ही करते हैं. तवायफें भी 1857 के विद्रोह से ले कर 1947 तक यानी देश के आजाद होने तक स्वतंत्रता की इस लड़ाई में जूझती रही हैं और कभी सीधे तो कभी लुक्छिप कर अपना योगदान देती रही हैं. हैरानी की बात तो यह है कि स्वतंत्रता की इस लड़ाई के दौरान अपना योगदान देते समय इन तवायफों ने जासूसी भी की है. महिलाओं की टोली भी तैयार की है, खादी भी पहनी है और फंड इकट्ठा करने के लिए कोंसर्ट्स भी आयोजित किया है. यह बात अलग है कि तवायफों ने इतिहास के उस दौर में अपना जो योगदान दर्ज कराया था, तब एक समय कला के रूप में स्थापित हुआ उनका व्यवसाय मात्र देहव्यापार और घटिया मनोरंजन तक सीमित रह गया था. जिसके कारण न तो तवायफों को उनका वजूद मिल सका और न ही उनके योगदान को.

उत्तर भारत में तवायफ, दक्षिण भारत में देवदासी अथवा बंगाल की ओर नायकन के रूप में जानी जाने वाली ये महिलाएं उन्नीसवीं सदी तक संस्कारी, उच्च कुल की और कला की जानकर के रूप में जानी जाती थीं. हमारे पास इस तरह के भी उदाहरण मौजूद हैं कि बड़े घरों के लड़कों को तवायफों के यहां कला या मैनेजरिज्म की तालीम के लिए भेजा जाता था. पर जैसे-जैसे उत्तर भारत में रियासतों का दबदबा घटने लगा और ईस्ट इंडिया कंपनी मजबूत होती गई, तब से ठुमरी, गजल, दादरा या कथक जैसी कलाओं में निपुण मानी जाने वाली ये महिलाएं 'नाचवाली' के रूप में जानी-पहचानी जाने लगीं और इनका काम देहव्यापार तक सीमित रह गया.

जबकि यह तो तवायफों के बारे में सहज पूर्वभूमिका हुई. हमारे पास तो अंग्रेजी और हिंदी में तवायफों का इतिहास, उनकी कला और उनके लुप्त होने की घटना को ले कर अत्यंत मजेदार पुस्तकें उपलब्ध हैं. इन्हीं पुस्तकों में स्वतंत्रता संग्राम में इनके योगदान के भी उदाहरण उपलब्ध हैं, जिसके बारे में जानकर हमारे मन में उन तवायफों के प्रति आदर तो पैदा ही होगा, भूतकाल में उनके साथ जो हुआ, यह जानकर तकलीफ भी होगी. हम जिस 1857 विद्रोह को आजादी की लड़ाई की शुरुआत को सरकारी डाक्यूमेंटेशन के रूप में स्वीकार करते हैं, उस समय लखनऊ की तवायफों ने ईस्ट इंडिया कंपनी की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए हनीट्रेप किया था, जहां ब्रिटिश ग्राहकों के साथ उन्होंने विशेष संबंध बना कर उनसे ईस्ट इंडिया कंपनी के मूल्स



के बारे में जानकारी ले कर क्रांतिकारियों तक पहुंचाया था. ईस्ट इंडिया कंपनी जिन क्रांतिकारियों के पीछे पड़ी थी, उन क्रांतिकारियों को तवायफों ने महीनों तक अपने अट्टे पर संगीतकार या गायक के रूप में पनाह दी थी.

जिस समय महारानी लक्ष्मीबाई का अंग्रेजों से युद्ध हुआ था, उस समय तात्याटोपे और नाना साहब के साथ अजीजनबाई नाम की तवायफ ने कानपुर में गंगाजल को साक्षी मान कर प्रतिज्ञा ली थी कि अंग्रेजों की हुकूमत को वह जड़मूल से नष्ट कर देगी. कहा जाता है कि अजीजनबाई ने इसके लिए युवतियों की सेना बनाई थी. वे युवतियां पुरुषों के वेश में तलवार ले कर घोड़े पर सवार हो कर घूमती थीं और उत्तर भारत के युवकों को अंग्रेजों से लड़ने के लिए उकसाती थीं. इस अजीजनबाई पर तो पूरी एक वेब सीरीज बनाई जा सकती है, जिसके बारे में अंग्रेजों के गैजेटियर्स में 'खून की प्यासी राक्षसिन' के रूप में लिखा गया है.

उसी दौरान धर्मनबीबी भी हुई थीं, जिन्होंने अंग्रेजों के सामने नृत्य करने से मना कर दिया था. यह तो ठीक, गर्भवती होने के बावजूद और दो जुड़वां बच्चे होने पर भी वह अंग्रेजों के सामने युद्ध के मैदान में उतरीं और अंग्रेजों को खूब छकाया था. इन दोनों महान महिलाओं के बारे में किताबों में तमाम जानकारी उपलब्ध है. इसके बाद गांधीयुग शुरू हुआ और भारत की जनचेतना अहिंसक आंदोलनों की ओर मुड़ी तो बनारस या कलकत्ता जैसे शहरों की तवायफों ने भी आजादी के इन आंदोलनों में हिस्सा लेना शुरू किया. ठीक सौ साल पहले गांधीजी की प्रेरणा से जब असहयोग की लड़ाई शुरू हुई, तब देश के पढ़े-लिखे लोगों के साथ बनारस की तवायफें भी असहयोग आंदोलन में कूद पड़ीं और हसीनाबाई नाम की तवायफ के नेतृत्व में 'तवायफ सभा' की स्थापना की. इन तवायफों ने विदेशी गहनों का बहिष्कार कर लोहे की बेड़ियों को गहनों के रूप में धारण किया और खादी का जम कर प्रचार किया.

बनारस की एक दूसरी विद्याधरी नाम की तवायफ के बारे में जो जानकारी मिलती है, उसके अनुसार वह अपनी महफिलों में इस तरह के गाने गाती थीं, जिससे लोगों को मुक्ति संग्राम में जुड़ने की प्रेरणा मिले. कलकत्ता में जिसकी एक झलक पाने के लिए लोग बेचैन रहते थे, उस गौहरजान ने गांधीजी के लिए फंड इकट्ठा करने के लिए एक महफिल का आयोजन किया था. गौहरजान ने उस समय इस महफिल से चौबीस हजार रुपए इकट्ठा किए थे. पर गौहरजान की इच्छा थी कि गांधीजी इस महफिल में आएँ. पर बापू तो 'स्वाद' में भी 'अस्वाद' के नियम का पालन करते थे. इसलिए गांधीजी गौहरजान की उस महफिल में नहीं गए थे. जिसकी वजह से गौहरजान ने इकट्ठा रकम से आधी रकम बारह हजार रुपए ही डोनेशन के रूप में दिए थे.

इसके अलावा भी तमाम तवायफों ने सन् 1857 से 1947 तक तरह-तरह के योगदान दिए थे. इसे तो हम मात्र राजनीतिक योगदान कह सकते हैं. नृत्य और संगीत-कला के अनेक प्रकारों का जतन किया है और उसे जनसामान्य तक पहुंचाया है, जिसे हम सांस्कृतिक योगदान भी कह सकते हैं. परंतु काल मात्र मनुष्य को ही नहीं नष्ट करता, कभी-कभी पूरी संस्कृति को ही नष्ट कर देता है. इसलिए एक समय अपार आदर पाने वाली महिलाएं आज सब से ज्यादा अनादर का पर्याय बन गई हैं और आज भी जब किसी की देहव्यापार से बराबरी की जाती है तो लोकजीभ उसे 'तवायफ' के रूप में परिचय कराती है. पर तवायफ कहते समय हमें यह याद रखना होगा कि इन महिलाओं ने संस्कृति जतन में और राजनीतिक विग्रह में कोई छोटा-मोटा योगदान नहीं दिया.

\*\*\*\*\*



# साथ

रचनाकार- अनिता मंदिलवार सपना, अंबिकापुर



खेल खिलौने  
सबके अलग  
किसी के लिए  
पिता के कंधे  
पर बैठना  
किसी के लिए  
पानी में  
कागज की  
नाव चलाना  
किसी के लिए  
पानी में  
छप छप करना  
परिवार के साथ ही  
सब खुशियाँ है .

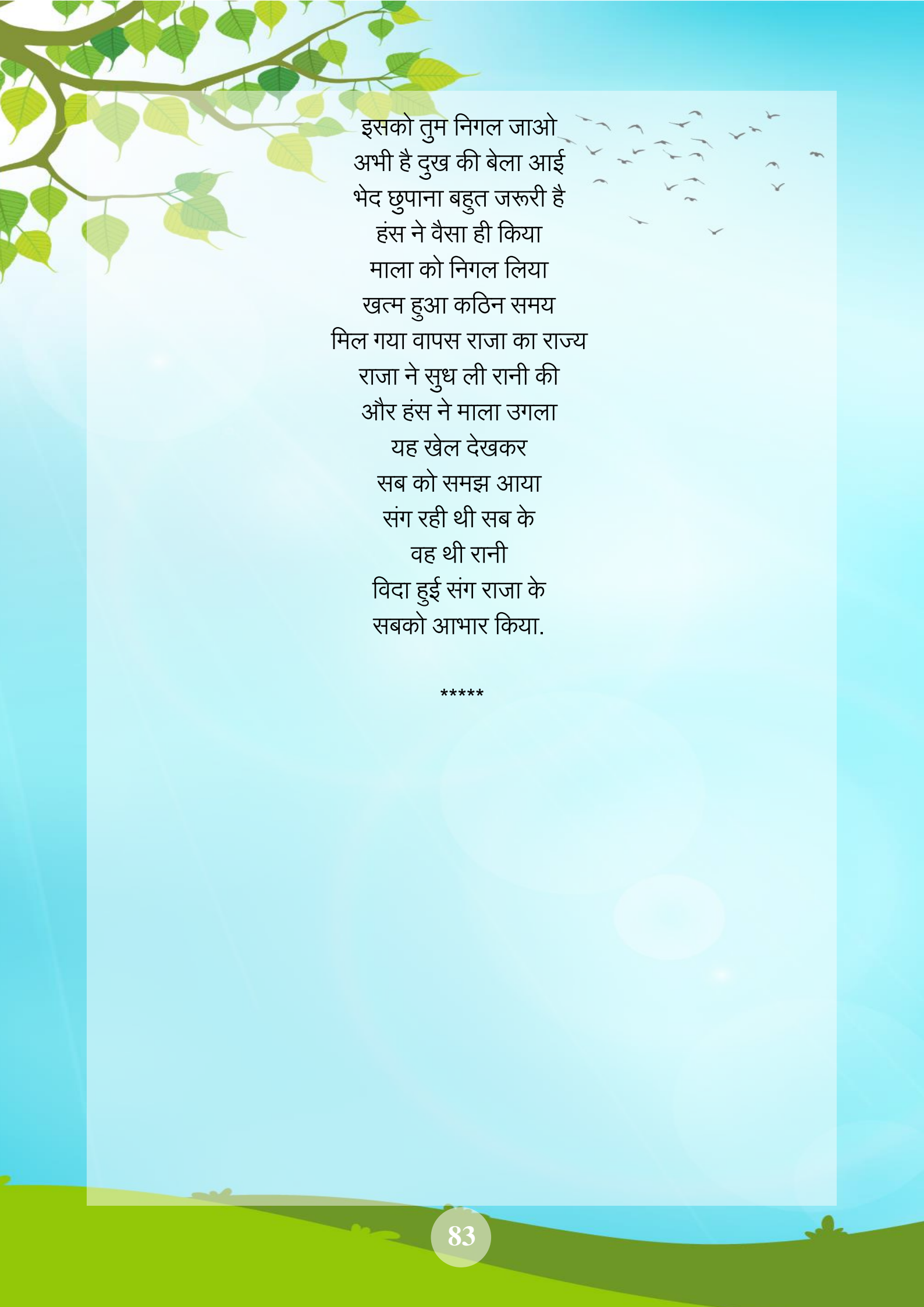
\*\*\*\*\*

# रानी की माला

रचनाकार- अनिता मंदिलवार सपना, अंबिकापुर



एक रानी की कहानी  
देखो है पुरानी  
राजा का राज्य छिन गया  
अलग हो गए राजा रानी  
विथना की देखो बलिहारी  
कर न सके कुछ  
दोनों की लाचारी  
गांव-गांव में भटकी रानी  
क्या करती  
सब के संग रहती  
अपना भेद छुपा कर चलती  
एक मोतियन की माला  
गले में थी  
राजवंश की निशानी  
कैसे उसका भेद छुपाए  
सोच रही दुखिया रानी  
तभी दिखा हंस पक्षी  
जिससे हो गई थी दोस्ती  
उसने अपनी माला देकर  
कहा उसको



इसको तुम निगल जाओ  
अभी है दुख की बेला आई  
भेद छुपाना बहुत जरूरी है  
हंस ने वैसा ही किया  
माला को निगल लिया  
खत्म हुआ कठिन समय  
मिल गया वापस राजा का राज्य  
राजा ने सुध ली रानी की  
और हंस ने माला उगला  
यह खेल देखकर  
सब को समझ आया  
संग रही थी सब के  
वह थी रानी  
विदा हुई संग राजा के  
सबको आभार किया.

\*\*\*\*\*

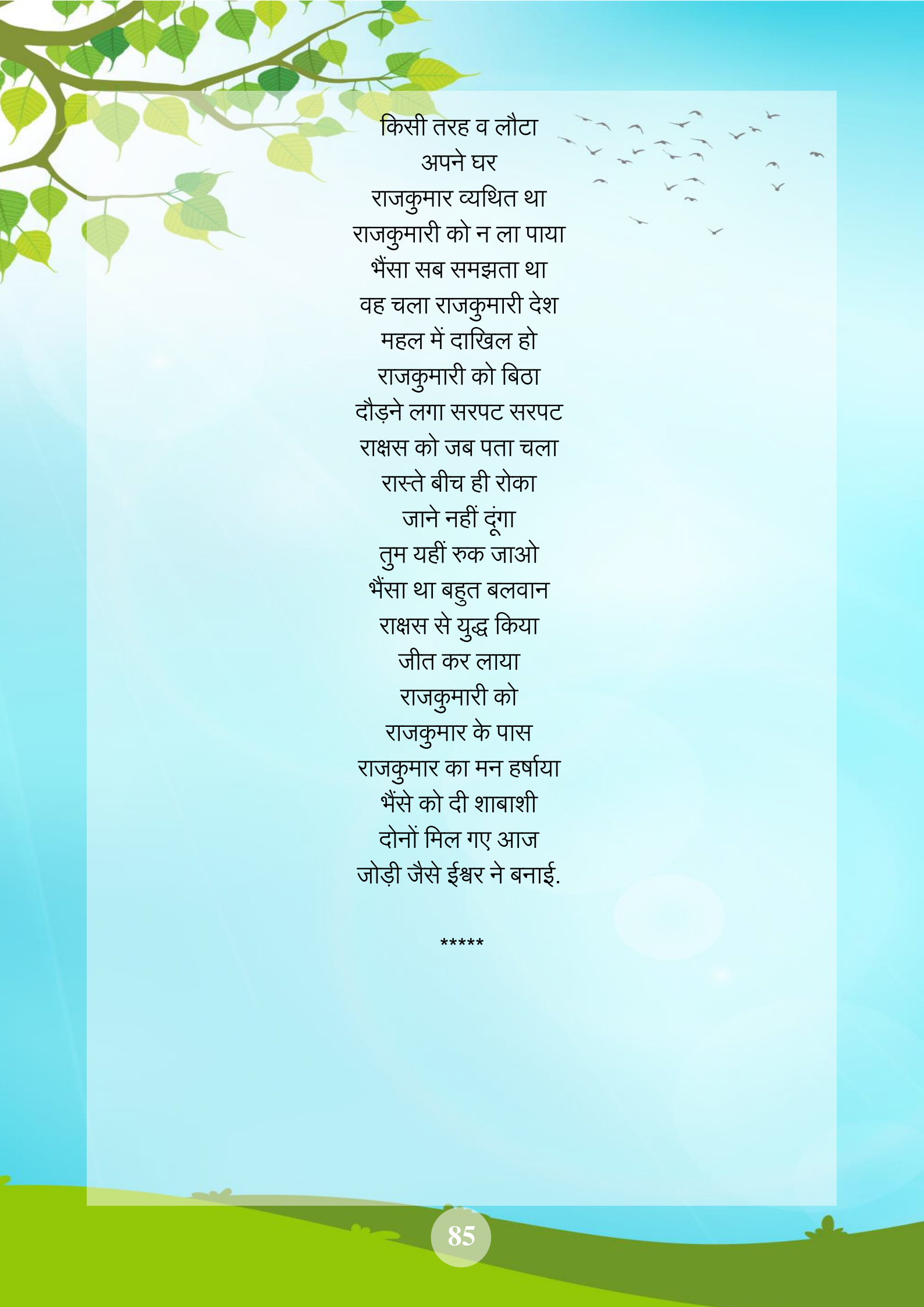


# महीष

रचनाकार- अनिता मंदिलवार सपना, अंबिकापुर

राक्षस राजा था  
राजकुमारी पर था पहरा  
एक दिन  
एक राजकुमार  
आया भ्रमण को  
इस देश में  
राजकुमार का वाहन  
था एक भैंसा  
एक दिन राजकुमारी  
निकली थी पूजन को  
राह में मिला  
राजकुमार उसको  
दोनों एक दूसरे को  
देखते रह गए  
राजकुमारी की आंखों में  
वेदना भरी थी  
राजकुमार ने संकेत दिया  
आऊंगा मैं लेने  
तब से राजकुमारी  
द्वार पर खड़ी  
हर दिवस बीते  
कई वर्ष सरीखे  
पर प्रतीक्षा खत्म हुई  
राजकुमार आया  
राक्षस से लड़ते लड़ते  
हो गया वह घायल





किसी तरह व लौटा  
अपने घर  
राजकुमार व्यथित था  
राजकुमारी को न ला पाया  
भैंसा सब समझता था  
वह चला राजकुमारी देश  
महल में दाखिल हो  
राजकुमारी को बिठा  
दौड़ने लगा सरपट सरपट  
राक्षस को जब पता चला  
रास्ते बीच ही रोका  
जाने नहीं दूंगा  
तुम यहीं रुक जाओ  
भैंसा था बहुत बलवान  
राक्षस से युद्ध किया  
जीत कर लाया  
राजकुमारी को  
राजकुमार के पास  
राजकुमार का मन हर्षाया  
भैंसे को दी शाबाशी  
दोनों मिल गए आज  
जोड़ी जैसे ईश्वर ने बनाई.

\*\*\*\*\*

# जीना है तो छोड़ दो नशा

रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली



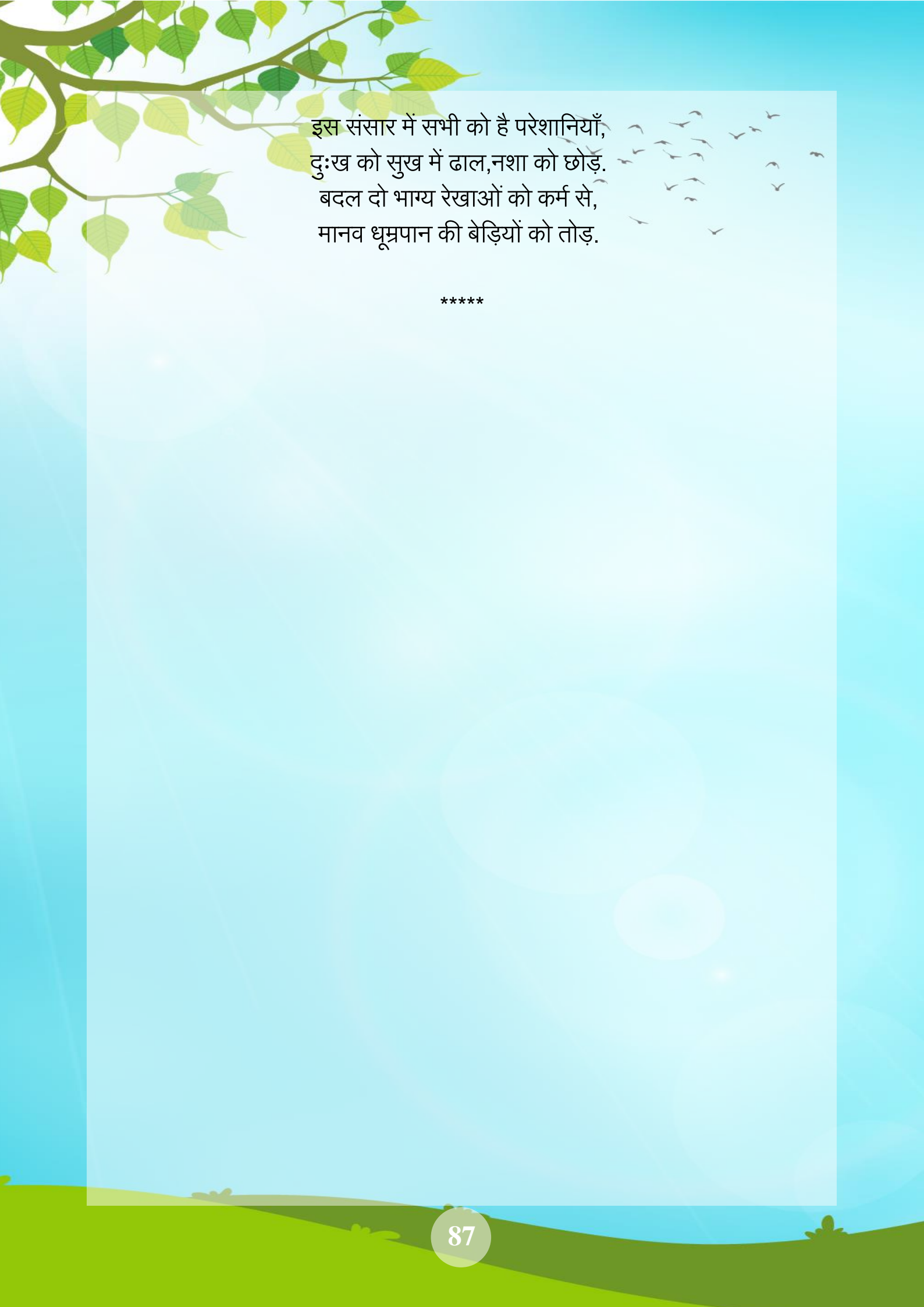
पीकर शराब खो दोगे आत्म चेतना,  
सिगरेट के धुएँ से उड़ेगी प्राण वायु.  
तम्बाकू और गुटखा से होगा कैंसर,  
जिंदगी जिओगे नशेड़ी तुम अल्पायु.

किस बात का गम है, करते हो नशा,  
क्या मोहब्बत में तुझे धोखा मिला है?  
तुम्हारी प्रेमिका की हो रही है शादी,  
भुला दो उसे, जिसने तुझे भुलाया है.

परिवार के लोगों से है तुझे अनबन,  
क्या बीवी से होते हो प्रतिदिन लड़ाई?  
प्यार भरी मीठी बातें करके मना लो,  
पल भर में दूर होगी तन्हाई, जुदाई.

ज्ञान अध्याय को पूरा ना कर सके,  
क्या परीक्षा में हो गए हो असफल?  
फिर से मेहनत करो, एक बार और,  
इस बार हो जाओगे जरूर सफल.





इस संसार में सभी को है परेशानियाँ,  
दुःख को सुख में ढाल, नशा को छोड़.  
बदल दो भाग्य रेखाओं को कर्म से,  
मानव धूम्रपान की बेड़ियों को तोड़.

\*\*\*\*\*

# अच्छा विद्यार्थी

रचनाकार- पुष्पेंद्र कुमार कश्यप, सक्ति



विद्यार्थी दो शब्दों से मिलकर बना है "विद्या" + "अर्थी" जिसका अर्थ होता है विद्या चाहने वाला. विद्यार्थी किसी भी आयु वर्ग का हो सकता है वयस्क, युवा, बालक, किशोर.

एक अच्छे विद्यार्थी हमेशा कुछ न कुछ सीखते रहते हैं. विद्यार्थी में जिज्ञासु गुण होता है वह किसी भी वस्तु को जानने की इच्छा रखता है. विद्यार्थी में 5 गुण पाए जाते हैं कौवे की तरह चेस्टा , बगुले की तरह ध्यान, कुत्ते की तरह नींद, अल्पाहारी , गृहत्यागी.

विद्यार्थी जीवन भर सीखते रहता है अच्छा विद्यार्थी सभी कार्य समय पर करता है सुबह समय पर उठना, शौच करना ,सफाई एवं स्नान आदि करके पढ़ता है. वह अपने बड़ों का आदर और छोटों से स्नेह करता है. समय पर विद्यालय जाता है और सभी शिक्षकों का आदर सम्मान करता है . विद्यार्थी पढ़ाई के अलावा सभी कार्य करता है अच्छा विद्यार्थी किसी से लड़ाई नहीं करता और झूठ नहीं बोलता है.

\*\*\*\*\*

# मूर्ख सेवक

रचनाकार- पुष्पेंद्र कुमार कश्यप, सक्ति



एक जमींदार के महल में रामू सेवक के रूप में रहता था. वह जमींदार का बहुत विश्वासपात्र था बिना रोक-टोक के कहीं भी महल में घूम सकता था. एक दिन जब जमींदार सो रहा था और रामू पड़खा झल रहा था तो रामू ने देखा, एक मक्खी बार-बार जमींदार के पेट में बैठ जाता था. पंखे से बार-बार हटाने पर भी वह मानती नहीं थी, उड़कर फिर वही बैठ जाती थी.

रामू को क्रोध आ गया. उसने पंखा छोड़कर हाथ में तलवार ले ली और इस बार जब मधुमक्खी जमींदार के पेट पर बैठी तो उसने पूरे बल से मक्खी पर तलवार ले ली और मक्खी जमींदार के पेट पर बैठी तो उसने पूरे बल से मक्खी पर तलवार का हाथ छोड़ दिया.

मक्खी तो उड़ गई किंतु जमींदार की पेट तलवार की वार से टुकड़ों में बट गई. जमींदार मर गया.

शिक्षा : "मूर्ख मित्र से आपेक्षा विद्वान शत्रु ज्यादा अच्छा होता है. "

\*\*\*\*\*



# बलिदान

रचनाकार- पुष्पेंद्र कुमार कश्यप, सक्ति



कमरीद गांव में सुनील नाम का एक सुंदर सुशील लड़का था. उसके मां-बाप अनपढ़ होकर भी अपने बच्चों को बहुत पढ़ाया. जब सुनील बीएससी द्वितीय वर्ष में था. तब उसकी नौकरी लग गई और उसके घर को एक सहारा मिल गया. सुनील के पिताजी की एक आंख नहीं थी. जिसके कारण उन्हें देखने में बहुत परेशानी होता थी. गांव के सभी बच्चे बूढ़े एक आंख ना होने के कारण उसे अपमानित करते थे. जिसके कारण सुनील को अपने पिता से बहुत नफरत करता था. सुनील की नफरत दिन-प्रतिदिन बढ़ते गया और कुछ वर्षों बाद सुनील अपने पिताजी को छोड़कर उससे दूर दूसरे गांव में रहने लगा. और शादी कर लिया. वह अपने पिताजी को कभी नहीं मिला ना ही उसके बारे में हालचाल जानने की कोशिश किया.

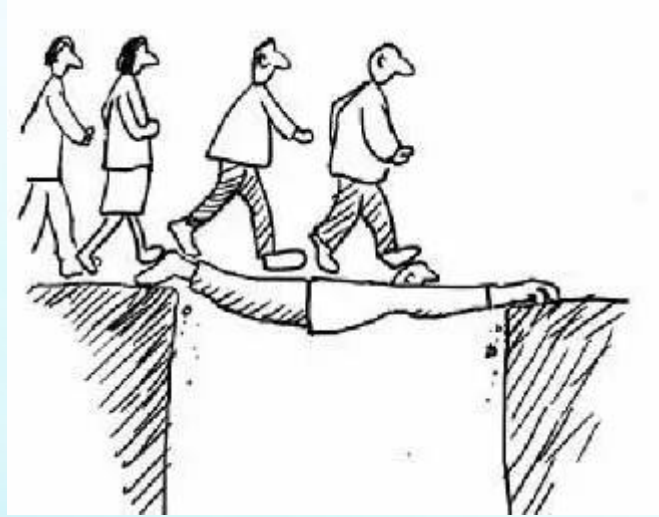
इस बात को सोच-सोच कर उसके पिताजी बीमार पड़ गए. वर्षों बाद सुनील को एक पत्र मिला जो उनकी मृत्यु के बाद प्राप्त हुआ.

सुनील अपने पिताजी का पत्र मिला उसे पढ़ना शुरू किया उसमें लिखा था. बेटा सुनील मुझे तुमसे या मेरी जिंदगी से कोई शिकायत नहीं मेरी एक आंख ना होने से तुम मुझे जिंदगी भर नफरत करते रहे. मगर मैंने एक आंख ना होने का कारण कभी नहीं बताया. जब तुम छोटे थे तो खेलते वक्त एक लकड़ी का टुकड़ा आंख में घुस गया और तुम्हारा आंख खराब हो गया. डॉक्टर ने बताया कि बचपन में आंख कहीं से मिल जाए तो ठीक हो सकता है. मैंने एक पल भी देर ना करते हुए . तुम्हें अपना आंख दिया और तुम ठीक हो गए. मैं यह बात तुमको कभी बताना नहीं चाहता था . लेकिन जिंदगी भर मुझे नफरत ना करो इसके लिए मुझे बात बताना पड़ा. सुनील यह सब जानकर अपने आप से नफरत हो गई. उसे वह सारी घटना याद आ गई जिससे वह अपने पिताजी को नफरत से बोला करता था. सुनील को समय बीत जाने पर पिता के किए बलिदान का महत्व समझ में आया.

\*\*\*\*\*

# परोपकार

रचनाकार- पुष्पेंद्र कुमार कश्यप, सक्ति



एक मछुआरा अपने पुत्र के साथ समुद्र किनारे रहते थे. एक दिन मछुआरा समुद्र में मछली पकड़ने के लिए चले गए और कभी वापस नहीं लौटे. मछुआरा के पुत्र अपने पिताजी के लिए बहुत दुखी था एक दिन वह समुद्र किनारे बैठे हुए थे कुछ समय पश्चात उन्होंने देखा कि नाव समुद्र के भंवर में फंस रहा है वह नाव डूबने ही वाला था,इसे देखकर मछुआरा के पुत्र एक पल भी विलंब ना करते हुए नाव को लेकर उन लोगों को बचाने के लिए चले गए और सभी को सकुशल किनारे तक ले आए जिसमें उसके पिताजी भी था पुत्र की परोपकार की भावना अपने पिताजी से फिर से मिला दिया.

शिक्षा :-हमें निस्वार्थ भाव से दूसरों की सेवा व सहायता करनी चाहिए.

\*\*\*\*\*

# अच्छी आदतें

रचनाकार- पुष्पेंद्र कुमार कश्यप, सक्ति



जो अच्छी आदतों का पालन करता है उसी को सभ्य कहा जाता है .उसकी सब प्रशंसा करते हैं.

जब हम बच्चे थे तब बड़े बुजुर्ग हमें छोटी छोटी बातें सिखाते थे जिससे हम इन बातों को अपनी आदत बना पाए. यह बातें हमें शायद उस समय समझ में ना आया हो पर वह हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण रोल निभाती है.

हम अच्छी आदत को बड़े बुजुर्ग से सीखते हैं और आने वाले पीढ़ी को हस्तांतरित करते हैं. इन अच्छी आदतों के वजह से हम जीवन में सफल हो पाते हैं.

अच्छी आदतें जो हमें सफल बनाती हैं

- (1) अपनों से बड़ों का आदर करो . जब वे उठकर तुम्हारे पास से जाए तो उठ कर अभिवादन करो.
- (2) बड़ों के सामने पैर पसार कर नहीं बैठना चाहिए बड़ों के सामने सिर झुका कर बात करो .उनकी बातों का उत्तर दो .जोर से बोलना हंसना अच्छी बात नहीं.
- (3) किसी की बुराई करना, किसी को धोखा देना , झूठ बोलना अच्छी आदत नहीं.
- (4) मुंह में उंगली डालना अच्छी आदत नहीं .दातों से नाखून मत काटो. मुह, नाक और कान में कागज डालना अच्छी आदत नहीं.
- (5) हमें सुबह जल्दी उठना चाहिए .
- (6) हमें रात को जल्दी सो जाना चाहिए.
- (7) हमें रोज व्यायाम करना चाहिए.
- (8) हमारा खाना खाने और सोने का समय नियमित होना चाहिए.
- (9) हमें समय का पाबंद होना चाहिए .
- (10) हमें पोषण से भरपूर खाना खाना चाहिए.

\*\*\*\*\*



# धरती कहे पुकार के

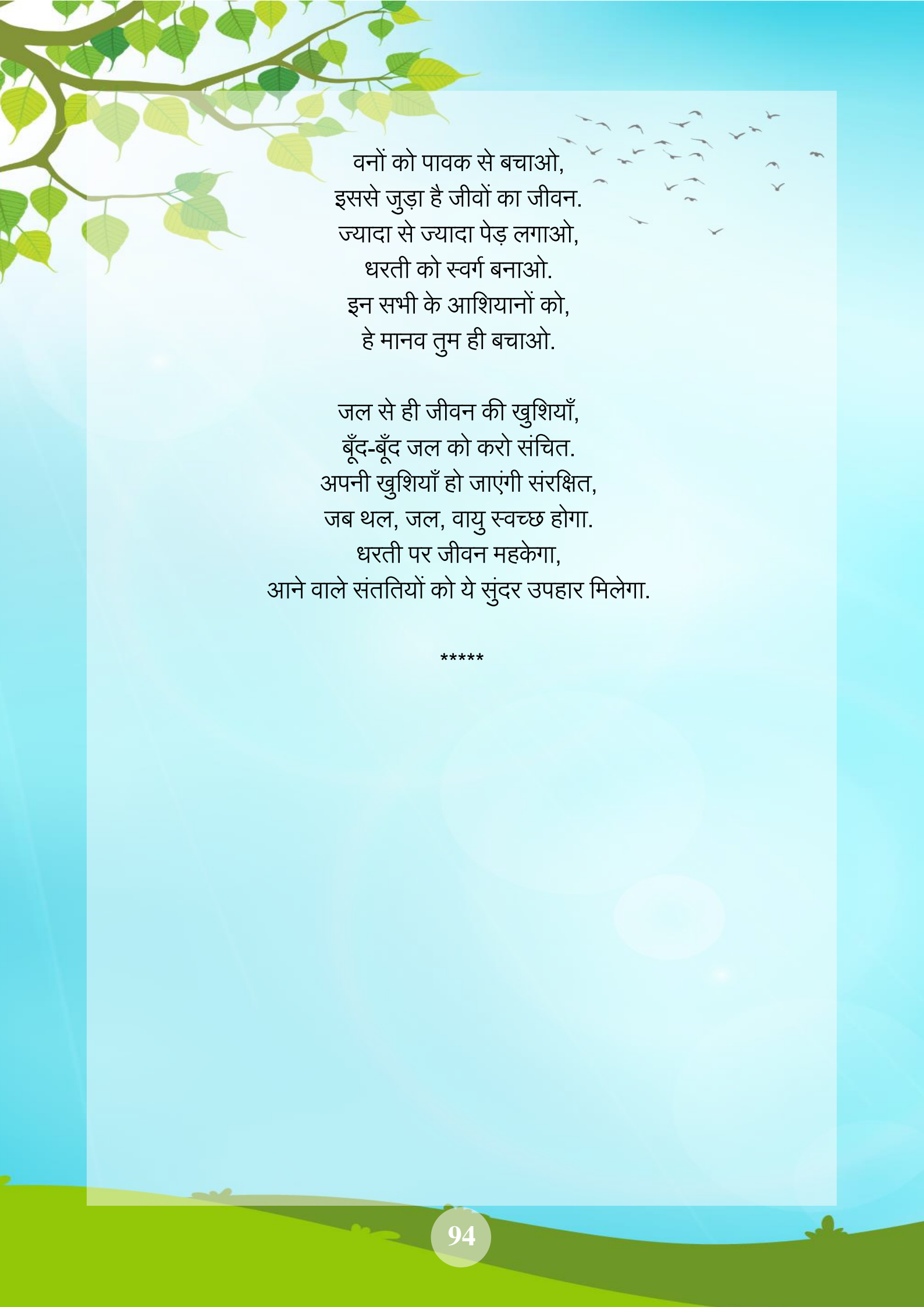
रचनाकार- श्रीमती सुचित्रा सामंत सिंह, Jagdalpur



प्रकृति ने वरदान दिया,  
सजी सजाई धरती देकर.  
हरी-भरी मखमली चादर,  
नील गगन अति सुन्दर.  
निर्मल शुद्ध मीठा नीर,  
सभी जीवों की प्यास बुझाती.

हरे भरे पेड़ लहराते,  
स्वच्छ शुद्ध प्राण वायु देते.  
वन्य जीव पक्षी ये सारे,  
लगते हैं सहचर हमारे.  
पर लगता है मानव,  
धरती का दुख न जाने.

मुझ संग वन्य जीव सारे,  
हरे भरे पेड़ पौधे सारे.  
एक दिन नष्ट हो जाएंगे,  
नदी तालाबों झील नहरो में.  
फैलाओ न कचरे सारे,  
हे मानव कुछ करो उपाय.



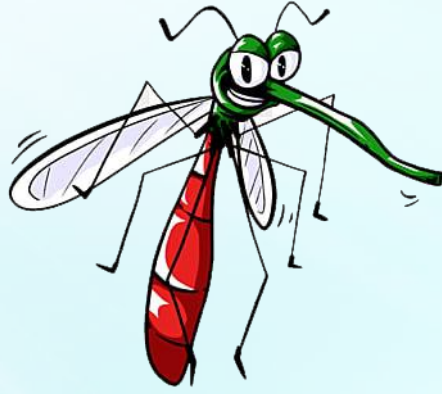
वनों को पावक से बचाओ,  
इससे जुड़ा है जीवों का जीवन.  
ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाओ,  
धरती को स्वर्ग बनाओ.  
इन सभी के आशियानों को,  
हे मानव तुम ही बचाओ.

जल से ही जीवन की खुशियाँ,  
बूँद-बूँद जल को करो संचित.  
अपनी खुशियाँ हो जाएंगी संरक्षित,  
जब थल, जल, वायु स्वच्छ होगा.  
धरती पर जीवन महकेगा,  
आने वाले संततियों को ये सुंदर उपहार मिलेगा.

\*\*\*\*\*

# मच्छर भाई

रचनाकार- राजेंद्र श्रीवास्तव, विदिशा



मच्छर भाई राम-राम, हाथ जोड़कर तुम्हें प्रणाम.  
बड़े-बड़े तुम से डरते हैं, कहने को छोटा है नाम.

तुम कितने दुबले-पतले हो, हड्डी का न नाम निशान.  
लेकिन बड़े पहलवानों की, कर देते आफत में जान.

जहाँ है कीचड़ पानी घास वही तुम्हारा प्रिय आवास.  
जो स्वच्छ रखते घर अपना, उनके नहीं फटकते पास.

दिल्ली हो या देहरादून, जब आता है तुम्हें जुनून.  
होकर मस्त रात-दिन गाते, चूस-चूस कर सबका खून.

खून चूसते हो दिन-रैन, लेते नहीं जरा भी चैन.  
फैलाते हो रोग मलेरिया, खाना पड़ती हमें कुनैन.

\*\*\*\*\*

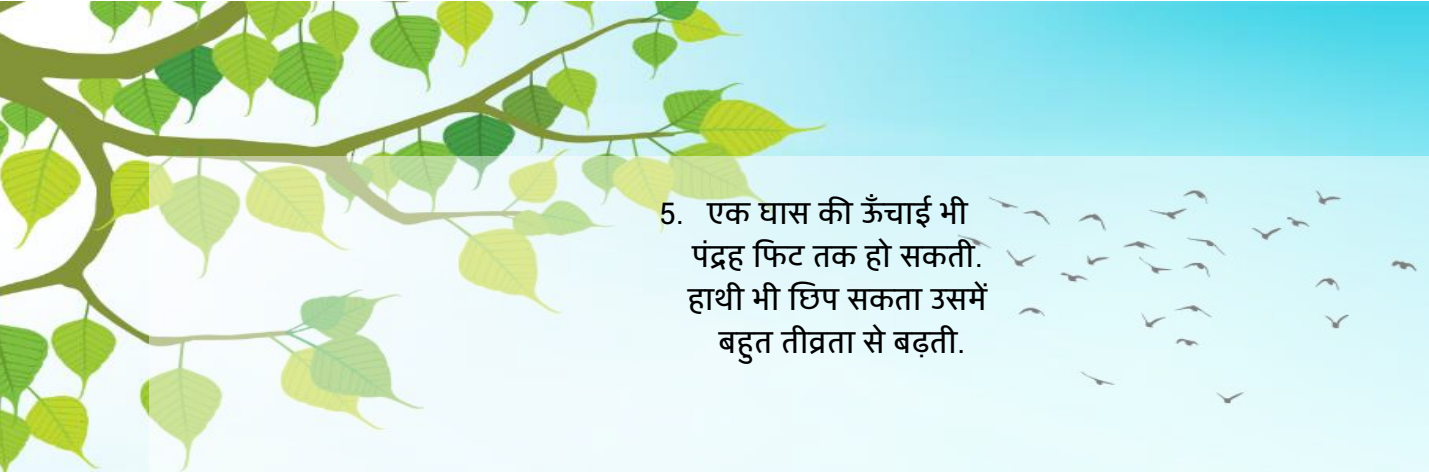


# पर्यावरणीय बाल पहेलियाँ

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ



1. प्राणी श्वास से इसे छोड़ते  
पेड़-पौधे करते अवशोषण.  
बड़े धरा पर जब हरियाली  
तभी हो सके दूर प्रदूषण.
2. तना वृक्ष का सफेद व लंबा  
'पर्यावरण का शत्रु' कहाता.  
सबसे अधिक करे जल-शोषण  
आसानी से यह उग जाता.
3. ध्वनिप्रदूषण को इसमें मापें  
दुखदायी होता अति शोर.  
शांत क्षेत्र में अतिशय कम हो  
कम पर ही देते हम जोर.
4. 'पर्यावरण का रक्षा कवच' है  
एक गैस की परत कहाता.  
छिद्र परत में जब बड़ जाते  
तब जीना दुर्लभ हो जाता.



5. एक घास की ऊँचाई भी  
पंद्रह फिट तक हो सकती.  
हाथी भी छिप सकता उसमें  
बहुत तीव्रता से बढ़ती.

6. सबसे अधिक है वर्षा होती  
भारत में है कौन स्थान.  
वह मेघालय राज्य में स्थित  
पूर्व खासी हिल्स की पहचान.

उत्तर- 1. कार्बन डाई आक्साइड, 2. सफेदा या यूकेलिप्टस, 3. डेसीबल, 4. ओजोन परत, 5. नेपियर या हाथी  
घास, 6. मासिनराम

\*\*\*\*\*

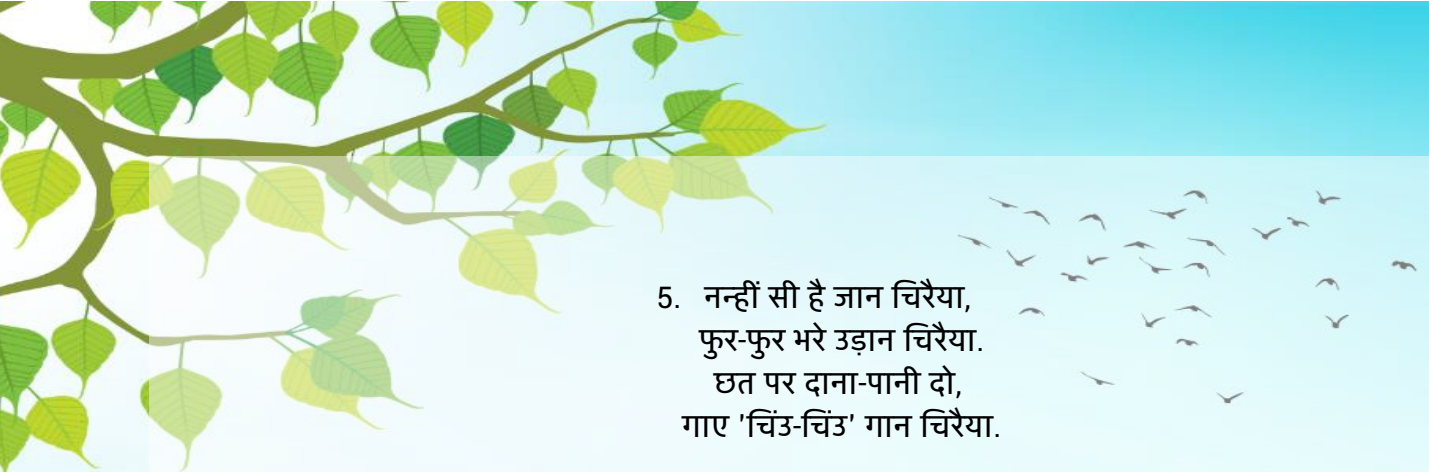
# बाल पहेलियाँ

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ



1. करना बचत सिखाती है,  
जादू अजब दिखाती है.  
पेट में पैसे रख लेती,  
सारे वापस कर देती.
2. गर्मी में फर - फर चलता,  
जाड़े में रहता है बंद.  
ठंडी हवा खिलाता है,  
कर लो तेज या रखिए मंद.
3. हर दम समय बताती है,  
चलते रहो सिखाती है.  
अपने सिरहाने रख लो,  
बजा अलार्म जगाती है.
4. करो पढ़ाई आनलाइन,  
वीडियो गेम दिखाता है.  
बहुत देर मत साथ रखो,  
नहीं तो स्वास्थ्य गिराता है.





5. नन्हीं सी है जान चिरैया,  
फुर-फुर भरे उड़ान चिरैया.  
छत पर दाना-पानी दो,  
गाए 'चिंउ-चिंउ' गान चिरैया.

6. मुझमें काले-काले अक्षर,  
जो भी पढ़े, न रहे निरक्षर.  
मुझमें बहुत भरा है ज्ञान,  
क्या कहते मुझको विद्वान.

7. मुझमें शब्दों का भंडार,  
जिसमें अर्थ का होता ज्ञान.  
ऐसी पुस्तक नित्य पढ़े जो,  
बन जाए अनुपम विद्वान.

उत्तर - 1. गुल्लक, 2. पंखा, 3. घड़ी, 4. मोबाइल, 5. गौरैया, 6. पुस्तक, 7. शब्दकोश

\*\*\*\*\*

# पर्यावरण बचाएँ

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ



धरती पर हरियाली लाकर, पर्यावरण बचाएँ.  
स्वच्छ रहे परिवेश, नागरिक सभ्य कहाएँ.

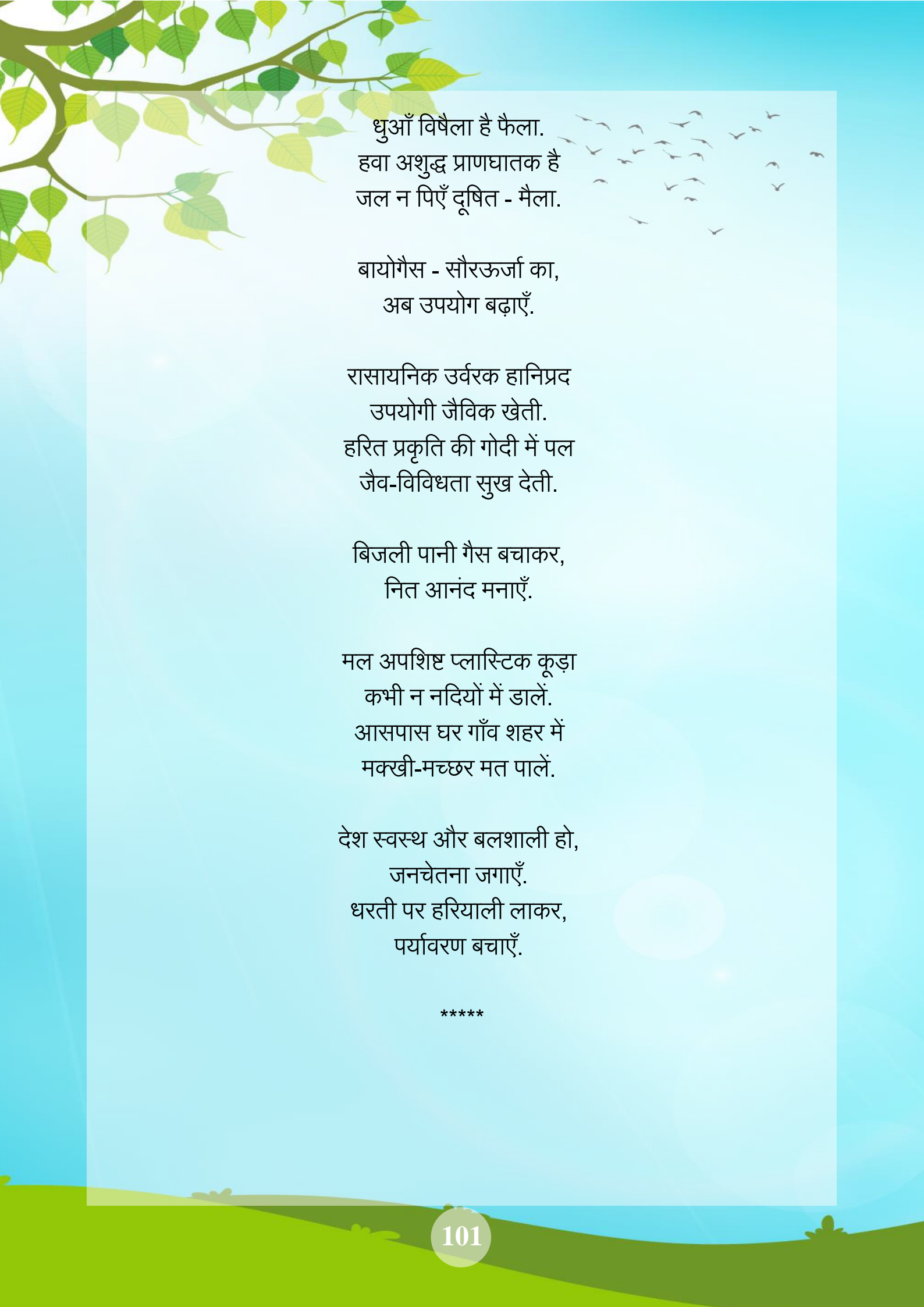
कार्बन डाई आक्साइड पीकर  
वृक्ष आक्सीजन देते.  
फल-फूलों से सेवा करते  
हमसे कुछ ना लेते.

वृक्ष न काटें,  
पालन-पोषण का सद्धर्म निभाएँ.

पर्यावरण-मित्र पशु-पक्षी,  
उन्हें चाहिए संरक्षण.  
जहाँ वनों की रहे प्रचुरता  
वहाँ अधिक हो जल-वर्षण.

हरेभरे वन, सुखमय जीवन  
मूलमंत्र अपनाएँ.

ईंधनपेट्रोल जलने से ही



धुआँ विषैला है फैला.  
हवा अशुद्ध प्राणघातक है  
जल न पिएँ दूषित - मैला.

बायोगैस - सौरऊर्जा का,  
अब उपयोग बढ़ाएँ.

रासायनिक उर्वरक हानिप्रद  
उपयोगी जैविक खेती.  
हरित प्रकृति की गोदी में पल  
जैव-विविधता सुख देती.

बिजली पानी गैस बचाकर,  
नित आनंद मनाएँ.

मल अपशिष्ट प्लास्टिक कूड़ा  
कभी न नदियों में डालें.  
आसपास घर गाँव शहर में  
मक्खी-मच्छर मत पालें.

देश स्वस्थ और बलशाली हो,  
जनचेतना जगाएँ.  
धरती पर हरियाली लाकर,  
पर्यावरण बचाएँ.

\*\*\*\*\*



# बच्चों के साथ व्यवहार

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ



बच्चों के संग कीजिए, ऐसा मृदु व्यवहार.  
घड़ा बनाते समय ज्यों, करता कुशल कुम्हार.

दिखने में तो हों कड़क, सरस हृदय हो नर्म.  
डॉट-डपट के समय भी, न हों क्रोध से गर्म.

बच्चों संग मिलजुल रहें, सदा दिखाएँ प्यार.  
उनको उत्तर दीजिए, प्रश्नों के अनुसार.

कुशल मार्गदर्शक बनें, अभिभावक प्रिय मित्र.  
शिक्षक जैसा खींच दें, सुलभ बालमन चित्र.

बच्चों को दायित्व दें, हो मानसिक विकास.  
गलती करने पर मिले, दण्डपूर्ण आभास.

बच्चों से बातें करें, साथ खेलिए खेल.  
बाल सुलभ सुप्रवृत्ति पर, डालें नहीं नकेल.

\*\*\*\*\*

# पानी हे अनमोल

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा



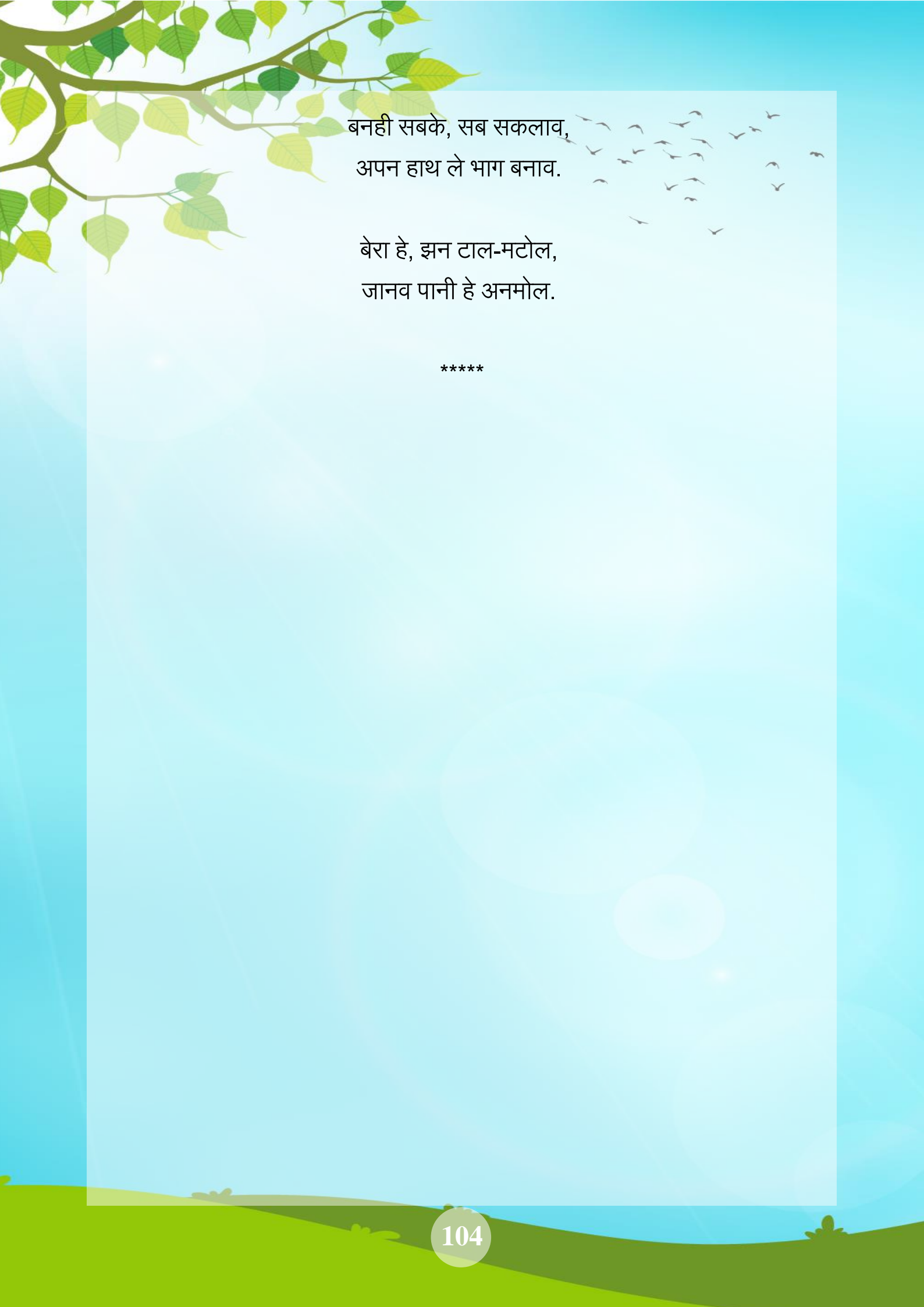
बादर ले होवय बरसात,  
रदरद-रदरद दिन अउ रात.

पानी भागय खारे-खार,  
छलकत आगर धारे-धार.

देखत मा मन जावय फूल,  
पानी छेका जाथन भूल.

गरमी आवय, सब हलकान,  
बूँद-बूँद कीमत पहिचान.

बरसा बिरथा झन दव फेंक,  
बाँध-बँधानी करलव छेंक.



बनही सबके, सब सकलाव,  
अपन हाथ ले भाग बनाव.

बेरा हे, झन टाल-मटोल,  
जानव पानी हे अनमोल.

\*\*\*\*\*



# बादर के रूप

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा



पाँख लगा बादर उड़ियाथें,  
आनीबानी रूप दिखाथें.

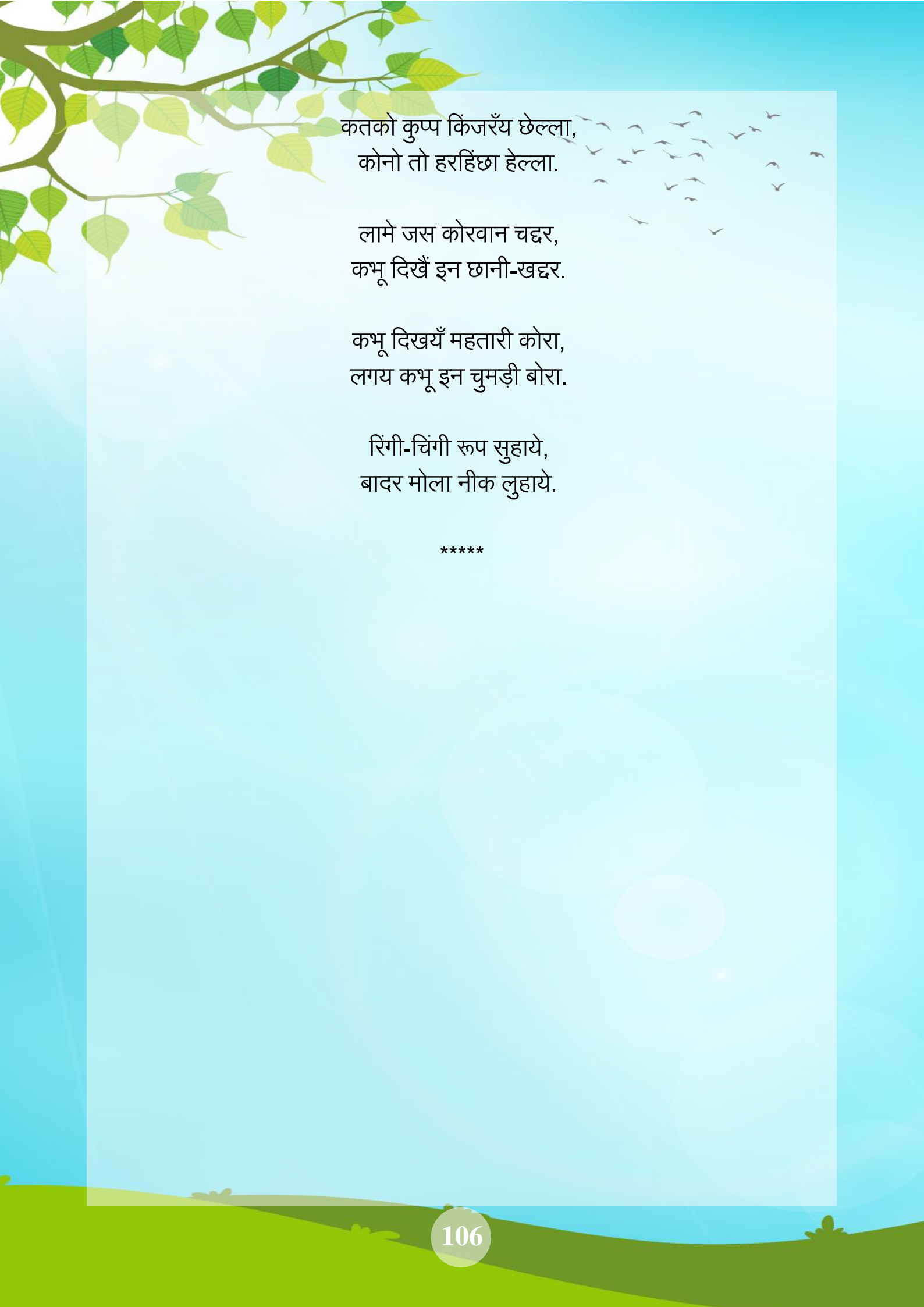
दिखथें बादर जोक्कर जकला  
लगथें भुतुवा, भालू भकला.

कतको हंसा जइसे उज्जर,  
कोनो बिरबिट कजरी अलकर.

कोनो दिखँय मुंदरी छल्ला,  
कतको अरझे, कतको पल्ला.

छिन मा आने, छिन मा ताने,  
बस रूप बदलथें मनमाने.

कभू लगय इन भौंरा-बाँटी,  
कहूँ दिखयँ दाई के साँटी.



कतको कुप्प किंजरँय छेल्ला,  
कोनो तो हरहिंछा हेल्ला.

लामे जस कोखान चद्वर,  
कभू दिखैं इन छानी-खद्वर.

कभू दिखयँ महतारी कोरा,  
लगय कभू इन चुमड़ी बोरा.

रिंगी-चिंगी रूप सुहाये,  
बादर मोला नीक लुहाये.

\*\*\*\*\*

# चीला बनाये हव

रचनाकार- शांति लाल कश्यप, कोरबा



चीला बनाये हव गोल - गोल,  
तावा म भाई, तावा म.

मुठिया बनाये हव, गुझिया बनाये हव,  
चीला बनाये हव गोल - गोल,  
तावा म भाई, तावा म.

फरा बनाये हव, बरा बनाये हव,  
चीला बनाये हव गोल - गोल,  
तावा म भाई, तावा म.

ठेठरी बनाये हव, खुरमी बनाये हव,  
चीला बनाये हव गोल - गोल,  
तावा म भाई, तावा म.

चकौली बनाये हव, सलौनी बनाये हव,  
चीला बनाये हव गोल - गोल,  
तावा म भाई, तावा म.

\*\*\*\*\*



# पर्यावरण पच्चीसी - मौलिक दोहे

रचनाकार- कन्हैया साहू "अमित"\*, बलौदाबाजार



मिट्टी पादप जल हवा, पर्यावरणी नाम.  
जीवन रक्षक को सदा, करता अमित प्रणाम.

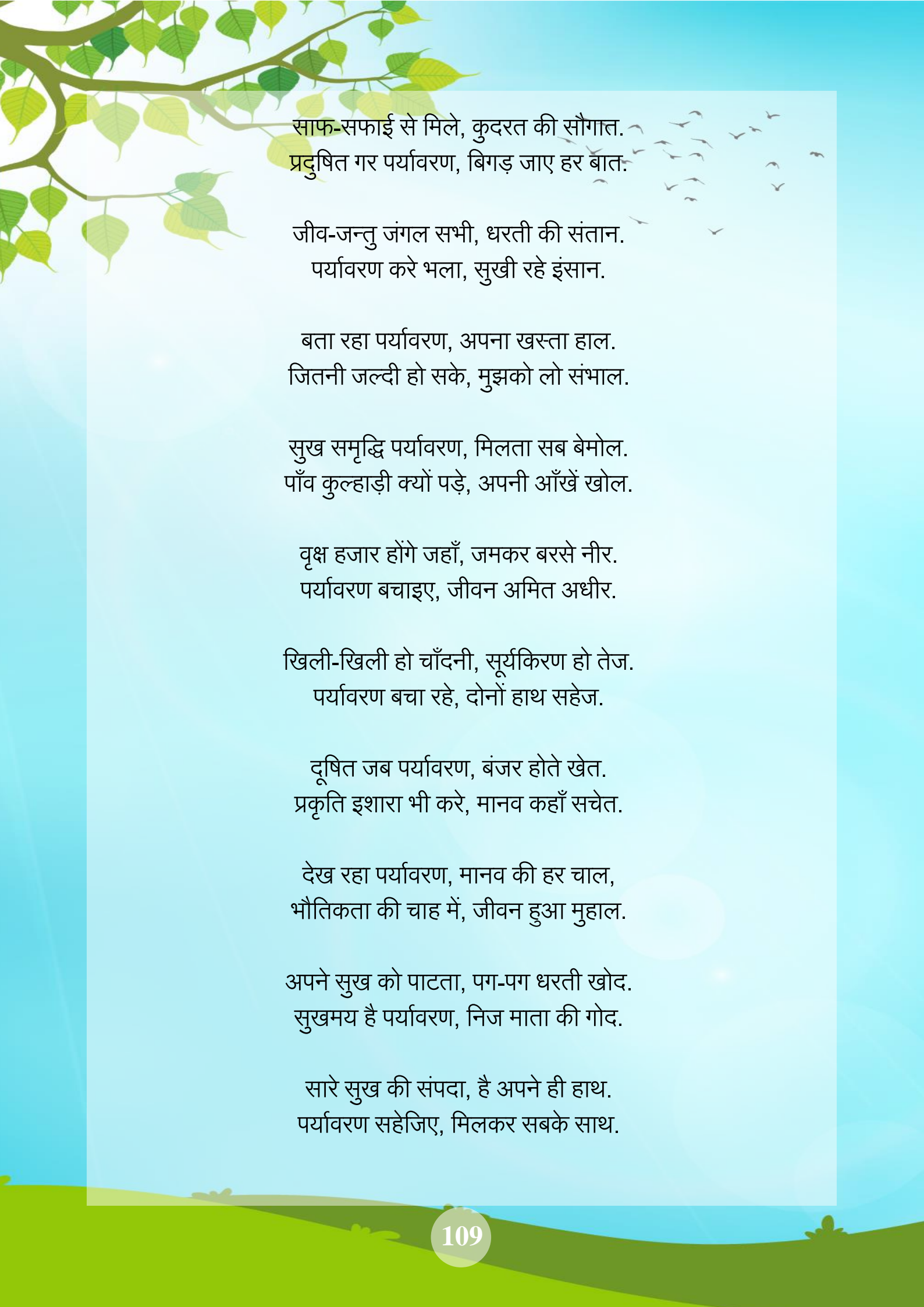
स्वच्छ हवा बहती रहे, जब तक चारों ओर.  
मीत लगे पर्यावरण, नाचे मन का मोर.

देता है पर्यावरण, अपनी बाँहें खोल.  
संरक्षण करते रहें, है यह अति अनमोल.

कुदरत है पर्यावरण, सदा कीजिये मान.  
यही जगत की जिंदगी, यही अमित बलवान.

जल-थल सब निर्मल रहे, स्वच्छ बहे जब वायु.  
बढ़ जाएगी सौ गुनी, पर्यावरणी आयु.

जल जमीन जंगल जहाँ, मानुष है आबाद.  
वरदानी पर्यावरण, फिर क्यों व्यर्थ विवाद.



साफ-सफाई से मिले, कुदरत की सौगात.  
प्रदूषित गर पर्यावरण, बिगड़ जाए हर बात.

जीव-जन्तु जंगल सभी, धरती की संतान.  
पर्यावरण करे भला, सुखी रहे इंसान.

बता रहा पर्यावरण, अपना खस्ता हाल.  
जितनी जल्दी हो सके, मुझको लो संभाल.

सुख समृद्धि पर्यावरण, मिलता सब बेमोल.  
पाँव कुल्हाड़ी क्यों पड़े, अपनी आँखें खोल.

वृक्ष हजार होंगे जहाँ, जमकर बरसे नीर.  
पर्यावरण बचाइए, जीवन अमित अधीर.

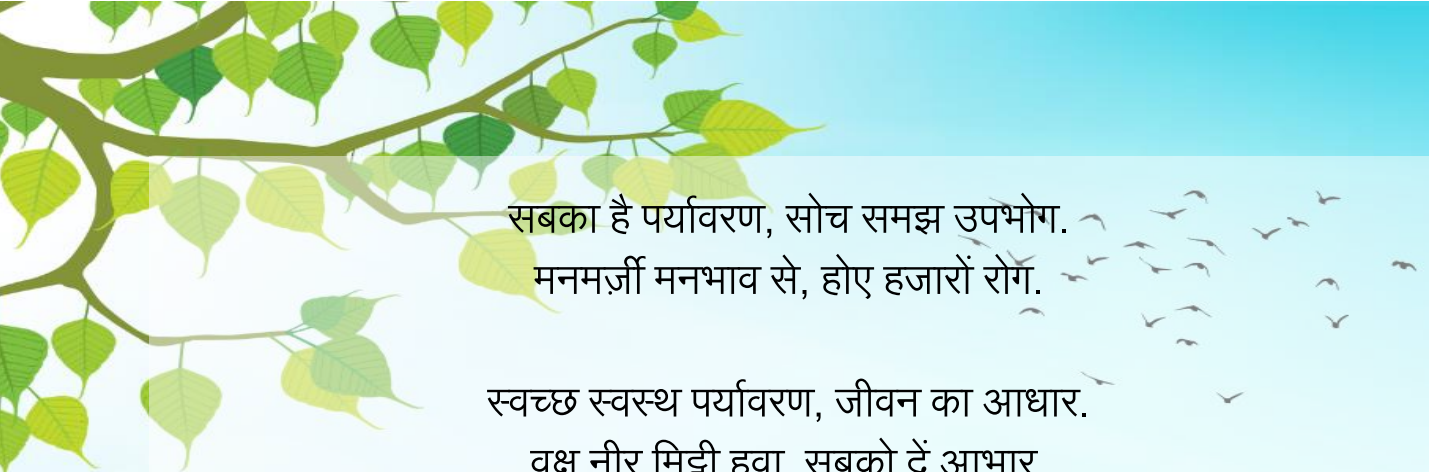
खिली-खिली हो चाँदनी, सूर्यकिरण हो तेज.  
पर्यावरण बचा रहे, दोनों हाथ सहेज.

दूषित जब पर्यावरण, बंजर होते खेत.  
प्रकृति इशारा भी करे, मानव कहाँ सचेत.

देख रहा पर्यावरण, मानव की हर चाल,  
भौतिकता की चाह में, जीवन हुआ मुहाल.

अपने सुख को पाटता, पग-पग धरती खोद.  
सुखमय है पर्यावरण, निज माता की गोद.

सारे सुख की संपदा, है अपने ही हाथ.  
पर्यावरण सहेजिए, मिलकर सबके साथ.



सबका है पर्यावरण, सोच समझ उपभोग.  
मनमर्जी मनभाव से, होए हजारों रोग.

स्वच्छ स्वस्थ पर्यावरण, जीवन का आधार.  
वृक्ष नीर मिट्टी हवा, सबको दें आभार.

कुआँ ताल पोखर नदी, बिन पानी सब सून.  
पर्यावरण सवाँरिए, देंगे खुशियाँ दून.

सुखदा है पर्यावरण, हम सबका मनमीत.  
कुदरत के कण-कण बसा, स्नेहिल सुर संगीत.

अमित क्रोध यह कुदरती, जन जीवन जंजाल.  
पर्यावरण असंतुलन, कभी बाढ़ भूचाल.

मानसून रीता रहे, धरा जलद बेमेल.  
पर्यावरण बिगड़ गया, बिगड़ा सबका खेल.

पर्यावरण जहर भरा, मनुज किये अपराध.  
खूब खजाने खोजता, निजहित रखता साध.

निर्मल जब पर्यावरण, प्रकृति लगे मधुमास.  
कूड़ा करकट फेंक के, करें नहीं उपहास.

दाता है पर्यावरण, अगणित है उपकार.  
सेवा करते लीजिये, जीवन भर उपहार.

\*\*\*\*\*



# आओ मिलकर पेड़ लगाएँ

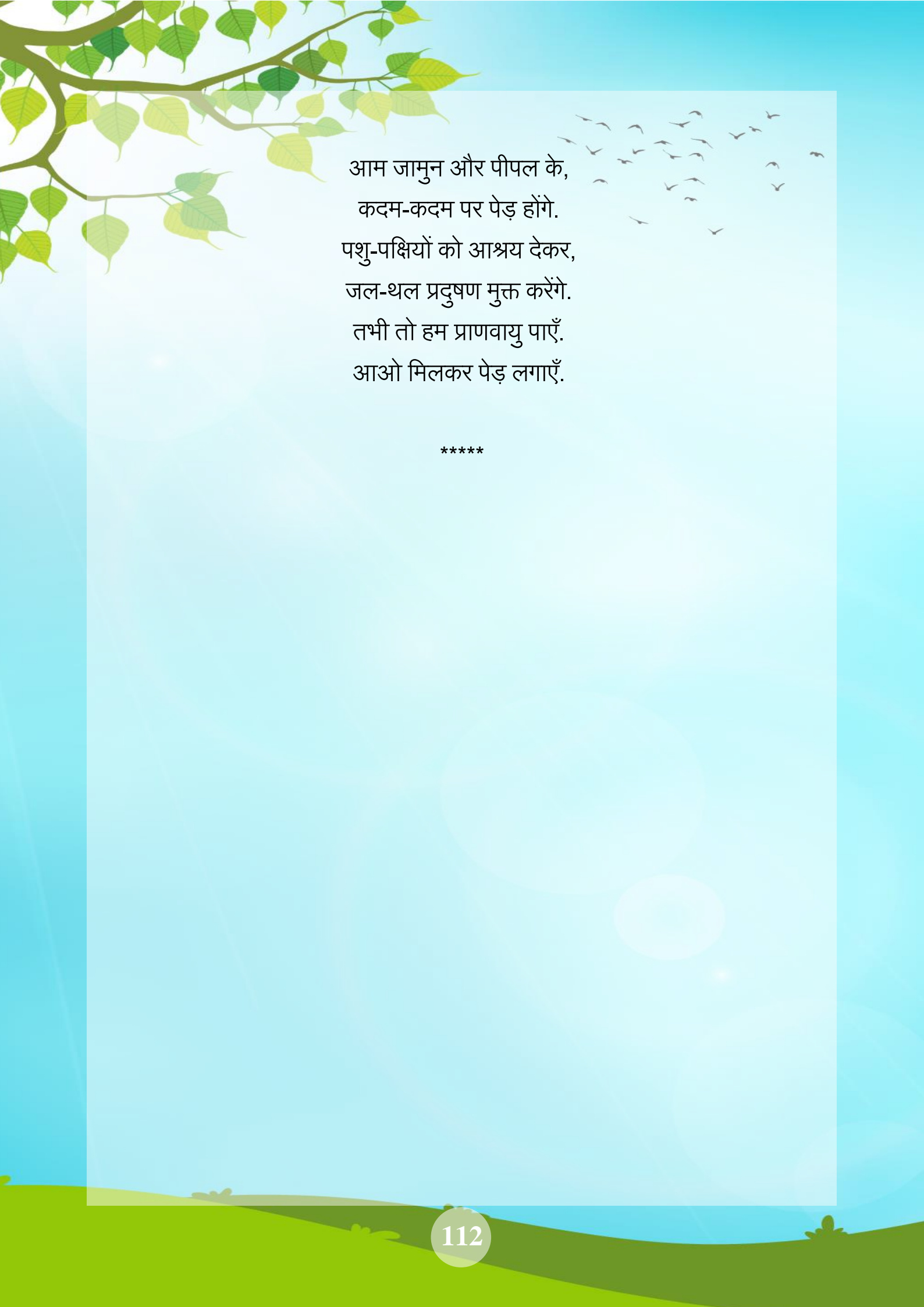
रचनाकार- सुशीला साहू, रायगढ़



आओ मिलकर पेड़ लगाएँ.  
धरती की हम जान बचाएँ.

अंकुरित कर हम बीज बोएँ,  
बंजर भूमि रहे न अब खाली.  
हमको शुद्ध हवा तब मिलेगी,  
जब करेंगे पेड़ों की रखवाली.  
वातावरण को स्वच्छ बनाएँ.  
आओ मिलकर पेड़ लगाएँ.

चारों तरफ होगी हरियाली.  
हवा बहेगी तब मतवाली.  
फल खाएँगे ताजा-ताजा.  
छाँव बैठकर बजाएँ बाजा.  
धरती की हम शान बढ़ाएँ.  
आओ मिलकर पेड़ लगाएँ.



आम जामुन और पीपल के,  
कदम-कदम पर पेड़ होंगे.  
पशु-पक्षियों को आश्रय देकर,  
जल-थल प्रदुषण मुक्त करेंगे.  
तभी तो हम प्राणवायु पाएँ.  
आओ मिलकर पेड़ लगाएँ.

\*\*\*\*\*


# दो हजार के नोट की बिदाई

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा, अनजान



सेठ सत्यनारायण प्रसाद के तिजोरी में पड़े सारे नोट तिजोरी खोल कर रात में बाहर आ गए. सौ पांच सौ पचास बीस दस पांच दो एक के सारे नोट मिल कर दो हजार के नोट का चरण बंदन करने के बाद बोले हम सब को जब से पता चला कि हमारी सरकार ने दो हजार का नोट चलन से बंद कर दिया है, तब से सारे नोट बहुत हैरान परेशान हैं. उनको डर है सरकार हमारे साथी की तरह किसी और नोट को बंद न कर दे. सारे नोट बहुत चिन्ता में पड़े हुए थे. आठ साल पहले जब पहल बार सरकार ने पांच सौ और एक हजार का नोट बंद किया तो नोटों के साथ जनता ने भी खूब परेशानी और मुसीबत उठाई बैंक और डाकघर में हर दिन नोट जमा करने वालों की लम्बी लम्बी लाइन देख मन दुखी हो जाता था. आज फिर वही मुसीबत सर पर आ पड़ी है. पांच सौ का नोट खड़ा हो कर बोला मेरे भाईयों कल हमारा सेठ जब दुकान पर आएगा तो सभी दो हजार के नोट हमसे ले कर उसे बैंक में जमा कर देगा फिर हम दो हजार के नोट का दर्शन कभी नहीं कर पाएंगे इसलिए हम सभी नोट दो हजार के नोट की शान से विदाई करना चाहते हैं. मेरी बात से जो भी सहमत हो वह खड़ा हो जाए और जो असहमत हो वह बैठा रहे! पांच सौ के नोट की बात सुनकर सभी नोट खड़ा हो कर कहने लगे हमें पांच सौ के नोट की बात मंजूर है. हम सब खूब धूम धाम से दो हजार के नोट की विदाई करेंगे और जी भर के खुशी मनाएंगे. दो हजार के सारे नोट लाइन से दूकान में बैठ गए और कहने लगे हम कल से आप सब से दूर हो जाएंगे इसलिए आज की रात जी भर एक दूसरे को गले लगा कर खुशी तो मना लें यह मुलाकात आखिरी और अन्तिम मुलाकात होगी. फिर पता नहीं हम किस जन्म में फिर मिलेंगे कहते कहते दो हजार के सभी नोटों का गला भर आया. तभी सौ का नोट बोल पड़ा इस विदाई समारोह में कोई रोएगा नहीं हम हंसते गाते अपने बड़े भाई दो हजार के नोट की विदाई करेंगे. " हां हां, सौ का नोट ने बहुत सही बात कही है. " सारे नोट एक साथ बोल पड़े. पांच सौ का नोट खड़ा हो कर बोला हमारे पास तो फूल माला नहीं है जो दो हजार के नोट को पहना सकें इसलिए हम दो हजार के नोट की विदाई इसके चारो तरफ बीस बार पैकमाँ लगा





कर और जै कारा और जिन्दाबाद का नारा लगा कर करेंगे. "हां हां यह बहुत सुन्दर रहेगा." दस का नोट बोल उठा. फिर लाइन से एक दो पांच दस बीस पचास सौ और पांच सौ के नोट दो हजार के नोट का पैकमाँ करने लगे और दो हजार का नोट जिन्दाबाद का नारा लगाने लगे. बीच बीच में दो हजार का नोट अमर रहे का नारा भी लगा रहे थे. सुबह होने से पहले सारे नोट दो हजार के नोट को गले लगा कर बारी बारी से सेठ की तिजोरी में चलते चले जा रहे थे. अन्त में दो हजार का नोट सबको विदाई का धन्यवाद दे कर तिजोरी में बैठ गया. सुबह होते ही सेठ सत्यनारायण प्रसाद दुकान पर आए और तिजोरी से दो हजार के सारे नोट निकाल कर बैग में रख कर बैंक जाने लगे. दो हजार के नोट से अन्तिम बार मिल कर शेष सारे नोट तिजोरी में बैठ कर खुशी मनाने लगे और गाने लगे. यार मेरा अब मुझसे हो गया जुदा खुशी खुशी हम यार को कर रहे हैं विदा.



\*\*\*\*\*

# जनऊला

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा



1. हावय अइसन एक फकीर,  
जेखर पेट म परे लकीर.  
उपजय बाढ़य सबके खेत,  
लगय भूख तब एखर चेत.
2. एक गुफा के दू रखवार,  
होय दुनों के जय जयकार.  
करिया भुरुवा सादा रंग,  
रहय सदा मुखड़ा के संग.
3. पंख नहीं पर उड़ते जाय,  
संग हवा के ये बतियाय.  
हाथ नहीं पर लड़ते जाय,  
बिन चाकू के काट गिराय.
4. एक अचंभा, गजब कमाल,  
डारव हरियर, निकलय लाल.  
पक्का होवय जतके चाब,  
सकय न कोनो येला दाब.



5. बात बतावव मैं हा खास,  
का घटना हे आसेपास.  
रोज बिहनिया सबके द्वार,  
पढ़के बनथे सब हुशियार.

6. बइठे-बइठे एक्के ठाँव,  
पहुँचावव मैं सब ला गाँव.  
डामर करिया मोरे रंग,  
चलना सब ला मोरे संग.

7. जतके जादा आगू जाय,  
वतके पाछू छुटते पाय.  
एक संग नइ रेंगे आय,  
तभो सबो ला जा पहुँचाय.

8. करीं आँखी देख डराय,  
घर भर भारी उधम मचाय.  
कुतर-कुतर करथे हलकान,  
चीं-चीं के ये गावय गान.

9. दू झन सुग्घर लइका नेक,  
रंग रूप मा हावय एक.  
रहिथे सँघरा बनथे काम,  
तुरत बतावव एखर नाम.

10. तीन वर्ण के हावय नाम,  
कटै शुरू तब जय श्री राम.  
बीच कटै ता फल के नाँव,  
कटै आखिरी, काट मड़ाँव.

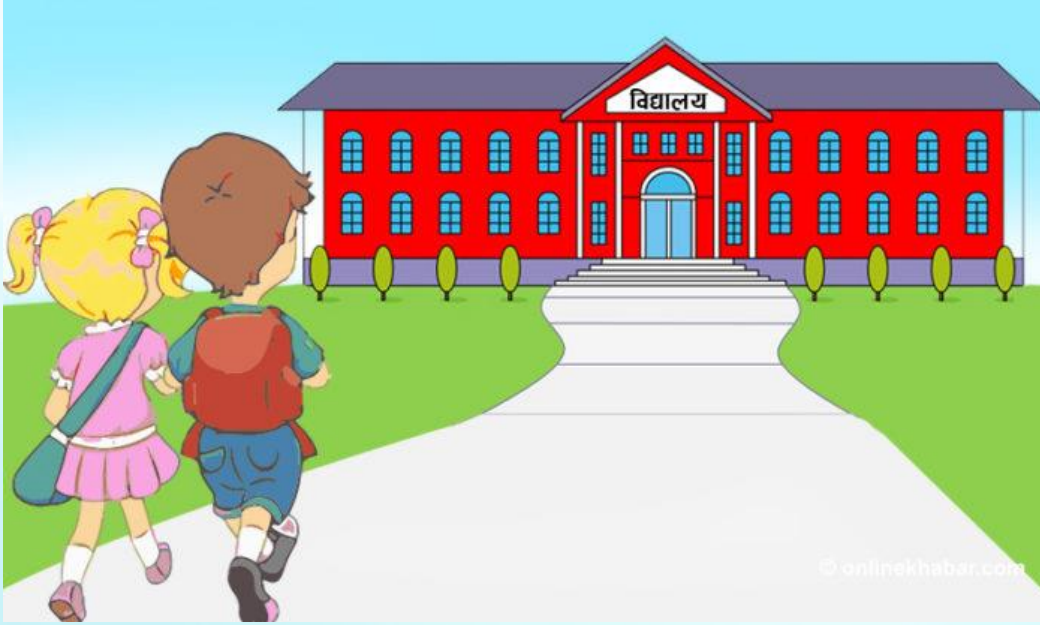
उत्तर: 1- गहूँ, 2- मेछा, 3- पतंग 4- पान 5- अखबार 6- सड़क, 7- कदम (पाँव), 8- मुसुवा, 9- पनही, 10-  
आराम

\*\*\*\*\*



# खुल गए स्कूल सारे

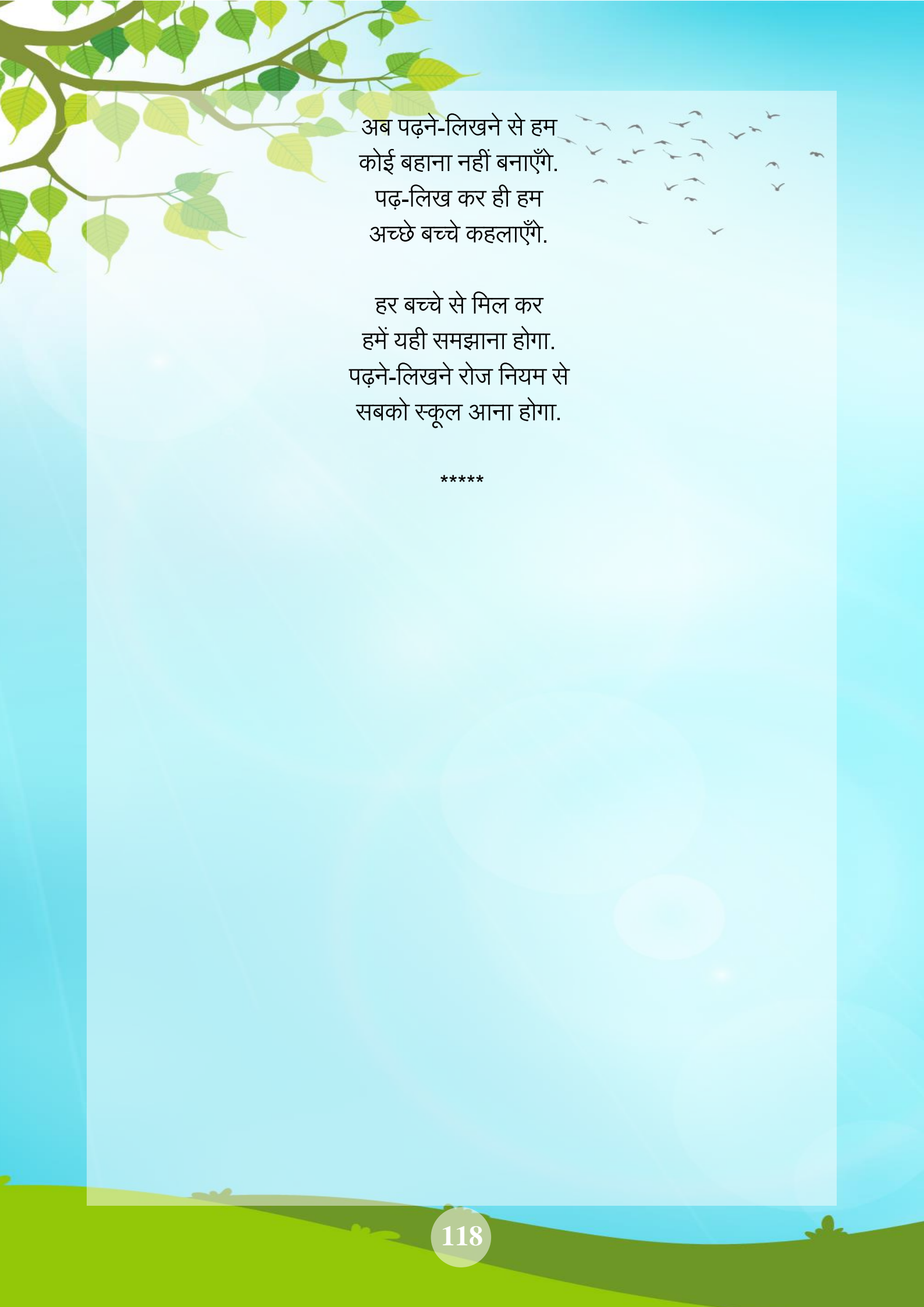
रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान



छुट्टी के दिन बीत गए  
खुल गए स्कूल सारे.  
बच्चों में खुशहाली छाई  
बुला रहे स्कूल प्यारे.

बैग कापी और किताब  
ले कर स्कूल जाना होगा.  
पढ़ने-लिखने में अब  
सारा ध्यान लगाना होगा.

पाठ सभी हम याद करेंगे  
तभी हम नम्बर पाएँगे.  
पढ़-लिख कर ही हम  
फस्टडिवीजन लाएँगे.



अब पढ़ने-लिखने से हम  
कोई बहाना नहीं बनाएँगे.  
पढ़-लिख कर ही हम  
अच्छे बच्चे कहलाएँगे.

हर बच्चे से मिल कर  
हमें यही समझाना होगा.  
पढ़ने-लिखने रोज नियम से  
सबको स्कूल आना होगा.

\*\*\*\*\*

# बादल देखो आए

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

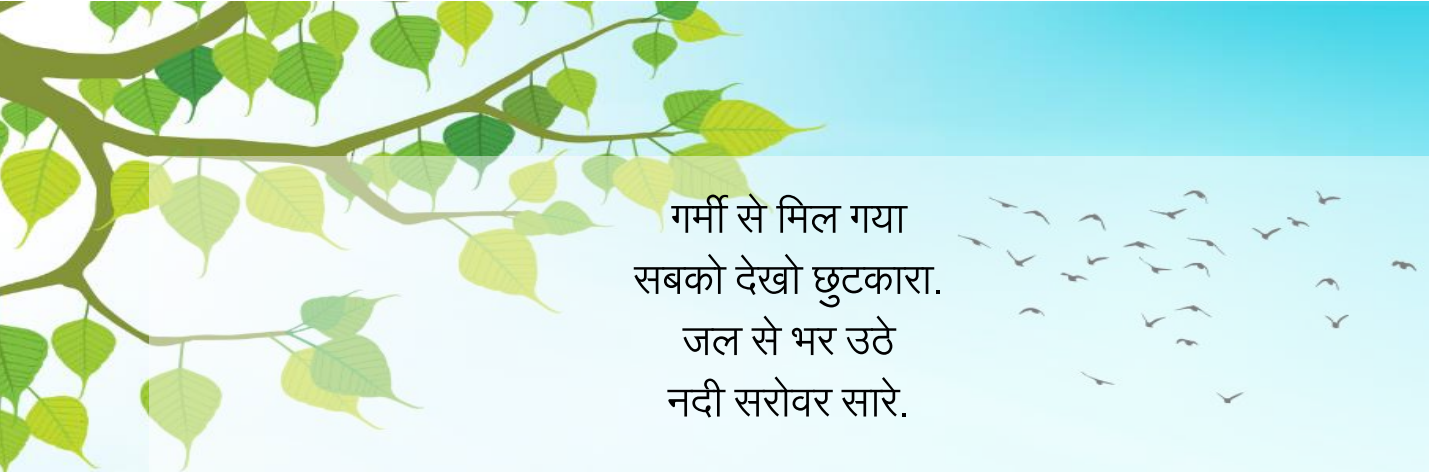


गर्मी से राहत देने को  
बादल देखो आए.  
भर कर जल समुद्र से  
अपने साथ हैं लाए.

गरज रहे हैं तड़क रहे हैं  
देखो बादल सारे.  
रिमझिम जल बरसा रहे हैं  
मिल कर बादल सारे.

खेतों की प्यास बुझाने  
बादल काले-काले आए.  
ताल पोखरों में पानी  
बादल भरने आए.





गर्मी से मिल गया  
सबको देखो छुटकारा.  
जल से भर उठे  
नदी सरोवर सारे.

बच्चे सारे खुशी-खुशी  
कागज की नाव लगे बहाने.  
मेढक मामा जल में कूद-कूद कर  
नाच अपना लगे दिखाने.

\*\*\*\*\*

# मुश्किल को दूर भगाएँ

रचनाकार- नलिन खोईवाल, इंदौर

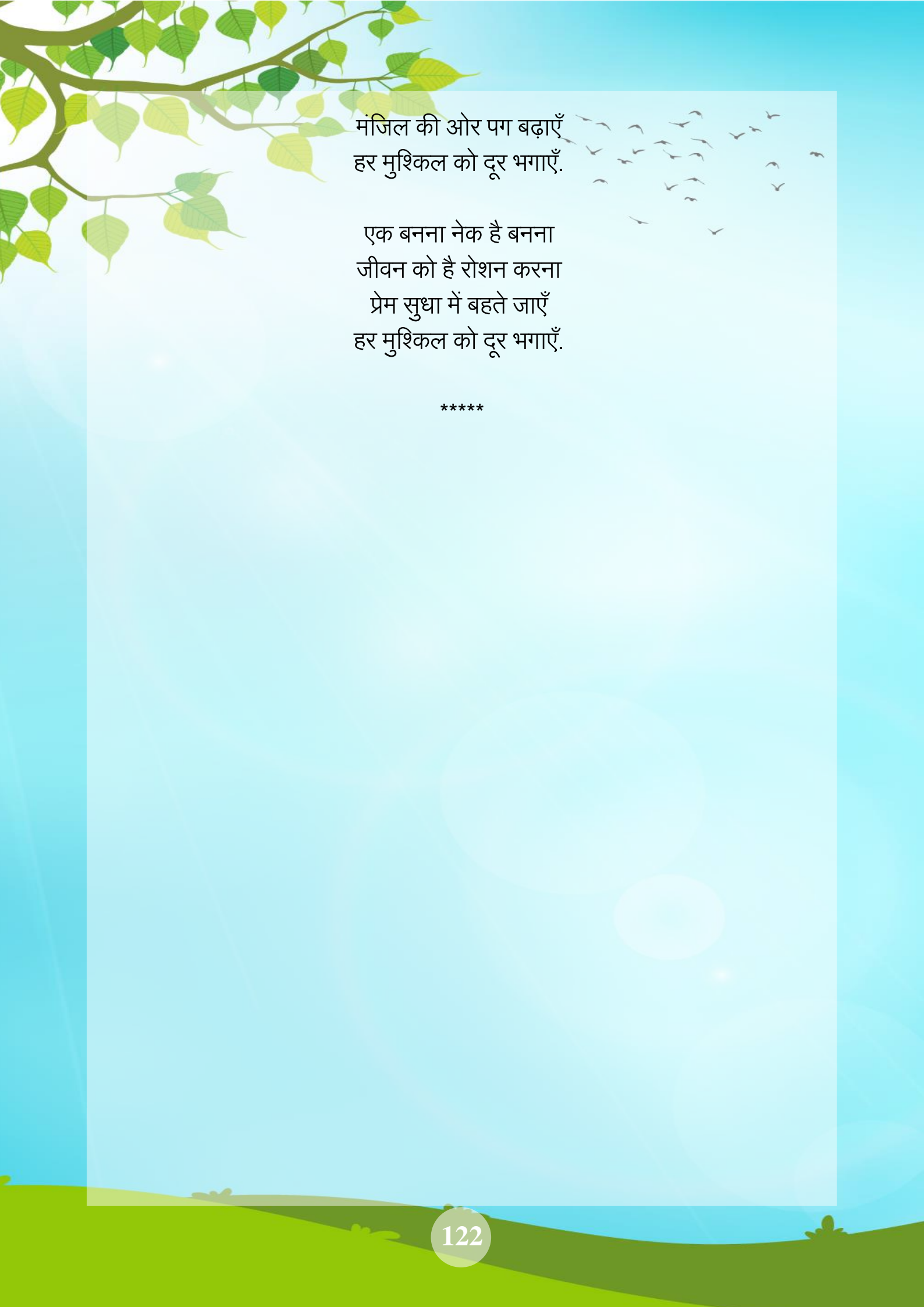


मुश्किल को दूर भगाएं  
बस आगे हम बढ़ते जाएँ  
हर मुश्किल को दूर भगाएँ.

भय से हमको कभी न डरना  
शिखर की ओर बढ़ते रहना  
सुप्त सपनों को हम जगाएँ  
हर मुश्किल को दूर भगाएँ.

मुश्किल से न कभी घबराना  
साथी मिलकर हाथ बढ़ाना  
सारी उलझन हम सुलझाएँ  
हर मुश्किल को दूर भगाएँ.

ठान अगर कुछ ना मुश्किल है  
दूर नहीं लगता साहिल है



मंजिल की ओर पग बढ़ाएँ  
हर मुश्किल को दूर भगाएँ.

एक बनना नेक है बनना  
जीवन को है रोशन करना  
प्रेम सुधा में बहते जाएँ  
हर मुश्किल को दूर भगाएँ.

\*\*\*\*\*



# प्यारी गुड़िया रानी

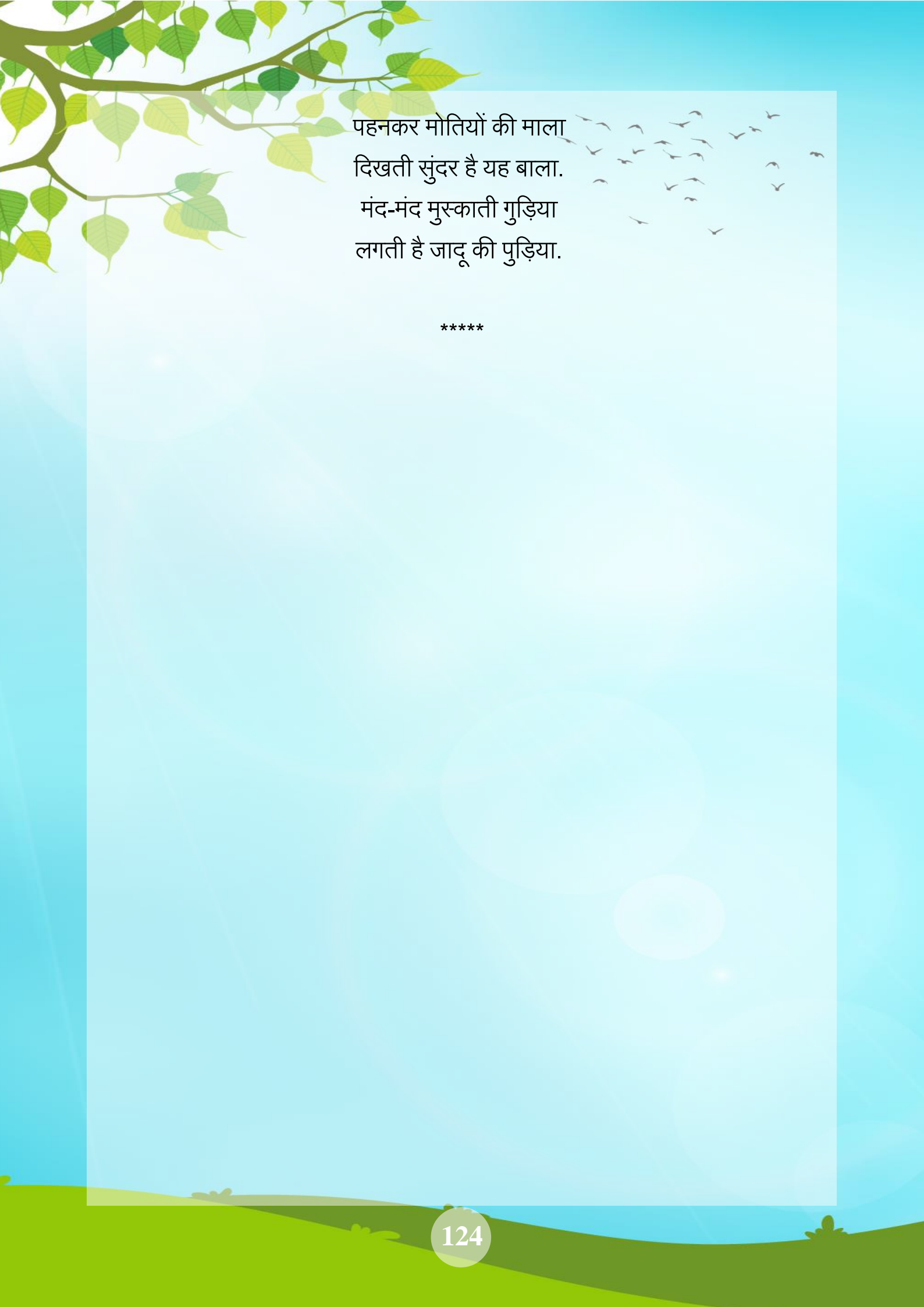
रचनाकार- नलिन खोईवाल, इंदौर



कितनी सुंदर बहुत सयानी  
मेरी प्यारी गुड़िया रानी.  
मीठी-मीठी इसकी बातें  
बीते निस दिन हँसते-गाते.

मटक-मटक कर जब चलती है  
परियों के जैसी लगती है.  
चिड़ियों-सा जब कलरव करती  
घर में कितनी रौनक रहती.

लाल वसन में कितनी भाती  
गगन में लालिमा छा जाती.  
सजधज कर जब गुड़िया चलती  
राह में फूल-कलियाँ सजती.



पहनकर मोतियों की माला  
दिखती सुंदर है यह बाला.  
मंद-मंद मुस्काती गुड़िया  
लगती है जादू की पुड़िया.

\*\*\*\*\*

# कमाल के मेरे बाबा

रचनाकार- नलिन खोईवाल, इंदौर



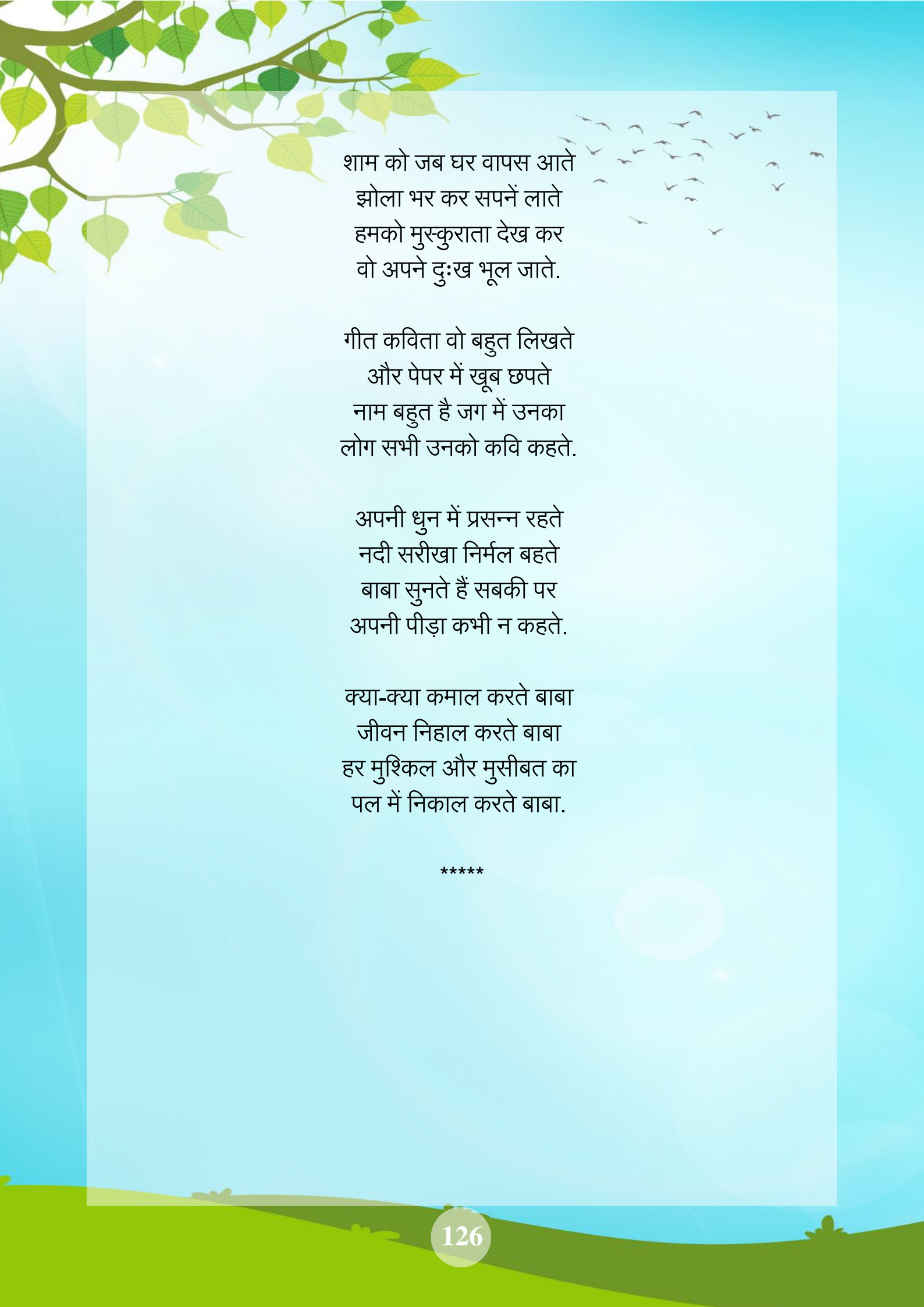
दिनकर वंदन करते बाबा  
कलरव खग का सुनते बाबा  
डाल विहग को दाना-पानी  
फिर दफ्तर को जाते बाबा.

सबसे अच्छे मेरे बाबा  
सबसे प्यारे मेरे बाबा  
झूठ-कपट की इस दुनिया में  
कितने सच्चे मेरे बाबा.

मेहनत से न कभी घबराते  
कर्म करना हमें सिखलाते  
मुश्किलों से ना डरते कभी  
हँसते-हँसते सब सह जाते.

सपनों की दुनिया है बाबा  
लाते प्यारी गुड़िया बाबा  
उन सा ना कोई जग में  
सारा जगत घूमिया बाबा.





शाम को जब घर वापस आते  
झोला भर कर सपनें लाते  
हमको मुस्कुराता देख कर  
वो अपने दुःख भूल जाते.

गीत कविता वो बहुत लिखते  
और पेपर में खूब छपते  
नाम बहुत है जग में उनका  
लोग सभी उनको कवि कहते.

अपनी धुन में प्रसन्न रहते  
नदी सरीखा निर्मल बहते  
बाबा सुनते हैं सबकी पर  
अपनी पीड़ा कभी न कहते.

क्या-क्या कमाल करते बाबा  
जीवन निहाल करते बाबा  
हर मुश्किल और मुसीबत का  
पल में निकाल करते बाबा.

\*\*\*\*\*

# मुस्काता बंदर

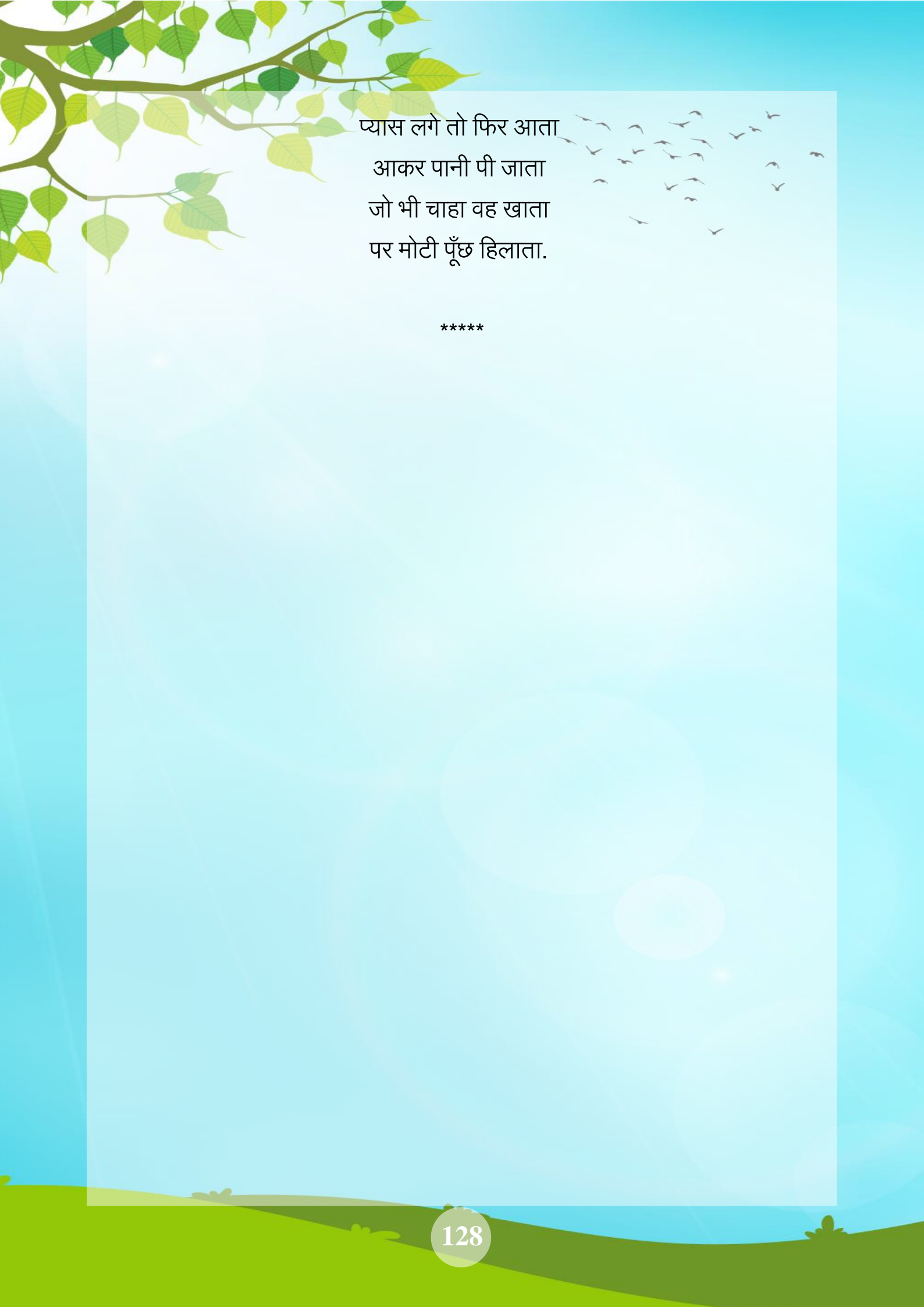
रचनाकार- नलिन खोईवाल, इंदौर



छत पर बंदर आता है  
छिन कर फल ले जाता है  
दूर खड़ा फल खाता है  
मुझको खूब चिड़ाता है.

खीं-खीं-खीं वह करता है  
बेकारण मुस्काता है  
डंडा लेकर दौड़ूँ तो  
मुझको खूब डराता है.

केले छिलकर खाता है  
छिलके हमें धराता है  
पेट उसका जब भर जाता  
जा तरुवर सुस्ताता है.



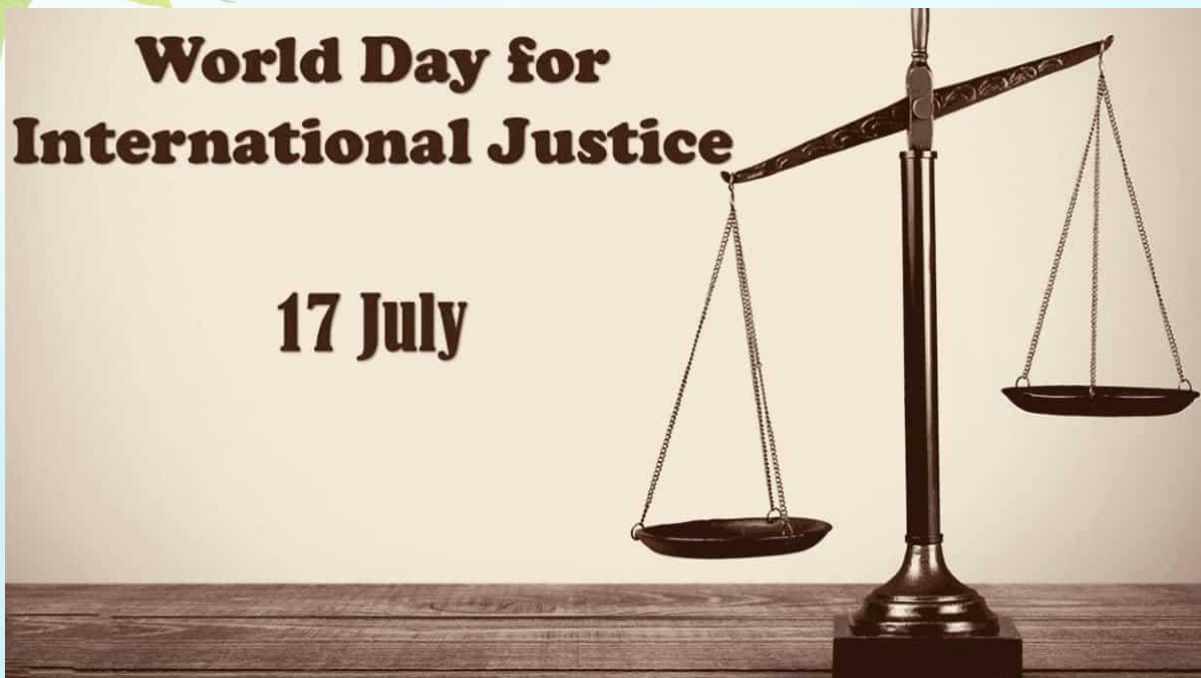
प्यास लगे तो फिर आता  
आकर पानी पी जाता  
जो भी चाहा वह खाता  
पर मोटी पूँछ हिलाता.

\*\*\*\*\*



# विश्व अंतरराष्ट्रीय न्याय दिवस

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ



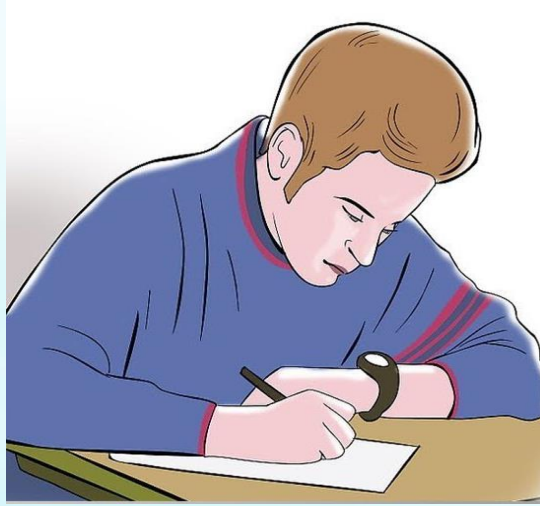
विश्व अंतरराष्ट्रीय न्याय दिवस प्रतिवर्ष 17 जुलाई को मनाया जाता है। 17 जुलाई 1998 को अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (आई सी सी) के 120 देशों ने रोम में 'रोम संविधि' नामक एक संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए एक मंच पर आए थे। अतः इसके स्थापना दिवस के रूप में 17 जुलाई 2002 से यह दिवस विश्व भर में मनाया जाता है।

अंतरराष्ट्रीय न्याय के लिए विश्व न्याय दिवस का उद्देश्य आई सी सी के प्रयासों की सराहना करना और अंतरराष्ट्रीय अपराधों के पीड़ितों को न्याय दिलाने के लिए एकजुट करना है। इसके अंतर्गत प्रमुख रूप से मानवता के विरुद्ध अपराधों (जैसे विनाश, सामूहिक नरसंहार आदि), युद्ध अपराध (जैसे जानबूझकर पीड़ा, यातना देना) और आक्रामकता के अपराध (जैसे सैन्य व्यवसाय, विलय आदि) पर ध्यान केंद्रित कराता है। यह दुनिया को आधुनिक न्याय प्रणालियों की स्थापना का भी स्मरण कराता है। यह दिवस मानवाधिकारों की वकालत करने और अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्याय को बढ़ावा देने पर जोर देता है। साथ ही गंभीर मुद्दों पर ध्यान देने के लिए विश्व भर के लोगों को एकजुट करने और आकर्षित करने के लिए भी प्रोत्साहित करता है। जो लोग विश्व की शांति और सुरक्षा को प्रभावित करते हैं, उनकी लिए एक बड़ी चेतावनी भी है। आई सी सी राष्ट्रीय अदालतों का स्थान नहीं लेता है तथापि यह तब उपलब्ध होता है जब कोई देश जांच में सक्षम नहीं हो पाता और तब वह अपराधियों पर मुकदमा चला सकता है। विश्व अंतरराष्ट्रीय न्याय दिवस, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अत्यंत प्रासंगिक एवं महत्वपूर्ण है।

\*\*\*\*\*

# पढ़ाई

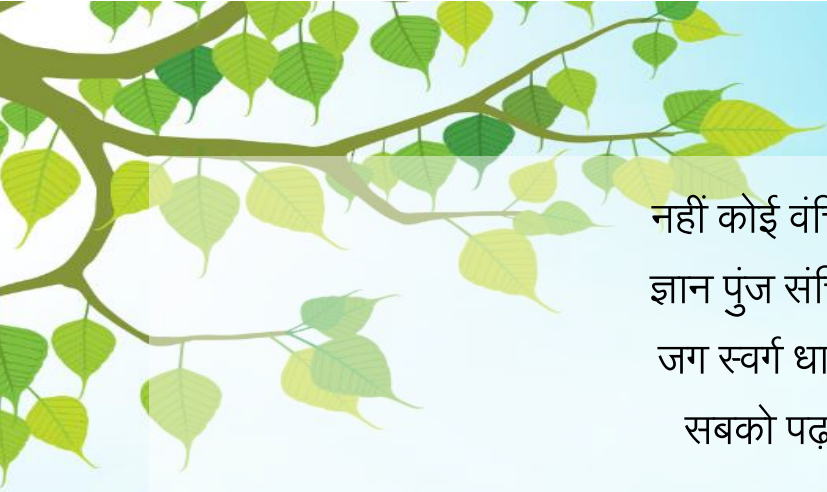
रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"



शिक्षण का अधिकार,  
सबको हो सरोकार.  
ज्ञान पाके जनम को,  
सफल बनाएंगे.

हम गुणवान बने,  
परम महान बने.  
शुभता से दुनिया को,  
नित महकाएँगे.

गुरुओं की सेवा करे,  
ज्ञान घट-घट भरे.  
कुंदन सा तप कर,  
भाग्य चमकाएंगे.



नहीं कोई वंचित हो,  
ज्ञान पुंज संचित हो.  
जग स्वर्ग धाम बने,  
सबको पढ़ाएंगे.



\*\*\*\*\*



# पिता

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"



थाम अंगुली चला बचपन,  
संग जिनके गुजारा हूँ.  
शुभ संस्कार जिनसे पा,  
जनम अपना सँवारा हूँ.  
हौसला नित्य जिनसे पा,  
बढ़ा जीवन मैं मैं आगे.  
पिताजी पूज्य हैं मेरे,  
उन्ही का मैं दुलारा हूँ.

पिता ही प्राण है मेरे,  
मीत मितान भी मेरे.  
बसे अन्तःकरण में जो,  
वही अभिमान है मेरे.  
बहुत ही दुःख सहा फिर भी,  
सभी खुशियाँ मुझे दे दी.  
मेरे गुरुवर प्रथम वह ही,  
वही भगवान मेरे है.

\*\*\*\*\*

# बंदर नटरवट

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे, महासमुंद



गर्मी का दिन था. बंदरो की जमावड़ा एक गाँव मुडीडीह के पास तालाब के किनारे पेड़ पर खूब मस्ती कर रहे थे. जो भी रास्ते में राहगीर पार करते सभी को डरवाने में उनको मजा आता था. बंदर का प्रजाति ही ऐसी है जिनको नटरवट करने की आदत होती है. पेड़ में फले फल को खाता फिर कुछ को तालाब में फेंकने में मजा आता था. तालाब में बहुत सारी मछलियाँ रहती थी. प्रतिदिन बंदर वहाँ आया करता. रोज फल खाता था. कुछ फल को पानी में फेकता उसे मछलियाँ खाती. ऐसे करते करते बंदर और मछली में दोस्ती हो गई. जब भी बंदर पेड़ में आते मछलियाँ नाचने लगती थी. क्योंकि उनको स्वादिष्ट भोजन जो मिलता. बंदर भी उछल कूद करते और अपना खुशी जाहिर करते.

बंदर के झुंड एक जगह एकत्रित होते तो खूब मस्ती करना उनका फितरत था. एक दिन मछली ने विचार किया क्यों न फल इतना स्वादिष्ट है तो फल देने वाला कितना स्वादिष्ट होगा. उसने उनको खाने की तरकीब सोची. फिर एक दिन फल खाने के लिए पुनः बंदर की झुंड पहुँचा तो मछलियाँ बोलने लगी. बंदर मित्र बंदर मित्र इतना बढ़िया स्वादिष्ट फल खिलाते हो इसके लिए दिल से धन्यवाद देते हैं. परन्तु एक शर्त है कि आप मना नहीं करेंगे. हमारा दिली इच्छा है कि आपको हाथ मिलाना चाह रहे हैं. हाथ मिलाने का सौभाग्य हमको कब मिलेगा. जरूर मछली मित्र मैं अभी आ जाता हूँ. दो तीन बंदर उछल कूद कर पानी के पास गए. कुछ पत्थर में खड़े हो गए. कुछ किनारे में गए. एक बंदर जैसे हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़े उसे दबोच कर पानी के अंदर ले गया और शार्क मछली एवं नीली व्हेल मछली उसको कच्चा चबा गया. बंदर के बाकी मित्र देख रहे हैं कि बंदर कब बाहर आएगा. काफी समय के बाद भी वापस नहीं आया तो समझ गया की मछली के शिकार में फस गया है. उस दिन से मछली और बंदर की दोस्ती हट गई. बाद में मछली को स्वादिष्ट भोजन में फल नहीं मिला.

इस कहानी से हमें सीख लेनी चाहिए कि मित्र से दगाबाज करने से खुद की हानि होती है. अतः मित्र से हमेशा दोस्ती रखे ताकि प्रेम स्नेह सदा दिन तक बरकरार रह सके.

\*\*\*\*\*

# नन्हीं परी की खुशी

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे, महासमुंद



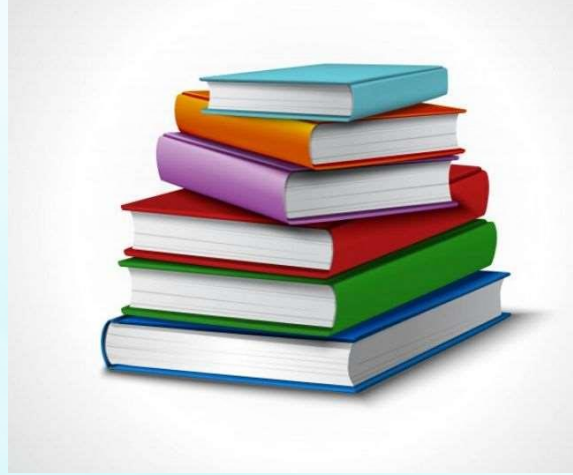
जैसे स्कूल खुला स्कूल में दाखिल करने के लिए उनके पापा नन्ही परी को लेकर स्कूल गया स्कूल जाते खुश हो गई.प्रिंसिपल सर ने उनको हाय हेलो किया.उन्होंने एक पोयम भी सुनाई स्कूल के प्राचार्य बहुत खुश हुए बहुत होनहार बच्ची है.नन्ही परी की खूब तारीफ हुआ.परंतु जैसे ही स्कूल जाने के लिए दूसरा दिन तैयार हुई.स्कूल जाने के लिए मना की मैं नहीं जाऊँगी.परन्तु पिताजी के समझाने एवं खाने की चीज देकर बहलाकर फुसलाकर स्कूल लिया.अपने पापा के साथ गई.जैसे स्कूल में गया छोड़कर वापस आना चाहा खूब रोने लगी.छोड़ने के बावजूद भी रोने लगी दो-तीन दिन तक उस स्कूल में मन नहीं लगा.आखिर उनकी आदत बनी फिर स्कूल जाना चालू की रोज दिन प्रतिदिन कुछ न कुछ सीखकर आती थी.पोयम्स जितना स्कूल में सीखती फिर आकर अपने पापा मम्मी को सुनाती थी. पढ़ाई जारी रखी शुरू से पढ़ाई में रुचि दिखाना चालू कर दी.होमवर्क करने लगी पढ़ाई लिखाई एवं पेंटिंग में उनकी काफी रुचि थी.नृत्य करना एवं गाना गाना उनका बेहद शौक था.परंतु भोजन खाने के लिए बहुत ही कतराती थी.हमेशा दुकान की खाने की वस्तु उनको पसंद मिठाई फल इत्यादि ज्यादा खाती.भोजन का सेवन नहीं करना यह उनके पिताजी के लिए बहुत बड़ी समस्या.फिर अभी धीरे धीरे खाने के लिए तैयार हो रही है.कभी कभी होमवर्क नहीं करती तो उनके पिताजी प्यार से समझाकर होमवर्क कराता. परीक्षा की घड़ी आई बहुत अच्छा सा पेपर बना. जब नन्ही परी का परीक्षा परिणाम आया तो प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होकर क्लास में अव्वल स्थान मिला.खुशी का ठिकाना नहीं रहा. नन्ही परी खुश हो गई और अपने शिक्षक और पिताजी को मिठाई खिलाकर अपनी खुशी जाहिर की.

\*\*\*\*\*



# किताब

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे, महासमुंद



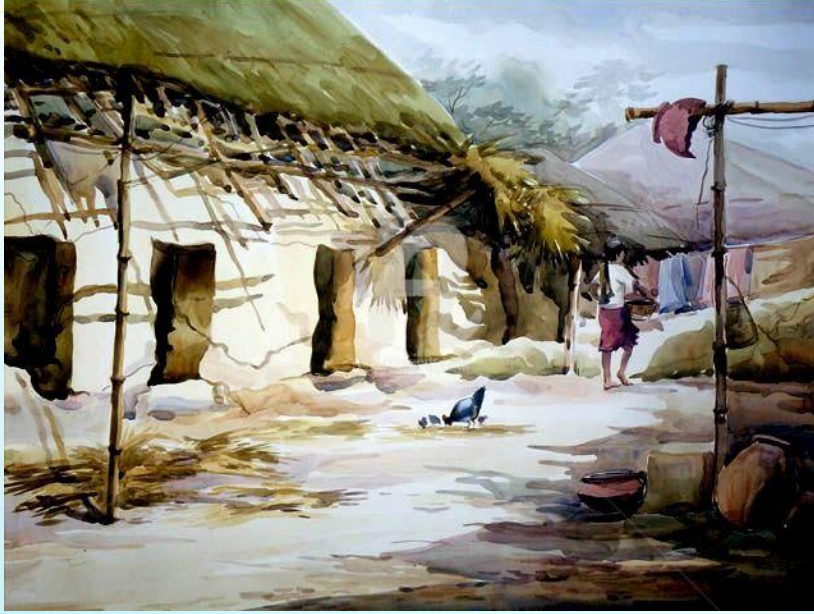
हर शिष्यों का जन्म सँवारे,  
यह किताब है मित्र हमारे.  
मन में ज्ञान सुधा भरते है,  
हर प्रश्नों का हल करते है.

पढ़ लिखकर है ज्ञानी बनना,  
मत लोभी अभिमानी बनना.  
शिक्षा के हम गीत सुनाए,  
निज भारत का मान बढ़ाये.

\*\*\*\*\*

# वास्तविक उद्देश्य

रचनाकार- श्रीमती श्वेता तिवारी, बिलासपुर



सोनपुरी नामक गांव में एक तालाब के किनारे छोटा सा भोलेनाथ का मंदिर था. वहां पर गांव के सारे बच्चे सुबह-शाम जाकर खेलते थे .आसपास में आम का पेड़ लगा हुआ था जिससे बच्चे आम तोड़कर खाते थे वहीं पर एक लड़का रहता था जिसका नाम था राजू .

राजू स्कूल नहीं जाता था और बच्चों को आते जाते देखकर उसे बड़ा मन लगता था कि मैं भी स्कूल जाता .वह अपनी मां से कहता है की मां इस बार स्कूल खुलेगा तो मेरा भी नाम लिखा देना. मां कहती है ठीक है बेटा इस बार हम स्कूल चलेंगे राजू अपने स्कूल जाने की दिन गिनने लगा. स्कूल जब खुलेगा तो मैं सबसे पहले जाकर अपना नाम लिखवाउंगा .आज राजू का जन्मदिन था राजू अपना जन्मदिन मंदिर के पेड़ के नीचे मना रहा था .उसने सभी बच्चों को वहां पर बुलाया सभी बच्चे आए और जन्मदिन मना कर सभी ने राजू को उपहार दिए उसमें था स्कूल ड्रेस और बैग में पुस्तकें पेंसिलमिली. यह देखकर राजू अत्यंत खुश हुआ. वहां सभी लोगों ने कहा कि कल जब विद्यालय जाएंगे तो हम तुमको भी साथ ले चलेंगे और वहां जाकर हमारे साथ में पढ़ना. राजू को मां ने स्कूल के लिए तैयार किया गया .वह बच्चों के साथ स्कूल गया. शिक्षक देखते ही बोले क्या पढ़ लिखकर जीवन में आगे बढ़ोगे राजू . राजू ने कहा जी .विद्यालय का पहला दिन था शिक्षक ने उसे चित्र वाली पुस्तक जिसमें जंगलों की छुट्टी में बच्चों ने राजू को अपने भोजन में थोड़ा-थोड़ा दिया उसने पेट भर कर भोजन किया छुट्टी होने पर बच्चों के साथ राजू घर आ गया .आज वह बहुत खुश था. मंदिर के पेड़ पर बैठी चिड़िया उसका रास्ता देख रही थी .राजू जैसे ही घर आया मां बहुत खुश हुई और उसे गोद में उठा लिया और उसे खुब प्यार किया .स्कूल में दिए गए सारे काम करने लगा वह कहता है कि मां विद्यालय विद्या मंदिर है वहां पर मुझे आज बहुत कुछ सीखने को मिला है.

विद्यावान बनकर ही जीवन के वास्तविक उद्देश्य प्राप्त किया जा सकता है.

\*\*\*\*\*

# वर्षा ऋतु

रचनाकार- श्रीमती नंदिनी राजपूत, कोरबा

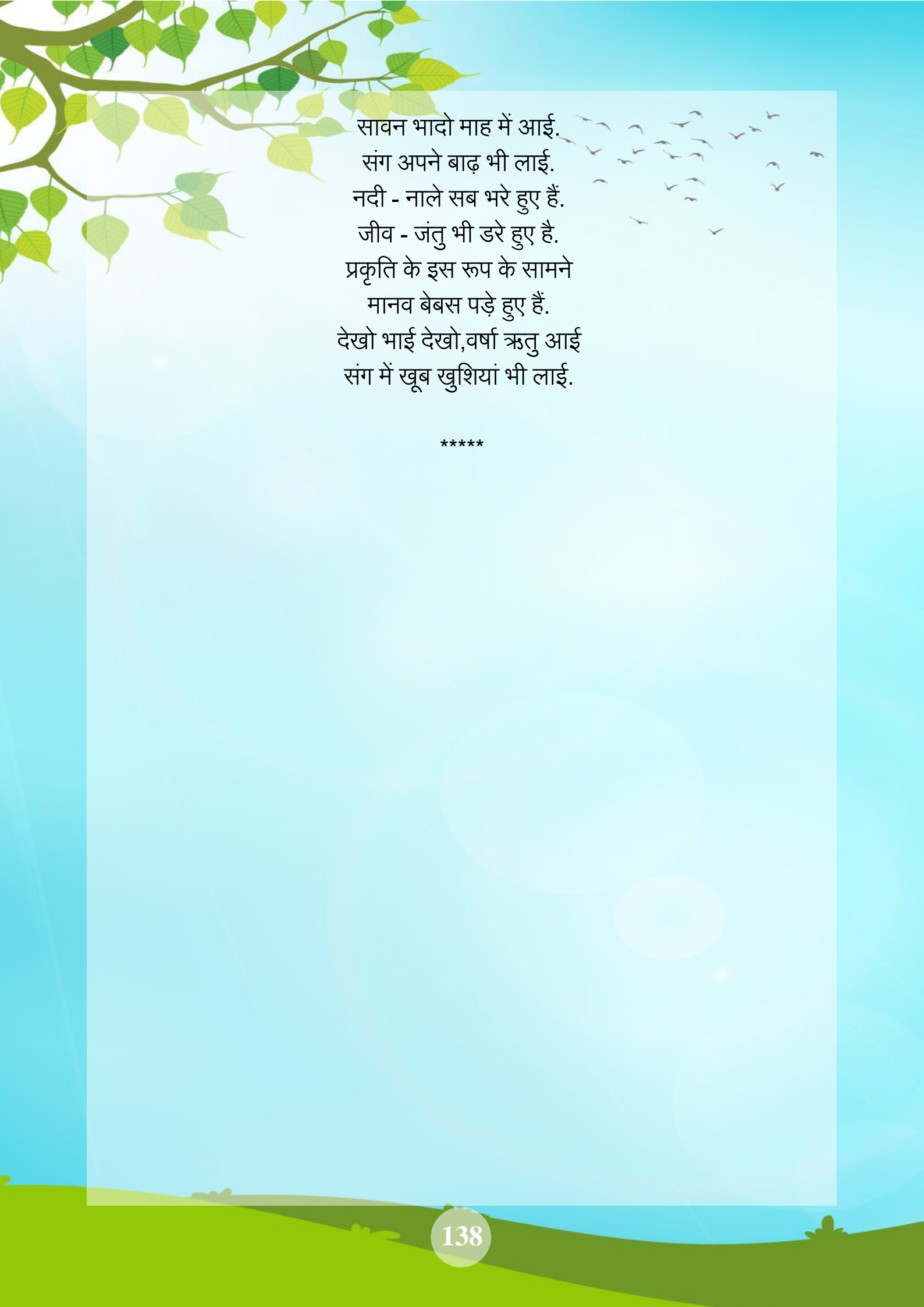


देखो भाई देखो, वर्षा ऋतु आई  
चहु ओर प्रकृति में, हरियाली छाई.  
गर्मी से राहत दिलाने आई.  
काली घटाओं को साथ में लाई.  
रिमझिम बूंदे भू पर, गिरते ही देखो.  
धानों की बालियाँ, खुशी से लहलहाई.

देखो भाई देखो, वर्षा ऋतु आई  
बारिश की बौछारें लाई.  
मोर नाचे, कोयल गाए.  
मेढ़क भी खूब टर्गए.  
छत पर बच्चे खूब नहाए.  
साथ में कागज की नाव चलाए.  
खेतों में जब फसलें लहराए.  
किसान भी खूब नाचे गाए.

देखो भाई देखो, वर्षा ऋतु आई





सावन भादो माह में आई.  
संग अपने बाढ़ भी लाई.  
नदी - नाले सब भरे हुए हैं.  
जीव - जंतु भी डरे हुए हैं.  
प्रकृति के इस रूप के सामने  
मानव बेबस पड़े हुए हैं.  
देखो भाई देखो, वर्षा ऋतु आई  
संग में खूब खुशियां भी लाई.

\*\*\*\*\*

# लत

रचनाकार- वेद प्रकाश दिवाकर, सक्ती



प्रेम और मोहनी दोनों की 2 वर्ष पहले ही धूमधाम से शादी हुई है और अभी इन दोनों का 1 वर्ष का लड़का भी हो गया है. बच्चे का नाम प्रिंस है. प्रेम और मोहिनी दोनों ही शिक्षा विभाग में शिक्षक - शिक्षिकाएं हैं इसलिए प्रिंस को ज्यादा समय नहीं दे पाते और घर पर ही उसकी दादी के पास छोड़कर स्कूल जाते हैं.

दादी प्रिंस की दिनभर की उछल कूद और दौड़ भाग से परेशान हो जाती है, इसलिए कभी-कभी उसे शांत रखने के लिए मोबाइल दे देती . प्रिंस भी मोबाइल पाकर बहुत खुश होता क्योंकि उसमें वह कार्टून देख पाता था. समय बीतता गया और रोज की तरह प्रेम और मोहिनी सुबह उठते ही घर के कामकाज और फिर स्कूल जाने की तैयारी में लग जाते और शाम को थके हारे आते तो आराम करते . दादी को भी प्रिंस के शरारत से छुटकारा पाने का आसान सा तरीका मिल गया, उसके हाथों में मोबाइल थमा देना. प्रिंस को भी अब मोबाइल का लत सा लग गया . उसे भी दिन भर मोबाइल में कार्टून देखना अच्छा लगता था. लेकिन दिन भर मोबाइल देखने के कारण कुछ समय पश्चात बच्चे को सिर दर्द का शिकायत होने लगा तथा साथ ही साथ अन्य पर शारीरिक और मानसिक परेशानियां उत्पन्न होने लगा . प्रिंस ज्यादा समय मोबाइल देखने में गुजारने लगा . मोबाइल नहीं मिलने पर वह चिल्लाता और गुस्सा करता . प्रिंस के इस बर्ताव से प्रेम और मोहानी भी परेशान हो जाते . समय बीतने के साथ-साथ प्रिंस के सिर दर्द का शिकायत भी बढ़ने लगा . एक दिन प्रेम और मोहिनी दोनों स्कूल से छुट्टी लेकर बच्चे को शिशु रोग विशेषज्ञ डॉक्टर के पास लेकर गए. डॉक्टर ने बच्चे को अच्छे से जांच परीक्षण कर बताया कि बच्चे के सिर दर्द और चिढ़चिढ़ाने तथा अन्य परेशानियों का एकमात्र कारण दिनभर मोबाइल देखना है और इसका इलाज उनके पास ही है बच्चे को ज्यादा समय देना . इससे बच्चे का मोबाइल के प्रति लत कम होगा . प्रेम और मोहनी को डॉक्टर की सारी बातें समझ आ गई और अब वह दोनों बच्चे के लिए समय निकालने लगे उसके साथ समय बिताना , खेलना बाहर घुमाने ले जाना इसके अलावा अब घर में ही कुछ - कुछ पढ़ाई लिखाई भी कराते. इससे प्रिंस का मोबाइल के प्रति लगाव कम होने लगा और दिन भर खुश रहता , उसकी सिर दर्द की समस्या भी अब दूर हो गई ..

संदेश - आजकल छोटे बच्चों में मोबाइल के लत का कारण मां - बाप का उनके शरारत से छुटकारा पाना है . जिसके कारण कई समस्याएं उत्पन्न हो जाती है अतः हमें चाहिए कि हम अपने बच्चों को ज्यादा से ज्यादा समय दें और मोबाइल से दूर रखें

\*\*\*\*\*

# सत्य बोलो

रचनाकार- वेद प्रकाश दिवाकर, सक्ती



बहुत समय पहले की बात है . एक जंगल में तितलियों का एक झुंड रहता था .उस झुंड में बहुत सारे तितलिया एक साथ रहती थी. उन्हीं के बीच एक नटखट और आलसी तितली थी,जो हमेशा झूठ बोल कर काम से जी चुराती थी . जब भी कोई काम करना होता तो कोई न कोई बहाना बना लेती थी. झुंड के सभी तितलियां उसके झूठ बोलने से काफी परेशान रहती थी .

एक बार की बात है, जंगल में सभी तितलियां अपने समुदाय के लिए खाना लेने गई थी . सभी तितलियां खाने की तलाश में इधर - उधर बिखरे हुए थे , तभी अचानक उस नटखट तितली के बचाव - बचाव की आवाज आई , वह चिल्ला रही थी कि मुझे सांप ने पकड़ लिया है.लेकिन किसी ने भी उसकी बातों पर विश्वास नहीं किया,सब यही समझ रहे थे कि यह सब उसकी शरारत है और किसी ने भी उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया.जब उसकी आवाज अचानक बंद हो गई तब थोड़ी देर बाद दूसरी तितलियों को ख्याल आया कि उसकी आवाज अचानक रुक गई है , चल कर देखना चाहिए.लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी .अपनी झूठ बोलने के कारण आज नटखट तितली सांप द्वारा खा ली गई .

संदेश – इसलिए हमें कभी भी झूठ नहीं बोलना चाहिए. सदा सत्य बोलना चाहिए.

\*\*\*\*\*



# पेड़ लगाओ जीवन पाओ

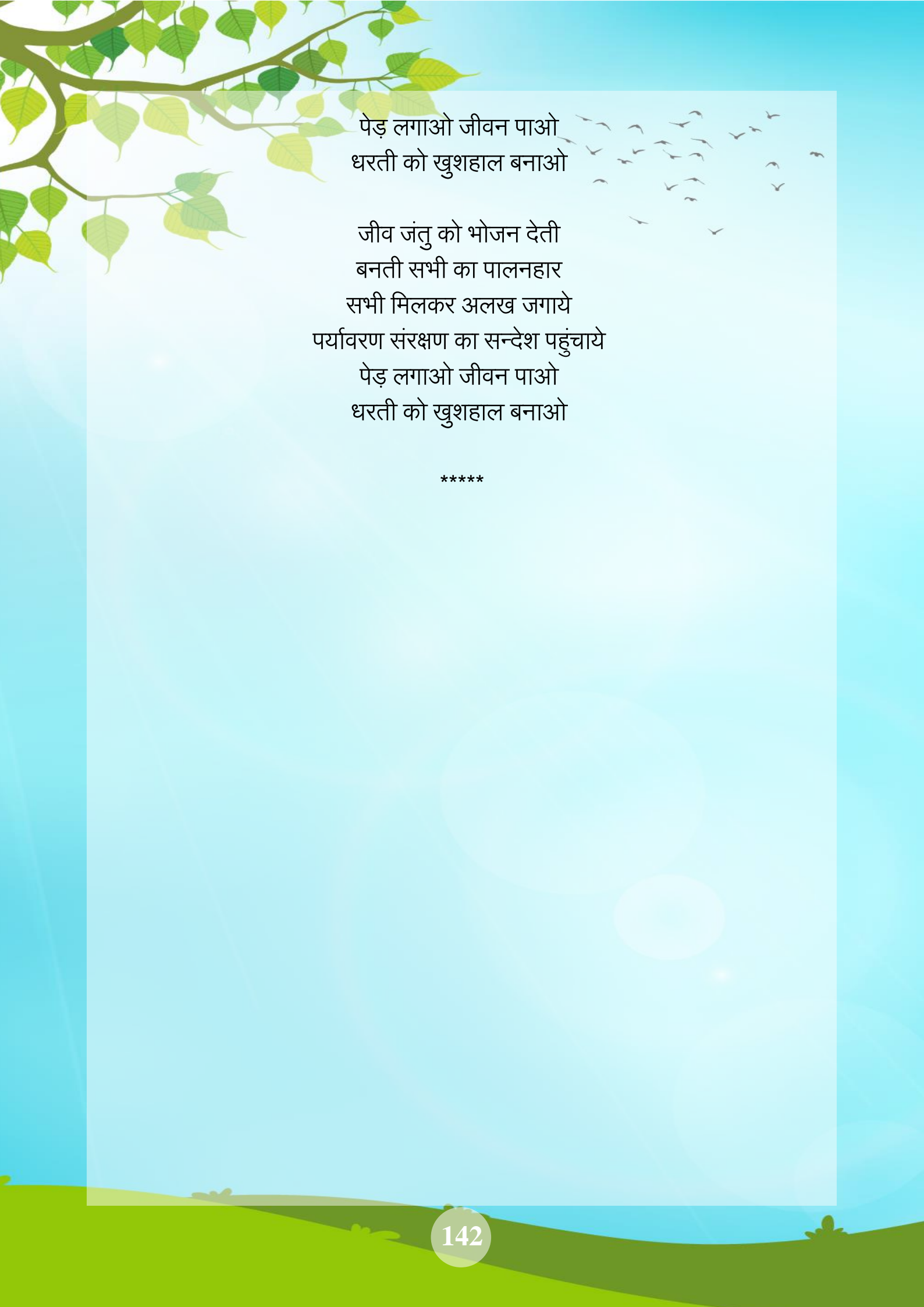
रचनाकार- हिमकल्याणी सिन्हा, बेमेतरा



पेड़ लगाओ जीवन पाओ  
धरती को खुशहाल बनाओ  
देती है सांसे जीवन को  
आओ मिलकर पेड़ लगाओ  
पेड़ लगाओ जीवन पाओ  
धरती को खुशहाल बनाओ

जीवन है अनमोल प्यारे  
रखना इसका सदा ध्यान  
पर्यावरण स्वच्छ होंगी  
तभी होगा अपना कल्याण  
पेड़ लगाओ जीवन पाओ  
धरती को खुशहाल बनाओ

देती है ये शुद्ध हवा  
फल फूल और छाया  
भूलो न कभी प्रकृति का उपकार  
तभी होगा जीवन फूलों का हार



पेड़ लगाओ जीवन पाओ  
धरती को खुशहाल बनाओ

जीव जंतु को भोजन देती  
बनती सभी का पालनहार  
सभी मिलकर अलख जगाये  
पर्यावरण संरक्षण का सन्देश पहुंचाये  
पेड़ लगाओ जीवन पाओ  
धरती को खुशहाल बनाओ

\*\*\*\*\*

# गर्मी के दिन

रचनाकार- गरिमा बरेठ, आठवीं, स्वामी आत्मानंद शेख गम्फार अंग्रेजी माध्यम शाला, तीरबहार बिलासपुर



गर्मी आया गर्मी आया,  
छुट्टियों का त्यौहार आया.  
स्कूल से मिल गई है,  
छुट्टियां गर्मियों की.

परीक्षा तो हो गई है खत्म,  
मन से भी हो गया पढ़ाई का बोझ खत्म.  
चलो जल्दी तैयारी करो,  
नानी घर जाने की.

गर्मी की छुट्टी पर हम है जिद करते,  
चलो नानी घर.  
नानी घर जाएंगे,  
खूब गर्मी का मजा उड़ाएंगे.

\*\*\*\*\*



# पहेलियाँ

रचनाकार- गरिमा बरेठ, आठवीं, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम शाला, तिरिबहार बिलासपुर

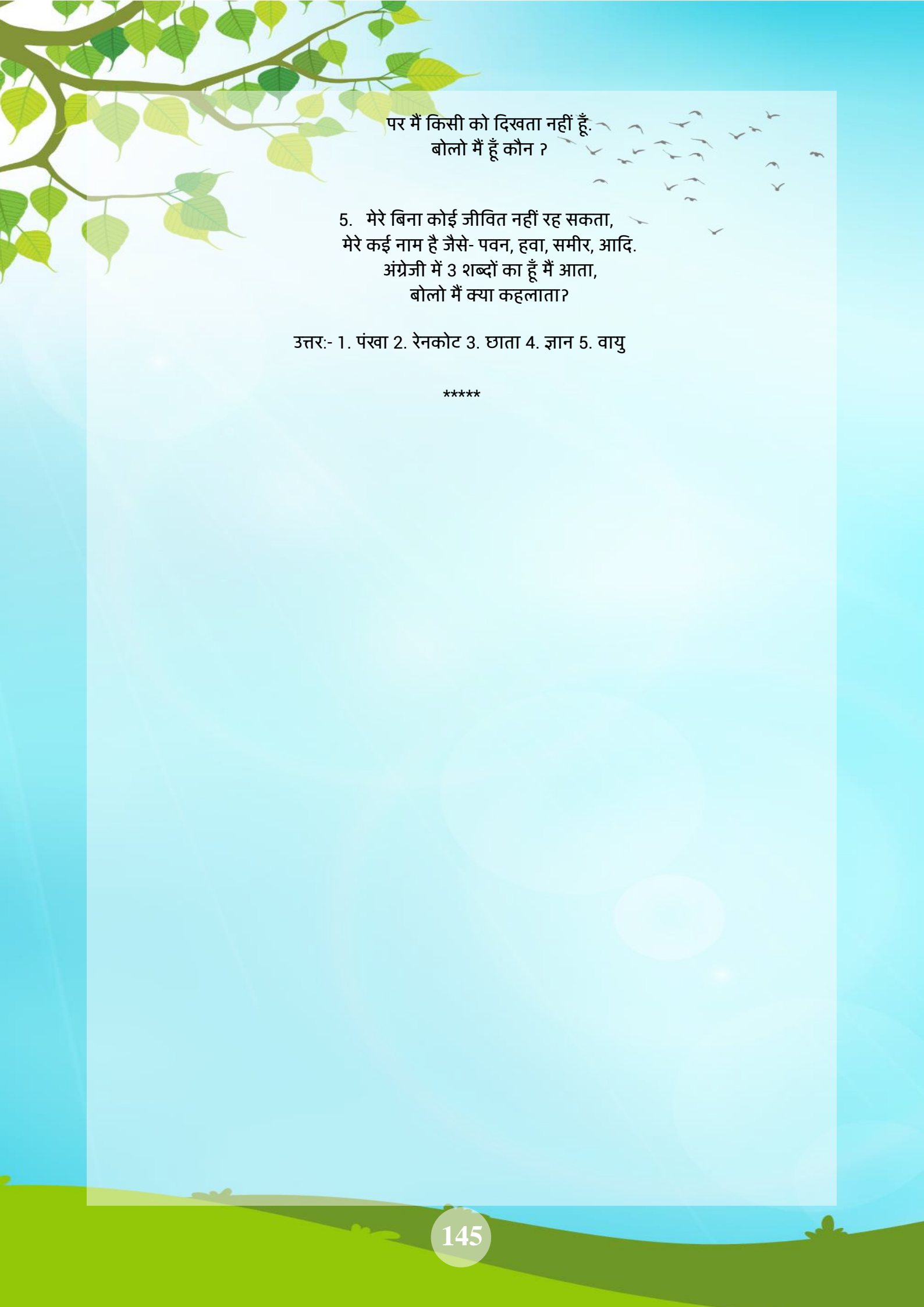


1. मेरे पास तीन हाथ हैं,  
मैं बिजली से चलता हूँ.  
ज्यादातर गर्मी में सब करते मुझको  
पसंद है,  
बोलो मैं हूँ कौन ?

2. मैं एकदम कपड़े जैसे दिखता हूँ,  
मुझे सिर्फ बरसात में पसंद करती है.  
मैं लोगों को भेजने से बचाता हूँ,  
बोलो मैं हूँ कौन ?

3. मैं लोगों के काम आता हूँ,  
गर्मी और बरसात में.  
गर्मी में लू लगने से बचाता हूँ,  
बरसात में भीगने से बचाता हूँ.  
मैं लोगों के सर के ऊपर रहता हूँ,  
बताओ मैं हूँ कौन ?

4. मेरे बिना है जीवन अधूरी,  
सभी चीजों की जरूरत पड़ती है मेरी.  
मुझे पाने के लिए विद्यालय जाते हैं,



पर मैं किसी को दिखता नहीं हूँ,  
बोलो मैं हूँ कौन ?

5. मेरे बिना कोई जीवित नहीं रह सकता,  
मेरे कई नाम हैं जैसे- पवन, हवा, समीर, आदि.  
अंग्रेजी में 3 शब्दों का हूँ मैं आता,  
बोलो मैं क्या कहलाता?

उत्तर:- 1. पंखा 2. रेनकोट 3. छाता 4. ज्ञान 5. वायु

\*\*\*\*\*

# मेरे नाना जी

रचनाकार- सृष्टि प्रजापति, 8 वी, स्वामि आत्मानंद तारबहार बिलासपुर

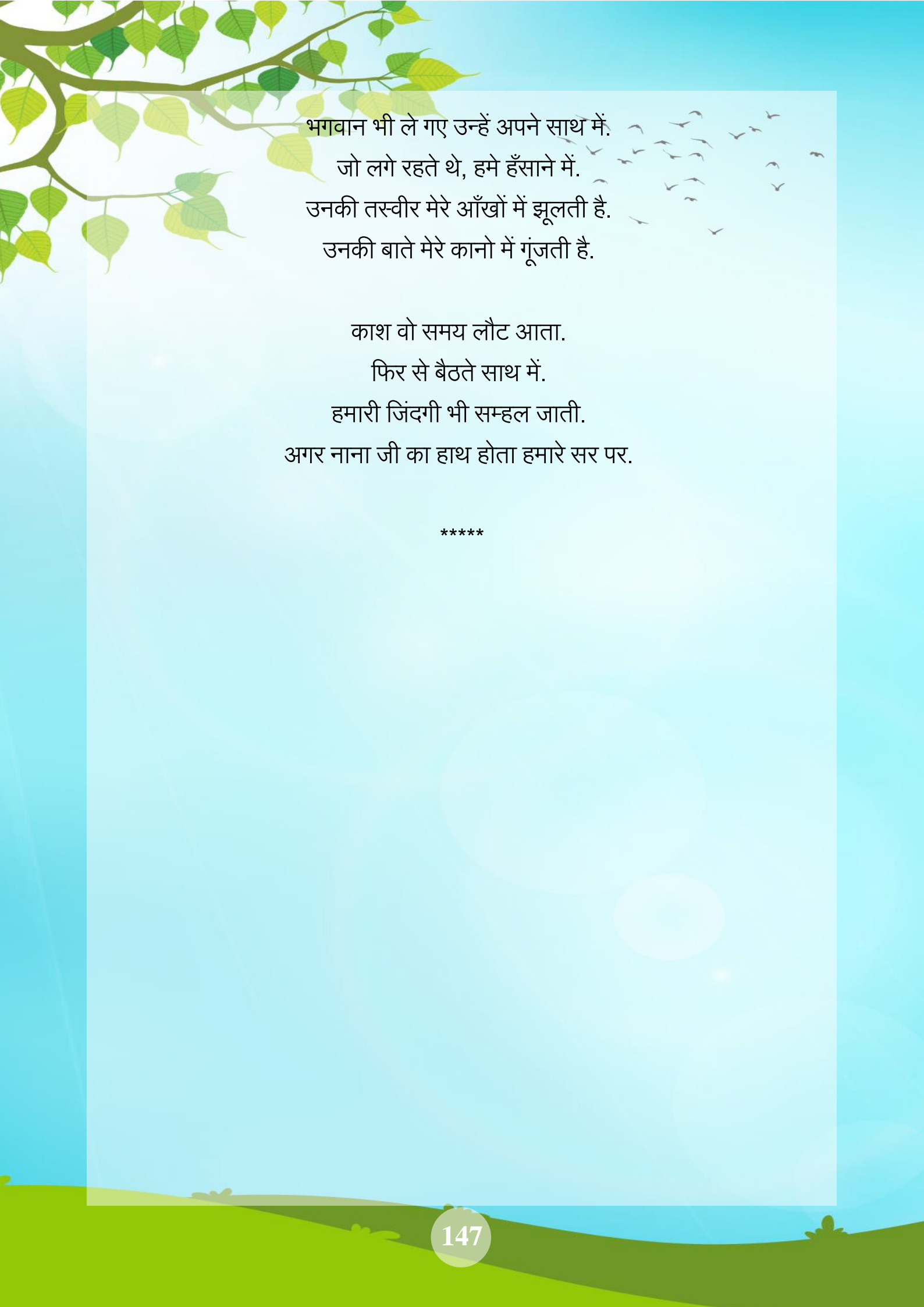


पूरा बचपन बिताया था, मैंने उनके साथ में.  
क्या कहूँ अपने नाना जी के बारे में.  
सारे ख्वाहिशों को पूरा करने के दाता थे वो.  
मेरी जिंदगी का उजाला थे वो.

पढ़ाया मुझको, रानी बनाया मुझको.  
जिंदगी में बहुत कुछ सिखाया मुझको.  
हमारा रिश्ता भी बड़ा अनोखा था.  
एक दूसरे के हसी में ही मिल जाती थी खुशिया.

चले गए वो ईश्वर के पास,  
अपनी यादों को छोड़कर.  
हमारी बातें जब याद आती हैं,  
मेरे आँखों में आसुओं की बहार आती हैं.





भगवान भी ले गए उन्हें अपने साथ में.  
जो लगे रहते थे, हमे हँसाने में.  
उनकी तस्वीर मेरे आँखों में झूलती है.  
उनकी बातें मेरे कानों में गूँजती हैं.

काश वो समय लौट आता.  
फिर से बैठते साथ में.  
हमारी जिंदगी भी सम्हल जाती.  
अगर नाना जी का हाथ होता हमारे सर पर.

\*\*\*\*\*

# इसी पर्यावरण का अंश हैं हम

रचनाकार- पिकी सिंघल, दिल्ली

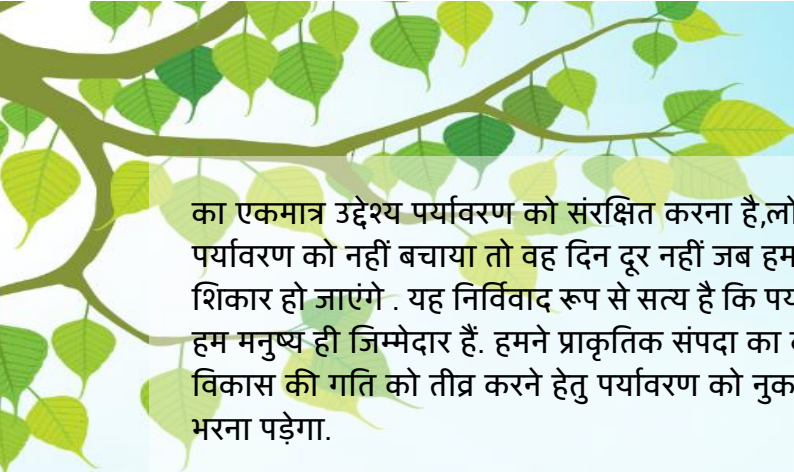


वर्ष के प्रत्येक दिन किसी न किसी विशेष दिवस को मनाए जाने की परंपरा काफी सालों से चलती आ रही है जैसे मातृ दिवस पितृ दिवस बेटी दिवस वेलेंटाइन दिवस इत्यादि. वैसे इन दिवसों को मनाए जाने का कोई खास दिवस निश्चित नहीं होता यह दिवस प्रत्येक दिवस मनाए जा सकते हैं परंतु रोजमर्रा से अलग कुछ करने की चाह में हम इन दिवसों को विशेष दिवस के रूप में मनाते हैं जिसमें कोई बुराई भी नहीं है. ऐसा ही एक दिवस हम प्रतिवर्ष 5 जून को भी मनाते आए हैं जिसे विश्व पर्यावरण दिवस के नाम से जाना जाता है.

प्रत्येक वर्ष 5 जून को समस्त विश्व में यह दिवस बहुत ही शिद्दत और धूमधाम से मनाया जाता है. व्यापक पैमाने पर पेड़ इस दिन पौधों को आरोपित किया जाता है, बड़े-बड़े कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, काव्य गोष्ठियां आयोजित की जाती हैं और विभिन्न सामाजिक सरकारी एवम गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा संकल्प भी लिए जाते हैं कि हम अपने पर्यावरण को संरक्षित रखेंगे और अधिक से अधिक पेड़ पौधे लगाएंगे ताकि हम अपनी आगे आने वाली पीढ़ियों को एक सुरक्षित संरक्षित एवं साफ सुथरा पर्यावरण सौंप सकें. यह हमारी सामाजिक जिम्मेदारी तो है ही, साथ ही यह हमारा नैतिक कर्तव्य भी बनता है कि जिस प्रकार हमारे बड़ों ने हमें प्रदूषण रहित पर्यावरण सौंपा, उसी प्रकार आगे आने वाली पीढ़ियों को भी हम अच्छा और साफ सुथरा पर्यावरण सौंपकर अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करें.

विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष में स्कूलों, कॉलेजों एवम अन्य अनेक शैक्षणिक संस्थाओं द्वारा विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जिनका उद्देश्य जनमानस में पर्यावरण के प्रति चेतना विकसित करना है. इन कार्यक्रमों का उद्देश्य जन-जन को यह संदेश पहुंचाना है कि यदि पर्यावरण है तो हम हैं हम पर्यावरण से हैं और पर्यावरण हमसे है, यह बात हमें सदैव याद रखनी होगी तभी हम पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचा पाएंगे और इसको संरक्षित कर पाएंगे क्योंकि यदि पर्यावरण को हानि पहुंचती है तो अप्रत्यक्ष रूप से जीव जंतुओं और सभी मनुष्यों को भी नुकसान होता है क्योंकि पर्यावरण और मनुष्य एक दूसरे से जुड़े हुए हैं. सभी जीव जंतु जानवर वनस्पति प्राकृतिक संपदा पर्यावरण के ही तो हिस्से होते हैं. पर्यावरण को सुरक्षित रखकर ही प्राकृतिक संपदा को संरक्षित और सुरक्षित रखा जा सकता है.

आजकल सोशल मीडिया पर विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं द्वारा पर्यावरण जागरूकता संबंधित आयोजन करवाए जाते हैं जिसमें पोस्टर मेकिंग स्पीच ग्रुप डिस्कशन और काव्य गोष्ठी का आयोजन प्रमुख हैं. इन सभी



का एकमात्र उद्देश्य पर्यावरण को संरक्षित करना है, लोगों को जागरूक करना है कि यदि समय रहते उन्होंने पर्यावरण को नहीं बचाया तो वह दिन दूर नहीं जब हम अपनी कमजोरियों और अपनी गलत आदतों के स्वयं शिकार हो जाएंगे। यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि पर्यावरण को हानि पहुंचाने में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से हम मनुष्य ही जिम्मेदार हैं। हमने प्राकृतिक संपदा का दोहन किया और अपने स्वार्थों की पूर्ति हेतु तथा अपने विकास की गति को तीव्र करने हेतु पर्यावरण को नुकसान पहुंचाया है जिसका खामियाजा हमें ही देर सवेर भरना पड़ेगा।

यह भी सत्य है कि विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा क्षेत्र में बहुत सुखद एवं बेहतरीन प्रयास किए जा रहे हैं, किंतु केवल संस्थाओं के करने से ही सब कुछ नहीं होगा। प्रत्येक व्यक्ति को इस क्षेत्र में जागरूक होना होगा और जागरूक होने के साथ-साथ पर्यावरण को सुरक्षित रखने की दिशा में उचित कदम उठाने होंगे। केवल पौधारोपण करने से ही हम पर्यावरण को नहीं बचा सकते। पर्यावरण को सुरक्षित एवं संरक्षित रखने के लिए हमें हमारे पास उपलब्ध पेड़ों और वनस्पति को भी तो बचाए रखना है उनका दोहन नहीं करना है उनके दोहन करने से दूसरों को भी रोकना है और आपसी सहयोग की भावना से मिलकर काम करना है तभी इस दिशा में सकारात्मक परिणामों की हम आशा रख सकते हैं।

पर्यावरण दिवस पर पर्यावरण के विषय में सोचना कोई बड़ी बात नहीं है। हमें न केवल 5 जून अपितु वर्ष के प्रत्येक दिन पर्यावरण के विषय में गंभीरता से सोचना होगा और केवल सोचने से ही काम नहीं बनेगा हमें इस दिशा में सक्रिय होना होगा। हमें अपनी प्राकृतिक संपदा का रखरखाव करना होगा उसको नुकसान न पहुंचे इस दिशा में उचित कार्य करने होंगे। प्राकृतिक संसाधनों के शोषण पर रोक लगानी होगी पर्यावरण के साथ खिलवाड़ करना बंद करना होगा जीव-जंतुओं के साथ दुर्व्यवहार पर रोक लगानी होगी जंगलों को काटना बंद करना होगा और जिन कारणों से पर्यावरण प्रदूषित होता है उन सभी कारणों को भलीभांति जानना होगा और यह सब भविष्य में न घटे इस पर कार्य करना होगा। प्लास्टिक और पॉलिथीन पर भी अब पूर्णतया बैन लगाना होगा। यह शुरुआत हमें खुद से ही करनी होगी तभी हम दूसरों को इसके प्रयोग से होने वाले नुकसान और से अवगत करा पाएंगे और उन्हें रोक पाएंगे।

यदि इस प्रकार के सकारात्मक परिवर्तन हम अपने भीतर ला पाए तो यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि होगी जिससे हम अपने आसपास के लोगों को भी प्रेरित कर सकते हैं और उन्हें बता सकते हैं कि हम सभी पर्यावरण के महत्वपूर्ण हिस्से हैं और यदि हम भविष्य में भी इसका हिस्सा बने रहना चाहते हैं तो हमें आज ही से इस को सुरक्षित रखने की मुहिम में अपना योगदान देना होगा। हमें अपनी भूमिकाएं तय करनी होंगी कि हम किस प्रकार पर्यावरण के पोषण और संरक्षण की दिशा में कार्य कर सकें क्योंकि केवल आयोजन और कार्यक्रम आयोजित करने से हिसाब कुछ नहीं हो सकता, हमें व्यवहारिक दिशा में काम करने होंगे ताकि हम अपने पर्यावरण को पहले से और अधिक सुंदर, प्रदूषणरहित एवं बेहतर बना पाएं। तो आइए, आज हम सब मिलकर संकल्प लेते हैं कि हम अपने पर्यावरण को पहले से अधिक बेहतर बनाने की दिशा में पुरजोर कोशिश करेंगे।

\*\*\*\*\*



# गर्मी की छुट्टियाँ

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

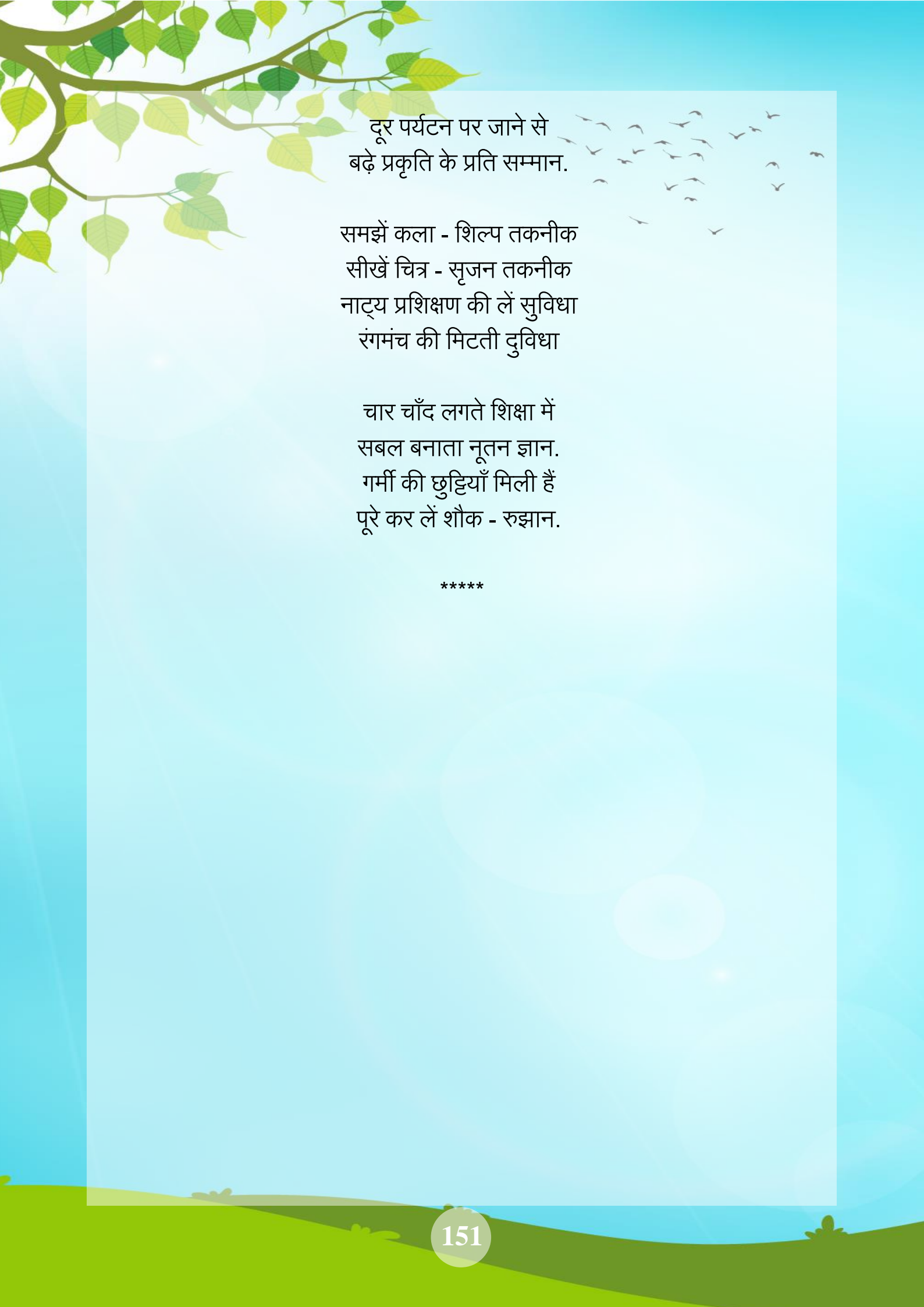


गर्मी की छुट्टियाँ मिली हैं  
पूरे कर लें शौक - रुझान.  
नहीं समय की कमी सताए  
दें सपनों को नई उड़ान.

सीखें रोबोटिक्स, ए आई  
वेब डिजाइनिंग मन को भायी  
लेखन की तकनीक को जानें  
नया - नया कुछ करना ठानें

गर्मी कैप और कक्षाएँ  
नवोन्मेष को दें पहचान.

मस्ती के मेले, उत्सव हैं  
खेल ढेर सारे संभव हैं  
भय, दुश्चिंता और तनाव  
कर दे दूर, योग में चाव



दूर पर्यटन पर जाने से  
बढ़े प्रकृति के प्रति सम्मान.

समझें कला - शिल्प तकनीक  
सीखें चित्र - सृजन तकनीक  
नाट्य प्रशिक्षण की लें सुविधा  
रंगमंच की मिटती दुविधा

चार चाँद लगते शिक्षा में  
सबल बनाता नूतन ज्ञान.  
गर्मी की छुट्टियाँ मिली हैं  
पूरे कर लें शौक - रुझान.

\*\*\*\*\*

# योग अपनाएँ

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ



जीवन में नव ऊर्जा पाएँ.  
योग अपनाएँ, रोग भगाएँ.

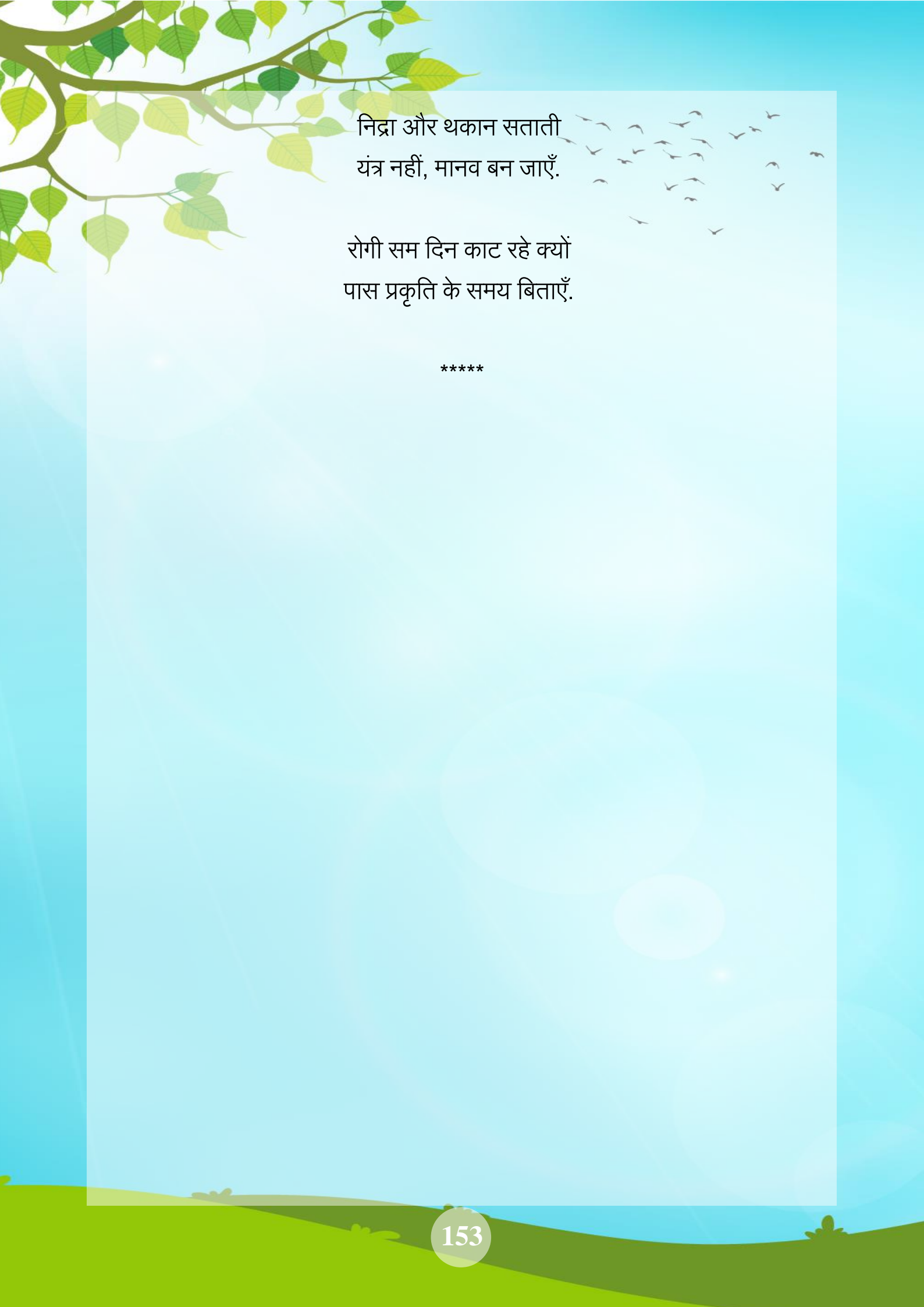
अपना तन - मन स्वस्थ बनाकर  
शक्ति, आत्मविश्वास बढ़ाएँ.

स्वास्थ्य ही अमूल्य धन होता  
बुरी लतों से इसे बचाएँ.

योगासन, अभ्यास नित्य कर  
चिंता, दुःख, तनाव मिटाएँ.

बहुत व्यस्त जीवन शैली है  
संवेदनशीलता जगाएँ.





निद्रा और थकान सताती  
यंत्र नहीं, मानव बन जाएँ.

रोगी सम दिन काट रहे क्यों  
पास प्रकृति के समय बिताएँ.

\*\*\*\*\*

# बेहतर हो कल

रचनाकार- श्रीमती योगेश्वरी साहू, बलौदाबाजार



चलो बच्चों हो जाओ तैयार,  
पेड़ लगाएं स्कूल के दुवार.

पेड़ में डालेंगे सब रोज पानी,  
लड़के करेंगे मिलकर रोज निगरानी.

धीरे-धीरे पेड़ बढ़ेगा,  
गौरव उस पर रोज चढ़ेगा.

चारों तरफ लगाएंगे उसके घेरा,  
डाले न जानवर वहां पर डेरा.

पेड़ पर लगेंगे सुंदर फूल,  
झूला डालकर लेंगे सब झूल.

पेड़ पर रहेगी ढेर सारी चिड़िया,



दिनभर सुनायेंगे गीत बढ़िया- बढ़िया.

पेड़ पर लगेंगे ढेर सारे फल,  
आज पेड़ लगायेंगे तो बेहतर हो कल.

\*\*\*\*\*



## प्रश्नचिह्न

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

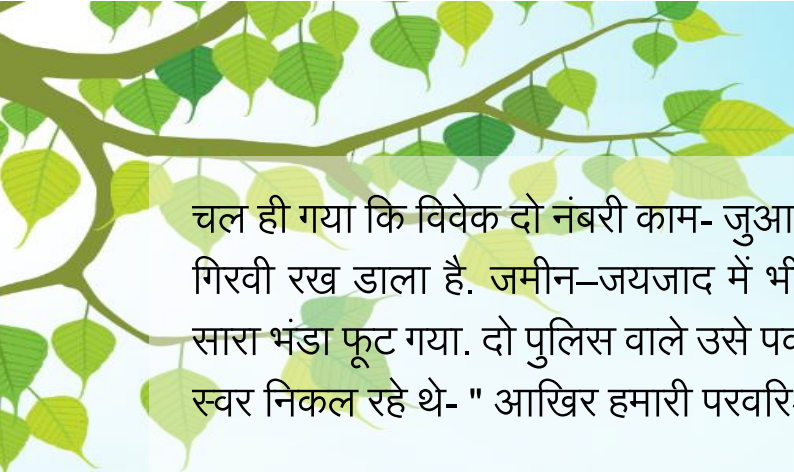


विवेक रात को घर आते ही साधना से पूछा- "माँ...! तुमने खाना खा लिया? बाबू जी कहाँ हैं? वे खा लिये?"

घड़ी पर एक नजर डालते हुए साधना बोली - "विवेक ! तू कैसी बात करता है बेटा? हम लोग तेरे बगैर कभी खाना खाये हैं?" विवेक बोला- "अगर रात अधिक हो जाए तो खाना खा लिया करो. यूँ इंतजार मत किया करो. " विवेक के स्वर में चिड़चिड़ाहट थी. तभी रघुवीर जी कमरे से बाहर निकले. बोले- "क्यों रे ! तुम्हारे साथ नहीं खायेंगे तो किसके साथ खायेंगे. एक तू ही तो है हमारे आँखों का तारा; दूसरा है ही कौन हमारा?" साधना बोली- "बेटा, ये ठीक बात नहीं है. जैसे-जैसे तू बड़ा होते जा रहा है, तेरे व्यवहार में रूखापन आते जा रहा है. तू हमेशा गुस्से में रहता है. सीधा मुँह बात नहीं करता. बहुत ही घमंड है तुझे; और पता नहीं किस बात पर? क्या काम करता है बता? मैं तेरे ऑफिस जा के बात करती हूँ."

"माँ ...! मैं कुछ भी काम करूँ? आप लोग मेरे काम में टांग न अड़ाये तो बेहतर होगा." बीच में ही विवेक खाना छोड़ कर चला गया.

अगली सुबह विवेक के घर के सामने भीड़ थी. तरह-तरह के चर्चे हो रही थी. तभी अचानक पुलिस की गाड़ी हार्न देते हुए विवेक के घर के पास आकर खड़ी हुई. विवेक पसीना-पसीना हो गया. वह भागना तो चाहा, पर भाग नहीं पाया. रघुवीर व साधना अपने किस्मत को कोसने लगे, भला किसी को क्या बोलते. आँखें भीग गयीं. आखिरकार पता



चल ही गया कि विवेक दो नंबरों का काम- जुआ, सट्टा और बहुत कुछ करता है. घर तक को गिरवी रख डाला है. जमीन-जयजाद में भी हाथ मारने की कोशिश की है. विवेक का सारा भंडा फूट गया. दो पुलिस वाले उसे पकड़ कर ले गये. रघुवीर और साधना के आर्द्र स्वर निकल रहे थे- " आखिर हमारी परवरिश में क्या कमी रह गयी...? "

रघुवीर व साधना के विवेक को दिये संस्कार पर प्रश्नचिह्न लग रहा था.

\*\*\*\*\*

# हरा भरा यह रूप धरा का

रचनाकार- ममता चौहान, कोरबा



हरा भरा यह रूप धरा का

हरा भरा यह रूप धरा का सबको सुख पहुंचाए

वसुंधरा के हरित वस्त्र का हरण न होने पाए

हरा भरा यह रूप धरा का

कानन के आनन की शोभा द्रुमदल में ही समाए

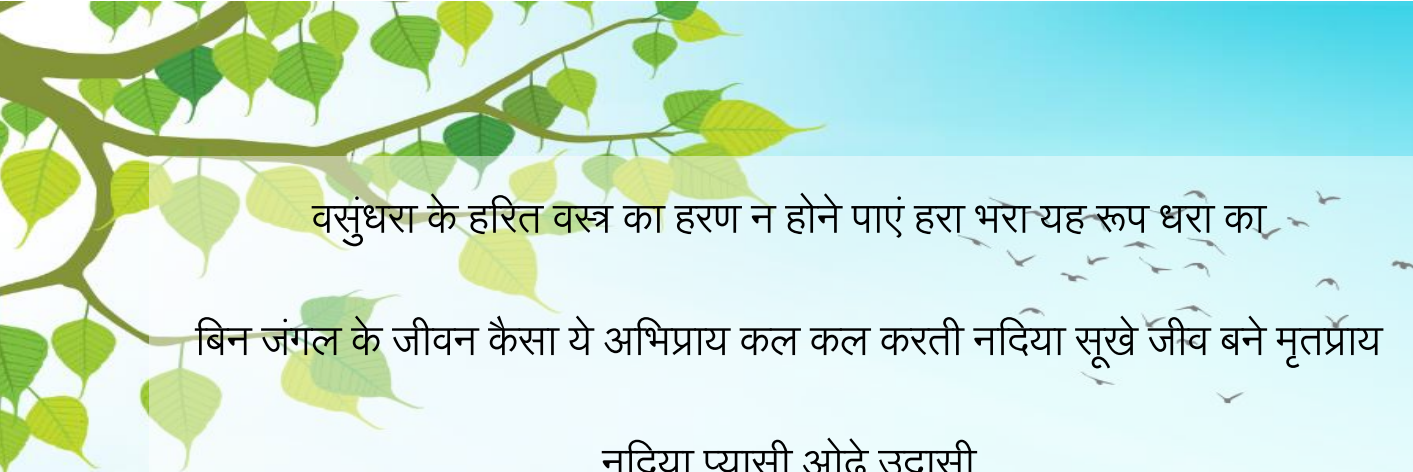
बिन कानन के आनन सुना खग मृग प्राण गवाए

जंगल में मंगल हो कैसे, ये ये

जंगल मे मंगल हो कैसे

जब जंगल जल जाए





वसुंधरा के हरित वस्त्र का हरण न होने पाएं हरा भरा यह रूप धरा का  
बिन जंगल के जीवन कैसा ये अभिप्राय कल कल करती नदिया सूखे जीव बने मृतप्राय

नदिया प्यासी ओढ़े उदासी

नदिया प्यासी ओढ़े उदासी मैला धोती जाए वसुंधरा के हरित वस्त्र का हरण न होने पाए

॥

\*\*\*\*\*

# सुख दुख दोनों रहते जिसमें जीवन है वो गांव

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र

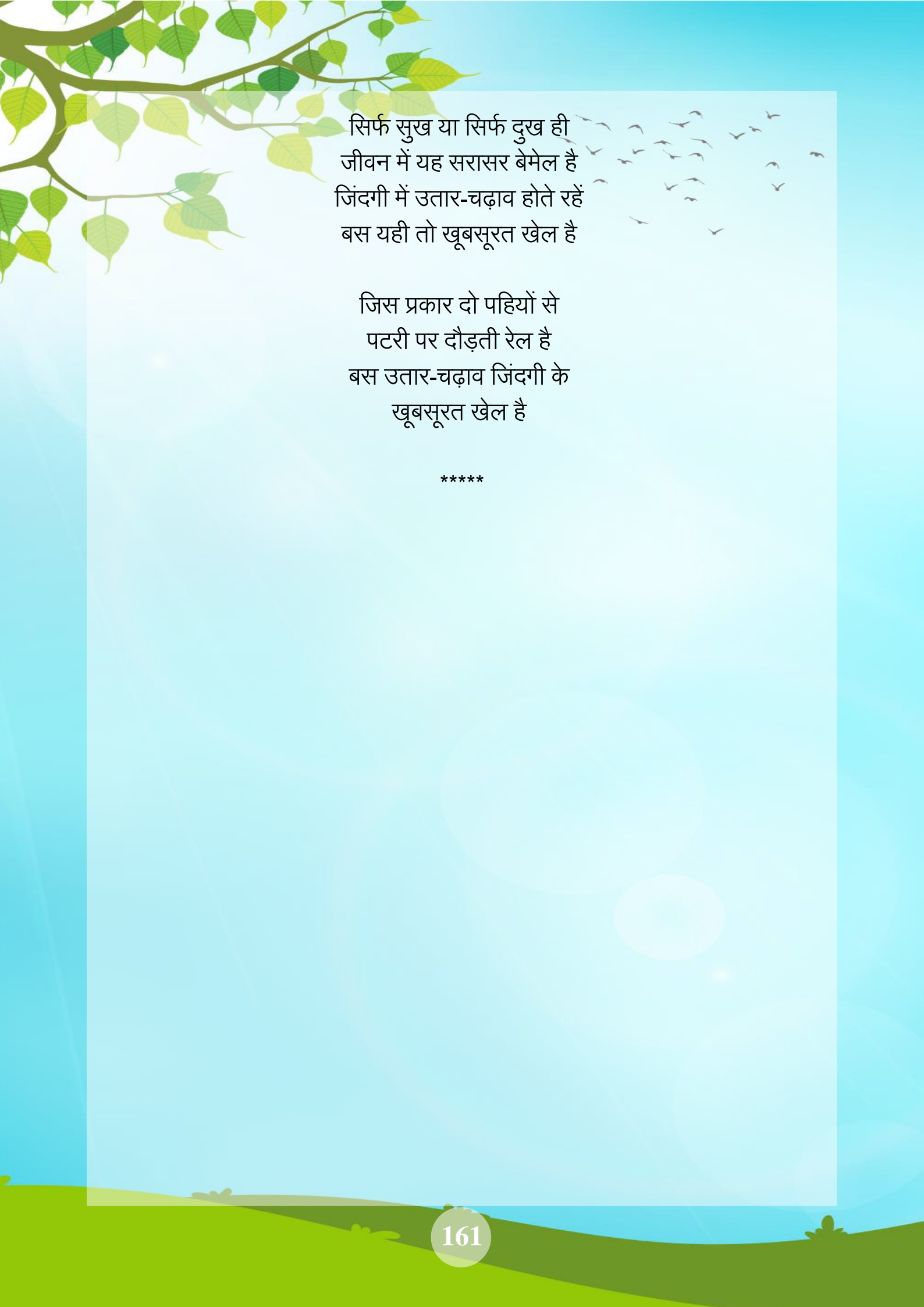


जिंदगी में उतार-चढ़ाव  
बस एक खूबसूरत खेल है  
जिंदगी सुखों और दुखों का  
बहुत ही खूबसूरत मेल है

दुख भी शरमा जाएंगे  
यह कैसा माहौल है  
जियो अगर दुखों को खुशी से  
जिंदगी में यह सबसे यह अनमोल है

कभी ढेरों खुशियां आती हैं  
कभी गम आते बेमिसाल हैं  
घबरा जाए तो चुनौतियां से  
वह भी क्या इंसान है

जीना सिखा दे बुरे वक्त में  
वही असल इम्तिहान है  
इम्तिहानों से भरी जिंदगी यही  
खूबसूरत मिसाल है



सिर्फ सुख या सिर्फ दुख ही  
जीवन में यह सरासर बेमेल है  
जिंदगी में उतार-चढ़ाव होते रहें  
बस यही तो खूबसूरत खेल है

जिस प्रकार दो पहियों से  
पटरी पर दौड़ती रेल है  
बस उतार-चढ़ाव जिंदगी के  
खूबसूरत खेल है

\*\*\*\*\*



# पेड़ लगाओ पेड़ लगाओ

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल



पेड़ लगाओ पेड़ लगाओ,  
दुनिया खुशियों से चमकाओ.

शुद्ध हवा ये देते जग को,  
इनसे जीवन को महकाओ.

ये देते हैं दवा अनोखी,  
बीमारी को दूर भगाओ.

पेड़ हमारे सच्चे साथी,  
अच्छे अच्छे पेड़ उगाओ.

पेड़ नहीं तो जग ये सूना,  
ये बातें सबको समझाओ.

\*\*\*\*\*

# छाता प्यारा

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल



रंग बिरंगा छाता प्यारा,  
बच्चों के दिल का वो तारा.

बरखा जब आती मुसकाता,  
पर तूफानों से वह हारा.

तेज धूप से हमें बचाता,  
गर्मी में वो बने सहारा.

छाता बन लाठी दादा का,  
डर के कुत्ते करें किनारा.

छाता पीला हरा गुलाबी,  
लेकिन काला लगे दुलारा.

\*\*\*\*\*

# बन्दर बेचारा

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल



बन्दर ने हाथी को मारा,  
खेल रहा था हाथी प्यारा.

हाथी जी को आया गुस्सा,  
झट से दौड़ा उनका पारा.

देखा हाथी का जो गुस्सा,  
आम पेड़ का लिया सहारा.

हाथी ने जब पेड़ हिलाया,  
गिरा धम्म बन्दर बेचारा.

गिरे आम जो बंदर लाया,  
सभी खाए आम वो सारा.

\*\*\*\*\*



# अलबेला भालू

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल



देखो ये अलबेला भालू,  
खुशियों का है मेला भालू.

सबसे मिलता प्रेम भाव से,  
रहता नहीं अकेला भालू.

इधर उधर से शहद बटोरे,  
खाता नहीं करेला भालू.

उसकी नीयत सीधी सच्ची,  
करता नहीं झमेला भालू.

लेन देन में एकदम सच्चा,  
कभी न मारे धेला भालू.

\*\*\*\*\*

# कालू का ठेला

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल



मेले में कालू का ठेला,  
बन्दर भागा लेकर केला.

उसके पीछे भागा कालू,  
पर था वहां भीड़ का रेला.

तभी वहां बन्दर कुछ आए,  
सबने लूटा इक इक केला.

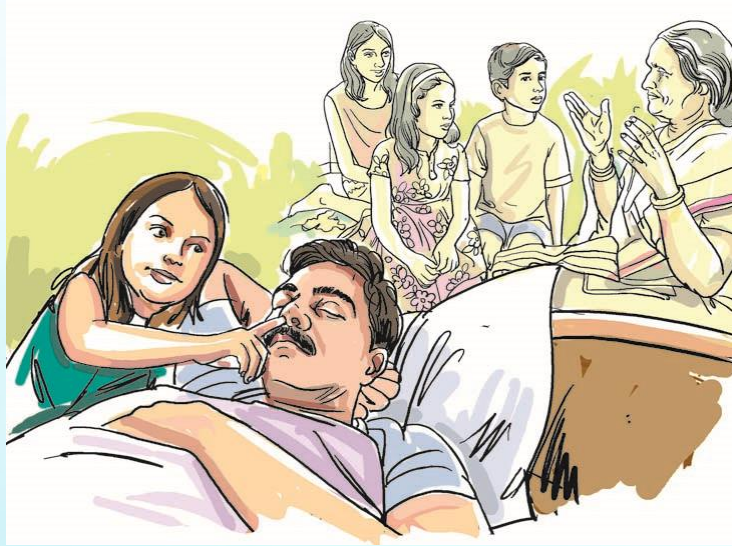
फिर जब वापस कालू आया,  
देखा उसने खाली ठेला.

कालू लुट के रोया गाया,  
मेले में हो गया झमेला.

\*\*\*\*\*

# बच्चे भोले मन के सच्चे

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनरायन



ये बच्चे भोले मन के सच्चे  
सबसे प्यारे सबसे अच्छे  
ये फूलों सा दिखते प्यारे  
ये लगते बड़े न्यारे- न्यारे.

ये होते हैं आंख के तारे  
ये निश्छल भोले हैं सारे  
ये वत्सल माँ के दुलारे  
ये होते हैं सबके प्यारे.

ये घर-आंगन को महकाते  
ये फूलों सा हैं नित खिलते  
ये हंसते हैं और मुस्कुराते  
ये सबके मन को हैं भाते.

\*\*\*\*\*



# घर का बंदर

रचनाकार- श्रृष्टि प्रजापति, आठवी, स्वामी आत्मानंद तारबहार बिलासपुर



डुग्गू एक लड़के का नाम.  
श्यातनी करना उसका काम.  
सारा दिन शोर मचाता है.  
सभी से डाट वो खाता है.  
फिर भी न माने किसी की बात.  
करे श्यतानी दिन और रात.  
भागे हमेशा इधर उधर.  
नाचे जसे वो है, बंदर.  
घर का बंदर कहलाता है.  
पेटू जैसे वो खाता है.  
श्यातनी करके घर हमेशा आता है.  
मासूम जैसा शकल बनाता है.  
मार खाने से पहले ही,  
नौ दो ग्यारा हो जाता है.

\*\*\*\*\*

# आओ स्कूल चलें हम

रचनाकार- सुश्री सुशीला साहू



आओ स्कूल चलें हम, छुट्टियां हो गई खतम  
गोलू-मोलू सीता गीता, साथ चलें हरदम

नई नई किताबें होंगे, नये नये होंगे परिवेश  
उम्मीदों की राह पर, खुश हाल अपना देश  
जूता मोजा हम पहने, और पहनेंगे हम टाई  
हलवा पूरी और खीर, मिलकर खायेंगे भाई  
आज शिक्षा की ओर, बढ़ायें अपना कदम  
आओ स्कूल चलें हम, छुट्टियां हो गई खतम  
गोलू-मोलू सीता गीता, साथ चलें हरदम

अ आ इ ई पढ़ लिखकर, हम करें मस्ती धमाल  
कदम से कदम मिलाकर हम, खूब करें कमाल  
धमा चौकड़ी खेलें कूदें, और करें दोस्ती-यारी  
जब बन जाए साहाब हम, देखें दुनिया सारी  
चलो सबको पढ़ायें, और पढ़ते जाए जी हम  
आओ स्कूल चलें हम, छुट्टियां हो गई खतम



गोलू-मोलू सीता गीता, साथ चलें हरदम

आते जाते मोटर गाड़ी से, खूब करेंगे हम सैर  
लड़ाई झगड़ा नहीं करेंगे, न करेंगे किसी से बैर  
पशु पक्षी को जानें, और जानेंगे उनके नाम  
अपने परिवेश जानें , यही तो है अपना काम  
आसमान से पानी टपके, बज रही है सरगम  
आओ स्कूल चलें हम, छुट्टियां हो गई खतम  
गोलू-मोलू सीता गीता, साथ चलें हरदम

\*\*\*\*\*



# भारतीय संस्कारों को जीवन में अपनाते रहें

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र

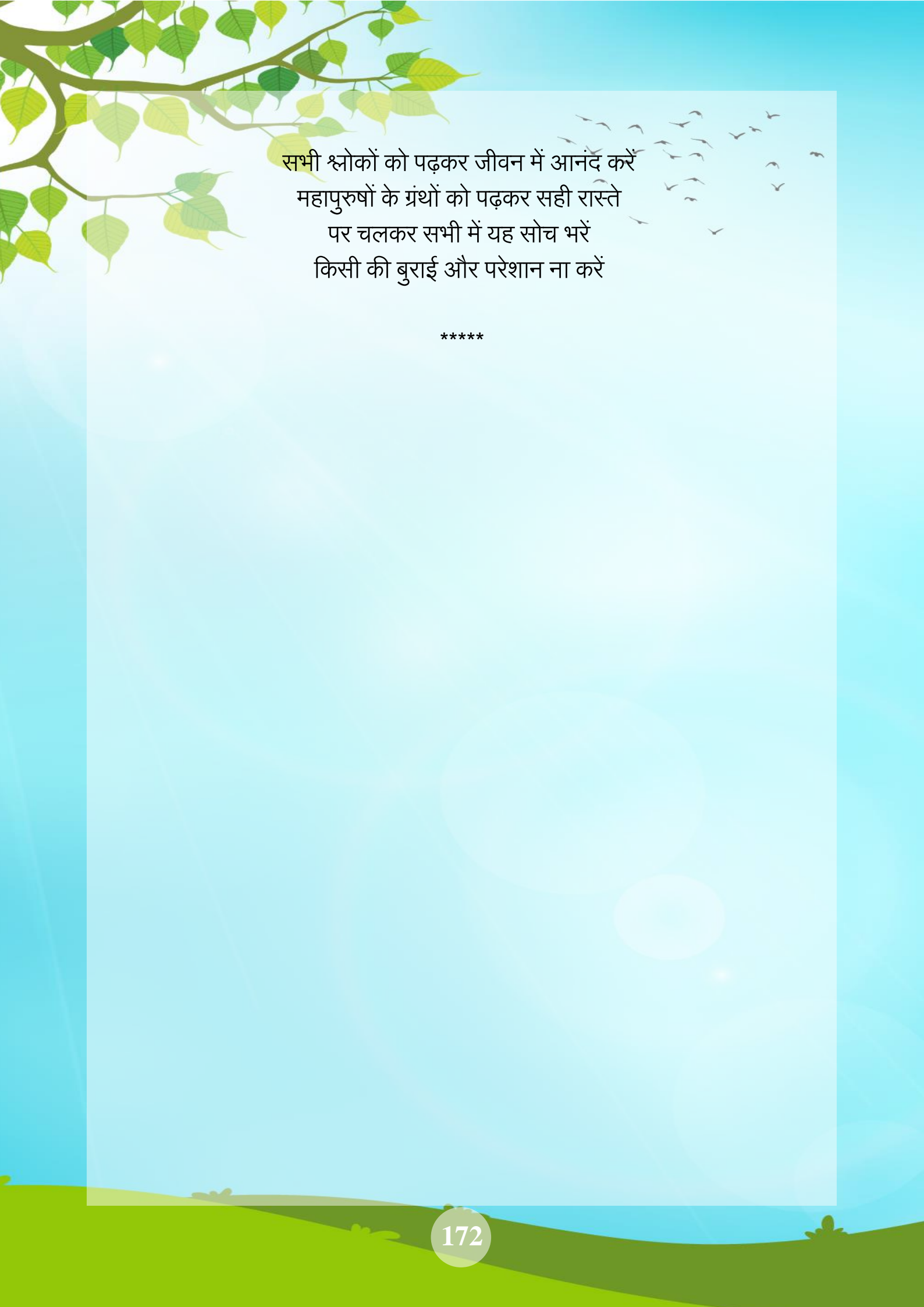


सभी जीवों का कल्याण का कार्य करते रहें  
किसी के दुखों का भागी कारण न बने  
सभी की भलाई निस्वार्थ करते रहें  
भारतीय संस्कारों को जीवन में अपनाते रहें

यह भाव हर मानवीय जीव में रहे  
दुनिया में सभी सुखी रहें  
जीवन भर सभी के मन शांत रहें  
दूसरों की परेशानी में मदद करें

कभी किसी को दुख का भागी ना बनना पड़े  
यह कामना हर मानवीय जीवन में रहे  
जीवन में किसी जीव को परेशान बुराई  
ना करने का मंत्र ज्ञान मस्तिष्क में रहे

सभी जीवन में सुखी रहें  
दुनिया में कोई दुखी ना रहे  
सभी जीवन भर रोग मुक्त रहे  
मंगलमय के हर पल के सभी साक्षी रहे



सभी श्लोकों को पढ़कर जीवन में आनंद करें  
महापुरुषों के ग्रंथों को पढ़कर सही रास्ते  
पर चलकर सभी में यह सोच भरें  
किसी की बुराई और परेशान ना करें

\*\*\*\*\*

# उत्सव

रचनाकार- संगीता पाठक, धमतरी



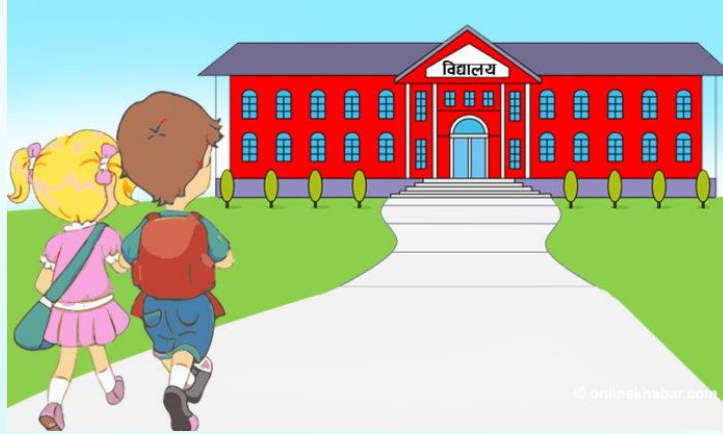
बारिश की शीतल फुहार,  
संतप्त धरा पर पड़ने लगी.  
तृषित पेड़-पौधों की तपिश  
शनैःशनैःशांत होने लगी.  
आम्रकुंज में छिपी कोयल  
मधुर गीत गुनगुनाने लगी.  
सजी सँवरी धरती माता  
निज रूप पर इठलाने लगी.  
श्वेत बगुलों की कतारें  
दूर क्षितिज तक उड़ान भरने लगीं.  
उमड़ते कजरारे मेघों को देख  
उल्लसित हो मोर नाचने लगे.  
छाया प्रकृति में हर्षोल्लास  
संपूर्ण धरा उत्सव मनाने लगी.

\*\*\*\*\*



# मेरा स्कूल मेरा भविष्य

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारायण

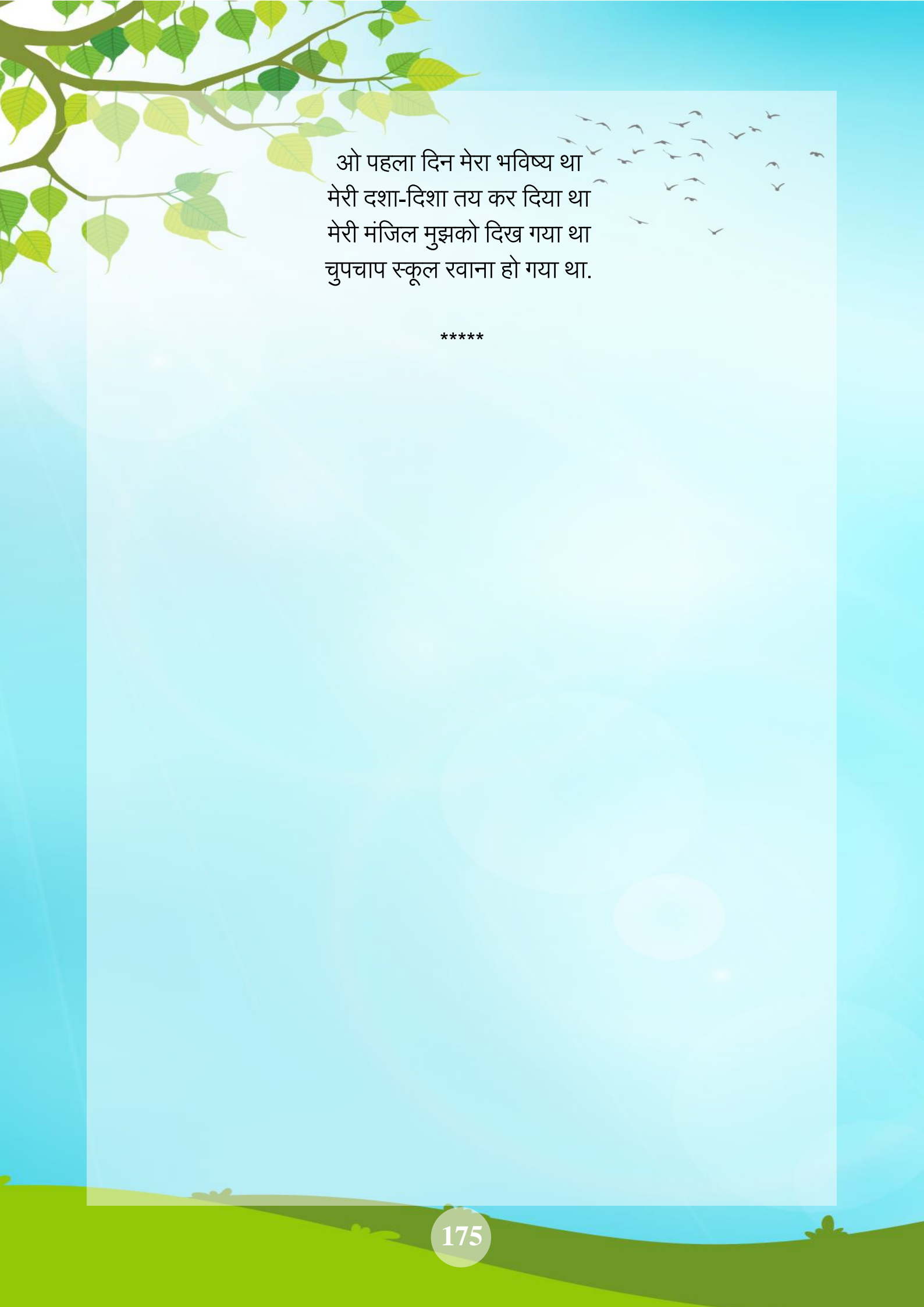


वह स्कूल का पहला दिन था  
जो आज तलक मुझे याद है  
वह दिन कैसे भूल सकता हूँ  
जो रहता यादों में मेरे साथ है.

मैं गुमसुम था सहमा हुआ था  
मैं यहां-वहां ओट में छुपा था  
मैंने माँ से फरियाद किया था  
माँ! स्कूल भेजके दम लिया था.

मैं करता रहा माँ से फरियाद  
माँ स्कूल मुझको नहीं जाना है.  
पिता ने तभी टॉफी दिलाया था  
मां ने कहा स्कूल जरूर जाना है.

मैंने कई बार बहाने बनाया था  
पर पिता प्यार से समझाया था  
स्कूल जाओगे तो ज्ञान पाओगे  
और बड़े होकर कुछ बन पाओगे.



ओ पहला दिन मेरा भविष्य था  
मेरी दशा-दिशा तय कर दिया था  
मेरी मंजिल मुझको दिख गया था  
चुपचाप स्कूल खाना हो गया था.

\*\*\*\*\*

# मेरा यार

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारायण



मेरा यार गम-खुशी, का साथी है  
तू मेरा हम सफर, तू हमराही है.

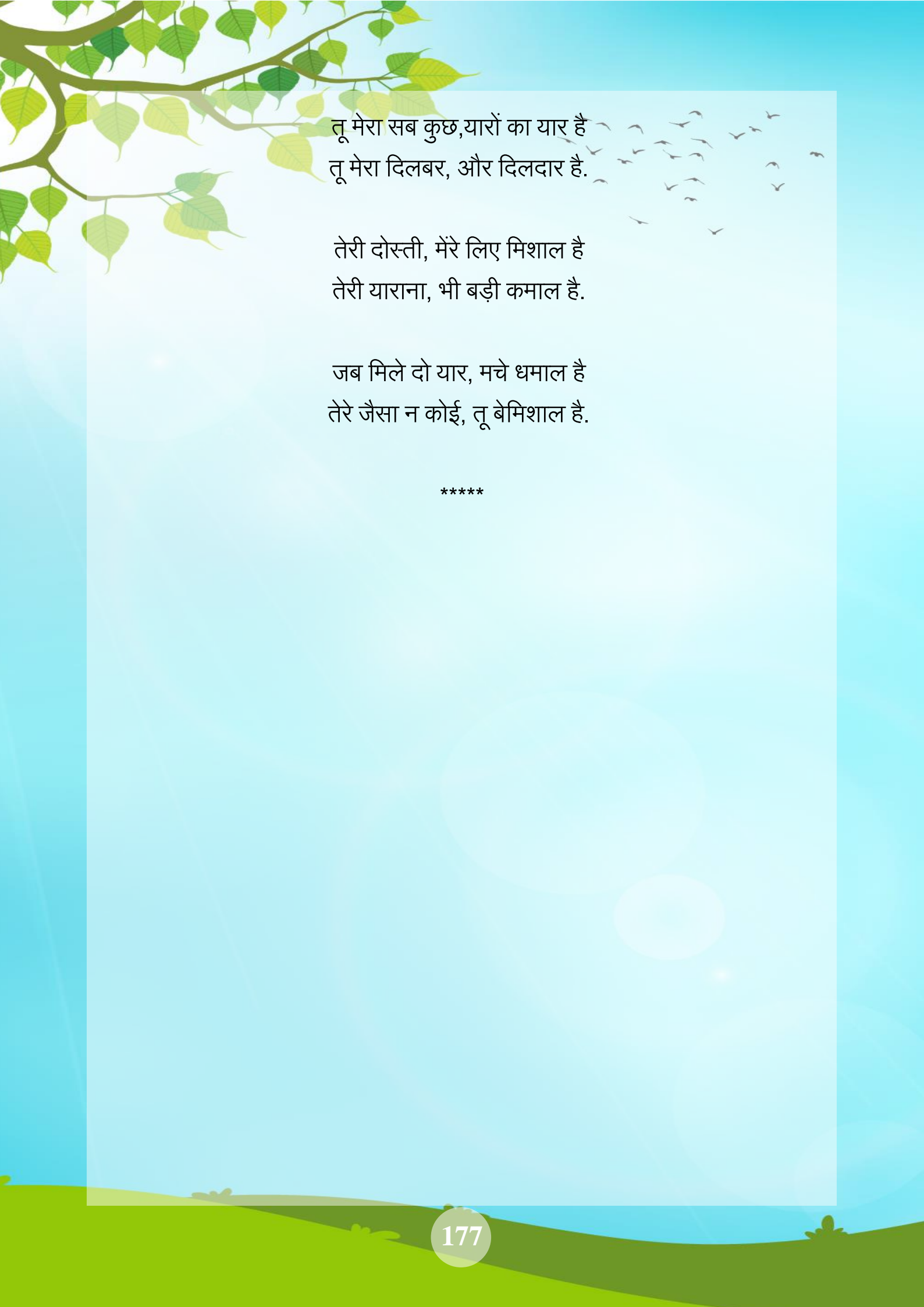
तूझसे मेरा जीवन, खुशगवार है  
तुझसे ही यह, जीवन गुलजार है.

तू मेरे लिए पतझर, में बहार है  
तू ही मेरा नावीक, तू पतवार है.

तू मेरा राहगीर, मेरा राजदार है  
तू मेरा हितैषी, तूही प्रेरणाधार है.

तू ही गम-खुशी का, सहभागी है  
तुमने मेरे लिए सदा, दुआ मांगी है.





तू मेरा सब कुछ, यारों का यार है  
तू मेरा दिलबर, और दिलदार है.

तेरी दोस्ती, मेरे लिए मिशाल है  
तेरी याराना, भी बड़ी कमाल है.

जब मिले दो यार, मचे धमाल है  
तेरे जैसा न कोई, तू बेमिशाल है.

\*\*\*\*\*

# जिंदगी

रचनाकार- कुमारी सुषमा बग्गा, रायपुर



मेरी जिंदगी एक कविता हैं.  
आओ जिंदगी को गाते चलें  
कुछ बातें मन की करते चलें  
आओं कुछ लुटाते चलें

मेरी जिंदगी एक कविता हैं.  
कभी हंसाते चलें, कभी रुलाते चलें  
कभी ऊंचाइयों पर चलें, कभी गहराइयों पर चलें  
आओ जिंदगी को गाते चलें  
कुछ लुटाते चलें

कुछ बोल मीठे बोलतें चलें  
कुछ रिश्ते बनातें चलें  
जिंदगी का सफर यूं ही काटते चलें  
कुछ बातें मन की करते चलें  
आओ जिंदगी को गाते चलें  
मेरी जिंदगी एक कविता हैं.

\*\*\*\*\*

# शहीद बिरसा मुंडा जी

रचनाकार- देव प्रसाद पात्रे, मुंगेली

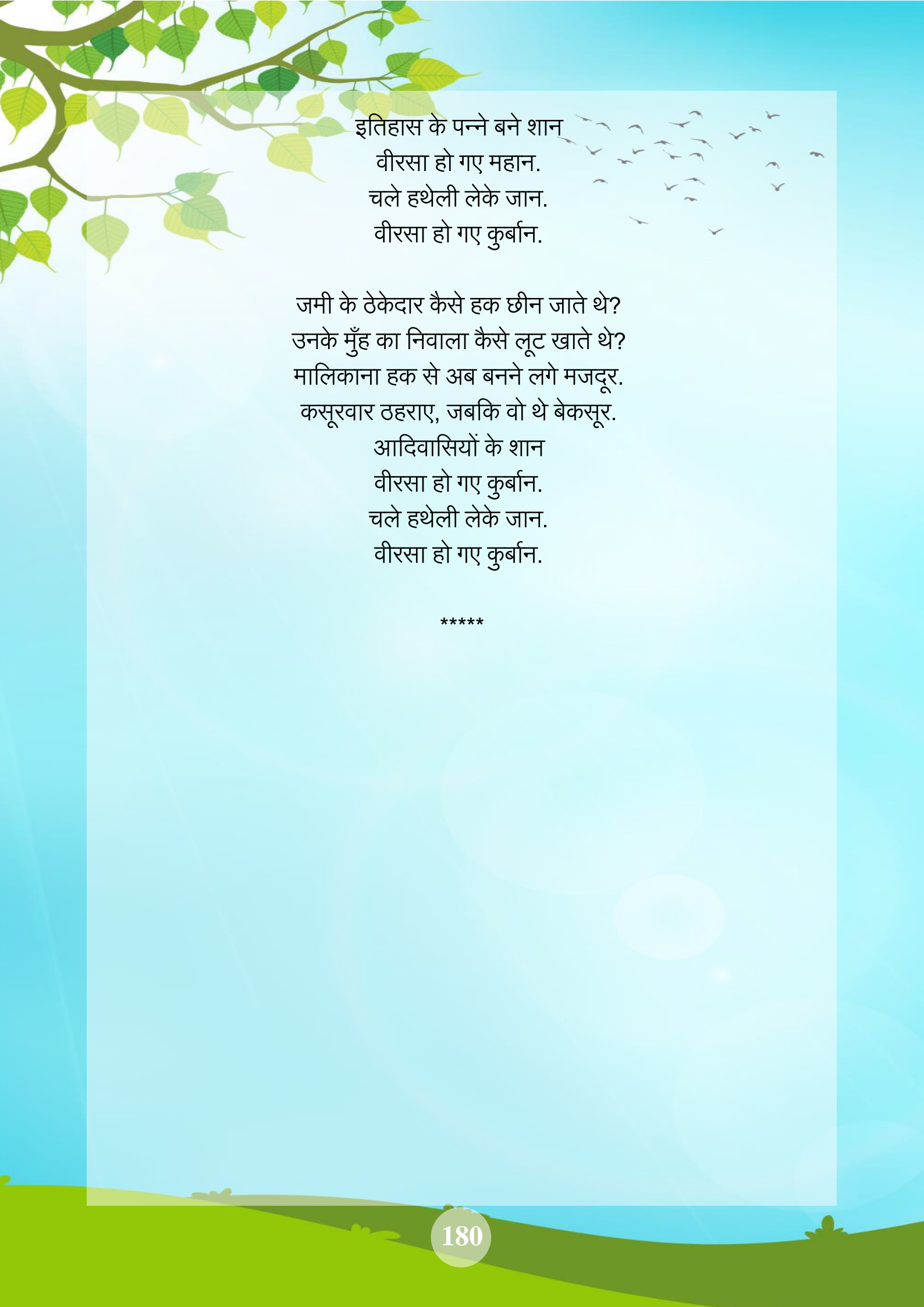


वीर जन्मा जनजाति अभियान के लिए  
जल जंगल जमीन स्वाभिमान के लिए  
हमको देने जीवन दान,  
वीरसा हो गए कुर्बान.  
चले हथेली लेके जान.  
वीरसा हो गए कुर्बान.

अदम्य साहस निडर वीरता से भरपूर.  
आदिवासी क्रांतिकारी नाम से मशहूर.  
भुजा सजे तीर कमान.  
वीरसा चले सीना तान.  
चले हथेली लेके जान.  
वीरसा हो गए कुर्बान.

स्वतंत्रता सेनानी आदिवासी लोक नायक थे.  
ब्रिटिश शासन हिलाने वाले प्रेरणादायक थे.  
नीति नियम की मार, दर्द झेल आदिवासी.  
चरम पर नर-संहार, कितने झूल गए फांसी.





इतिहास के पन्ने बने शान  
वीरसा हो गए महान.  
चले हथेली लेके जान.  
वीरसा हो गए कुर्बान.

जमी के ठेकेदार कैसे हक छीन जाते थे?  
उनके मुँह का निवाला कैसे लूट खाते थे?  
मालिकाना हक से अब बनने लगे मजदूर.  
कसूरवार ठहराए, जबकि वो थे बेकसूर.  
आदिवासियों के शान  
वीरसा हो गए कुर्बान.  
चले हथेली लेके जान.  
वीरसा हो गए कुर्बान.

\*\*\*\*\*

# वृक्ष हूँ मैं फल दूँगा

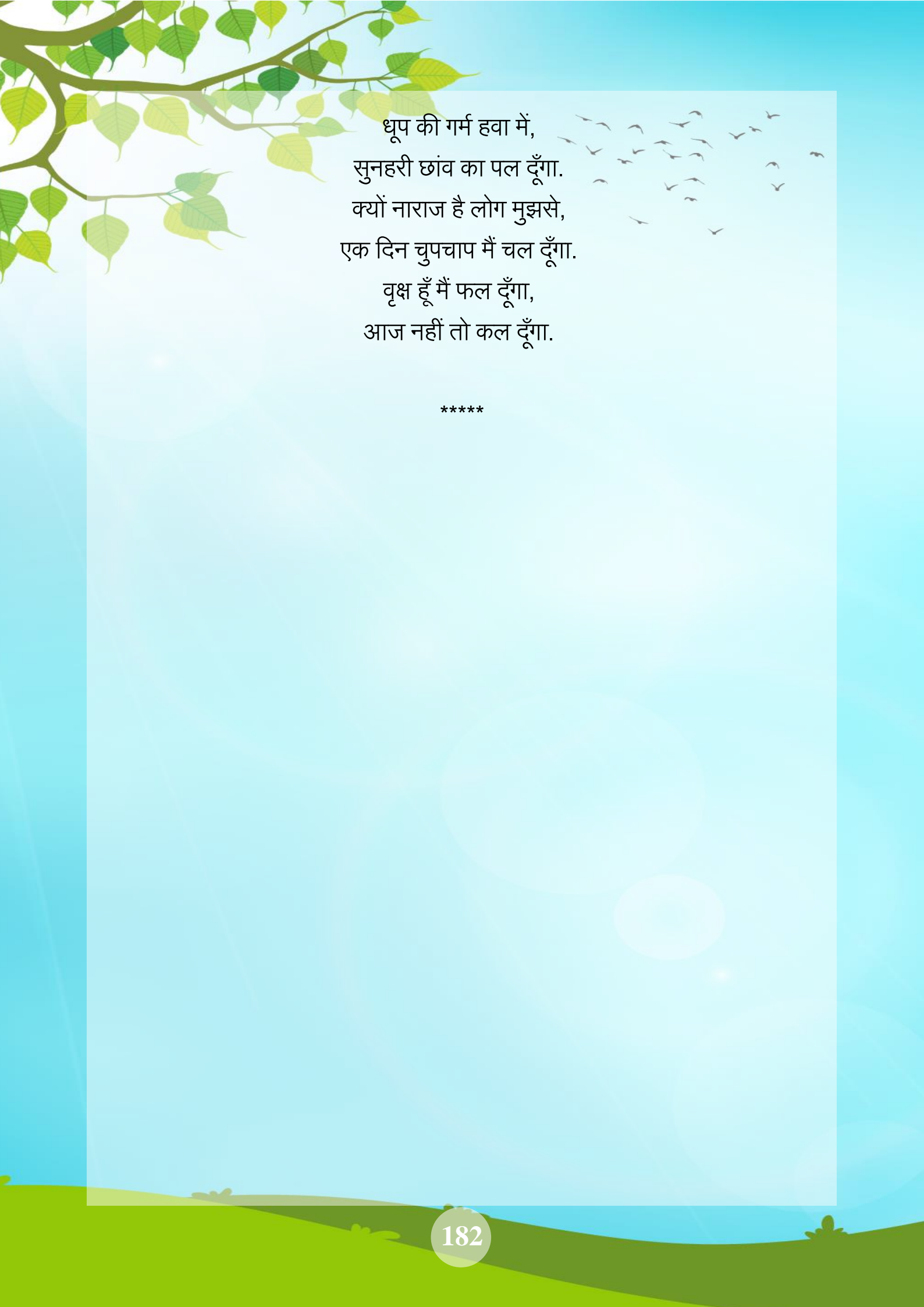
रचनाकार- योगेश्वरी तंबोली जांजगीर



वृक्ष हूँ मैं फल दूँगा,  
आज नहीं तो कल दूँगा.

थके हुए लोगों को मैं,  
सुकून का एक पल दूँगा.  
जीने का एक नया रास्ता,  
शुद्ध हवा और जल दूँगा.  
वृक्ष हूँ मैं फल दूँगा,  
आज नहीं तो कल दूँगा.

खड़ा हूँ जिंदगी के सफर में,  
हर समस्या का एक हल दूँगा.  
उदास, मायूस चेहरों पर,  
उत्साह, आनंद का बल दूँगा.  
वृक्ष हूँ मैं पल दूँगा,  
आज नहीं तो कल दूँगा.



धूप की गर्म हवा में,  
सुनहरी छांव का पल दूँगा.  
क्यों नाराज है लोग मुझसे,  
एक दिन चुपचाप मैं चल दूँगा.  
वृक्ष हूँ मैं फल दूँगा,  
आज नहीं तो कल दूँगा.

\*\*\*\*\*



# बरस रे बादर

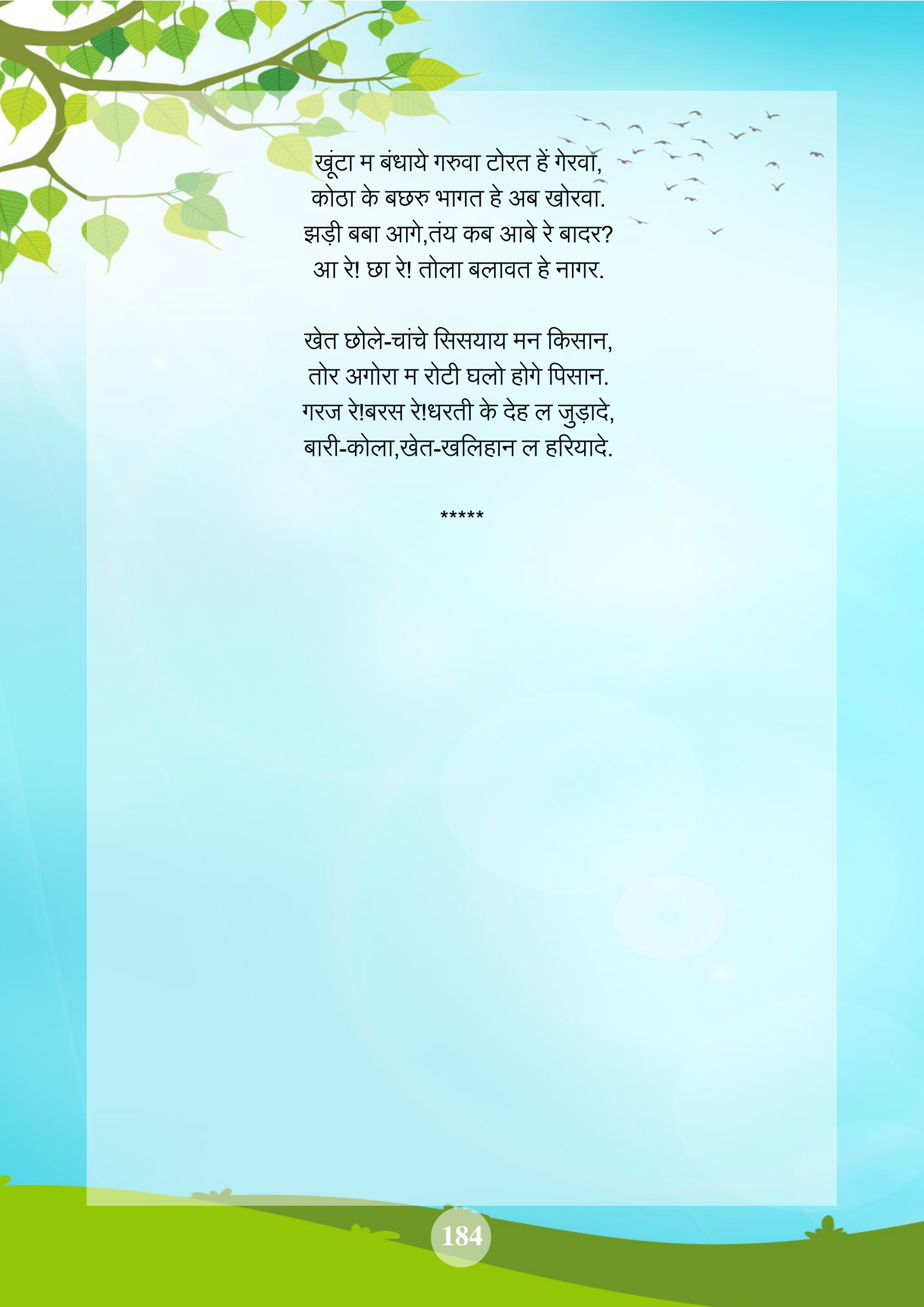
रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली



आसाढ़ म अब करिया बादर ह छागे,  
संगवारी खेती-किसानी के दिन आगे.  
मुड़ी उठाके घुरवा के खातू झांकत हे,  
बईलागाड़ी ह खलखला के हांसत हे.

टेटका के लाली देह हा भूरवा होंगे,  
मछरी, कोतरी मन नूनबोरवा होंगे.  
लेवा के मेचका जपत हे कंठी माला,  
मेकरा मन घलो बनाये लगिन जाला.

घांटी के धुन सुने बर रद्दा हा अगोरथे,  
रुख-राई मन पानी दाई ला सउंरथे.  
पड़की-पड़का के छूटे लागिस परान,  
सुआ अऊ मैना बिपत के गांवय गान.



खूंट म बंधाये गरुवा टोरत हैं गेरवा,  
कोठा के बछरु भागत हे अब खोरवा.  
झड़ी बबा आगे, तंय कब आबे रे बादर?  
आ रे! छा रे! तोला बलावत हे नागर.

खेत छोले-चांचे सिसयाय मन किसान,  
तोर अगोरा म रोटी घलो हगे पिसान.  
गरज रे! बरस रे! धरती के देह ल जुड़ादे,  
बारी-कोला, खेत-खलिहान ल हरियादे.

\*\*\*\*\*

# साक्षरता गीत

रचनाकार- श्रीमती रजनी शर्मा बस्तरिया, रायपुर



तोर मोर नाव ला संगी,  
लिखे बर जल्दी सीखबो रे.

अ ,आ, इ ,ई के संगे- संगे,  
पढ़े-लिखे बर सीखबो रे.

चिखला, माटी, रेती, खेत में,  
काड़ी के कलम बनाबो रे.

ओमा उकेर के अक्षर ला,  
भारत ला साक्षर बनाबो रे.

पट्टी ,बस्ता,अउ कागद के संगे,  
लईका ला स्कूल पठोबो रे.

अक्षर ज्ञान ला सीख के भईया,  
साक्षर हमहू कहिलाबो रे.

\*\*\*\*\*




# बाल पहेलियाँ

रचनाकार- कमलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, उत्तर प्रदेश



1. सब्जियों का राजा हूँ मैं,  
खाये मुझको लालू शालू.  
कार्बोहाइड्रेट खूब बढ़ाता  
कहते हैं सब मुझको.
2. ना हूँ फिंगर ना ही लेडी  
लोग कहें मुझे लेडी फिंगर,  
मैं सब्जी हूँ एक निराली,  
खूब विटामिन मेरे अंदर.
3. चाय में डालो टेस्ट बढ़ाओ,  
चार अक्षर का मेरा नाम.  
सब्जी का भी टेस्ट बढ़ाती,  
नाम बताओ भोलू राम.



4. चार अक्षर का मेरा नाम,  
लाल हरा है रंग.  
सी विटामिन मेरे अंदर,  
रहते हैं हरदम.

उत्तरमाला: 1. आलू, 2. भिंडी, 3. अदरक, 4. टमाटर

\*\*\*\*\*

# नींबू का पानी

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ



गर्मी में शीतलता देता, है नींबू का पानी.  
देशी शीतल पेय कहाता, और न दूजा सानी.

सब्जी वाले खूब बेचते, लगा - लगाकर ठेले,  
पीले-हरे, बड़े - छोटे हैं, गोल - गोल अलबेले,

हर मौसम में आते नींबू, मिलने में आसानी.

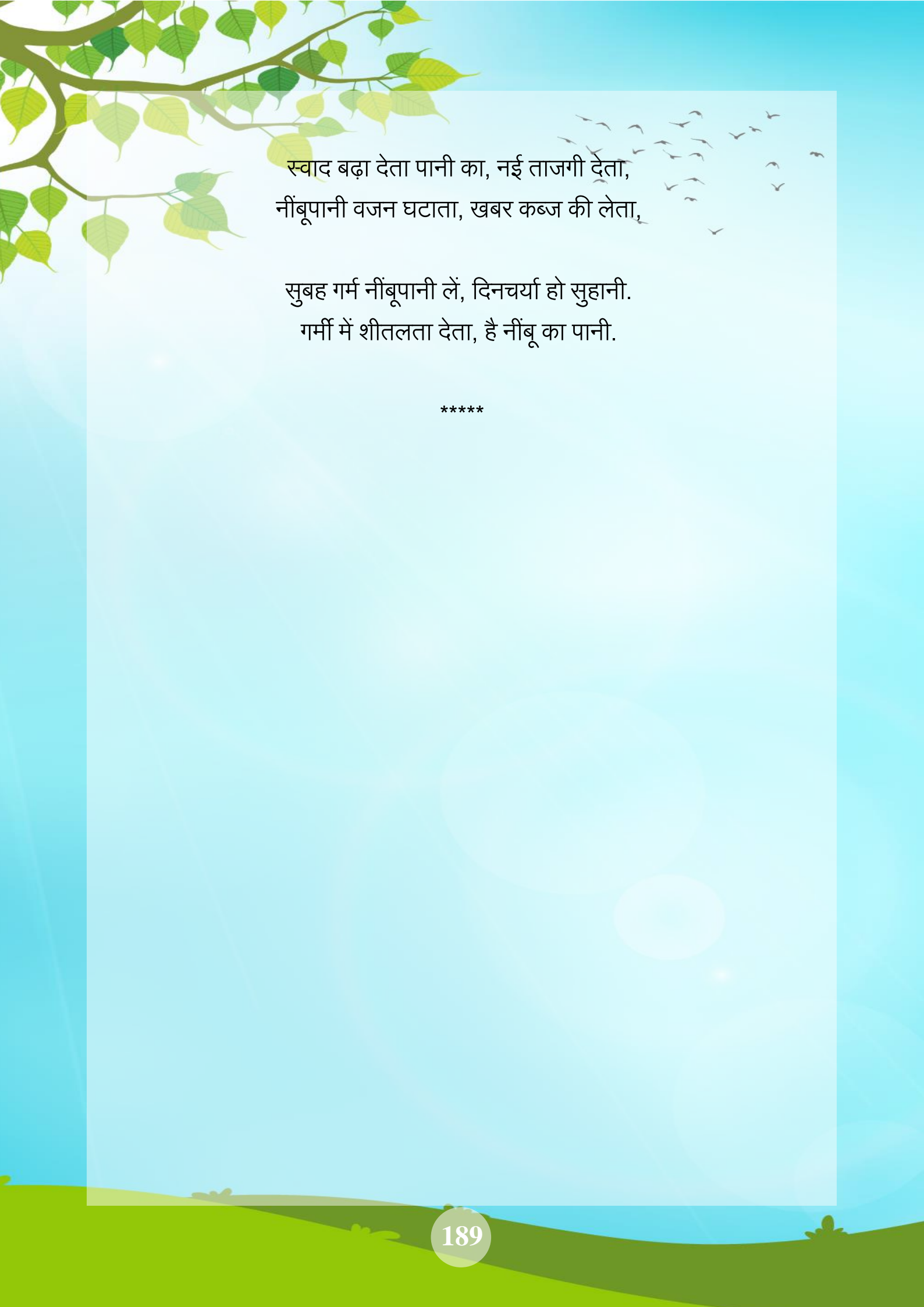
दिखने में छोटे हैं नींबू, काम बड़े पर करते,  
जूस, पेय का भी विकल्प हैं, पेटरोग हैं हरते,

लू लगने से हमें बचाते, कहतीं दादी-नानी.

प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट भरे हैं. खनिज के साथ विटामिन,  
स्वास्थ्य और सौंदर्य से जुड़े, लाभ मिल रहे अनगिन,

रक्तचाप, मधुमेह, गैस की, दूर करें परेशानी.





स्वाद बढ़ा देता पानी का, नई ताजगी देता,  
नींबूपानी वजन घटाता, खबर कब्ज की लेता,

सुबह गर्म नींबूपानी लें, दिनचर्या हो सुहानी.  
गर्मी में शीतलता देता, है नींबू का पानी.

\*\*\*\*\*

# आम

रचनाकार- गुलज़ार बरेठ, जांजगीर चाम्पा



फलो का मै राजा हूँ  
खालो मुझको ताजा हूँ  
चटनी बनाके चख लो तुम  
जूस भी मेरा गटक लो तुम  
हरा होता कच्चा में  
पककर पिला हो जाता हूँ  
अचार मेरा सब खाते हो  
अमचूर में भी भा जाता हूँ  
खट्टा होता कच्चा में  
पककर मीठा हो जाता हूँ  
सेहत सबका बनाता मै  
गर्मी में सबको भाता हूँ

\*\*\*\*\*

# सेब

रचनाकार- गुलज़ार बरेठ, जांजगीर चाम्पा



लाल नारंगी और हरा  
विटामिन्स से मैं हूँ भरा  
खट्टा मीठा स्वाद मेरा  
रस से मैं सदा भरा  
सेब खाना काम तुम्हारा  
सेहत बनाना काम मेरा  
मेहमान जब घर में कोई आता  
मुझको खरीदकर जरूर लाता  
एक सेब जो हर दिन खाता  
बिमारी उसके पास न आता

\*\*\*\*\*



# तरबूज

रचनाकार- गुलज़ार बरेठ, जांजगीर चाम्पा



खालो बेटे तुम तरबूज  
ताकत मिलेगी इससे खूब  
पानी की पूर्ति करता है खूब  
जब गला जाता है सुख  
बीज भी जाता इसमे डूब  
गर्मी में इसका मांग है खूब  
हरा है बाहर अंदर लाल है खूब  
घर मे लाता जब कोई तरबूज  
मिल बाटकर खाते सब खूब  
जब गर्मी मौसम चली जाती दूर  
इसकी याद सताती खूब

\*\*\*\*\*

# बच्चे और हॉबी क्लासेस

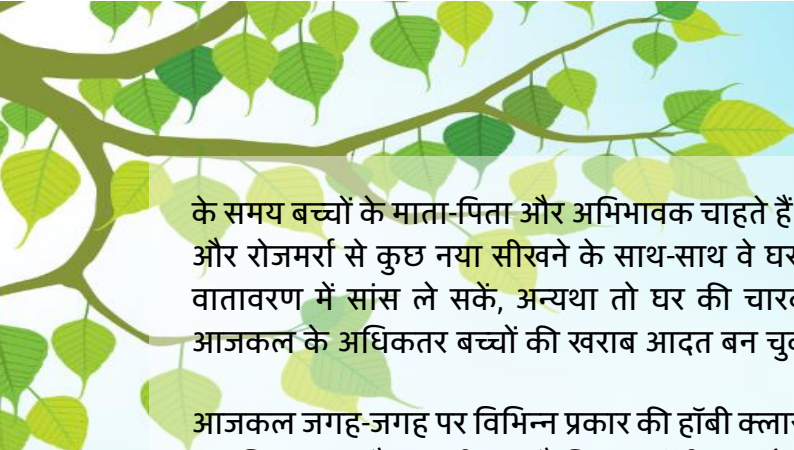
रचनाकार- पिकी सिंघल, दिल्ली



दुनिया में शायद ही कोई बच्चा ऐसा होगा जिसे खेलना दौड़ना भागना मस्ती करना पसंद न आता हो .अपने खाली समय में तो उसके ये शौक और भी अधिक बढ़ जाते हैं. पढ़ने के साथ-साथ खेलना भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है क्योंकि खेलने से व्यक्ति के मानसिक शारीरिक और संवेगात्मक विकास के साथ-साथ सामाजिक विकास भी होता है.बहुत पुरानी कहावत -- पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब खेलोगे कूदोगे बनोगे खराब -- यह कहावत आज के समय में कतई भी उपयुक्त नहीं मानी जाती क्योंकि वर्तमान समय में बच्चों का खेलना पढ़ने से भी अधिक महत्वपूर्ण समझा जाने लगा है क्योंकि आज की पीढ़ी के बच्चे मोबाइल लैपटॉप कंप्यूटर इन सब में इतना ज्यादा उलझ कर रह गए हैं कि वे स्क्रीन के सामने से हटना ही नहीं चाहते.ऐसे में उनका बौद्धिक विकास तो शायद हो जाता होगा किंतु संवेगात्मक सामाजिक और मनोवैज्ञानिक विकास नहीं हो पाता .घर से बाहर निकलने में अब बच्चे कतराने लगे हैं ,ऐसे में दूसरे लोगों से घुलने मिलने में उन्हें हिचक महसूस होती है और वहीं से शुरू होती है उनकी सामाजिक बनने की प्रक्रिया से दूरी.समाज में लोगों से मिलना जुलना आज के बच्चों को बहुत ज्यादा नहीं भाता. वे अपने आप में ही व्यस्त रहने लगे हैं. उन्हें मोबाइल के सिवाय दूसरे किसी भी व्यक्ति की आवश्यकता नहीं है क्योंकि मोबाइल उनको कंपनी देने वाला एक जीता जागता व्यक्ति ही बन चुका है .किंतु, यह भी सच है कि दिन-रात मोबाइल और कंप्यूटर में आंखें गड़ाए रहने से बच्चे मानसिक अवसाद का शिकार भी होने लगे हैं क्योंकि अभिभावक और माता-पिता हर वक्त उन पर नजर नहीं रख सकते. ऐसे में बच्चे स्क्रीन पर मनचाहा देखते हैं और मोबाइल न मिलने की स्थिति में विद्रोह पर उतर आते हैं.

इस तरह की स्थिति उत्पन्न न होने पाए, इसके लिए देखा जा रहा है कि बच्चों के माता-पिता उन्हें विभिन्न प्रकार की हॉबी क्लासेज में भेजना शुरू कर देते हैं ताकि बच्चे कुछ समय के लिए घर से बाहर निकलें, मोबाइल से दूरी बनाएं और साथ ही साथ उनका सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक विकास भी भली-भांति हो सके. स्कूल खुले होते हैं तब बच्चों के पास इतना समय नहीं होता है कि वे इस प्रकार की हॉबी क्लासेस में जा पाएं क्योंकि स्कूल समय के बाद उनकी ट्यूशन कोचिंग इत्यादि होते हैं जिसके बाद खुद के लिए उनके पास समय ही नहीं बच पाता .उनके पास वक्त की कमी होती है और वे खेलने पर उतना ध्यान नहीं दे पाते और यदि उनके पास कुछ समय होता भी है तो उस समय को वे मोबाइल देखने में लगा देते हैं .इसलिए स्कूल से छुट्टियां होने





के समय बच्चों के माता-पिता और अभिभावक चाहते हैं कि वे हॉबी क्लासेस जॉइन करें ताकि कुछ क्रियात्मक और रोजमर्रा से कुछ नया सीखने के साथ-साथ वे घर से बाहर निकले दूसरे लोगों से मिल सकें और खुले वातावरण में सांस ले सकें, अन्यथा तो घर की चारदीवारी या यूँ कहें कमरे की चारदीवारी में बंद रहना आजकल के अधिकतर बच्चों की खराब आदत बन चुकी है।

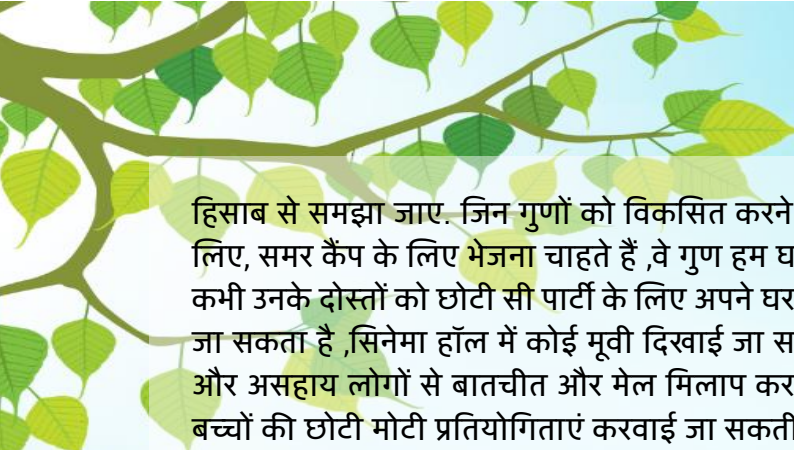
आजकल जगह-जगह पर विभिन्न प्रकार की हॉबी क्लासेस आयोजित की जाती है जिसके लिए शुल्क निश्चित कर दिया जाता है। यह भी सच है कि इन हॉबी क्लासेस के नाम पर आयोजकों द्वारा पेरेंट्स से मनमानी राशि वसूल की जाती है जिसे चुकाने में आजकल के पेरेंट्स भी पीछे नहीं हटते क्योंकि पैसे से अधिक उन्हें अपने बच्चों के स्वास्थ्य की चिंता होती है वे चाहते हैं कि पैसा खर्च करके यदि बच्चे घर से बाहर निकल रहे हैं, कुछ नया सीख रहे हैं मोबाइल से दूरी बना रहे हैं तो यह घाटे का सौदा नहीं अपितु एक निवेश है। दूसरा, दूसरे बच्चों के पेरेंट्स की होड़ करने में भी इस प्रकार के पेरेंट्स पीछे नहीं रहना चाहते। दूसरे शब्दों में हॉबी क्लासेज के नाम पर देखा देखी भी आजकल बहुत अधिक बढ़ गई है, अर्थात् एक दूसरे को देख कर भी कुछ पेरेंट्स अपने बच्चों को इस प्रकार की हॉबी क्लास ज्वाइन करवाने लगे हैं।

छुट्टियों के समय हॉबी क्लासेस जॉइन करना करवाना बुरी बात नहीं है। यह बच्चों और उनके माता-पिता के शौक पर भी निर्भर करता है। किंतु अपनी हॉबीज को नया रूप देने और अपने शौक को पूरा करने के लिए पैसे ही खर्च किए जाएं, यह बिल्कुल भी जरूरी नहीं है। यदि माता-पिता चाहें तो वे अपने बच्चों के साथ खेल सकते हैं उनके साथ पार्क टहलने जा सकते हैं, झूलने झूलने में, भागने में, रेस लगाने में उनका साथ देकर और छोटे-छोटे गेम्स उनके साथ खेल कर उनकी हॉबीज को पूरा कर सकते हैं। किंतु शर्त यह है कि पेरेंट्स को भी मोबाइल से दूरी बनानी होगी, बच्चों के लिए समय निकालना होगा और उन्हें उनके स्तर पर जाकर समझना होगा क्योंकि बड़े लोग ही बच्चों के आदर्श होते हैं और अधिकतर बच्चे अपने बड़ों की ही नकल करते हैं इसलिए बड़ों को एक आदर्श स्थापित करना होगा ताकि वे अपने बच्चों से जो अपेक्षा करते हैं उन अपेक्षाओं पर वे स्वयं भी खरे उतर पाएं। बच्चों के साथ बच्चा बनने में कोई बुराई नहीं है, अपितु बच्चों को यह महसूस होना चाहिए कि उनके माता-पिता हर सुख दुख और जीवन के उतार-चढ़ाव में उनके साथ हैं। अपने बच्चों के नजदीक जाएं, उनके मन को टटोलें और कुछ उनकी मानें और कुछ अपनी मनवाएं।

बच्चों को यदि हॉबी क्लासेस भेजना भी है तो उन्हें छोड़कर आने और ले जाने की जिम्मेदारी ड्राइवर या मेड को न देकर अभिभावकों को स्वयं उठानी चाहिए। बच्चों को ऐसे ही दूसरों के भरोसे या फ्री छोड़ देने से बच्चे हॉबी क्लासेस जाते तो जरूर हैं, किंतु बहुत जल्द उन्हें यह एहसास भी हो जाता है कि माता-पिता अपना पीछा छुड़ाने के लिए ही उन्हें घर से बाहर भेज रहे हैं। परिणाम स्वरूप हॉबी क्लासेज उनके लिए एक बोझ बन जाती हैं।

ऐसी स्थिति उत्पन्न न होने पाए इसका हम पेरेंट्स को विशेष ध्यान रखना होगा। हमें उन्हें हॉबी क्लासेस उनकी रुचि के हिसाब से दिलवानी होगी न कि अपनी रुचि के हिसाब से। बच्चे का किस खेल में कितना इंटरेस्ट है उसके हिसाब से उन्हें उनकी हॉबी क्लासेस जॉइन करानी होंगी। यदि बच्चा हॉबी क्लास ज्वाइन नहीं करना चाहता है तो उनके साथ जोर जबरदस्ती भी नहीं करनी चाहिए। बच्चों को समझाया जरूर जा सकता है किंतु डांट डपट कर जबरदस्ती उन्हें किसी भी कार्य के लिए राजी करना किसी भी सूरत में स्वीकार्य नहीं है, इससे बच्चों पर गलत प्रभाव पड़ता है और धीरे-धीरे उनमें अवसाद बढ़ने लगता है।

छुट्टियों में हॉबी क्लासेस के अतिरिक्त और बहुत सी ऐसी गतिविधियां होती हैं जिनमें बच्चों को व्यस्त किया जा सकता है। हमारी ही तरह हमारे बच्चे भी छुट्टियों में फ्री रहना चाहते हैं, सुबह देर तक सोना चाहते हैं, टीवी मोबाइल देखना चाहते हैं, नाना नानी के घर जाना चाहते हैं, शॉपिंग करना चाहते हैं, पर्यटक स्थल पर जाना चाहते हैं, ट्रेकिंग करना चाहते हैं, नए नए स्थानों को एक्सप्लोर करना चाहते हैं, तो क्यों न बच्चों को उन्हीं के



हिसाब से समझा जाए. जिन गुणों को विकसित करने के लिए हम बच्चों को घर से बाहर हॉबी क्लासेज के लिए, समर कैम्प के लिए भेजना चाहते हैं, वे गुण हम घर में भी उनके भीतर विकसित कर सकते हैं, जैसे, कभी-कभी उनके दोस्तों को छोटी सी पार्टी के लिए अपने घर बुलाया जा सकता है या उन्हें उसके दोस्तों के घर भेजा जा सकता है, सिनेमा हॉल में कोई मूवी दिखाई जा सकती है, अनाथाश्रम और वृद्धाश्रम ले जाकर जरूरतमंद और असहाय लोगों से बातचीत और मेल मिलाप करवाया जा सकता है, कभी अपने घर के पास के पार्क में बच्चों की छोटी मोटी प्रतियोगिताएं करवाई जा सकती हैं और इन प्रतियोगिताओं में जब बच्चों के साथ-साथ उनके माता-पिता भी भाग लेते हैं तो बच्चों को बहुत अच्छा लगता है और इस प्रकार की गतिविधियों में फिर उनका ज्यादा मन लगता है, बच्चों में प्रतिस्पर्धा की भावना का विकास होता है और हॉबी क्लासेस से अधिक उनका नैतिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास इन गतिविधियों के माध्यम से संभव हो पाता है. कहा जाता है कि नून लगे न फिटकरी रंग चोखा ही चोखा, अर्थात् बिना पैसे खर्च किए भी हम अपने बच्चों को उनकी रुचियों को विकसित करने में सहायता कर सकते हैं. बस जरूरत है थोड़ी सी समझदारी और अपने बच्चों को उनके स्तर पर जाकर समझाने की.

\*\*\*\*\*



# जल्दी आ जाओ, बरखा रानी

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल", दुर्ग



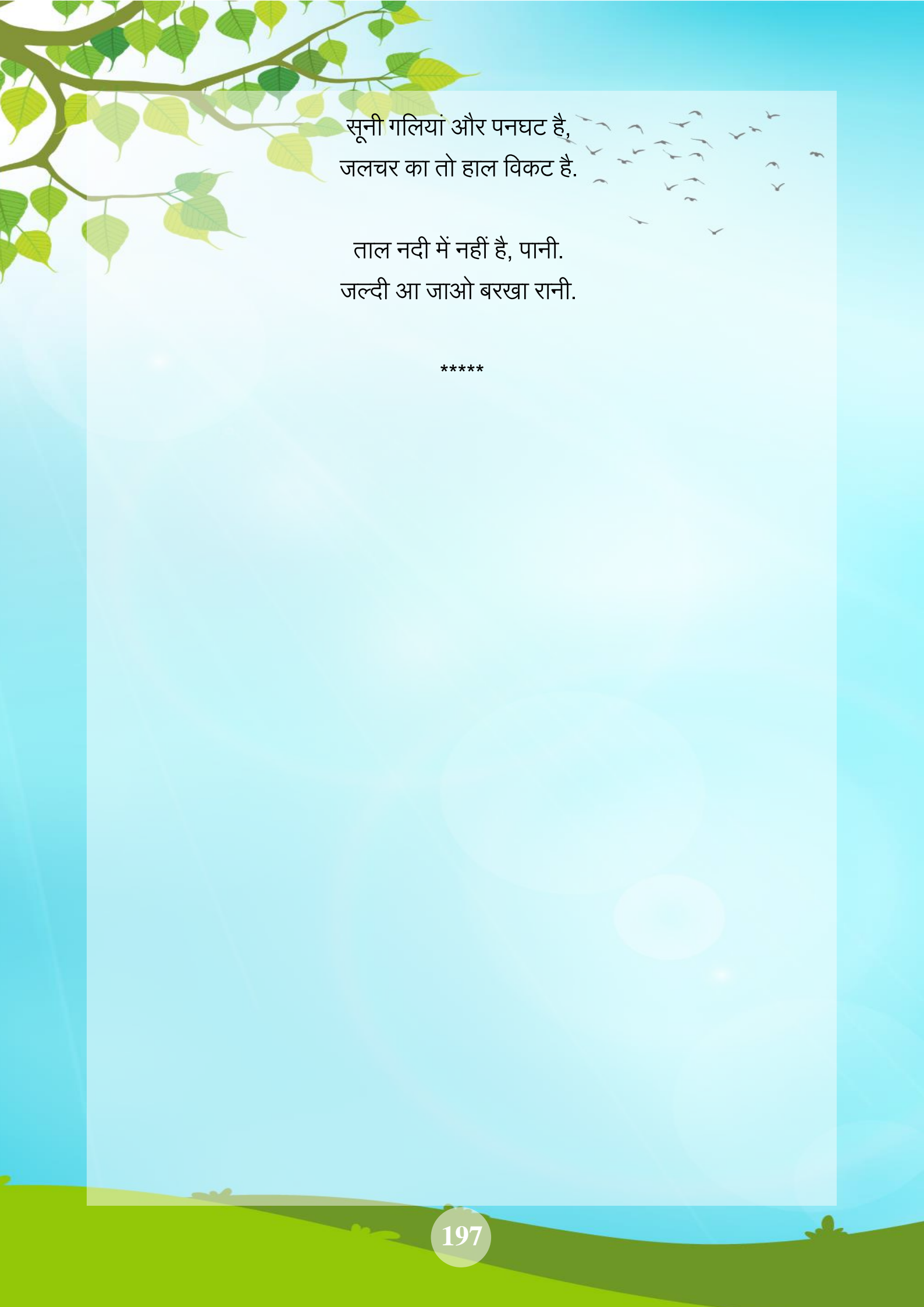
जल्दी आ जाओ बरखा रानी,

तप्त तवा सा अब भूतल है,  
बहुत ही नीचे अब भूजल है.

खेत खार में पड़ी दरारें,  
मुंह खोलकर तुम्हें पुकारे.

घास, पत्तियां सूखी-सूखी,  
पुरवाही भी हो गई रुखी.

जीव जंतु सब अति व्याकुल है,  
उजड़ा गुलशन, लुप्त बुलबुल है.



सूनी गलियां और पनघट है,  
जलचर का तो हाल विकट है.

ताल नदी में नहीं है, पानी.  
जल्दी आ जाओ बरखा रानी.

\*\*\*\*\*

# रोज स्कूल जायेंगे

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल", दुर्ग



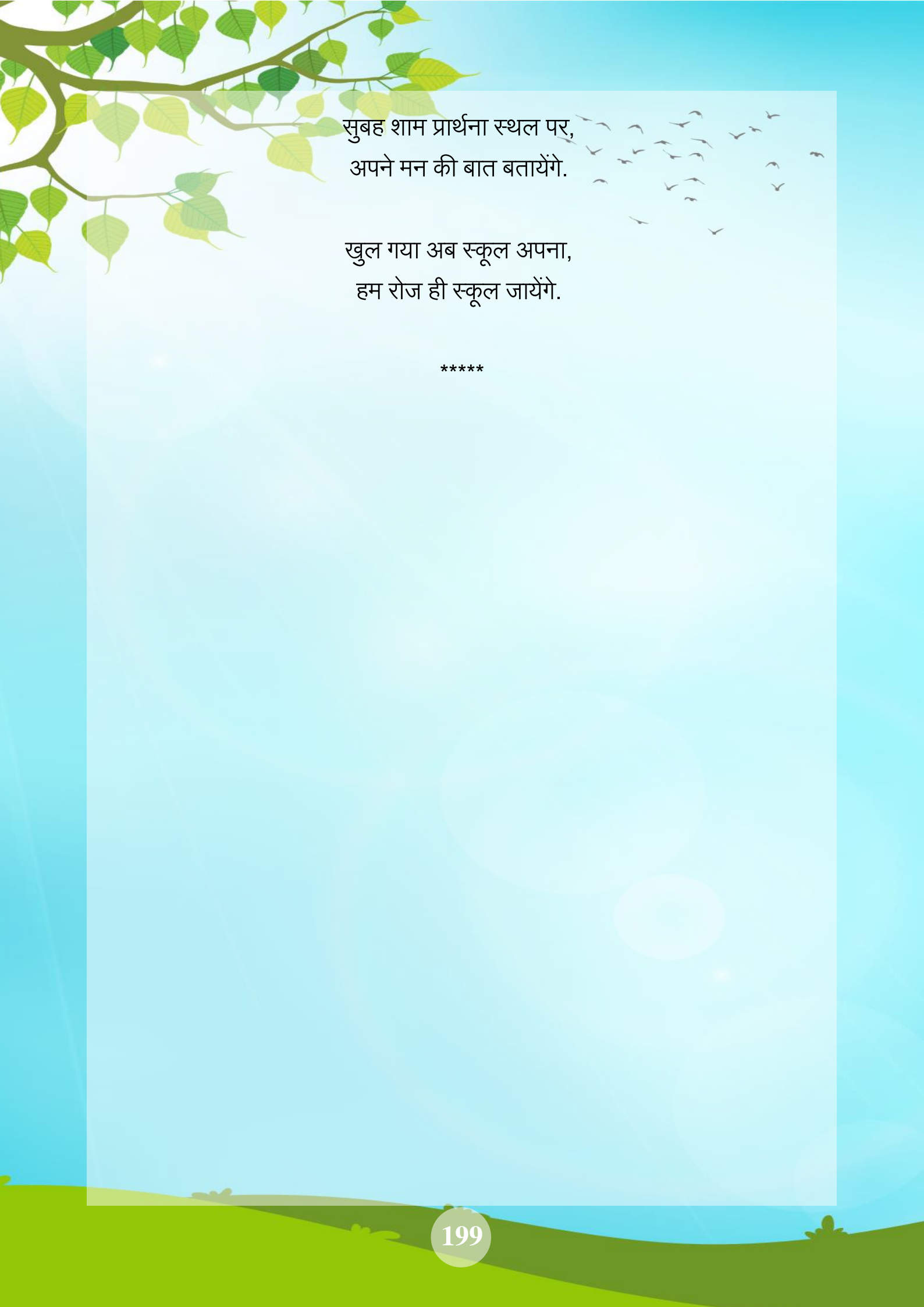
खुल गया अब स्कूल अपना,  
हम रोज ही स्कूल जायेंगे.

गणवेश और पाठ्य पुस्तकें,  
निःशुल्क नया हम पायेंगे.

पालक गण स्कूल में आकर,  
हमारा मुंह मीठा करायेंगे.

खेल-खेल में सीखेंगे हम,  
और गरम भोजन खायेंगे.

पढ़ना जब बोझिल हो जाये,  
खेलकर हम मन बहलायेंगे.



सुबह शाम प्रार्थना स्थल पर,  
अपने मन की बात बतायेंगे.

खुल गया अब स्कूल अपना,  
हम रोज ही स्कूल जायेंगे.

\*\*\*\*\*



# हमारी वसुंधरा

रचनाकार- कु.गायत्री चन्द्राकर, बालोद



सबसे प्यारी हमारी वसुंधरा,  
क्या तुम्हें पेड़ों को काँटकर,  
अफ़सोस नहीं होता, जरा.  
मत करो ऐसा,  
वरना खो दोगे,  
प्रकृति का अद्भुत नज़ारा.  
क्या नुकसान किया है?  
पेड़ पौधों ने तुम्हारा.  
रहने दो, धरती को,  
सुंदर हरा-भरा.  
भूल क्यों जाते हो?  
पेड़ों से सजती है वसुंधरा.  
सबसे प्यारी.

\*\*\*\*\*

# गरी

रचनाकार- कुंजलाल देशमुख



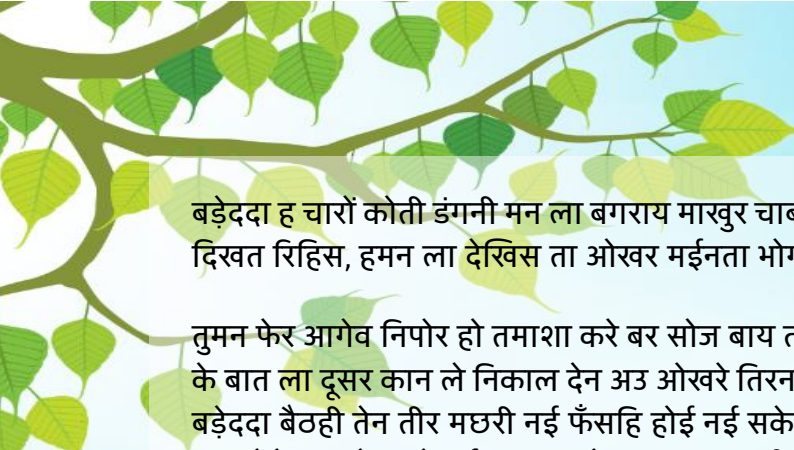
गरी खेलई मोला नानपन ले बहुतेच पसंग हे, सावन भादो के महीना आय ताहन काय नदिया काय नरवा सबो जगा छान मारन. गरी खेले के अइसे चिमिक रहाय ते मुड़ पीरा के ओखी लगाके स्कूल तको नई जावन. मोर गरी खेलइया संगवारी रहाय मोर मंझला बड़ेददा के बेटा धनंजय भांचा अजय अउ फूफू के बेटा राजेन्द्र, इंखर घरौधि नांव मोटू छोटू अउ राजू. एमा राजू बड़ अतलंघहा रहाय, जेन दिन कानी कोतरी नई फंसे तेन दिन डंगनी मन ला टोर टार के नरवा म फेंक देय अउ पागी पटका ल फेंक के घोड़ाघाट के करार ले भदा भद कूदे.. देखा देखी हमू मन कूदन फेर हमन हिसाब से, अउ ओखर अंडकोश लाली जाम बरोबर ललिया जाय.

वइसे गरी खेले ला हमन घरे में बड़ेददा समारू ल देख देख के सीखे रहेन. एक बोझा रहाय ओखर डंगनी हा जेला खांध म बोहे के आघु आघु रेंगे हमन चारा डब्बा, झोरा अउ छत्ता धरके पाछु पाछु. बड़ेददा के एक खाशियत रहाय पहिली वो ससन भर जगह के चिन्हारी कर लेवय, कते कर मछरी मन के माढ़ा होही अउ अतेक कन डंगनी ला कते मेर बगराय जा सकथे, अतका जांच बिचार के ही अपन ठीहा ल मडाय . बड़ेददा दिन बूड़े के बाद मछरी के भरे झोरा ल धर के लाहसत लाहसत घर आय.

भादो महीना के अंधियारी पाख म चार दिन ले बिकट बरषा होइस चारो मुड़ा पानी पानी, शिवनाथ नदिया के धार के ठेलान झुक्खा नरवा म चढ़ गे रहाय, अइसन सभे में मछरी मन के फंसे के लगन नई रहाय काबर मछरी मन ज्यादा पानी मे मेछरावत ऐती ओती चढ़ जथे. ता अइसन बेरा में गरी खेले ल नई जावत रहेन, फेर सुनेन बड़ेददा ह तो पहिलिच ले चल देहे कहिके, ता चारो संगवारी हमुमन अपन अपन डंगनी ला धर के मसक देन.

पथर्रा ले सुरु करे मशान घाट फेर लडलड़ी पहुंच गेन कोनो कर कानी कोतरी तको नई ठोनके, बड़ेददा के घलो दर्शन नई रहाय. राजू कहिस ममा नरवा गे होही बे चलो उहिती जाबो. झुक्खा नरवा ला चढ़त चढ़त छेरी पांडे पहुंच गेन.





बड़ेददा ह चारों कोती डंगनी मन ला बगराय माखुर चाबत आसन लगाय रहाय. फेर आज ओकरो झोरा खाली दिखत रिहिस, हमन ला देखिस ता ओखर मईनता भोगा गे.

तुमन फेर आगेव निपोर हो तमाशा करे बर सोज बाय तो बईठो नहीं, न खेलव न कोन्हों ल खेलन देव. बड़ेददा के बात ला दूसर कान ले निकाल देन अउ ओखरे तिरन डंगनी मन ला बगरा के हमू मन ओधिया गेन. जेन तीर बड़ेददा बैठही तेन तीर मछरी नई फँसहि होई नई सके अइसना सोच के. थोरिक बइठेन तहान हमर तिमाली सुरु होगे चुप तो बइठे नई सकन. बड़ेददा अपन डंगनी मन ला घिरियाइस अउ हमन ला गारी देवत घर कोती रेंग दिस.

अबे फोही रेंगत हे तीर न बे, एक दूसर ला चिल्लाएन, राजू तिरिस नोहे बे मोर, मोटू छोटू तिरिस मोरो नोहे बे, मैं तिरेव अरे ये तो मोरो फोही नोहे... समझत देरी नई लागिस ये तो बड़ेददा के फोही रहाय जेखर तांत ह डंगनी ले टूट गे रिहिस शायद जर में अरहज के या बड़े मछरी के ताकत ले. पानी म कूद के फोही ला जम्मो तिरेन.

तीन किलो के पढीना खलबलावत निकलिस.

झोरा रिहिस तभो ले ओमा नई धरेन ओखर गलफड़ा म गोइंदला के सुंटी ला खुसेर के कांध म लादेन अउ सोझे घर.

कांध म लादे लादे में अउ पाछु पाछु बांकी तीन, गली में छाती ल फुलाके अइसे रेंगत रेहेन जाना माना कारगिल के जुद्ध में अभी अभी पाकिस्तानी सेना मन ला धुर्रा चंटा के बंदूक ला बोहे आवत हन.. देखइया मन ला अपन आँखी म भरोसा नई होत रहाय.. घर तीर म बड़ेददा चौरा म बीड़ी पियत बइठे रहाय.. जब्बर मछरी ला कांध म देखके कभू मछरी ला देखे कभू हमन ला.

\*\*\*\*\*

# चिरई

रचनाकार- कलेश्वर साहू बिल्हा, बिलासपुर



काड़ी कचरा ल लाथे,  
घर अपन बर बनाथे.

नान्हे चिरई फुदुक-फुदुक  
अपन धुन म गुरतुर गाथे

मिलजुल के परिवार म रइथे  
अपन दुनिया ल बसाथे.

अपन पिलवा के खातिर वो  
चोंच म उड़ा-उड़ा के चारा लाथे.

भूख पियास रइथे घलो,  
वोहर कभु नइ घबरावय.

नान्हे चिरई होके घलो.  
मनखे ल बल बड़हाय बर सिखावय.

\*\*\*\*\*



# उन्नत भारत अभियान में नवाचार भाता है

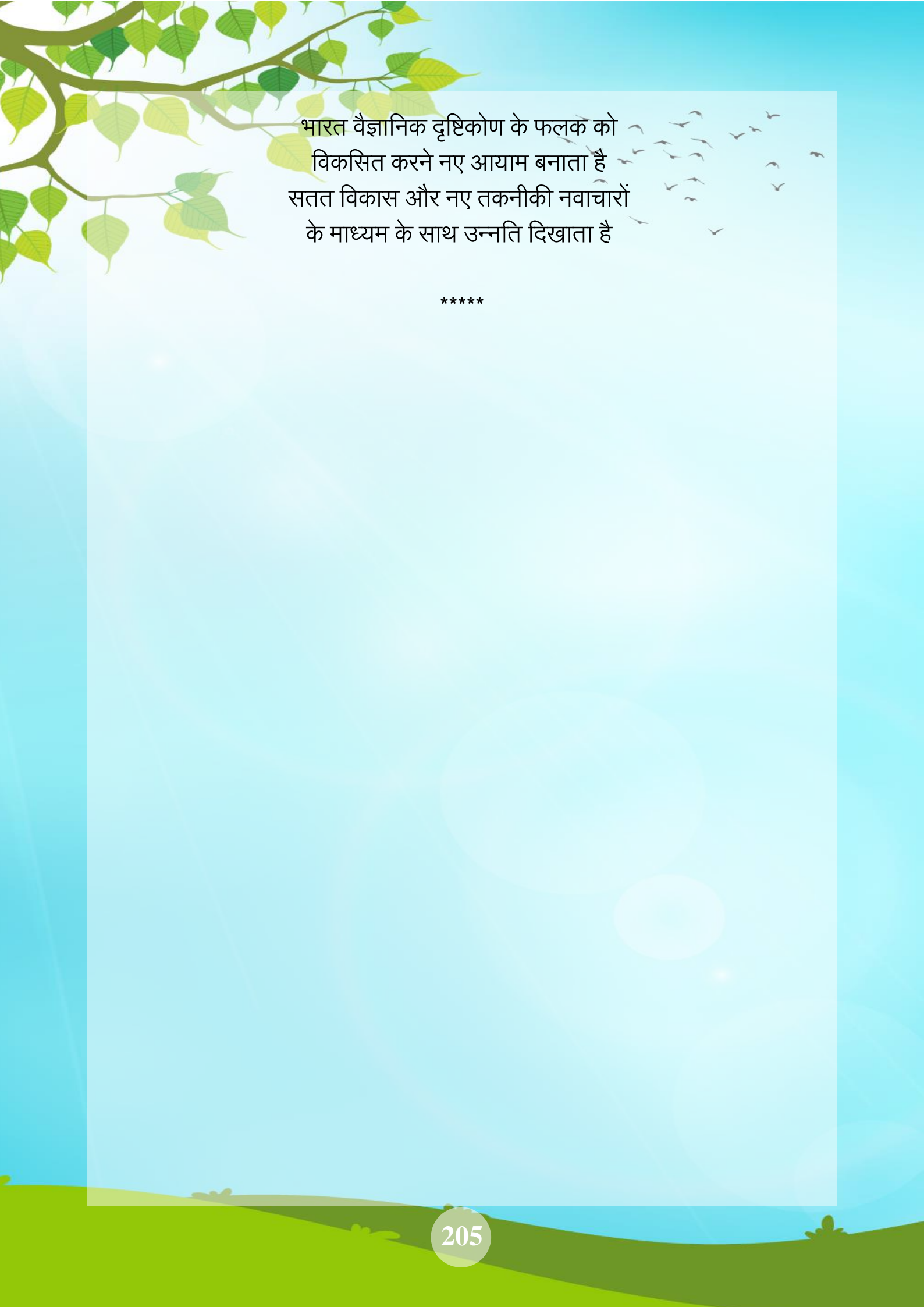
रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



भारत नवाचारों का उपयोग करके  
ऐसी तकसनीकी विकसित करता है  
जनता के लिए सस्ती सुगम सहजता लाए  
ऐसा नवाचार विज्ञान नए भारत में लाता है

उन्नत भारत अभियान में नवाचार भाता है  
उन्नत ग्राम उन्नत शहर में विज्ञान लाकर  
नमामि गंगे का अभियान चलाना है  
नवाचार सभी के जीवनमें सहजता लाता है

रचनात्मक नवाचार से जुड़ा विज्ञान  
आम आदमी के लिए जीवन में सहजता लाता है  
डिजिटल भारत मेक इन इंडिया  
जैसी थीम जनहित में लाता है



भारत वैज्ञानिक दृष्टिकोण के फलकों को  
विकसित करने नए आयाम बनाता है  
सतत विकास और नए तकनीकी नवाचारों  
के माध्यम के साथ उन्नति दिखाता है

\*\*\*\*\*

# सबक

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद



लगी सिसकने चिड़िया रानी, देख सभी घबराये,  
कौआ कोयल मैना तोता, पास जरा सा आये.  
क्यों आँखें गीली करती हो, हमको तनिक बताओ,  
परेशान बैठे हैं सारे, इतना नहीं सताओ.

धीमी धीमी बोली चिड़िया, देह घुसी बीमारी,  
पेट दर्द सोने ना देता, इससे मैं हूँ हारी.  
चलो पास डॉक्टर के चिड़िया, कोयल मैना बोली,  
मगर डरी थी ये चिड़िया जो, जुबान तक ना खोली.

उड़ कर कौआ सँग में लाया, डॉक्टर गिल्लू राजा,  
हुई बड़ी आँखें चिड़िया की, बज गया बेंड बाजा.  
सुई निकाली गिल्लू ने जब, जोर जोर चिल्लाई,  
गुपचुप चिवड़ा और समोसे, याद सभी की आई.

हाथ जोड़ कर माफी माँगी, कभी नहीं खाऊँगी,  
आम सेब अरु केला खाकर, ताकत मैं लाऊँगी.  
बीमारी जब देह लगी तो, आया होश ठिकाना,  
गिल्लू ने सबको समझाया, सादा भोजन खाना.

\*\*\*\*\*



# रक्तदान महादान

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र

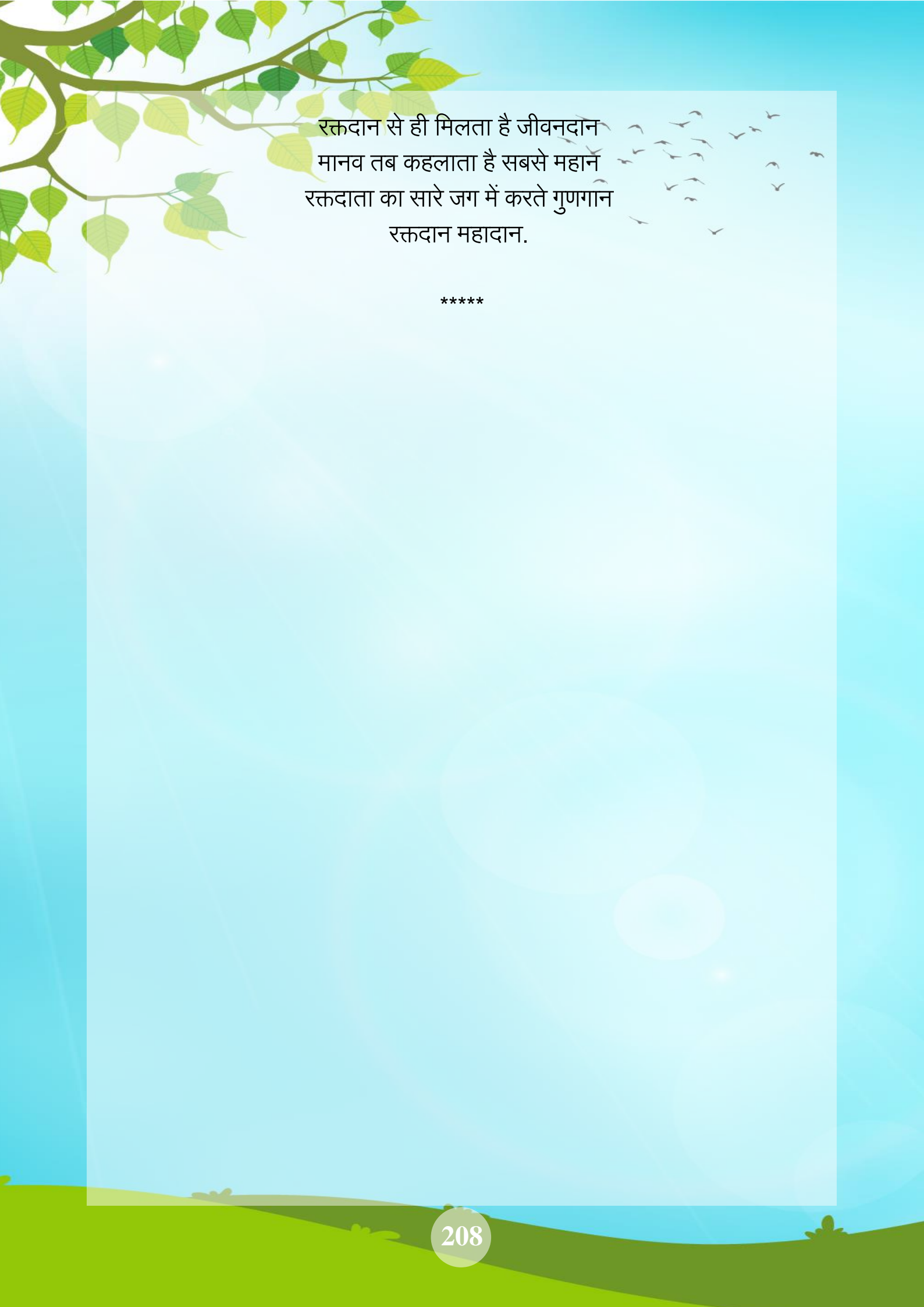


रक्तदान से बड़ा न कोई दान  
मानवता की इंसानियत ही शान  
रक्त बचाता है घायलो की जान  
रक्तदान महादान.

रक्तदानी का जग करे सम्मान  
दान व्यर्थ नहीं जाता मिलता है वरदान  
विपरीत स्वास्थ्य में रक्त बचाता है जान  
रक्तदान महादान.

सर्वधर्म मानव सेवा यही रखना ध्यान  
मानवता की मानवता ही पहचान  
रक्तदान में धर्म की नहीं कोई पहचान  
रक्तदान महादान.

रक्तदान जाया न जाए करना ध्यान  
रक्तदान बिक न पाए रखना ध्यान  
कालाबाजारी न हो इसका रखना ध्यान  
रक्तदान महादान.

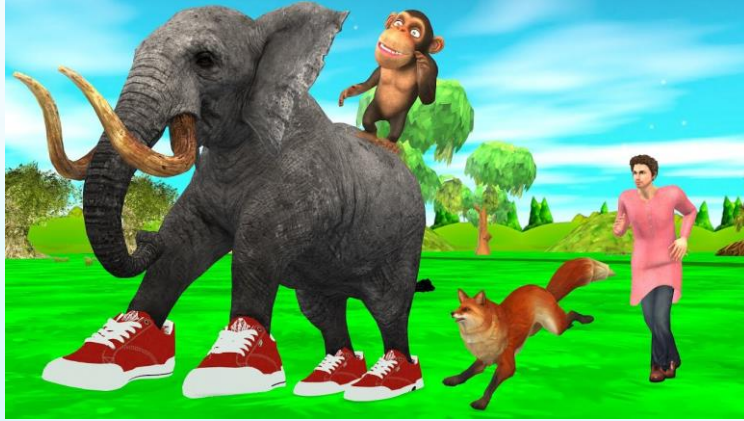


रक्तदान से ही मिलता है जीवनदान  
मानव तब कहलाता है सबसे महान  
रक्तदाता का सारे जग में करते गुणगान  
रक्तदान महादान.

\*\*\*\*\*

# हाथी चला खरीदने जूता

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान



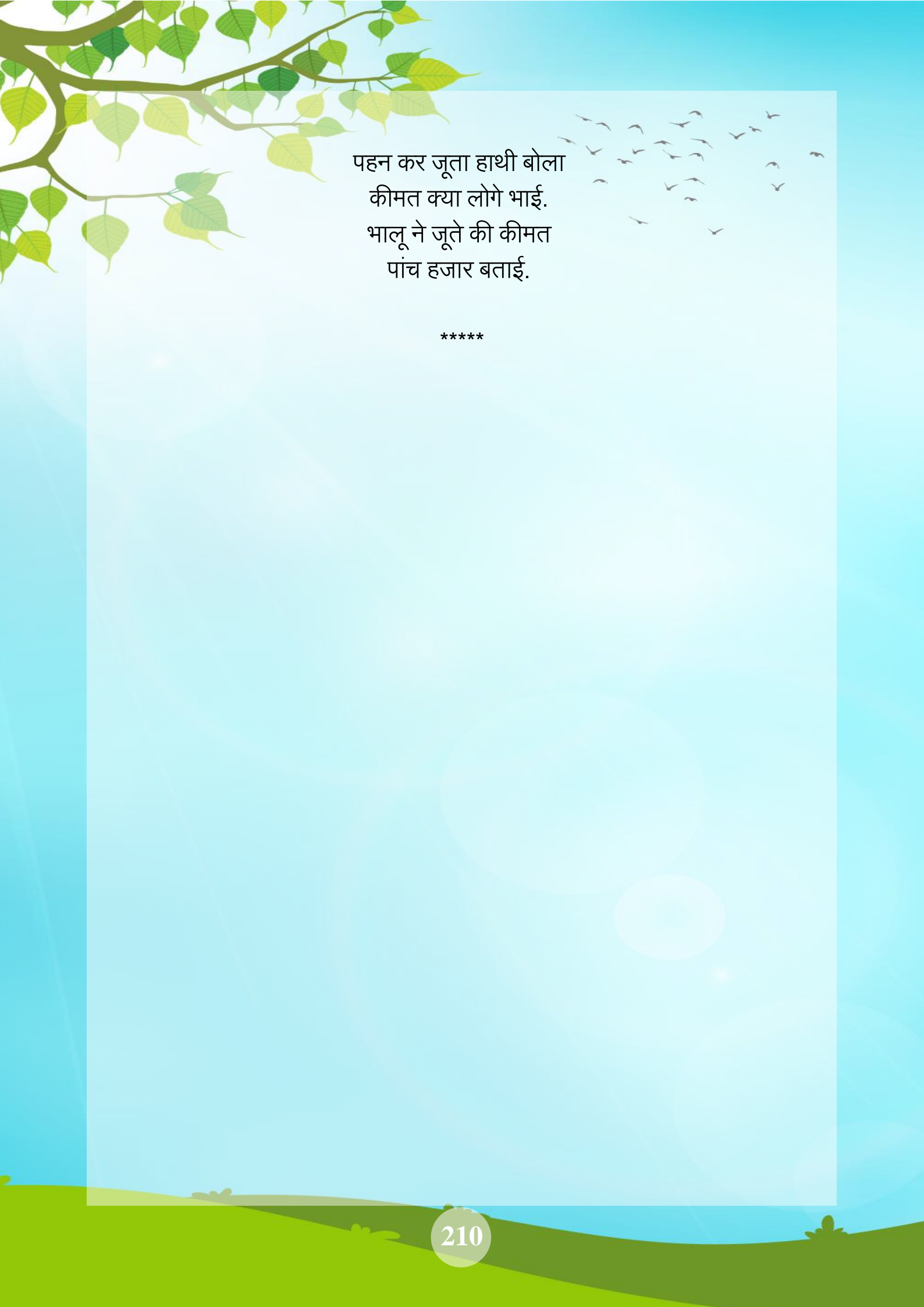
तेज धूप में पांव चल रहे.  
हाथी था बहुत परेशान.  
जा पहुंचा जूता खरीदने  
जूते की एक दुकान.

दुकानदार भालू ने  
जूते कई उसे दिखाया.  
मगर एक भी जूता  
हाथी को पसंद न आया.

भालू बोला हाथी भाई  
बंदर को बुलवाता हूं.  
आप के लिए नए डिजाइन का  
एक जूता बनवाता हूं.

सुन भालू की बात  
हाथी के चेहरे पर मुस्कान छाई.  
बैठ कर जूता सामने  
हाथी ने बंदर से बनवाई.





पहन कर जूता हाथी बोला  
कीमत क्या लोगे भाई.  
भालू ने जूते की कीमत  
पांच हजार बताई.

\*\*\*\*\*

# हाथी दादा

रचनाकार- संगीता पाठक, धमतरी



हाथी दादा हाथी दादा  
कितनी ऊँची देह तुम्हारी  
सबके मन को भाते हो.  
हाथी दादा हमें बताओ  
तुम चींटी से क्यों डर जाते हो.  
सूपा जैसे कान तुम्हारे  
लंबी लंबी सूँड़ तुम्हारी  
सूँड़ से डाली तोड़ तोड़ कर  
पत्तियाँ तुम खाते हो.  
हाथी दादा हाथी दादा  
आँखें तुम्हारी छोटी छोटी  
खंभे जैसी टाँगे तुम्हारी.  
जंगल के तुम राजा हो  
सूँड़ में पानी भरकर  
तुम मस्ती में नहाते हो.

\*\*\*\*\*

# पंख

रचनाकार- प्रीति चौधरी "मनोरमा"



अवनी अपने नाम के अनुरूप ही धैर्य और सहनशीलता की प्रतिमूर्ति है. वह खेलों के प्रति विशेष रुचि रखती है .उसकी अभिरुचि को देखते हुए उसकी कक्षा अध्यापिका ने उसे विद्यालय स्तरीय खेलों में प्रतिनिधित्व करने का अवसर प्रदान किया. वह आशा के अनुरूप विजयी भी हुई. शीघ्र ही उसका चयन जिला स्तरीय टीम में खेलने के लिए हो गया. उसे विद्यालय की पी०टी०ऊषा कहकर संबोधित किया जाने लगा. वह पलक झपकते ही विद्युत गति से दौड़ती थी. हमेशा दौड़ प्रतियोगिता में अव्वल आती थी. दिन हँसते-मुस्कुराते व्यतीत हो रहे थे. अवनी के लिए हुए पदक देखकर माँ बाप फूले न समाते थे. अवनी अपनी बुआ के पास हिसार जा रही थी. ट्रेन का सफर था... रजनी के घने अंधेरे को चीरती हुई रेलगाड़ी तीव्र वेग से गंतव्य की ओर दौड़ रही थी.. साथ ही दौड़ रही थीं अवनी के हृदय की धड़कनें, जो रेलगाड़ी से भी तीव्र गति से निनाद करती हुई अपने स्पंदन से अवनी को भयभीत कर रही थीं. पहली बार माता पिता के बिना, अकेली वह यात्रा कर रही थी. मन को सांत्वना दिए हुए थी कि " ट्रेन का डिब्बा खाली थोड़े ही है.. इतने सारे लोग हैं.. मुझे क्या दिक्कत हो सकती है.. ईश्वर मेरे साथ हैं." बस यही सोचकर वह गंतव्य की ओर बढ़ रही थी कि अचानक ट्रेन दुर्घटनाग्रस्त हो गई .बचाव दल मौके पर उपस्थित हो गया. अवनी अपने पैर खो चुकी थी. अब व्हीलचेयर ही उसका सहारा थी. धीरे-धीरे उसने स्वयं को एक अंधेरे कमरे में बंद कर लिया. समाज से नजरें मिलाना छोड़ दिया .सभी सपने टूट कर बिखर चुके थे. टूटे हुए सपनों के टुकड़े अक्सर उसकी आँखों में काँच बनकर चुभने लगते थे और आँसुओं का एक सैलाब धीरे-धीरे अंतर्मन को भिगोने लगता था. माता पिता अवनी को समझाने का बहुत प्रयास करते थे किंतु सब व्यर्थ. एक दिन उसके परम मित्र शिवांश ने उसे अभिनव बिंद्रा की जीवनी पढ़ने के लिए दी. उस किताब को पढ़कर अवनी ने अपने टूटे हुए साहस को पुनः बटोरा और फिर से नए स्वप्न नयनों में जुगनू बनकर झिलमिलाने लगे .अवनी ने शूटिंग में हाथ आजमाने का निर्णय लिया. वह निशानेबाजी करने लगी .आज अवनी विश्व ओलंपिक में निशानेबाजी में स्वर्ण पदक जीतकर घर वापस आयी तो न केवल उसके माता-पिता अपितु पूरा देश उस पर गर्व करने लगा. मित्र के द्वारा दिए गए किताब रूपी उपहार ने अवनी के दिव्यांग तन को जैसे पंख ही दे दिए. आज वह रेडियो पर गाना सुन रही थी और साथ ही साथ उसे गुनगुना भी रही थी

"लगने लगे हैं पंख से तन में  
बजने लगे हैं शंख से मन में"

खिड़की के पास खड़े हुए माता-पिता अवनी की खुशी को देखकर फूले नहीं समा रहे हैं.

\*\*\*\*\*



# जूठी पत्तलें

रचनाकार- संगीता पाठक, धमतरी



एक बार राजा युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ का आयोजन

किया था. इस भव्य आयोजन के लिये उन्होंने विभिन्न राज्यों के राजाओं को आमंत्रण भेजा. भगवान कृष्ण भी यज्ञ में उपस्थित थे. यज्ञ स्थल पर देवी देवताओं की आहुतियाँ पड़ने लगी. मंत्रोच्चार से एक स्वर्गिक वातावरण

दिखाई देने लगा. सभी लोग इस महान यज्ञ की प्रशंसा करने लगे.

यज्ञ के अंतिम दिन श्री कृष्ण कहने लगे कि हे युधिष्ठिर ! आप मुझे भी कोई काम दीजिये . मैं सेवा कार्य से अपने आपको धन्य समझूँगा.

युधिष्ठिर बोले -"हे वासुदेव आपकी उपस्थिति ही हमारे लिये सबसे महत्वपूर्ण है. आप स्वर्ण सिंहासन में विराजित होकर यज्ञ की पूर्णाहुति देखिये."

ब्रह्मभोज होने के पश्चात श्री कृष्ण अपने स्थान से उठे और गुरुजनों की पत्तलें उठाने लगे. यह देखकर युधिष्ठिर अचंभित हो गये.

युधिष्ठिर -"हे द्वारिकाधीश! यह क्या कर रहे हैं . सेवकों को पत्तलें उठाने दीजिये."

कृष्ण-(हँसते हुये)" गुरुजनों और संतों की जूठी पत्तलें बड़े अहोभाग्य से मिलती हैं आर्यश्रेष्ठ! गुरु की सेवा को प्राप्त करने के लिये स्वर्ग के देवता भी तरसते हैं."

युधिष्ठिर तीनों लोकों के स्वामी की गुरुभक्ति देख कर विस्मित हो गये.

\*\*\*\*\*

# सूरज दादा सुरज दादा

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारायण



सूरज दादा सुरज दादा  
सुनलो न हमारी पुकार  
गर्मी-लू से झूलस रहे हैं  
कराओ वर्षा की फुहार.

जीव-संकुल व्याकुल हैं  
इन सब का करो उद्धार  
तन-मन को शांति मिले  
सुनलो न हमारी गुहार.

ताल-तलैया सुख चुके है  
नदियाँ कर रहीं चित्कार  
कल-कल की सस्वर गूंजे  
ताट उपवन से हो श्रृंगार.

हरियाली भी हलाक़ान है  
जंगल कानन हुई वीरान  
अब तो बादल बरसाओ  
खुशी से झूमें सारा जहान.

\*\*\*\*\*

# आओ पेड़ लगाएं

रचनाकार- संतोष कुमार साहू, कबीरधाम



आओ सभी मिलकर पेड़ लगाएं  
घर आंगन बाग बगीचों सा  
अपना जीवन महकाए  
धरती से प्रदूषण को मिटाए  
आओ सभी मिलकर पेड़ लगाएं.  
पेड़ पौधे से लाभ बहुत है  
यह सबको समझाए  
फूल -फल ईंधन और शुद्ध वायु  
यह सब पेड़ पौधे से पाए  
सुख दुख के सभी अवसर पर  
एक पेड़ जरूर लगाएं  
धरती को हरा भरा बनाने  
हम अपना कर्तव्य निभाए  
आओ सभी मिलकर पेड़ लगाएं  
चारो ओर होगा हरियाली  
जीव जंतु निकट आए  
रैन बसेरा पाकर पक्षी  
मन ही मन मुस्कराए  
आओ सभी मिलकर पेड़ लगाएं.

\*\*\*\*\*



# बादल

रचनाकार- सुधारानी शर्मा, मुंगेली



घूमड घूमड कर आते बादल.  
भर भर पानी लाते बादल.  
देख हमें दर्शाते बादल  
जग की प्यास बुझाते बादल  
बादल देखकर मोर नाचता.  
इन्द्रधनुष नभ मे खिल जाता

\*\*\*\*\*

# मैडम

रचनाकार- सुधारानी शर्मा, मुंगेली



प्यारी मैडम आओ ना  
पढना लिखना, सिखाओ ना  
लाया मैं, गुलाब का पौधा  
स्कूल मे लगाओ ना

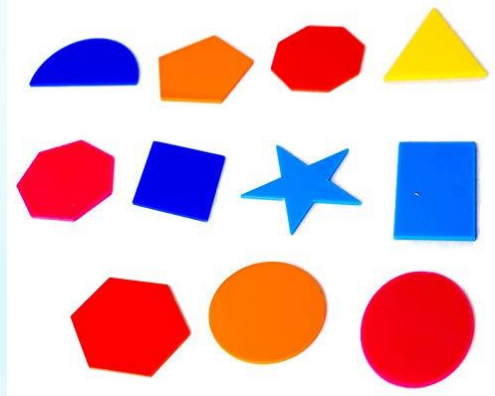
प्यारी मैडम आओ ना  
बालसभा कराओ ना  
कविता , कहानी अच्छी लगती  
हमको सुनाओ ना

प्यारी मैडम आओ ना  
खेलकूद करवावो ना  
फुगडी, बिल्लस, हमें है भाते  
गेडी, दौड, रस्सी कुदाओ ना

\*\*\*\*\*

# आकार

रचनाकार- सुधारानी शर्मा, मुंगेली

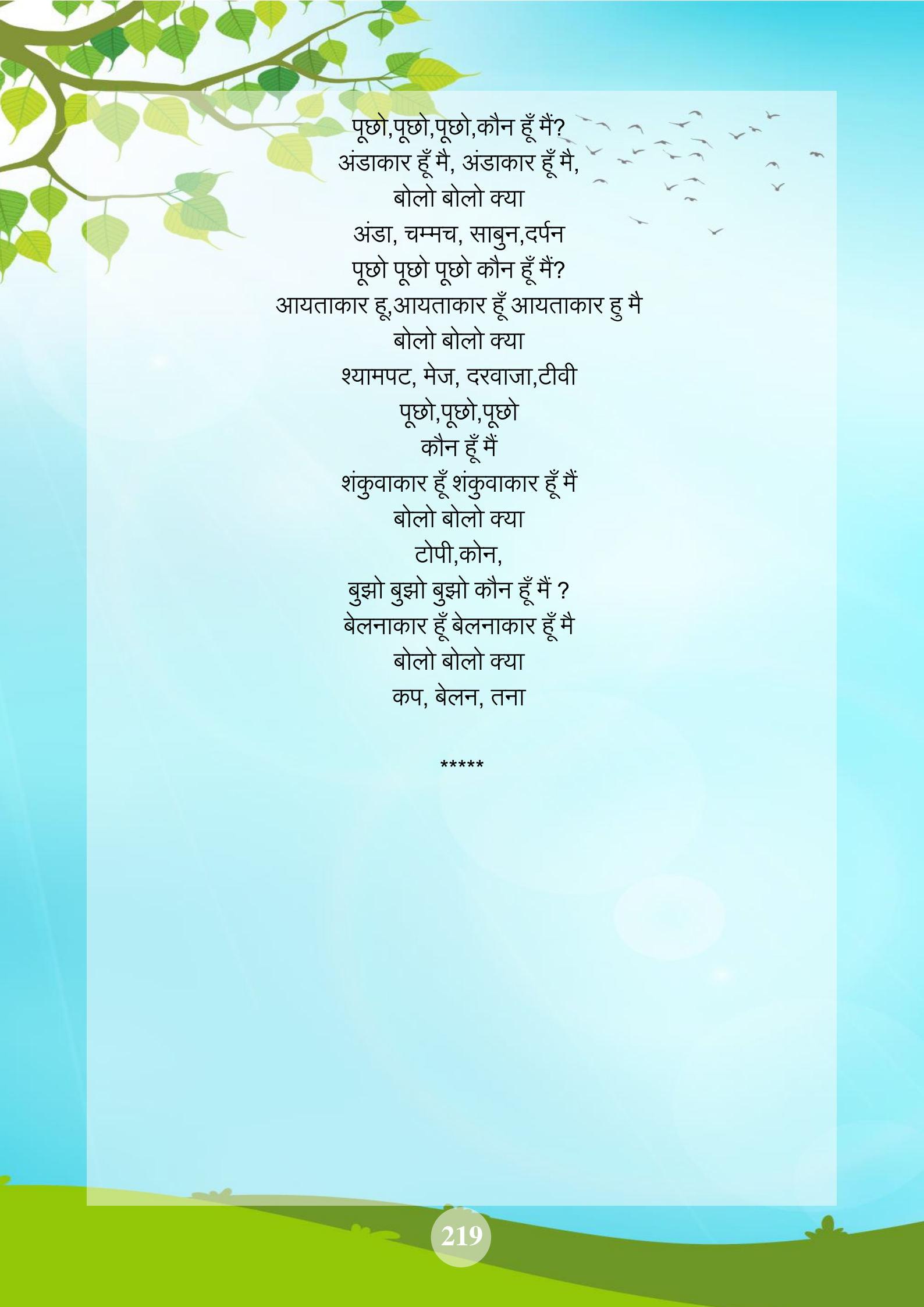


पूछो, पूछो, पूछो, कौन हूँ मैं?  
गोल हूँ मैं, गोल हूँ मैं, गोल हूँ मैं  
बोलो बोलो क्या  
धरती, बिंदी, रोटी, डफली, सिक्का,

चौकोर हूँ, चौकोर हूँ, चौकोर हूँ, मैं  
बोलो बोलो क्या  
वर्ग, माचिस, श्यामपट्ट, टेबल,

पूछो पूछो पूछो कौन हूँ मैं?  
तिकोन हूँ, तिकोन हूँ, तिकोन हूँ मैं  
बोलो बोलो क्या  
त्रिभुज, तिपाई, समोसा  
पूछो, पूछो, पूछो  
कौन हूँ मैं  
लंबा हूँ लंबा हूँ, लंबा हूँ मैं  
बोलो बोलो क्या  
पाइप, बांस, तार,  
बुझो बुझो बुझो कौन हूँ



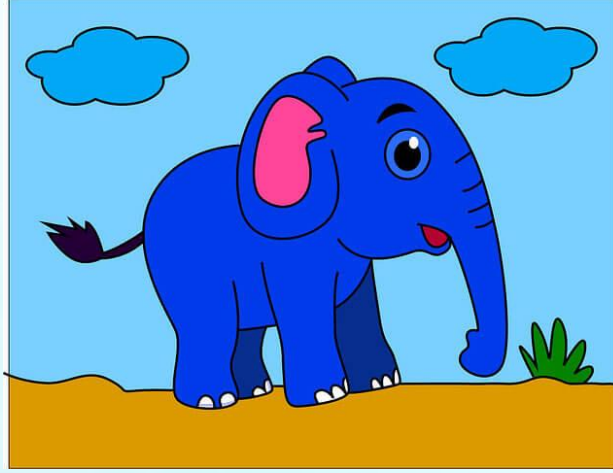


पूछो, पूछो, पूछो, कौन हूँ मैं?  
अंडाकार हूँ मैं, अंडाकार हूँ मैं,  
बोलो बोलो क्या  
अंडा, चम्मच, साबुन, दर्पण  
पूछो पूछो पूछो कौन हूँ मैं?  
आयताकार हूँ, आयताकार हूँ आयताकार हूँ मैं  
बोलो बोलो क्या  
श्यामपट, मेज, दरवाजा, टीवी  
पूछो, पूछो, पूछो  
कौन हूँ मैं  
शंकुवाकार हूँ शंकुवाकार हूँ मैं  
बोलो बोलो क्या  
टोपी, कोन,  
बुझो बुझो बुझो कौन हूँ मैं ?  
बेलनाकार हूँ बेलनाकार हूँ मैं  
बोलो बोलो क्या  
कप, बेलन, तना

\*\*\*\*\*

# छोटा सा हाथी

रचनाकार- सुधारानी शर्मा, मुंगेली



छोटा सा हाथी  
सच्चा मेरा साथी.  
छोटी सी गुड़िया  
जादू की पुड़िया.  
छोटी सी मुनिया  
घर में लगाए धनिया.  
छोटा सा बंदर  
पिंजरे के अंदर.  
मेरी गोल थाली  
सब बजाओ ताली.

\*\*\*\*\*

## 19 जून पितृ दिवस विशेष

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारायण



वो बच्चे बहुत ही खुशनसीब हैं.  
जिनके सर पर पिता का साया है.

वो बच्चे बहुत सौभाग्यशाली हैं.  
जिसने पिता के प्यार को पाया है.

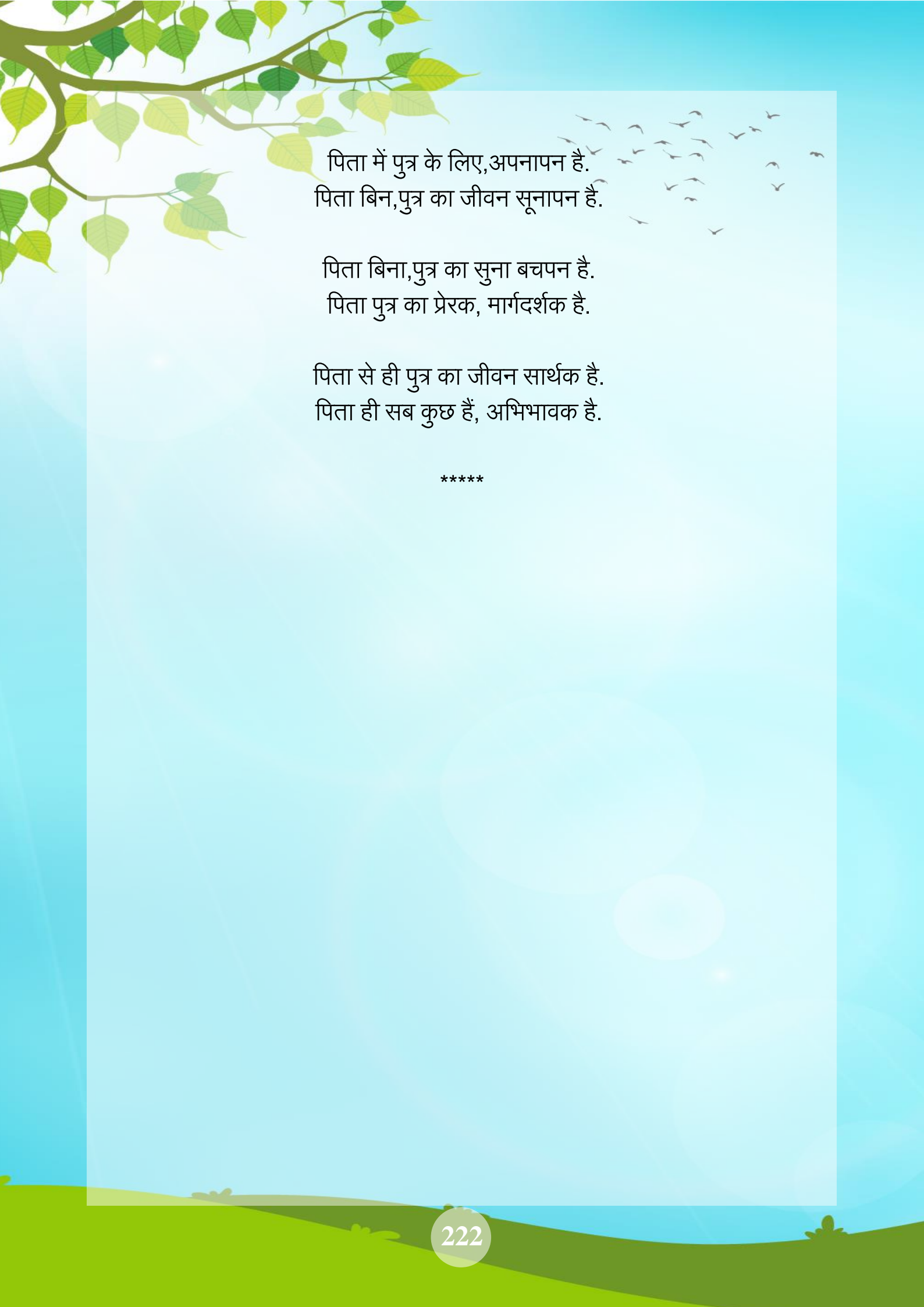
पिता हैं तो बच्चे को कोई गम नहीं.  
पिता हैं तो पुत्र नवाब से कम नहीं.

पिता खुशियों से ही भरा सागर हैं.  
पिता आशीषों का महासागर हैं.

पिता पुत्र के लिए ही अभिमान हैं.  
पिता पुत्र के लिए स्वाभिमान हैं.

पिता पुत्र के लिए ही भगवान हैं.  
पिता पुत्र के लिए बड़ा वरदान हैं.





पिता में पुत्र के लिए, अपनापन है.  
पिता बिन, पुत्र का जीवन सूनापन है.

पिता बिना, पुत्र का सुना बचपन है.  
पिता पुत्र का प्रेरक, मार्गदर्शक है.

पिता से ही पुत्र का जीवन सार्थक है.  
पिता ही सब कुछ हैं, अभिभावक है.

\*\*\*\*\*

# मेरी प्यारी बहन

रचनाकार- सृष्टि प्रजापति, आठवी, स्वामी आत्मानंद तारबहार बिलासपुर

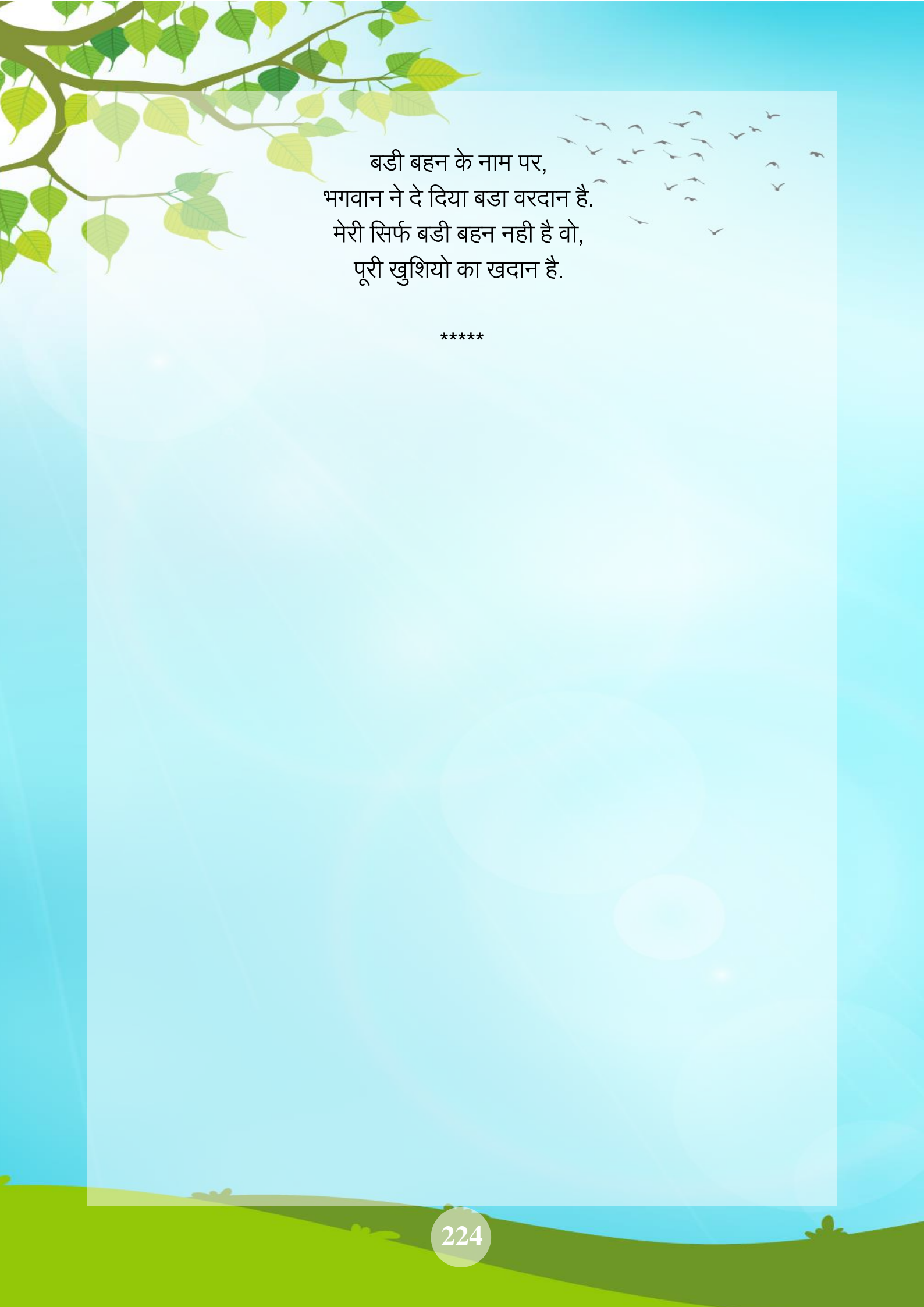


करोड़ मे एक है, मेरी बडी बहन.  
मेरी सच्ची मित्र जैसी.  
पूरी दुनिया फिकि पर जाए उसके सामने.  
वो है सबकी प्यारी.

रोते हुए को हँसा दे वो.  
मुरझाये फूल खिला दे वो.  
मेरे सारे परेशानियों के करीब जाकर,  
जल्दी ही हल निकाल दे वो.

बडी बहन नही, सच्ची मित्र है मेरी.  
पास बैठकर करती बाते ढेर सारी.  
उनसे बाते करके ही सुकून मिलता है.  
बिना उनके सब कुछ अधुरा लगता है.

फिर भी पढाई के नाम पर,  
दूर चली जाती है वो.  
हमेशा ठहर-ठहर कर,  
सबको याद आती है वो.



बडी बहन के नाम पर,  
भगवान ने दे दिया बडा वरदान है.  
मेरी सिर्फ बडी बहन नही है वो,  
पूरी खुशियो का खदान है.

\*\*\*\*\*



# देखो सब क्या कहते हैं

रचनाकार- सृष्टि प्रजापति, आठवी, स्वामी आत्मानंद तारबहार बिलासपुर



दुनिया मे हजार रंग है.  
पर सबकी अपनी अलग पहचान है.  
तुम्हें भी अपनी पहचान बन्नी है, तो  
तुम भी खुद मे अपना ही हुनर ढुँढो.

हवाये हमेशा चलती रहती है.  
उन्हें कोई टोक नहीं सकता.  
तुम भी सही दिशा मे चलो,  
तुम्हें सफल होने से कोई रोक नहीं सकता.

चिटीयों का हजार बार घर टुटता है.  
पर अंत मे उन्हें भी वर्षा ऋतु मे अपना घर मिलता है.  
इसी तरह सफलता के रास्ते पर परेशानियाँ आती है.  
पर अंत मे परेशानियाँ समाप्त और हमे लक्ष्य प्राप्त होता है.

\*\*\*\*\*

# नर्स

रचनाकार- गरीमा बरेठ, कक्षा- सातवीं, स्वामी आत्मानंद शेख गप्फार अंग्रेजी माध्यम शाला  
तारबहार बिलासपुर



नर्स हमारी बीमारी की देखभाल करती है,  
जीवन को पैसे से अधिक मूल्यवान समझती है.  
अपने प्यार और कोमल मन से हमारी देखभाल करती है.  
हम भी बड़े होकर एक नर्स बनेंगे,  
और अपने काम से बहुत प्यार करेंगे.  
सभी के दर्द और दिल की पीड़ा को कम करेंगे,  
उनके बिस्तर बनाएंगे और गोली देंगे.  
हम बड़े होकर एक नर्स बनेंगे,  
और अपने देश का नाम रोशन करेंगे.  
हम बड़े होकर एक नर्स बनेंगे,  
और मरीजों का साथ कभी नहीं छोड़ेंगे.

\*\*\*\*\*

# गिनती गीत

रचनाकार- सुधारानी शर्मा, मुंगेली



बोलो बच्चों एक 1  
तुमको बनना नेक.  
बोलो बच्चों दो 2  
हाथों को अब धो

बोलो बच्चों 3  
हम बजाए बीन.  
बोलो बच्चे चार 4  
जाएंगे बाजार.

बोलो बच्चों पांच 5  
नहीं सांच को आंच.  
बोलो बच्चों छह 6  
भारत माता की जय.





बोलो बच्चों सात 7  
सब बढ़ाओ हाथ.  
बोलो बच्चों आठ 8  
जल्दी सीखो पाठ.

बोलो बच्चों नौ 9  
कुत्ता बोला भौ  
बोलो बच्चों दस 10  
गिनती हो गई बस.

\*\*\*\*\*

# अंग्रेजी वर्णमाला

रचनाकार- सुधारानी शर्मा, मुंगेली



एबीसीडी कहां गई थी. ABCD

आम के पेड़ में छुप गई थी.

ई एफ जी ने आकर कहा. E F G

एच आई जे के एल मेला लगा H I J K L

एम एन ओ पी क्यू डांस करेंगे M N O P

क्यू आर एस टी मस्ती करेंगे Q R S T

यूवीडब्ल्यू देखके हसेंगे U V W

एक्स वाई जेड अंग्रेजी सीखेंगे X Y Z

\*\*\*\*\*

# गर्मी और स्कूल के पौधे

रचनाकार- सुश्री मंजूलता प्रधान, कोरबा



चैनपुर नामक एक गाँव था.वहाँ बहुत पुराना एक प्राइमरी स्कूल था स्कूल के प्रांगण में बहुत सारे रंग बिरंगे फूल,पेड़ पौधे लगे हुए थे जिससे स्कूल की शोभा अत्यधिक बढ़ जाती थी वहाँ कि अध्यापिका के साथ मिलकर सभी बच्चे पेड़ पौधों में पानी-खाद डालते थे.

ग्रीष्मकाल का आगमन हुआ और बच्चों की गर्मियों की छुट्टियां शुरू हो गयी. सब बच्चे गर्मी की छुट्टी मनाने अपने अपने रिश्तेदारों व अन्य जगहों में चले गये.अध्यापिका भी अपने गृहग्राम आ गयी.

स्कूल बंद होने के कारण सभी पेड़-पौधे मुरझा गये.छोटे छोटे फूल के पौधे मरने लगे,कुछ के पत्ते पीले होने लगे.

उसी बीच एक दिन अध्यापिका शालेय कार्य से पाठशाला पहुँची वहाँ पेड़ पौधों की ऐसी हालत देख बहुत तकलीफ हुई और हैंडपम्प से पानी निकालकर पौधों में डालने लगी.

अध्यापिका को देखकर कुछ बच्चे स्कूल आए और पानी डालने लगे.अध्यापिका ने बच्चों को बताया कि पेड़ पौधे हमें सिर्फ आक्सीजन ही नहीं देते हैं बल्कि सभी प्रकार के फल फूल जड़ी बूटियां,लकड़ियाँ भी देते हैं.घर के आसपास पेड़ पौधे लगाने से गर्मी,धूल,भू-क्षरण की समस्या से भी बच सकते हैं.

कुछ दिनों बाद जब स्कूल खुली तो अध्यापिका ने देखा कि शाला का प्रांगण हरे भरे पौधों,रंगबिरंगे फूलों और क्यारियों से बहुत सुन्दर लग रहा था.

सभी बच्चों ने बारी बारी से आकर गर्मी भर स्कूल के पौधों में पानी खाद डाला था अच्छे से देख रेख की थी

अध्यापिका ने सभी बच्चों को शाबाशी दी और आगे भी ऐसे पेड़ पौधों की देखरेख करने के लिए कहा व सबको छोटे छोटे उपहार देकर प्रोत्साहित की.

\*\*\*\*\*



# नदी का किनारा

रचनाकार- नरेन्द्र कुमार दिवाकर, कोरबा



महानदी के तट पर एक गाँव बसा था.वहाँ के लोग अपने रोजमर्रा के काम जैसे कपड़ा धोना,बर्तन, नहाना,सिंचाई,पशुओं को नहलाना आदि नदी के पानी से करते थे.लेकिन नदी के किनारे में बहुत सारी गंदगी फैलाते जैसे प्लास्टिक,कुड़ा करकट,साबुन-डिटर्जेंट के रेपर,फटे कपड़े,मरे हुए पशुओं,साँप को तट में ही फेंक देते तट के किनारे शौच आदि भी कर देते जिसके कारण दिनों दिन गंदगी बढ़ती जा रही थी और पानी विषैला होते जा रहा था.

उसी गाँव की एक लड़की बाहर में रहती थी एक बार वो अपने गाँव आई. वह भी सबेरे नहाने गयी और देखी तट में प्लास्टिक ही प्लास्टिक नदी में तैर रहे थे कुड़ा करकट पानी में घुल रहा था कभी लहरों से बाहर आता कभी अंदर जाता.

उसने लोगों से नदी में कचरा नहीं फेंकने के लिए कहा लेकिन कुछ लोगों ने उसकी बातों को अनसुनी कर दीं.वह लड़की अपने घर वापस आई और एक जाल लेके गयी.फिर उसकी सहेलियाँ के साथ में मिलकर सफाई करने लगीं

सभी प्लास्टिक को नदी से बाहर निकाल दिए बहुत मेहनत के बाद नदी का किनारा साफ हो गया.

उसके बाद सब नहा धो के घर जाने लगीं जैसे पीछे पलट के एक बार नदी को देख के सब तारीफ करने लगे कि कितना साफ पानी दिख रहा है उसी समय एक लहर धीरे से आई और सबके पैरों को छुते हुए वापस चली गयी. मानों सबका पैर छुकर धन्यवाद दे रही हो.

\*\*\*\*\*

# हमर जिला धमतरी

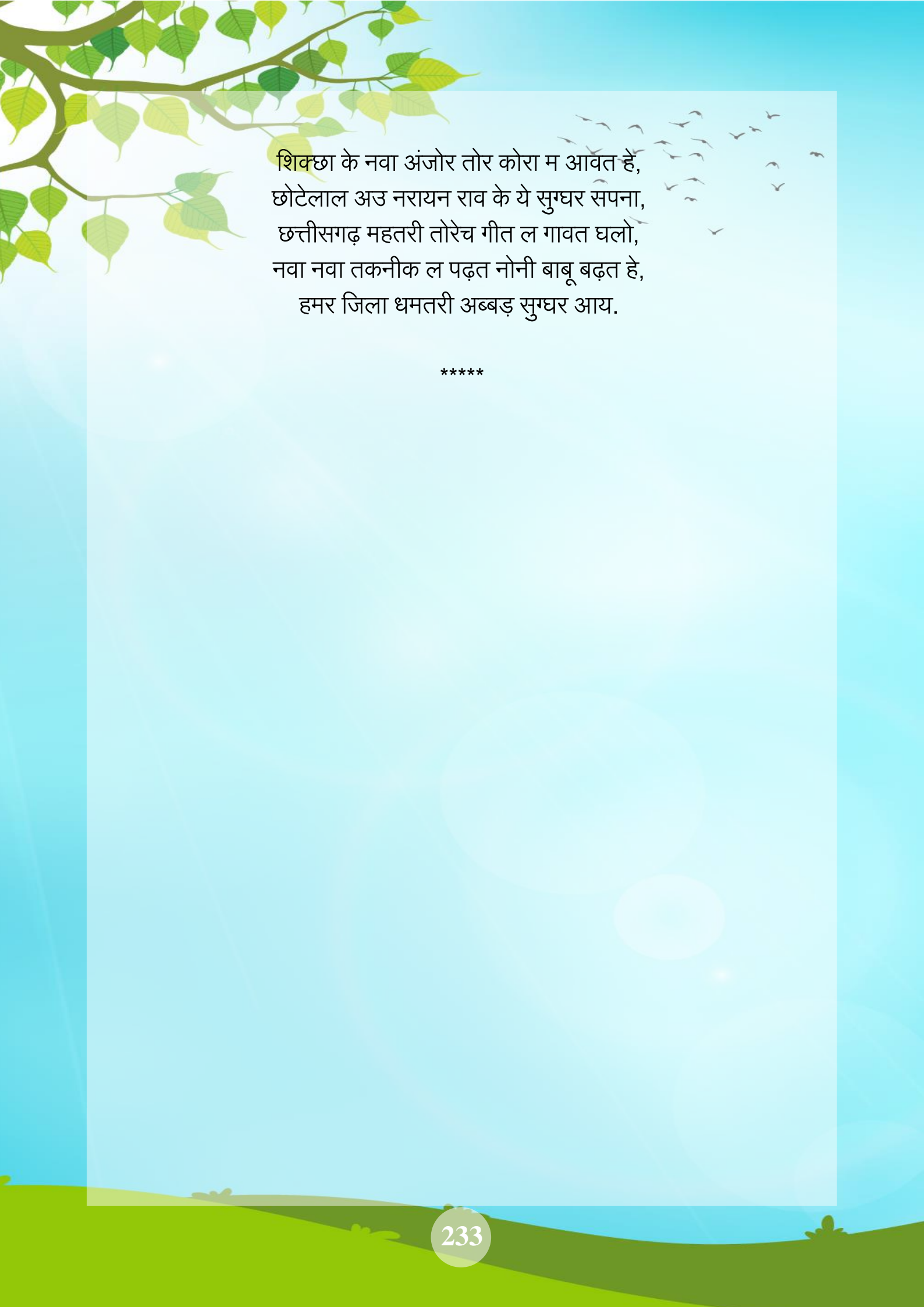
रचनाकार- योगेश ध्रुव "भीम", धमतरी



सप्त रिसि के ये भुइँया हावे अब्बड़ सुग्घर,  
खलल खलल महानदी के पानी ह लहराये,  
अनपुरना के भंडार घलो चारो मुड़ा म हावे,  
आँगरमोती दाई विंध्यवासनी मया ल बगराये,  
हमर जिला धमतरी अब्बड़ सुग्घर आय.

रुद्रेश्वर महादेव इहाँ, सींगी रिसि ह तप करिस,  
आजादी के शंखनाद घलो धमतरी ले गुंजिस,  
गाँधी जी अईस इहाँ फिरंगी मन देख कापिन,  
कंडेल जइसे नहर सत्याग्रह ये भुइँया म होईस,  
हमर जिला धमतरी अब्बड़ सुग्घर आय.

लहर लहर लहलाथे घलो अनपुरना के बाली,  
गंगरेल के निर्मल पानी सबो के पियास बुझाथे,  
माड़मसीलि सोंदुर रुद्री बाँध इहाँ हे सुग्घर,  
कुरुद मगरलोड नगरी ह तोरेच मान बढ़ाथे,  
हमर जिला धमतरी अब्बड़ सुग्घर आय.



शिवछा के नवा अंजोर तोर कोरा म आवत हे,  
छोटेलाल अउ नरायन राव के ये सुग्घर सपना,  
छत्तीसगढ़ महतरी तोरेच गीत ल गावत घलो,  
नवा नवा तकनीक ल पढ़त नोनी बाबू बढ़त हे,  
हमर जिला धमतरी अब्बड़ सुग्घर आय.

\*\*\*\*\*



# ई-मेल

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ



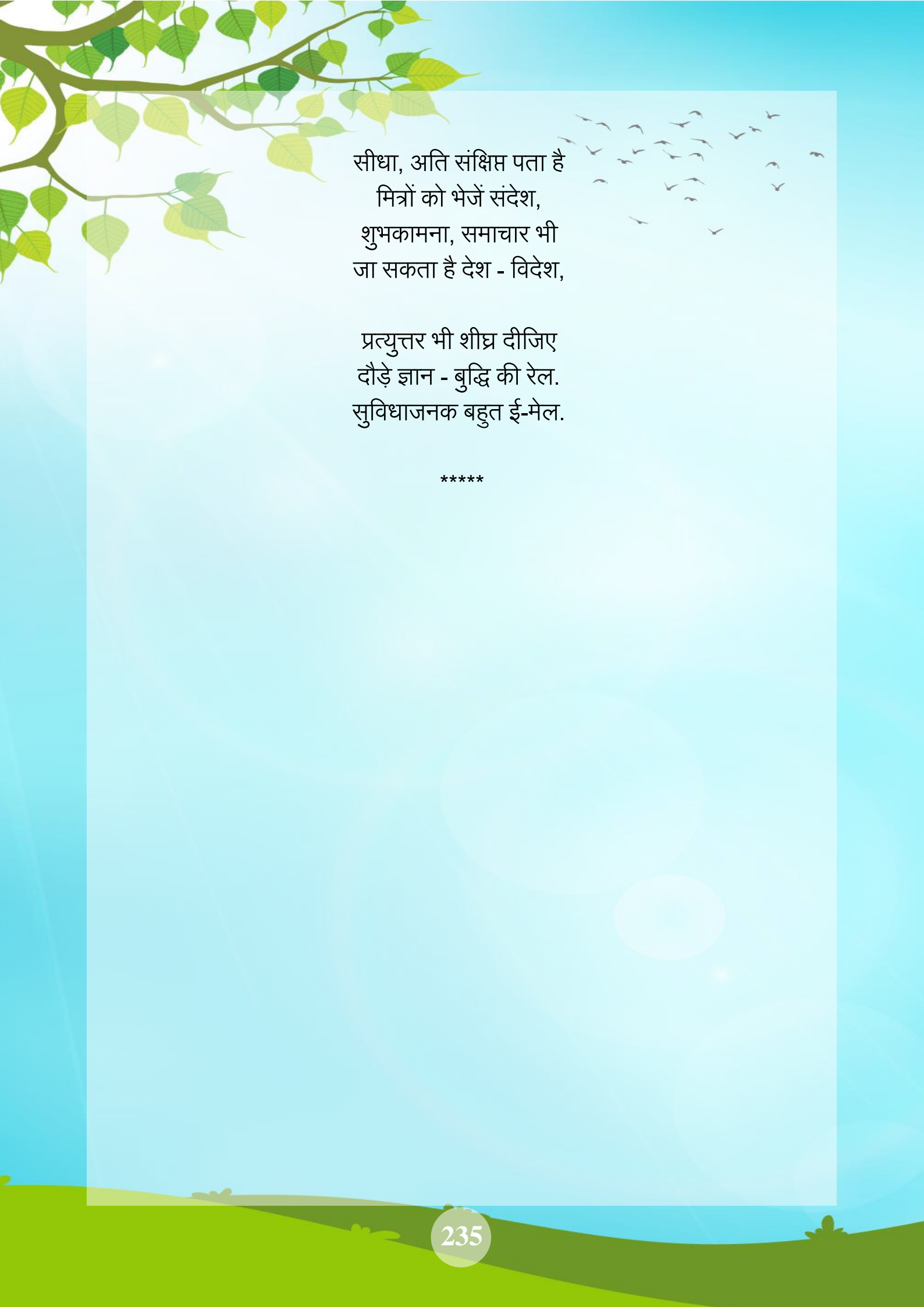
सुविधाजनक बहुत ई-मेल.  
कुछ मिनटों का है बस खेल.

टाइप कर लें मोबाइल पर  
रचना, कविता, लेख, कहानी,  
तनिक न काट - पीट होती है  
अक्षर की लिपि लगे सुहानी,

संशोधन दस बार कीजिए  
रहती अपने हाथ नकेल.

नहीं डाकघर जाना पड़ता  
मिली लिफाफा - टिकट से छुट्टी,  
डाक न खोने का कोई डर  
व्यर्थ की दौड़भाग से कुट्टी,

संपादक जी को झट भेजें  
झण में पहुँचे, युक्ति न फेल.



सीधा, अति संक्षिप्त पता है  
मित्रों को भेजें संदेश,  
शुभकामना, समाचार भी  
जा सकता है देश - विदेश,

प्रत्युत्तर भी शीघ्र दीजिए  
दौड़े ज्ञान - बुद्धि की रेल.  
सुविधाजनक बहुत ई-मेल.

\*\*\*\*\*

# आओ राष्ट्र प्रेम जनजागरण कराएं

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



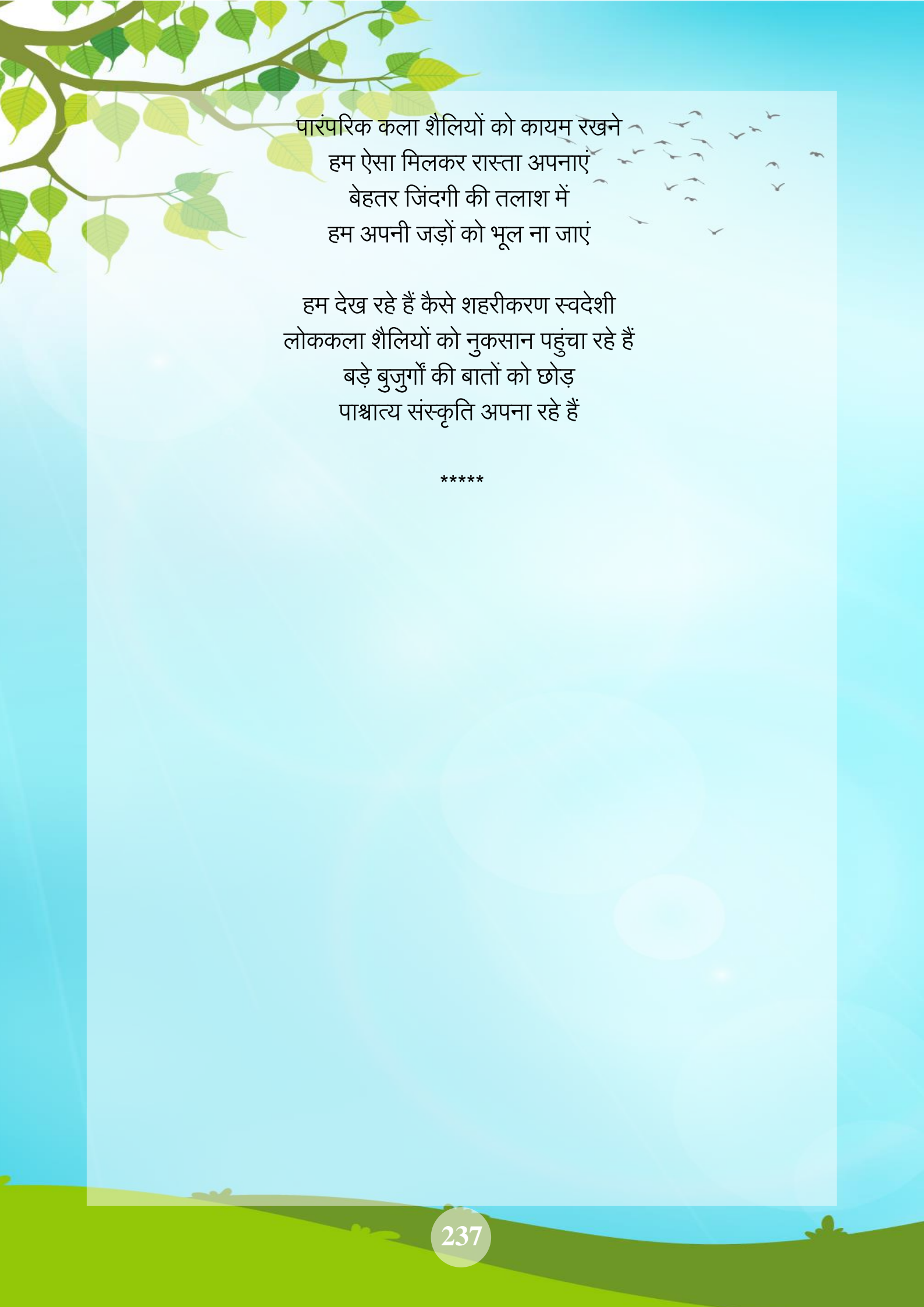
हमारी परम्पाओं सभ्यताओं  
कलाकृतियों में आस्था दर्शाए  
आओ साथ मिलकर राष्ट्र प्रेम  
का जनजागरण कराएं

घर घर में जाकर भारतीय राष्ट्र प्रेम संस्कृति  
दिल से अपनाने का मंत्र दिलाना है  
यह कभी भी कम ना हो पाए संकल्प लेना है  
भारत राष्ट्र प्रेम संस्कृति का खजाना है

बच्चों युवाओं में भारतीय राष्ट्र प्रेम  
संस्कृति के प्रति प्रोत्साहन करवाएं  
हमेशा याद दिलवाएं हम अपनी  
विरासत की जड़ों को भूल न जाएं

डटकर लड़ना होगा हमें  
पाश्चात्य संस्कृति से  
ऐसा संकल्प करवाएं  
हम अपनी जड़ों को भूल ना जाएं





पारंपरिक कला शैलियों को कायम रखने  
हम ऐसा मिलकर रास्ता अपनाएं  
बेहतर जिंदगी की तलाश में  
हम अपनी जड़ों को भूल ना जाएं

हम देख रहे हैं कैसे शहरीकरण स्वदेशी  
लोककला शैलियों को नुकसान पहुंचा रहे हैं  
बड़े बुजुर्गों की बातों को छोड़  
पाश्चात्य संस्कृति अपना रहे हैं

\*\*\*\*\*

# रॉयल सर्कस

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ



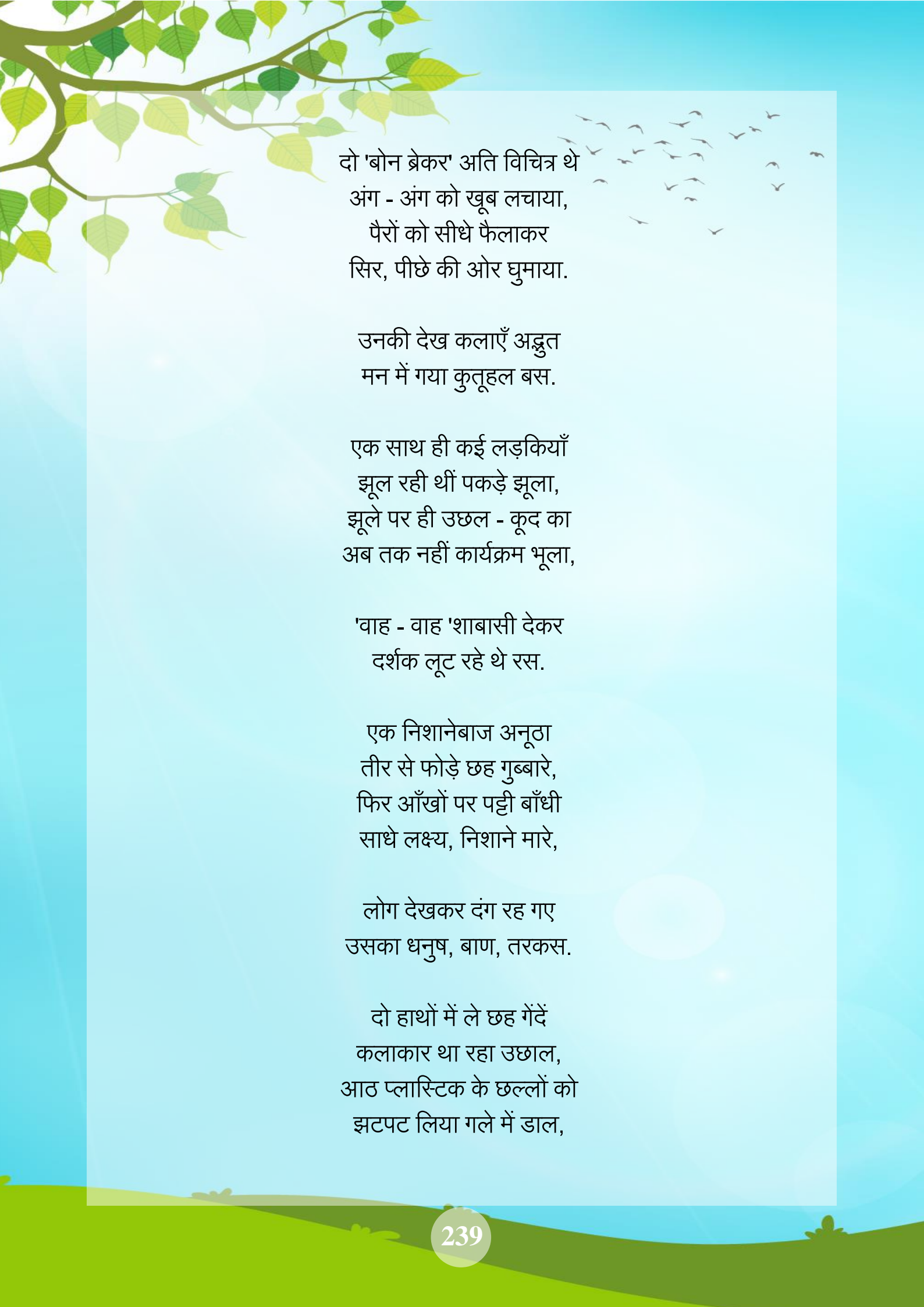
हमने देखा रॉयल सर्कस.  
शो था सायं सात से दस.

लेकर टिकट गए हम अंदर  
जगमग था रंगीन प्रकाश,  
भीड़भाड़ थी, चहल-पहल थी  
भरा सभी में था उल्लास,

सर्वप्रथम था झंडे लेकर  
देशगान का दृश्य सरस.

ऊँची बँधी हुई रस्सी पर  
दिखे लड़कियों के करतब.  
उनमें था संतुलन गजब का  
उस पर उछली - कूदीं जब.

रस्सी पर सायकिल चलाई  
चकित हुए दर्शक बरबस.



दो 'बोन ब्रेकर' अति विचित्र थे  
अंग - अंग को खूब लचाया,  
पैरों को सीधे फैलाकर  
सिर, पीछे की ओर घुमाया.

उनकी देख कलाएँ अद्भुत  
मन में गया कुतूहल बस.

एक साथ ही कई लड़कियाँ  
झूल रही थीं पकड़े झूला,  
झूले पर ही उछल - कूद का  
अब तक नहीं कार्यक्रम भूला,

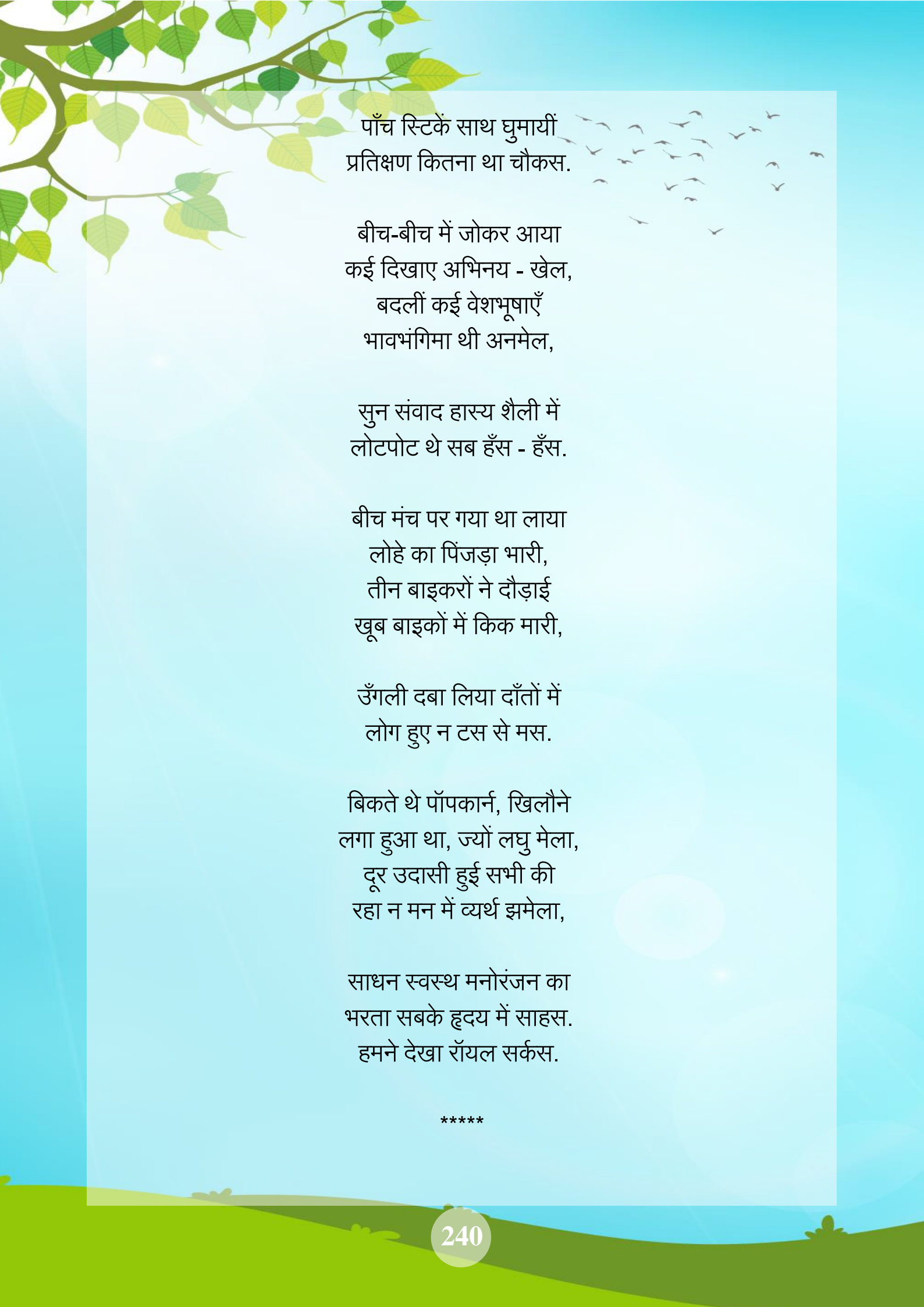
'वाह - वाह' शाबासी देकर  
दर्शक लूट रहे थे रस.

एक निशानेबाज अनूठा  
तीर से फोड़े छह गुब्बारे,  
फिर आँखों पर पट्टी बाँधी  
साधे लक्ष्य, निशाने मारे,

लोग देखकर दंग रह गए  
उसका धनुष, बाण, तरकस.

दो हाथों में ले छह गेंदें  
कलाकार था रहा उछाल,  
आठ प्लास्टिक के छल्लों को  
झटपट लिया गले में डाल,





पाँच स्टिकें साथ घुमायीं  
प्रतिक्षण कितना था चौकस.

बीच-बीच में जोकर आया  
कई दिखाए अभिनय - खेल,  
बदलीं कई वेशभूषाएँ  
भावभंगिमा थी अनमेल,

सुन संवाद हास्य शैली में  
लोटपोट थे सब हँस - हँस.

बीच मंच पर गया था लाया  
लोहे का पिंजड़ा भारी,  
तीन बाइकरों ने दौड़ाई  
खूब बाइकों में किक मारी,

उँगली दबा लिया दाँतों में  
लोग हुए न टस से मस.

बिकते थे पॉपकार्न, खिलौने  
लगा हुआ था, ज्यों लघु मेला,  
दूर उदासी हुई सभी की  
रहा न मन में व्यर्थ झमेला,

साधन स्वस्थ मनोरंजन का  
भरता सबके हृदय में साहस.  
हमने देखा रॉयल सर्कस.

\*\*\*\*\*

# सूरज मामा

रचनाकार- संगीता पाठक, धमतरी



सूरज मामा सूरज मामा  
झुलस रही है सारी धरती,  
इतनी आग ना बरसाओ तुम,  
अब तो दया दिखाओ तुम.

सूरज मामा सूरज मामा  
हाइड्रोजन गैस से बने हो तुम,  
प्रचंड आग के गोला हो तुम,  
अब तो दया दिखाओ तुम.

सूरज मामा सूरज मामा  
सूख चुके हैं नदी नाले,  
सूख चुके हैं पेड़ सारे,  
अब तो दया दिखाओ तुम.

\*\*\*\*\*

# पतंग

रचनाकार- संगीता पाठक, धमतरी



पतंग के पीछे भागते बच्चे  
सब कुछ भूल जाते हैं.

लहराती पतंग के संग  
बच्चे हवा में उड़ने लगते हैं.

रंग बिरंगी पतंगें बच्चों को  
मनभावन लगती है.

किलकारियों की अनुगूँज  
घर की मुँडेर में छा जाती है.

जब हाथ की डोर से बँधी  
पतंगें ऊँचाई में लहराती हैं.

\*\*\*\*\*



# अन्नदाता

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू, धमतरी

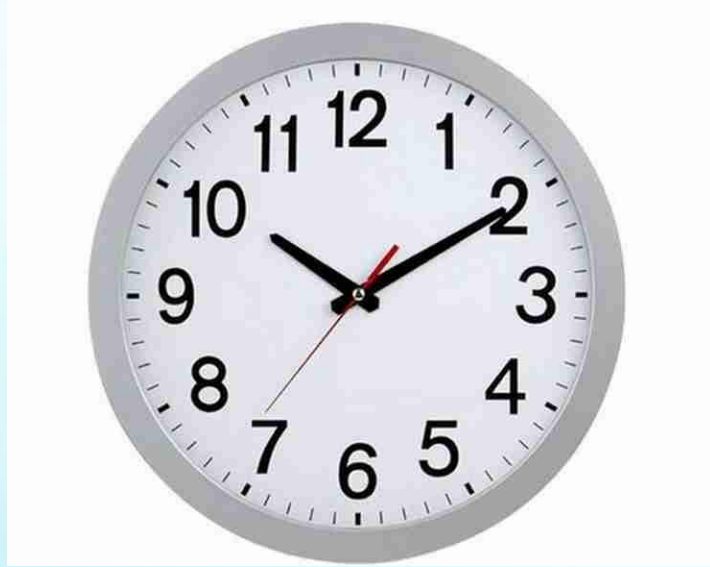


नागर, बाईला धरे कुदारी  
खेत खार जेकर संगवारी  
उठथ बिहिनिया जावत खेत  
भूख पियास हरागे चेत  
धरती ल लागिस पियास  
सुन गुहार आइस आगास  
गढ़गढ़, गढ़गढ़ बादर गरजे  
झरझर झरझर पानी बरसे  
हरियर हरियर धरती होंगे  
तरिया डबरी लबालब होंगे  
जोतत खेत किसनहा बेटा  
धरे चतवार निकालय लेटा  
खेत जोत के बोइस धान  
धरती दाई के राखिस मान  
खेत जोत के फसल उगावत  
हरियर धरती के गुनगावत  
जम्मो झन के भूख मिटाथे  
अन्नदाता वो हर कहलाथे

\*\*\*\*\*

# घड़ी

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू, धमतरी



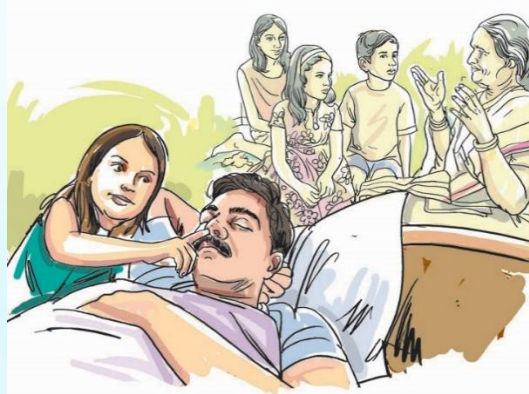
टीक-टीक-टीक- करती हूँ,  
दिन रात मैं चलती हूँ,  
ना मैं थकती, ना मैं रुकती,  
अपनी राह पर चलती हूँ,  
नाम है मेरा घड़ी.

कुश, प्रकाश, ओरांश के घर  
लटकी रहती हूँ दीवारों पर  
गीताली के हाथ में सजती,  
सुबह-सुबह अलार्म मैं बजती,  
नाम हैं मेरा घड़ी.

\*\*\*\*\*

# माँ-बाप

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू, धमतरी



माँ-बाप मेरे घर के, बरगद स है.  
फल-फूल ना सही, छांव स है.

जन्म दिया उसने, भगवान मेरे है.  
संतान हूँ उसका, माँ बाप मेरे है.

कंधे पर बैठ कर, घूमे है जहान.  
माँ-बाप मेरे लिए, जग में है महान.

उंगली पकड़ के चले है हम.  
ममता के आंचल में पले है हम.

माँ-बाप मेरे घर के, बरगद स है.  
फल-फूल ना सही, छांव स है.

\*\*\*\*\*



# चलो स्कूल जाबो जी

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल", दुर्ग

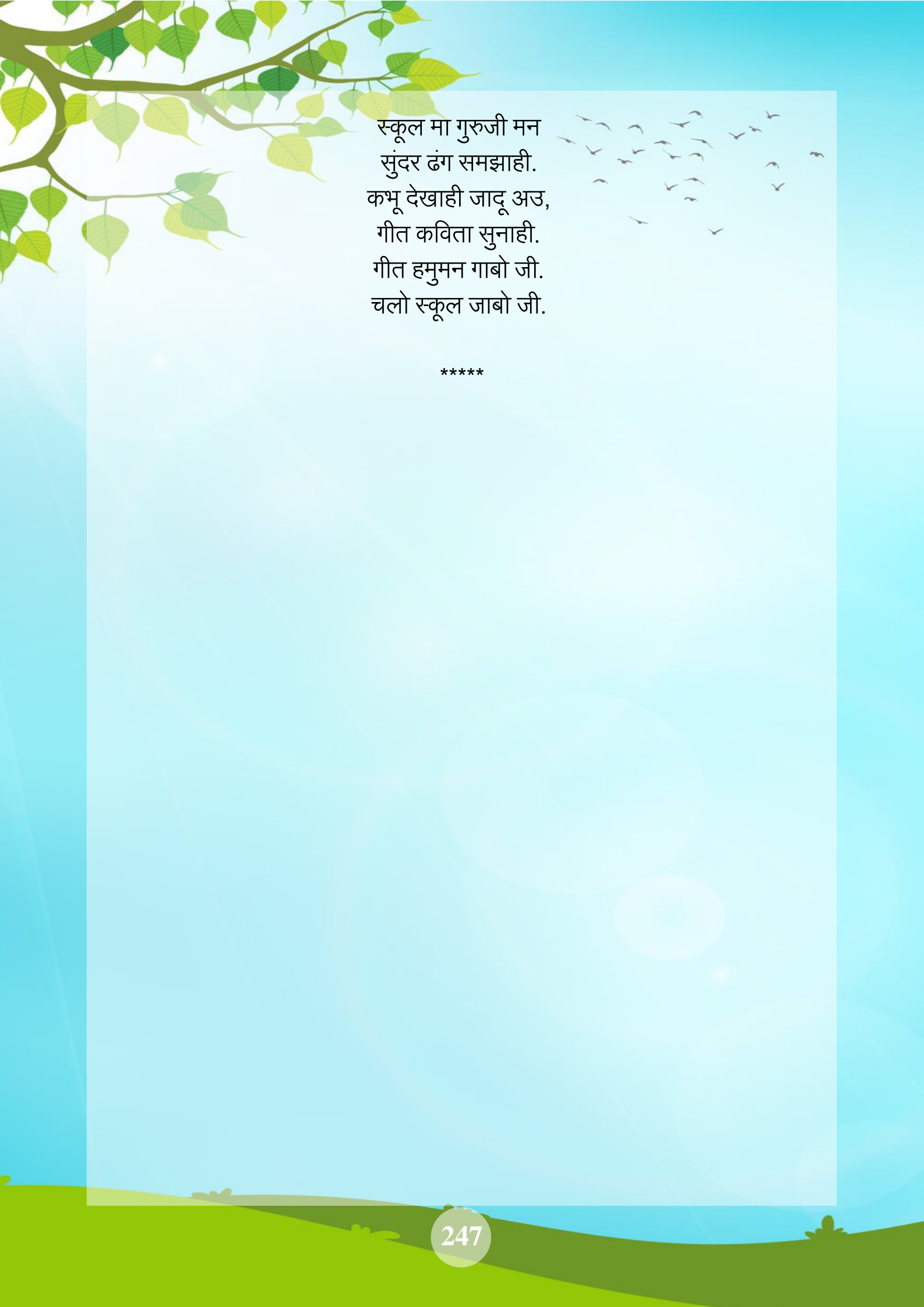


चलो स्कूल जाबो जी,  
खुल गे हे स्कूल हमर,  
सँगी ला बलाबो जी.  
चलो स्कूल जाबो जी.

गांव के सियान मन,  
स्कूल मा सकलाही.  
आव-भगत करही हमर,  
माथे तिलक लगाही.  
मिठाई घलो खाबो जी.  
चलो स्कूल जाबो जी.

मिलहि हमला स्कूल मा,  
नवा-नवा किताब जी.  
नवा स्कूल ड्रेस मा हमरो  
बाढ़ जाही रूवाब जी  
हाँसत स्कूल जाबो जी.  
चलो स्कूल जाबो जी.





स्कूल मा गुरुजी मन  
सुंदर ढंग समझाही.  
कभू देखाही जादू अउ,  
गीत कविता सुनाही.  
गीत हमुमन गाबो जी.  
चलो स्कूल जाबो जी.

\*\*\*\*\*

# छोटी सी चिड़िया

रचनाकार- गुलज़ार बरेठ, जांजगीर चाम्पा



एक दिन मोनू अपने आँगन में खेल रहा था. अचानक एक चिड़िया की बच्ची वहाँ पर गिर गई. उसकी मम्मी उसके आसपास फुदकने लगी. दोनो ची-ची चिल्लाने लगे.

मोनू ने देखा -चिड़िया की बच्ची अभी बहुत छोटी थी. उसके पंख भी नहीं आये थे. इसलिए वह उड़ नहीं पा रही थी. उसकी मम्मी उसे उठा नहीं पा रही थी.

मोनू सोच रहा था कि - कैसे उनका मदद किया जाय ? एक विचार उसके मन में आया. उसने आँगन में लगे पेड़ की टहनी पर एक छोटा सा घोंसला बना दिया. फिर उसने चिड़िया की बच्ची को घोंसला में रख दिया. उसके बाद मोनू ने उस कुछ खिलाना चाहा. लेकिन चिड़िया की बच्ची खा न सकी. थोड़ी देर बाद चिड़िया की मम्मी दाना लेकर आई. उसने उसे दाना खिलाया. चिड़िया की मम्मी रोज इसी तरह उसके लिए दाना लेकर लाती और उसे खिलाती. मोनू भी उसे कुछ कुछ खिलाने की कोशिश करता.

चिड़िया की बच्ची रोज उड़ने का कोशिस करती लेकिन गिर जाती. मोनू उसे घोंसला में रख देता.

चार पांच दिन में चिड़िया थोड़ी बड़ी हो गई. उसके पंख भी आने लगे थे.

एक दिन चिड़िया की मम्मी अपने बच्चे के लिए दाना लेकर आई थी. उसको खाने के बाद चिड़िया की बच्ची घोंसला से निकल कर पेड़ की टहनी पर आ गई, फिर घर की छत पर उड़कर बैठ गई. उसके बाद चिड़िया की बच्ची अपने मम्मी के साथ फुर्र से उड़ गई.

दोनो को उड़ते देख मोनू बहुत खुश हुआ.

\*\*\*\*\*

# मानसून की पहली बारिश

रचनाकार- सुंदर लाल डडसेना "मधुर", महासमुंद



मानसून की पहली बारिश से,  
मिट्टी की सोंधी सोंधी खुशबू से,  
महक रहा संसार सारा.  
केवल चातकों को ही नहीं,  
बूढ़े अनुभवी बगुलों को भी,  
लगता है मधुर बड़ा प्यारा.  
चातकों के लिए ये किसी,  
सुनहरे सपने से कम नहीं.  
कि मानसून की पहली फुहार है.  
पर किसान जो टकटकी लगाए,  
आसमान की ओर ताक रहा था,  
सुन ली प्रभु ने उसकी गुहार है.  
मैं चातकों से कहना चाहता हूं,  
न केवल चातकी के पीछे भागो,  
एक बार बूढ़े बगुलों से भी पूछो.  
कि क्या कमी है, क्या तकलीफ है.  
एक बार तो कम से कम जागो.  
हो भूमिपुत्र ये अपने स्वेदरक्त से सींचो.

\*\*\*\*\*



# कुकुर अउ कउंवा

रचनाकार- श्रीमती नंदिनी राजपूत, कोरबा



जम्मो लइका ला किस्सा दीदी के जय जोहार 🙏

आज मैं तुम्हरे मेरे एक किस्सा लेकर आए हूँ, ओ किस्सा के नाव है कुकुर अउ कउंवा ,

एक ठन गांव मा एक कुकुर रहिस जी, वो हर अब्बड सुवारथी , नेरचरहा अउ झगलाडू रहिस , ओ हर जम्मो आदमी घर ले खाये - पीए के चीज ला चुरा लय अउ अक्केला मा जाके खावे, ओ हर अपन जम्मों चीज ला कोखरो में नई बाँटत रहिसे, जानथा लाइका हो काबर,,,काबर की ओ हर अब्बड झगलाडू रहिस, अहि खातिर जम्मो जीव- जंतु ओखर से दुरिहा रहे,

एक दिन के बात आय जी कुकुर ला एक ठन मांस के टुकड़ा मिलिस जी, ओला अपन मुँह मा दबाइस अउ गांव से दुरिहा अक्केला जगह तिर दौड़े लगिस, रद्दा मा एक तरिया रहे, कुकुर ह पानी ला देखिस अउ मने मन गुने लागिस कि तरिया के पानी हा अब्बड सुथरा हवे, त ए हर मीठा घलो होहि, एखरे सेती मांस खाये से पहिली पानी ला पी लव, अहि गुनत - गुनत अपन मुँह मा दबाए मांस के टुकड़ा ला सड़क के किनारे रख दिस अउ तरिया के तिर मा जाके पानी ला पीए लगिस,

तरिया के तिर मा एक ठन रुख रहीस जी, ओ रुख मा एक ठन कउंवा ह बईठे रहिस ओ हर जम्मो चीज ला देखत रहिस, कउंवा हर तो कुकुर ले भी ज्यादा नेरचरहा अउ झगलाडू रहिस जी, ओ हर जईसे ही कुकुर ला तरिया मा पानी पियत देखीस, रुख ले उतर गईस अउ मांस के टुकड़ा ला अपन चोंच मा दबाके उड़ गिस, मुख कुकुर ह देखत रहिगे ओखर मांस के टुकड़ा घलो छिन गय अउ ओ हर कुछ नई कर सकिस

ऐखरे खातिर कहे गहे हे जी कि कुछ भी चीज ला मिलजुलके खाना चाही, जईसे कुकुर ह दुसरे के चीज ल चुराके खात रहिस वईसे ही कउंवा ह ओखर ला चुरा के खा लिस,

\*\*\*\*\*

# चलो हो जाओ तैयार, अब स्कूल जाना है

रचनाकार- शरद कुमार दुबे, सारंगढ़ बिलाईगढ़



बहुत किये मौज मस्ती, अब तो पढ़ने जाना है.

गर्मी छुट्टी के दिन अब बीते, किये इसमें हमने बहुत मौज मस्ती.

स्कूल जाना है बच्चों, रख लो साथ में दपती, बत्ती.

मामा के घर बुआ के घर से आये हम.

चलो अब करो तैयारी, स्कूल जाय हम.

अब दिन आये पढ़ने का, पढ़ लिख के आगे बढ़ने का.

जीवन में कुछ करने का, माँ- बाप का नाम रोशन करने का.

चलो अब करो तैयारी, आगे कदम बढ़ाना है.

हो जाओ तैयार अब स्कूल जाना है.

\*\*\*\*\*

## भाखा जनऊला

रचनाकार- दीपक कंवर

1 गु						2 ह		3 बें	
					4 ख		5		
6		7 घ				8			
					9 जु			10	11 ल
		12 ल		13 कु					
	14						15 ब		
17 में				18					
		19 स							
20						21 बो		22	
					23			24 री	

## बाएँ से दाएँ

1. गौरैया 4. मड़ई/मेला मे पासे का खेल (जुआ)
6. स्मशान 8. बकेगा, बकने वाली 9. सर्दी 10. कल. आने वाला दिन/ मौत
12. शर्मिला
14. दिखावा, नखरा
15. विधुर 18. हल्का बुखार
20. भिन्डी 21. बहता हुआ
23. बगल. दीवाल से सटा
24. खाली

## पिछले भाखा जनऊला के उत्तर

1 ह	2 ब	री	3 स		4 तु	म	5 न		6 जा
	प		7 र	8 वा	र		9 ट	10 म	ड
11 क	रा		12 गु	र	तु	र		ह	
			जि		री			13 ता	14 र
15 मं	झ	16 नि	या		या		18 धू	री	हा
झो		ना		19 पा		20 घो	क		
त		21 स	22 ह	रा	य		23 न	छ	प्प
			म			24 बो	हा		
25 खा		26 गु	न	27 मु	न	हा			28 का
29 तु	ह	र		हूँ		30 र	जू	ति	या

## ऊपर से नीचे

1. धान/चावल का किस्म
2. हड़बड़ी करने वाला
3. लकड़ी का आड़ी कुण्डी
5. बगुला 7. घनिष्ट
9. जुट, जुटा 11. नजदीक
13. रेतीला 15. सडा हुआ, दुर्गन्ध 17. केंचुआ
19. बटोर 21. टुटा दांत वाला 22. निचे, तल मे